

श्रीः।

परमसिद्धान्तः। . ( ब्रह्मांडफटाह्रांतर्गतज्योतिश्रक्त्ज्ञानम् )

श्रीलक्ष्मीवल्लभारमज्ञेमवल्लभविरचितः सोऽयं खेमराज श्रीकृष्णदास इत्यनेन मुम्बय्यां स्वकीये "श्रीवेङ्गदेशर " मुद्रणास्त्रये

मुद्रियस्या मकाशिवः । संवत् १९५३, शके १८१८.

इस प्रन्थका राजिप्टरी हेक मैकाप्रकान स्नाधीन स्नवाहै।





### प्रस्तावना.

सौंग्रं " परमसिद्धान्त " नामा न्योतिश्रकज्ञानग्रतिपादको प्रन्थः पण्डितदौर्वरच्य क्षेत्रोपकृतिपासस्य प्रसिद्धये मस्सविधे संप्रैच्यत । स चार्यः मया स्वर्क्षये " श्रीविद्धटेश्वर " सुप्रणाख्ये सुद्र्यित्वा प्रकाक्षमानीयत ।

अदः परमञ्चर्यस्यामः च सर्वाञ्च्योतिर्विदी विदुषस्य-वास्तवतीःमूल्य-स्यापि परावरङ्गानमकाकारुयास्य मन्यस्य संयहायः वदं दत्वा प्रोक्तपण्डि-क्षानो सक्कथन्तु भूरिपरिकासात् इति । क्षस् ।

सफ्छविद्यमनमेसाभिटापी-

16335

# <sub>अथ</sub> परमसिद्धान्तानुक्रमणिका ।

| -                            |       |      |            |                                |                 |            |       |
|------------------------------|-------|------|------------|--------------------------------|-----------------|------------|-------|
| विषयाः                       |       | ą.   | प्राङ्कः   | विषया:                         | _               | Ę!         | ाङ्कः |
| <b>अथमङ्गळाचरणम्</b>         |       | **** | 8          | मिश्र <b>व्यवहारः</b>          | ****            |            | 34    |
| परिभाषा                      | •••   | •••• | 77         | मिश्रान्तरविधिः                | ••••            | ****       | 77    |
| अट्टसंख्यासंज्ञा -           | ••••  | •••• | ٠ ۽        | मिश्रान्तर कमः                 |                 |            | 26    |
| योगान्तकरणम्                 | ••••  |      | 37         | यागमिश्रविधिः                  | ****            |            | 80    |
|                              | ••••  | **** | 8          | ंक्र <b>यविक्रयमिश्रक</b>      | H:              | ****       | 85    |
| भागहारविधिः                  | ••••  | **** | 4          | रत्नमिश्रक्रमः                 |                 | ****       | 83    |
| वर्गमुख्यामः 🐪               |       |      | v          | सुवर्णान्नादीनां क             | यविक            | यविशि      | 1:55  |
|                              | °     |      | 27         | मिश्रमध्ये एकाद्वि             | म्यादि <b>ः</b> | मेदा-      |       |
| भिन्नपरिकर्माष्टकम्          | Ţ.    | **** | 4          | नयनविधिः                       | ****            |            | 88    |
| भित्रगुणनविधिः               | ,     | **** | ٩          | श्रेद्धीव्यवहारः               | ****            | ****       | 22    |
| .भित्रभागहारविधिः            | :     | **** | 15         | श्रेदचन्तरविधिः                | ****            | ****       | 28    |
| भागांशांशविधिः               | ****  | **** | śo         | द्विगुणचयादिकः                 |                 | ₹-         |       |
| <b>ज्ञुन्यपरिकर्मा</b> ष्टकर | ₹     | **** | 38         | श्रेडचन्तरविधि                 | वे:             | ****       | 85    |
| .व्यस्तविधिः •               | ****  | ***  | 85         | समादिवृत्तद्वाना               | य श्रेदः        | <b>q</b> - |       |
| धनर्णपरिकर्माष्टक            | म्    | **** | \$ \$      | न्तरविधिः                      | ****            | ****       | 12    |
| स्वर्णवर्गविधिः              |       |      | 18         | समयुत्तादिपरिङ                 |                 |            | 40    |
| स्वर्णशुन्ययोगान्तः          | रविधि | i:   | 77         | क्षेत्रव्यवहारः                | ****            | ****       | 48    |
|                              | ****  | **** | 11         | भुजकोटिकर्णकार                 | नम्             | ****       | 45    |
|                              |       |      | १५         | समकोटिभुजकर                    | णम्             | ****       | - 33  |
| इष्टकर्मणि शेषजा             | चेवि  | धः   | \$4        | अकरणीगतेष्ट <u>भ</u> ुव        |                 |            |       |
| धनणैंकजातिराशी               |       |      |            | दिरचना                         | ****            |            | 48    |
| न्तरक्रमः                    | ****  |      | <b>ર</b> ૦ | कर्णकोदियुतिवा                 | हुभ्यां         |            |       |
| संक्रमणविधिः                 |       |      |            | कोटिहानमय                      | वा              | भुज-       |       |
| विषमकर्मविधिः                | ****  | **** | 38         | कर्णेक्यकोटि                   |                 |            |       |
| किंचिद्वर्गकर्म              | ****  | **** | <b>₹</b> ₹ | भुजानयनम्.                     | ****            | ****       | 44    |
| मूछगुणविधिः                  |       |      |            | .कोटिकर्णान्तरव<br>कोटिकर्णयोर | ाहुभ्यां        |            |       |
| त्रेराशिकायोजकर              |       |      | 34         |                                |                 |            |       |
| भाण्डप्रतिभाण्डक             | ाबाध  |      | ₹8         | <b>उड्डीयम्</b> नानयन          | म्              | ****       | 40    |

-

| र परमासङ्ग                                   | तातुक्रमाणका ।                        |
|--|---------------------------------------|
| विषयाः पृष्ठाङ्क                             | ् विषयाः पृष्ठाङ्क                    |
| अन्यकरणविधिः ५७                              |                                       |
| कर्णयोयाँगाञ्चम्बादिपरि-                     | फलानयनम् ८                            |
| झानम् ⋅ ५८                                   |                                       |
| अक्षेत्रविचारः ५९                            |                                       |
| व्यस्त्रक्षेत्रफलानयतम् "                    | काष्ठविदारणकर्मणि भाटक-               |
| चतुर्भुजादिशेषेफैलानयन-                      | फले क्षेत्रफलज्ञानम् "                |
| विधिः ६२                                     | राशिःयवहारः ८४                        |
| क्षेत्राणामाकारज्ञानार्थं त्रि-              | पादोनार्थपाद्राज्ञीनां फळा-           |
| भुजादीनां चिद्वानिः ६३                       | नयनम् ८०                              |
| क्षेत्रफलात्कोटिभुजानयनम् ६५                 |                                       |
| यनफलक्षेत्रपृष्टफलानां कप-                   | राशेः स्यूलफलोपपत्तिः ८८              |
| ज्ञानम् ६६                                   | छायान्यवहारः ::: ''                   |
| विषमगोळविषमवृत्तयोः                          | छोयान्तरह्मः ५०                       |
| समगोल समब्तसमन्या-                           | दीपीच्च्यशङ्कभ्यां हक्कणेपूर्ण-       |
| सकरणक्रमः '"                                 | भुजयोरानयनम् ९३                       |
| च्यासज्ञानम् ६७                              | अङ्काषयवानयनम् ९४                     |
| वृत्तव्यासयोरन्योन्यमान-                     | गणितपाश्रव्यवहारः १५                  |
| यनम् "                                       | विशेषभेदानयनम् ९६                     |
| गोले पृष्टफलानयनम् 🛶 ६८                      | अङ्कपाशान्तरम् ९७                     |
| गोले घनफ्छानयनम् "                           | इति परमसिद्धान्ते गणितमागाधि-         |
| अन्योक्तधनफलानयनम् ···· ६९                   | कारः प्रथमः ॥ ९ ॥                     |
| वृत्तक्षेत्रस्य क्षेत्रफळोपपत्ति-            |                                       |
| <b>斯柯: 77</b>                                | अथ घट्यादिमानानि ९८                   |
| गोलस्य पृष्टफलयनफलयोह-                       | ब्रह्माण्डादिकज्ञानम् १००             |
| पपत्तेरानयनक्रमः ७१                          | समुद्रद्वीपादिकम् ३०३                 |
| स्यूळजीवास्तानयनम् ७४                        | हिमालयभारतादिखण्डचय-                  |
| स्चनम् ग्रह                                  | ज्ञानम् १०४                           |
| बन्धमुख्यनहस्ताकारकस्य<br>भारतस्य लेनकलासम्य | वर्णेव्यवस्थितिः "                    |
| aca dia nesta datal                          | भूल्यासपरिधिज्ञानम् १०५               |
| खातज्यवद्दारः ७७<br>खाते घनफलानयनम् ७        | भूपृष्ठग्रद्योरन्तरं छोकाई-           |
| बाटिकादिखातस्य धनफळा-                        | व्यासवा ??                            |
| नयतम् ७८                                     | भूपरिध्यानयनम् १०६<br>दिग्ज्ञानम् १०६ |
|  | 1 1d-401447 23                        |
|  |                                       |

| परमासक्षान  | તાલુમાના ગામાં                          |
|---|---|
| विषया: - पृष्ठाङ्कः   | विषयाः - प्रहा                          |
| दिशुत्पत्तिः १०७  | संवत्त्ररानयनम् १३                      |
| भूषिण्डानयनम् १०८   | प्रकारान्वरेण संवत्तराज्य-              |
| कक्षकमः "   | नम् "                                   |
| . भूगोळविखयः '१   | वर्णशेपफळानयनं भावदशेप-                 |
| शीतोप्णस्थानज्ञानम् १०९                                     | फलानवस्य १३                             |
| ऋतुइ।नम् ग  | वारप्रवृत्तिज्ञानम् १२                  |
| व्यक्षादक्षिणे गोळज्ञानम् ११०                               | पूर्वपश्चिमदेशान्तरज्ञानम् "            |
| ं इति परमिन्दान्ते गोलाधिकारी                               | क्षेपकढाकमः १२                          |
| हितीयः ॥ २ ॥  | निजस्थानभूमण्डलानपनम् १२                |
| अय पितृद्गित्पत्तिः १११                                     | निजन्यक्षद्वानम् १३०                    |
| ऋतुराशिज्ञानम् '"   | स्वव्यक्षाकाँदयान्निजदेशाकाँ-           |
| वर्षमानोत्पचिः "  | द्यज्ञानम् >                            |
| अङ्गवंद्या म ११३  | चरसंस्कारोपपनिः "                       |
| फकादिभाव्दान्तमानम् ११४                                     | देशान्तरसंस्कारोपपत्तिः १३              |
| युगे राशिचकाणि राशिव-                                       | मध्यरेखाज्ञानम् "                       |
| पाँजि भगजानि ११५  | मिश्रकालिकप्रदान्यनम् ••• १३१           |
| युगे सावनभूदिनाः "  | • मिश्रकालिकग्रहादिष्टका-               |
| नक्षत्राणां दिनाः : "                                       | छिकब्रहानयनम् "                         |
| चान्द्रदिनास्तिथयः ११६                                      | चाळनदानो्रपत्तिः १३<br>मिओरपत्तिः "     |
| मधिमासाः "  |   |
| additeded   | चर्फुलहानम् "<br>व्यावद्वारिकचरानयनम् " |
| स्यमासाः "<br>श्दिनोत्पत्तिपृर्वकचान्द्रमासाः "             | चराहुजांशानयनम् ग                       |
| क्षादनात्पात्तपूर्वकचान्द्रमासाः "<br>सर्वाहुर्गणानयनम् ११७ | चरसण्डानयनम् १३                         |
| दिनगणानयनम्"  | परदेशेऽक्षत्रभानयनम् "                  |
| बहुर्गणाच्छाकानयनम् ११८                                     | चरसंस्कारदानस्थानझानम् १३९              |
| मानानयनम् ११९   | वात्कालिकप्रहन्नानम् "                  |
| सीरमासेभ्योऽहर्गणानयनम् १२०                                 | मधम्यवार्घाद्रविवादेवानम् "             |
| शकोत्पत्तिः १२१   | सावनेष्टराभ्यद्वज्ञानम् , "             |
| दिनगणभवसेटानयनम् "  | स्वव्यक्षप्रराज्यद्धज्ञानम् १३।         |
| दिनगणभवखेटादहर्गणा-   | स्टूराराज्यस्त्रानम् "                  |
| नयनम् "   | अर्कापरविद्यानां चास्तोदय-              |
| मध्यमानवत्रम् १२२   | काळोपयोगिचरकुळज्ञानम् "                 |
|   |   |
|   |   |

| <b>५</b> परमास्ड्रान्ता          | तुकमाणिका I                            |
|----------------------------------|--|
| विषयाः पृष्ठाङ्कः                | विषयाः . पृशाङ्कः                      |
| देशान्तरकलाङ्गरङ्गानम् : १३६     | सामान्यस्थांशानयनम् १६३                |
| सुखोत्यमध्यमाहर्गणये।रान-        | चक्रव्यांशेभ्यो भुजांशा-               |
| यतम् १३७                         | नयनम् १६४                              |
| ब्रझदिनमानेमन्दोञ्जचकाणि १३९     | वृत्तस्यापराष्ट्रमांक्रज्यापत्रा-      |
| वत्रैव पावचकाणि "                | भावश्चेदधिकत्यायाः                     |
| ब्रह्मजन्मदिनाहृताब्दानयनंम् १४० | भुजांशानयनार्यसुपायः "                 |
| सृष्टितो गताब्दाः "              | वाणानयनम् १६५                          |
| ब्रह्मदिनारम्भाद्रताब्दानयनम् "  | कोटिभुजांशानयनम् "                     |
| मन्वन्तरानयनम् १४१               | राशीनां मुक्तमोग्यांशस्या-             |
| स्वैभौमादीनां मन्दोञ्चानयनम् १४२ | विज्ञानम् १६६                          |
| भौमादीनां पातानयनम् "            | प्रकारांतरेण कोटिकोटिज्या-             |
| सूर्यभौमादीनां मन्दोश्चवेगा-     | भुजञ्यानयनम् "                         |
| नयनम् १४३                        | प्रकारान्तरेण १६७                      |
| भौमादीनां पातवेगानयनम् "         | प्रकारान्तरेण ज्योपपत्तिः १६८          |
| स्पष्टमन्देश्चपातानयनम् "        | ज्यार्द्धानयनम् १६९                    |
| इति १रमसिद्धान्ते मध्यमाधिकार-   | मध्यमध्यज्याद्वानयनम् "                |
| स्तृतीयः ॥ ३ ॥                   | स्यूळगुणज्ञानम् "                      |
| अय वृत्तव्यासोपपत्तिः १४४°       | केंटिज्याती भुजन्यानयनम् १७०           |
| व्यासात्परिधानयनम् १४६           | स्रक्षमञ्यानयनम् "                     |
| बृहत्कणोदाहरणम् ''               | वृत्तान्तर्गतकोणानयनम् १७१             |
| स्व्मन्द्रानयनम् १४७             | इति परमसिद्धान्ते जीवानयंता-           |
| स्दर्भ वर्गमूळानयनम् १४८         | धिकारश्रद्धभैः ॥ ४ ॥                   |
| सुक्षं वर्गमुलोदाहरणम् "         |  |
| अभिन्नवर्गमुळानयनम् "            | अथ स्पष्टाधिकारः ··· १७३ ·             |
| वनमृङानयनम् १४९                  | चंद्रसूर्ययोर्मन्दवृत्तांशाः १७५       |
| धनमुळोदाहरणम् "                  | भौमादीनां मंद्रपरिष्यंशाः ''           |
| धनमुळावशेषस्य स्यूळफळा-          | भौमादीनां शीववृत्तांशाः "              |
| नयनम् १५०                        | स्पष्टवृत्तांशानयनम् १७६ -             |
| भिन्नघनम्कानयनम् १५१             | सूर्यादिशन्यन्तानां मन्द्रफळा-         |
| .च्ये।पपत्तिः "                  | नयनम् १७७                              |
| ज्यांश्चकम् १५७                  | मुजफलानवनम् "                          |
| भनयकष्टण्या १६२                  | मन्दको ज्ञानयनम् "<br>मन्दकर्णानयनम् " |
| चक्रस्यापराष्ट्रमोशस्या-         | मान्द्रकलानयनम् "                      |
| नयनम् १६३                        | and amount and and and                 |
|                                  |  |

### परमसिद्धान्तानक्रमणिका ।

|   | - प्राप्त                               | (।त्याविकमाणका ।                 |
|---|---|----------------------------------|
|   | विषयाः पृष्ठाङ्कः                       | विषयाः पृष्ठाङ्कः                |
|   | व्यवहारोचितं मन्दफला-                   | स्पष्टवेगोत्पत्तिः ३०१           |
|   | मयनम् १७७                               | खेदवाणीपपत्तिः *** ३०३           |
|   | सूर्यचन्द्रयोः स्पष्टानयनम् १७८         | इति परमसिद्धान्ते खेटस्पष्टो-    |
|   | भौमादीनां इतिब्रक्तर्णानयनम् "          | स्परपधिकारः पष्ठः ॥ ६ ॥          |
| • | भुजक्छम् ग                              | मन्दशीवकर्णानयनम् २०५            |
|   | कोटिककानयनम् "                          | स्यॅन्डुभौमादीनां सर्वकर्णाः-    |
|   | कोटचानयनम् "                            | धिकारपनम्दकर्णंद्वानं तथा        |
|   | भौमादीनां जीवफलानयनम् १७९               | भौमादीनां सर्वक गांधिकाल्य- •    |
|   | भौमादीनां प्रस्फुटीकरणम् "              | शीव्रकर्णकानम् "                 |
|   | व्यावहारिकस्पष्टवेगा-                   | चन्द्रस्य सर्वाधीयहरानयनम् "     |
|   | नयनम् १८०                               |                                  |
|   | स्पष्टपत्रनिर्माणरीतिः १८१              | भौमादीनां सर्वाधीपुरूरानयनम् २०६ |
|   | भौमादीनां स्वष्टपत्रनिर्माण-            | चन्द्रभौमादीनां मध्येपुकला-      |
|   | . ब्रक्तिः १८६                          |                                  |
| ÷ | मार्गवकफळपत्रसिर्माण-                   | सवाधिश्राणानवनम्                 |
|   | यकिः १८७                                | चन्द्राकंकणज्ञानम् "             |
|   | स्पष्टवेगसाधनम् १८९                     | तयोः स्यृद्धकर्णज्ञानम् ३०७      |
|   | अस्तोदयसाधनम् "                         | व्यगुचन्द्रगोलदिशुस्यतिः "       |
|   | वकात्स्यूछमार्गदिनज्ञानम् "             | भीमादीनां शरदिग्हानम् 🚥 🤋        |
|   | स्यतांशानयनम् १९१                       | चन्द्रशरानयनम् ग                 |
|   | पक्षांतरेणायनांशाः "                    | व्यवहारयोग्येन्दुशरानयनम् "      |
|   | अयनांशोपपत्तिः १९२                      | अंशानामंगुलकरणम् २०८             |
|   | दिनज्ञानम् "                            | लग्नाकंयोः शरक्रानम् "           |
|   | चक्रचंक्रमानयनम् १९३                    | भौमादीनां पातहीनम-               |
|   | सूर्योदिग्रहाणां नक्षत्रानयनम् "        | न्दस्पष्टज्ञानम् ग               |
|   | तिथ्यानयनम् "                           | मामावावाशरावयनम् ****            |
|   | नक्षत्रानयनम् १९४                       | वाणांगुळानयनम् "                 |
|   | योगान्यनम् "                            | क्रान्तिज्यांगुलानयनम् २०९       |
|   | स्पष्टपंचांगात्रयनम् "                  | . 4819014444                     |
|   | स्वेद्याद्रवक्षेष्टानयनं तथा स्व-       | शरकुळज्ञानम् "                   |
|   | देशपंचांगानयनम् १९५                     | • स्वस्वाध्यपक्रमानयनम् २१०      |
|   | इति परमसिद्धान्ते सोटलक्षाधिकारःपंचमः ५ | भागान्यकानकानकानम् ••••          |
|   |   | allastiad                        |
|   | , अथ स्पष्टोत्पत्तिः "                  | , क्रोत्यानयनम् "                |

### परमसिद्धान्तानकमणिका

| ६ परमसि   | इन्तानुक्रमणिका।   |
|---|--|
| विक्याः पृष्ट<br>स्पष्टकान्तिसाधसम् अ<br>अश्विन्यादीनां नित्यांशकानम् ३   |  |
| बाल्य-पादाना । तत्याक्षतानम् २<br>बाल्य-पादानि । तत्यांत्रागुरानुः<br>च्यांद्वानि   | न्यमम् २२८<br>च्छुयेल्यानयमम्  |
| स्यांद्याः श्रेरभागाश्चः<br>द्व्याद्रियस्यन्तानां साभि-<br>जिद्दक्षाणां प्रयोजनिक-<br>वाराझानम् ३                         | " संज्ञकतानम् " छप्ताकाभ्यामिष्टानयनम् " सुगमरीस्या व्यावहारिक- १५ छप्तचहुर्यानयनम् >२९  |
| अश्विन्यादिश्रद्धाणां तारासं०<br>मक्षत्राणामगस्त्यादीनां च<br>श्रुत्याश्चक्तिस्तरकानम् १<br>इति . परमक्षेद्धाने वाणापक्तम | " अनेनाकोट्यकालिकलय-<br>स्य भुक्तभोग्यकलानयनं<br>१६ इष्टे लग्नज्ञानं च २३०   |
| वयनाविकारः सप्तमः ॥ ७ ॥<br>भय व्यक्ते स्वस्वदिनाद्धाः-<br>न्यनम्  | <ul> <li>ज्यावहारिकचतुर्यानयनम् २३२</li> <li>रिषटाकृते छत्रकानम् " स्पेस्य ज्यक्षाहार्धोपपतिः " नक्षत्रोद्ये प्रहादये च छत्र-</li> </ul> |
| राबाऽधिकाऽहोराबदेशे<br>सुमानराविमानानयर्न<br>चरक्रमेणि ३<br>पष्टबस्पकलाऽहोमानरावि-  | लानां नाक्षवियकरणोपपतिः "  |
| मानदेशे चरानयनम् व<br>नतोत्रतकछानयनम् , व<br>व्यक्षोवयानयनम् व<br>स्वदेशकग्रीदयकछानयनम् व                                 | २१ भावः "<br>२२ सावनीयंनाकृत्रयोः परस्परसं-<br>१३३ स्कारोपपचिः ३३४   |
| नक्षताणामहोरावदिना-<br>दिकं सावनीयकरणम् ।<br>छग्नानयने सार शक्तिकार्क-<br>ग्रहणझानम्<br>छग्नस्पद्यानयनम्                  | अय सावनीयज्ञानम् २३५<br>नाक्षत्रज्ञानम् "<br>" सावनीयज्ञाक्षत्रानयनम् "  |
| रुप्रहानम्<br>इष्ट्यानम्<br>भोग्यास्पेष्टे छन्नानयनम्   | ण नाक्षवात्सावनायानयनम् र३६<br>ग सावनीयवेगाञ्चाक्रयवेगा-<br>ग नयतम् ग  |

### परमसिद्धान्तानुक्रमणिका ।

| - 3541081:0                                       | 11344111111  |
|---|--|
| विषयाः पृष्ठापूरः                                 | विषया: पृष्टाङ्क                                       |
| अक्षभाषळभाविषुवद्भा-                              | शुण्डभूलादिस्थानचारकाग्र-                              |
| नवसम् ३६१   | स्थानव्ययवाणस्थाननतो-                                  |
| अर्थदद्यानम् २६२                                  | न्नतसंधिस्थानज्ञानम् २६९                               |
| अक्षोज्ञानयनम् "                                  | छेदहकोदिहग्दण्डच्छायोपप-                               |
| प्रकारान्सरेणालीशानयमम् "                         | त्तिज्ञानम् ३७०  |
| <b>त्र</b> रीययम्बेणाक्षांशानयनम् २६३             | स्वदिनार्थेस्वयंत्रांश्रञ्ज्वज्ञानम्२७१                |
| मुबनिखयः ३६४                                      | स्वमध्याद्वे स्वच्छायःज्ञानम् "                        |
| " ভ্ৰুথায়লান্ "                                  | इप्टनते भाकर्णच्छाययोगन-                               |
| प्रसङ्गान्तुन्द्धारानयनम् "                       | यनाय वाणानयनं नास्य-                                   |
| हावृत्तज्ञानम् ३६५                                | वाणानयमं च 🗷   |
| यन्त्रांशानयमादाविष्टकानम् "                      | व्यव्रदारानयनम् २७३                                    |
| ग्रप्ताहोराज्ञानयनस्थलम् '                        | नात्यधाणानयनम् <sup>33</sup><br>छदानयनम् <sup>33</sup> |
| यथायोग्येष्टाद्रचक्तानयनम् "                      | हक्कोदयानयनम् "  |
| व्यक्तायथोचितेष्टानयनम् २६६                       | दण्डानयसम् ग   |
| सक्ष्मपथोचितेष्टात्सक्ष्मव्यक्ते-                 | छायाकर्णछाययोरानयनम् २७३                               |
| ष्टानयनम् "                                       | हरदण्डंहक्षीटचोरान्यनम् "                              |
| स्पष्टव्यक्तात्सुक्मययोचितेष्टा-                  | छेदानयनम् "  |
| नयनम् "   | नात्यवाणानयनम् "                                       |
| स्पष्टनतस्यूळनतज्ञानम् "                          | व्यक्षचके शुण्डाग्रस्थानचा-                            |
| दण्डप्रदासयरम् २६७                                | रकाग्रस्थानज्ञानम् ॥                                   |
| द्ण्डान्यनम् "                                    | व्यत्रवाणाग्रस्थानज्ञानम् "                            |
| वंग्यमवंशियतस्यः । ।।।।                           | व्यत्रवाणाभावज्ञानम् "                                 |
| वंशानयनम् '** "<br>देवांशे पुल्यमुत्तरं देत्यांशे | शुण्डमूलस्थानज्ञानम् "<br>भाकर्णानयनाय पुरानयनम् "     |
| दक्षिणम् '"                                       | प्राच्छायायाः कर्णातवनम् २७५                           |
| सराचारकानयनम् २६८                                 | भाक्षणीतस्पुरानयनम् "                                  |
| पारकास्त्रास्यानयनम् "                            | प्रकारान्तरेण पुरानयनम् "                              |
| चारकात्पलभानयनम् "                                | व्यम्रवाणानयनम् '''                                    |
| शुण्डज्ञानम् १६९                                  | प्रकारान्तरण स्यग्रवाणा-                               |
| नात्यबाणज्ञानम् "                                 | नयनम् ,,,,   |
| ग्रहस्थानज्ञानम् "                                | तत्पुरायंत्रांशानदनम् "                                |
| कान्तिमृत्ते दक्षिणोत्तरज्ञानम् "                 | .यंत्रांश्रेभ्यः पुरानयनम् »                           |

| 1  |                                 |
|--|---------------------------------|
|  |                                 |
| 'परमसिद्धान्त  | नुक्रमाणका। ९                   |
| ं विषयाः पृष्ठाङ्काः   | विषयाः पृष्ठाद्भाः              |
| पुरञ्जण्डाभ्यांनतकाळान-                                      | पळभानयनम् ३८४                   |
| . यनम् ३७५   | दण्डवंशांशनवकालानां दि-         |
| प्रकाण स्थार्यास्चारकाभ्यां                                  | ग्ज्ञानम् ३८५                   |
| नतकाळानयनम् २७६<br>मका० यंत्रांशानयने घेत्रा-                | विधिचक्रभूभुनदण्डांशानां        |
| नयनम् २७७  | वासना ३८५                       |
| तवपावानयनम् ,,,  | यातशेषप्रदिननताभ्यां .          |
| तत्रकृदंकताटकानयनम् ,  | चारकज्ञानम् ५८६                 |
| कण्डकानयनम् २७८  | अवेष्टभादिग्माभ्यांपळभानय-      |
| चक्रभूभुजानयनम् २७९  | नम् २८६                         |
| विभ्यानयनम् २७९  | अग्रावासना ३८७                  |
| यंत्रांबानयमम् २७१   | पलभामृकात्रस्थान ज्ञानम् २८८    |
| यंत्रांशेभ्यइष्टसुत्यानयनम् २७९                              | अग्राया अग्रम्ळस्थानहानम् ३८८   |
| प्रका॰ इष्टकणेच्छायामाना-                                    | अक्षभादिग्ज्ञानम् २८८           |
| नयनम् ३७९<br>भाराकस्यां भाकर्णानयनम् ३८०                     | अग्रादिग्ज्ञामम् : ३८८          |
| भाइकिन्या भाकणानयनम् २८०<br>इप्रभाकणीदिष्टयंबांज्ञानयनम् २८० | चक्रभूभुजानयनम् ३८८             |
| पळमादिहानम् २८०  | नतकालानयनम् २८८                 |
| दिग्नुजांगुकानयनम् २८०                                       | याम्योत्तराक्षांश्रदिक्पळदिक्फ- |
| नित्यदिग्धुजज्ञानम् " .                                      | ळानयनम् ३८९                     |
| अत्यस्पच्छायाकाल्झामम् ३८०                                   | टेककानयनम् २८९                  |
| स्पष्टदिग्भुजस्पष्टचक्रभूभुजयो-                              | धननवज्ञानम् २८९                 |
| रानयनम् २८१  | ऋणनतद्वानम् ३८९                 |
| दिगंशानयनम् २८१  | पार्श्वानयनम् ३८९               |
| प्रकार्वदर्गशानयनम् २८१                                      | वोधकानयनम् २८९                  |
| प्रका॰दिगंशानयनम् ३८२  | यस्रार्धनताभ्यामिष्टकाळा-       |
| ष्ककेरलदुण्डवंशज्ञानम् १८२                                   | न्यनम् २९०                      |
| . इष्ट्यंबांश्रदिगंशाभ्यामक्ष-                               | धनर्णनतकालक्षानम् ३९०           |
| मभानयनम् १८३   | इष्टाखयोचितेष्टानयमम् ३९०       |
| चक्रमुभुजानयनम् २८२  | देशदिक्साधनविधिः २९०            |
| दण्डदानयतम् २८३  | पश्चिमदेशनतम् २९०               |
| संबहारानयनम् २८४   | पूर्ववृश्चनतम् २९१              |
| सद्यव्यप्रश्चरानयम् २८४                                      | देशतोडकज्ञानम् २९१              |
| • सद्यधारानयनम् "  | देशकेरम्: ३९१                   |
| भाग्यानयनम् २८४  | कर्धस्थानान्तरानयनम् २९१        |
| 4  |                                 |

| 40                       | 1641481.00                       | 344114411   |
|--------------------------|----------------------------------|---|
| विषयाः                   | <b>पृष्ठा</b> द्भाः              | विषयाः मृटाङ्का                                       |
| देशनवानयनम्              | 209                              | अन्यस्थानयंत्रांशदिगंशागुङ्-                          |
| देशदण्डानयसम्            |                                  | चत्तोटकादन्यस्थानस्यादां-                             |
| देशवंशामयनम्             |                                  | शानयनम् ३०५   |
| स्बेधच्छाययादिक          |                                  | देशांतरजात्युत्पत्तिः ३०५                             |
| प्रकार्श्वगंद्यानयः      |                                  | सुत्रानयनम् ३०६                                       |
|                          | H 568                            | स्वदेशेदेशान्तरज्ञानम् ३०६                            |
| <b>पकां</b> ग्रहास्प्रभा |                                  | अन्यस्थानदेशान्तरानयनम् ३०६<br>विनागणितदिक्साधनम् ३०७ |
| <b>द्याभाप</b> रिहास     | म् ३९५                           | स्वदेशाम्यदेशयोर्मध्ययोजना-                           |
|                          | ांग्रहद्शनम् २९८                 | ,   |
|                          | विद्यासम् २९८                    | नयनम् ३०८   |
|                          | रामानयमम् २९९                    | इति परमसिद्धान्ते जिम्रश्राधिका-                      |
|                          | त्यत्तिः ३९९                     | रोदशमः ॥ १० ॥   |
|                          | ानयनम् ··· ३०१<br>।नयनम् ··· ३०१ | अधयनांशपरिलेखम् ३०८                                   |
|                          | ानयनम् ३०१<br>।नयनम् ३०१         | वाधकोत्पत्तिः ३१८                                     |
|                          | 308                              | पार्श्ववासमा ३१८                                      |
|                          | ≩o≹                              | इति परमसिद्धान्ते यन्त्रांशनरिखे-                     |
| अनक्ष्यानम् .            | ३० <b>२</b>                      | एयाधिकार पृकादशः ॥ ११ ॥                               |
| अग्रानयनम्               |                                  | अथवांगोज्ञत्यानयनम् ' ३२ १                            |
|                          | <del>1</del> 03                  | चंद्रस्य वेतकुणभागयो हप-                              |
|                          | ···· ₹0₹                         | पत्तिः ३३५  |
|                          | 40\$<br>40\$                     | इति परमसिद्धान्ते <sup>2</sup> योगस्यानवना-           |
|                          | <del>20</del> 2                  | ि धिकारोद्दादशः ॥ १२ ॥.                               |
|                          | 202                              | अथचंद्रादीनांविम्बद्शंनोत्पत्तिः ३१६                  |
|                          | · ···· 408                       | रावियोजनानयनम् ३२७                                    |
| व्यस्तसंस्कारोत          | यवैत्रदिग्ज्ञान -                | अण्डोत्पत्तिः ३२९                                     |
|                          | · ···· 308                       | क्रान्तिस्थळेस्वाण्डपरिध्यान-                         |
| व्यस्तसंस्कारेवि         |                                  | यनम् *** *** ३३९                                      |
| शानच<br>चक्रमूबाहुपछदि   | 308                              | भूछायोपपत्तिः ३३०                                     |
|                          | (यमकान्या<br>पद्धेत्रानय-        | इति परमसिद्धान्ते व्ययाराम्बधिकार-                    |
|                          | 304                              | खयोदशः ॥ १३ ॥   |
|                          |                                  |   |

| परमसिद्धान्त                                   | ानुकमणिका। ११                                 |
|--|---|
|  |   |
| विषयाः पृष्ठाङ्काः                             | विषयाः . पृहाहूनः                             |
| राह्रकयुत्पानयनम् ३३१                          | प्रकाव्हन्दुग्रहणेचन्द्रस्यस्यष्टः            |
| चन्द्राकंयोःस्यूलंब्रहणसंभवा-                  | शरांशानयनम् ३४७                               |
| नयनम् ३३१                                      |   |
| दिनादिचोछनम् २३२                               | स्पंप्रहणेखायाच्छादकज्ञानम् ३४७               |
| चन्द्रशरानयनम् ३३३                             | चन्द्रग्रहणेळाचाच्छादकज्ञानम्३४८              |
| ब्रह्मणांयोगब्रहणकाळानयम् ३३४                  | ग्रासानयनम् ३४८                               |
| स्येन्दुभूभाविवविस्तारामयनं                    | स्यित्पर्धकालानयनम् ३४८                       |
| स्कमम् ३३५                                     | मर्दार्घकळानयनम् ३४९                          |
| स्थानान्तरानयनम् ३३६<br>विस्वारांगुळानयनम् ३३६ | मध्यग्रहणकाळज्ञानम् ३५०                       |
| प्रकाराञ्कक्षांडोकाण्डवृत्तम् ३३७              | स्वस्वग्रहणेस्यूळस्पर्शमोक्ष-                 |
| षकांशयोजनानयनम् ३३७                            | काळानयनम् ३५०                                 |
| स्वस्वव्यासांगुळानयनम् ३३७                     | खन्नासंस्यूळखन्नासस्पर्श्वमाक्षका-            |
| एकिसोस्ययोजनानयनम् ३३८                         | ळानयनम् ३५०                                   |
| चन्द्रकोकेशभाष्यासांगुकानय-                    | स्क्ष्मस्पर्शकालाखानयनम् ३५०                  |
| नम् ३३८  | स्पर्शस्थितिज्ञानम् ३५१                       |
| प्रकार्भ्यन्द्रश्याखांगुळानय-                  | मोक्षस्थितिज्ञानम् ३५१                        |
| नम् ३३९  | सूर्यग्रहणेड्एझानम् ३५१                       |
| प्रका०भूभाव्याखांगुळानयनम् ३३९                 | इष्टाद्वकेष्टकाळानयनम् ३५१                    |
| सुगमत्रका॰स्यैदुभ्भाविवन्या-                   | श्रेष्ठज्ञानम् ३५३                            |
| सांगुळानपतम् ३४०                               | गुप्तराधिमानानयनम् ३५३<br>अस्तकारुज्ञानम् ३५३ |
| भौमाद्निविबन्यासानयनम् ३४०                     | स्पष्टदिनमानोत्पत्तिः ३५३                     |
| भौमादीनां कोकन्यासार्धया-                      | ताराणांसुर्यस्यापि ३५४                        |
| जनानयनम् ३४०                                   | संदानांस्वस्फुटदिनार्थदिनमा-                  |
| स्येंदुभूभाभौमादिनांस्पष्टांव-                 | नास्वग्रप्ताद्वाधस्यस्वग्रप्त-                |
| वन्यासांगुङानयनम् ३४२                          | दिनमानस्यन्युनाधिक-                           |
| सत्यवेगानयनम् ३४३<br>कानयतरकरणकमः ३४४          | हानस् ::: ३५४                                 |
| सूर्यग्रहणे चन्द्रस्यस्पष्टशरांशा-             | रात्रिज्ञानम् ३५५                             |
| सयनम् ३३४                                      | अदिकन्नानयनम् ३५५                             |
| स्यंग्रहणे प्रकाण्तचंद्रशराः                   | ययायोग्यवेगहानंचाक्रयवेगहा                    |
| शान्यनम् ३४५                                   | मंचाः ३५५                                     |
| स्र्वप्रहणेइष्टकाकान्तयुपपत्तिः ३४६            | यथोचितेष्टानयनम् ३५५                          |
| चन्द्रग्रहणेचन्द्रस्यस्पष्टशरां-               | चरज्ञातिज्ञानम् ३५५                           |
| शानयनम् ३४७                                    |   |

| १२ परमसिद्धाः                                   | न्तानुक्रमणिका ।                       |
|---|--|
| •   | . •                                    |
| विषयाः प्रश्रह्माः                              | विषयाः - पृष्ठाङ्का                    |
| ययोचितेष्टग्रहणस्थानवानम् ३५६                   | तळयोजनानयनम् ३६८                       |
| यथोचितदशान्तनयनम् ३५६                           | अंशासुत्कांत्यानयनम् ३६८:              |
| यधोचितेष्टात्सावनेष्टानयनम् ३५६                 | छाद्यवृत्तज्ञानम् ३६८                  |
| मध्यभानयनम् ३५६                                 | छादकपुत्तज्ञानम् ३६९                   |
| स्वम्बनाभावकारणज्ञानम् ३५७                      | नरानयनम् ३६९                           |
| स्पष्टवृशान्तकारणज्ञातम् ३५७                    | मुजानयनम् ' ३६९                        |
| सुरमञ्चनावनत्योर्ज्ञानस्च-                      | काल्युरकान्तिसूचकम् ३७०                |
| कम् ३५८   | उत्केरानयनम् ३७०                       |
| स्यूछलंबनानयमम् ३५८                             | भन्दानयसम् ३७०                         |
| मध्यमळंवनानयनम् ३५९<br>एकांशयोजनामयनम् ३५९      | द्वंगानयनम् ३७१                        |
| दक्षांन्तेचन्द्रोदयज्ञानम् ३५९                  | 9                                      |
| ब्राह्मस्यनतदण्डवंशानयनम् ३६०                   | स्तम्भानयनम् ३७१<br>अक्षयोजनानयनम् ३७१ |
| . छाद्यद्ण्डवंशानयनम् ३६०                       | क्रान्तिदिक्फळानयनम् ३७१               |
| रवरात्रीस्वनतङ्गानम् ३६०                        |  |
| दर्शान्तेचन्द्रार्कनतात्पात्तिः ३६०             |  |
| दण्डवंशदज्ञानंदण्डवंशा-                         | बरक्रांतिदिक्फलानयनम् ३७२              |
| न्यनंच ३६१                                      | गुणानयनम् ३७३                          |
| योजनकळानयमम् १६२                                | वहुणानयनम् ३७३                         |
| वीरानयनम् ३६२                                   | भीमानयनम् १७३                          |
| परानयनम् ३६३                                    | रीत्यन्तरेणभीमानयनम् ३७३               |
| स्वानयमम् २६२                                   | मुञ्जानयनम् ३७३                        |
| शालानयनम् २६३                                   | नालासंत्पत्तिः ३७३                     |
| भन्पशालानयसम् ···· २६३<br>मतानयनम् ··· ·· : ३६३ | भ्रहवेधानयनम् २७५                      |
| इष्टानयनम् ३६४                                  |  |
| मध्यलम्बनानयनम् ३६४                             | नम् ३७५                                |
| नत्यानयनम् ३६५                                  |  |
| दृरानयनम् ३६५                                   | क्सूचानयनम् ••• ३७५                    |
| स्पष्टनत्यानयनम् ३६५                            | इक्सूबासुपर्यतिः ३७५                   |
| मुसळानयनम् २६६                                  | शिव्रानयनम् ३७६                        |
| पुन्बदुनांशान्यनम् ३६७                          | कामानयनम् ३७६                          |
| भूवेधयोजनानयनम् ३६८                             | छत्रानयनम् ३७                          |
|   |  |

पुराद्धाः विषया: भीमस्तंभाभ्यांदृग्यतेर्भोग्याभी-ग्रहणपुसुरुमपरिलखविधिः ....३९० म्यकाळहानम् .... ३७७ पूर्वापरान्वरोचितच्छाखाच्छा-छबाद्दग्यतेभींग्यगतकालज्ञा-दकग्रहस्पष्टरीविः--- --- ३९० पूर्वपश्चिमान्तरांशानयनम् ... ३९१ 平野.... .... 396 .योगान्तरकरणज्ञानम् ---- 306 स्यंत्रहणस्पष्टपूर्वपश्चिमान्तरां-छवाद्वचक्तेष्टकाळानयनम् .... ३७८ ग्रळानयमम् \*\*\* \*\*\*\* 348 व्यक्तेष्टाइग्योगकाळानयनम्.... ३७९ इप्रयासानयनम .... ३९१ स्यूलहर्ग्योगास्यसम्... .... ३७९ इष्टग्रासात्पूर्वापरान्तरानयनम् ३९३ पूर्णलम्बनकालानयनम् .... ३८० चंद्रग्रहणेपरिलेखविधिः .... ३९३ इप्रज्वनज्ञानम् .... ३८० सर्यग्रहणेपारेलेखविधिः .... ३९३ इष्टळाचच्छादकयोर्मध्यमाचान-भौमाविग्रहणेपरिकेखविधिः....३९३ यनसम्बद्धमः •••• --- 368 त्रहणेशरज्याखयोजीतिज्ञानम् ३९४ खाद्याच्छावकोस्पत्तिः .... ३८१ विश्वदिग्नानंस्यांदित्रहाणाम् ३९४ लम्बनीयबालनम् .... ३८१ श्रासयोजनानयनम् .... ३९६ लम्बनावनस्योः कारणज्ञानम् ३८२ वृत्तकणंज्ञानम् '... ३९६ विष्वत्हंदसमागांनयनम् .... ३८३ इति परमसिद्धान्ते महपाधिकारे-चन्द्रग्रहणेचन्द्रशरीत्पत्तिः ३८४ चतर्रतः ॥ १४ ॥ ं चन्द्रप्रहणस्पश्मीक्षदिग्द-शोत्पत्तिः .... .... ३८४ अध्यद्वापातानयनम् .... 398 • सर्यप्रहणेस्पर्शमोसदिग्भागदे-चन्द्रायनज्ञानम् .... ३९७ ब्रोपपत्तिः ... ... ३८५ पातनामज्ञानम् .... .... 396 श्रीव्रमन्द्ञ्छादकग्रहणे स्पर्श-पाताभावज्ञानम् .... .... 396 मोक्षडिग्ज्ञानोत्पत्तिः .... १८५ पातसध्यकाळानयनम .... 399 विन्वेतरकाछदिग्हानम् .... ३८६ पातस्पर्शपातमोक्षानयनम् .... ४०० नतिद्यम्बनसंस्कारोपपत्तिः.... ३८७ संक्रमपुण्यकाळातयनम् .... ४०१ चन्द्राकंग्रहणयोर्वर्णज्ञानमः ३८७ इति परमसिद्धान्ते पातकेगा-भौमादिग्रहणवर्णञ्चानम् .... ३८७ · विकारः पत्रद्धाः i ३५॥ . प्रहणज्ञामम् .... .... ३८७ . सर्यप्रहणेप्रासदर्शनयक्तिः .... ३८८ अषयंत्राधिकारः .... ४०१ चन्द्रग्रहणेस्पृष्ठपरिक्रेखविधिः ३८८ सप्तव्यवंत्रम्... ... ४०३ सर्वग्रहणेस्वळपरिकेखविधिः ३८९ रात्रिगतकाळज्ञानम्.... .... ४०३ मीमादिग्रहणे सालपरिलेख-अञ्चातकोदिमानानयनमः .... ४०४ मापकयंत्रम् .... .... ४०५ See 380

| १५ प                             | रमसिद्धान्त       | ानुक्रमणिका। ·                    | 1 |
|----------------------------------|-------------------|-----------------------------------|---|
| विषया:                           | প্রাকুত:          | विषयाः पुराङ्काः                  |   |
| <b>प्र</b> कारास्तरेणमापकयंत्रस  | 860               | औच्यवेधात्वेटच्छायानयनम् ४३३      |   |
| कर्णाकारभूमीकोटिभुजान            |                   | त्ररीयर्ववयंत्रांश्वानम् ४३३      |   |
| विनायंत्रंजगम्यागम्दमान          |                   | त्ररीययंत्रेणस्वदिगंबाः दिक्सा-   |   |
| पर्वतमानानयनम्                   |                   | धनम् ४३४                          |   |
| प्रसारगम्यागम्यमानानय            |                   | भारयुक्तवनिर्माणम् ४३५            | • |
| रुदाहरणम्                        | 884               | स्वष्टाशासंस्थपदार्थस्यमध्य-      |   |
| स्वादायस्यानेश्रस्यक्षांगुल      | ानय- ।            | भागदर्शनयुक्तिः ४३५               |   |
| सम्                              |                   | स्वाभाडामिश्राक्षपासस्वच्छा-      |   |
| सुक्षांशज्ञानम्                  |                   | यावृद्धिपरकपालकालज्ञानम् ४३६      |   |
| समभूकरणरातिः                     |                   | दण्डच्छाययात्रिनामंडळाँचना-       |   |
| प्रका॰समभुकरणरीतिः               |                   | तुरीययंत्रणविनाचक्रयंदेणहि-       |   |
| <b>सरीवयं</b> त्रेणसमभकरणर्र     |                   | क्साधनम् १३७                      |   |
| समभागविषमभागकानम                 | 288 2             | चापञ्याज्ञाक्तियंत्रम् ४३९        |   |
| मत्स्ययंत्रेणदिक्साधनम्          |                   | चापण्याशक्तिदांशकयंत्रम् ४४१      |   |
| शंक्रयंत्रज्ञासम्                |                   | क्रमप्रवाहयंत्रम् ४४३             |   |
| स्वदेहशेकुज्ञानम्                | 853               | पद्यांशाकरयंत्रविभिः ४४३          | • |
| प्यदण्डयंत्रात्समार्थसम          |                   | यंत्रनलेसुत्राद्विष्टनयुक्तिः ४४४ |   |
| स्त्वेष्टदेशभागशंकोःस्           |                   | स्वतोवहनवंधनशांतिः ४४६            |   |
| च्छायात्रयतम्                    |                   | स्वश्चनयासर्वकाळश्चमक्रवहु-       |   |
| द्वादशांगु छशको छ। यान           | यनम् ४१५          | विधयंत्रम् ४४६                    |   |
| यदीयंत्रज्ञानम्                  | yeş               | दूरदर्शकयंत्रम् ' ४४९             |   |
| दण्डयन्त्रणनाभाभागानय            | तम् ।             | वृत्तश्राचकयनम् : ४५९             |   |
| र्शक्तस्यार्थल्यानयनस            | [ ]               | सर्वशिल्पार्थदंचक्रयन्त्रम् ४५०   |   |
| यंत्रांशकोट्यंशानामय             | ग्रेंब्रतयंत्रां- | अरुपुंबुशक्तियंत्रम् १५०          |   |
| हानिस्याधीनयनम् ।                | यंत्रांज्ञा-      | ज्योतिःशाक्तिप्रद्यंत्रम् ४५१     |   |
| माम <b>र्थाञ्च</b> तर्थत्रोशानां | यार्थानयनम्       | पिष्टकारकयंत्रविधिः ४५१           |   |
| स्बेष्टेतदग्रहच्छायान            |                   | . केवलदावकुंडस्पतथाकेवला-         |   |
|                                  | ··· 85C           | स्थिकंडस्य स्वसंधिस्या-           |   |
| सुरीययंत्रेण यंत्रांशङ्गानम      |                   | नेषुविभागकरणयुक्तिः ४५४           |   |
| शुकुल्यार्थाशकहानम               | ŢΙ                | प्रस्तरादीनांविभागकरणयुक्तिः४५४   |   |
| शंङ्ककायभागद्वान                 | म् ४२८            | अंगारङ्कातम् ४५५                  |   |
| क्रोणप्रद्यंत्रविधानम्           |                   | श्र्राज्ञानम् ४५५                 |   |
| भृत्यत्रविधिः                    |                   | कणचूर्णकरणयुक्तः ४५५              |   |
| दण्डस्त्रणताराखेटप्रभ            |                   | संडोचितप्रस्तरस्यखंडकरण-          |   |
| नम्                              | · ···· 833        | ्र युक्तिः ४५६                    |   |
|                                  |                   |                                   |   |

### तारापातोत्पत्तिः मङ्गलाचरणम् .... १६९ --- \*\*\*\* इति परमसिद्धान्ते निश्चवायिकारः . इन्द्रचापोत्पत्तिः \$38 .... \*\*\*\* सत्रद्धाः ॥ १७ ॥ परिवेषोत्यतिः • £38 ....

.... .... ¥€0

विषयाः

विद्यदृस्पुस्पत्तिः

कंपोरनिपूर्वकम् .... ४५७

दिग्दाहारुणव्यामोत्पत्तिः .... ४६०ं

मळजावाइयुत्पत्तिः .... १६०

स्वर्गगोत्पत्तिः... ... ४६१

केत्रवारोत्निः .... ४६१

उल्कापातीत्पत्तिः .... धरश

इति परमसिद्धान्ते वंत्राधिकारः

गेटसः ॥ १६॥

परमसिद्धान्तानुकमणिका ।

इति परमसिद्धान्तानुकमणिका समाप्ता ।

विषयाः . .

भूमेः स्थिरत्वनिश्चयः

मरवक्षांग्रळभ्योबिम्बब्यास-

चन्द्रसर्वयोविवञ्यासयोजना-

इस्तानयनम् .... १६७

नानवनम् .... .... ४६८

नयमम् । ळोकव्यासाधयोज-

भूमिगोलत्वनिश्वयः.... .... ४६८

अर्थदेशज्ञानम् .... ४७०

इति परमसिद्धान्ते देशहानं

समासम् ।

पृष्ठाङ्काः अयग्रहनिश्चयक्रमः .... '.... ४६४

### ज्योतिषश्रंथाः । २५८ छीछावती सान्वय भाषाधिकाजत्युत्तम २५९ वृहच्चातकस्योक # ..... २६० वृह्ह्ञातकमहीधरकृतभाषायीका अत्युत्तम २६१ वर्षदीपकपंत्रीमार्ग वर्षजन्मपत्र वनानेका २६२ महर्चीचतामणि प्रमिताक्षरा रफ र.१ ग्लेज् २६३ सहर्त्ताचितामणि पीयूषघारा टीका ...... ३-० २६४ ताजिकनीएकंठीसटीकतंत्रत्रयात्मक .... १-४ " २६५ ताजिकनीछकण्ठी तंत्रत्रयात्मक महीथरकत भा॰टीका अत्यत्तम देवकी छपी ..... १-८ २६६ ज्योतिपसार भाषाठीकासहित ..... २६७ सहर्चीचतामणिमापाटीका महीधरक्रत.... २६८ मानसागरीपद्वति #..... २६९ बाछवोधञ्योतिष------२७० ग्रहलाघव सटीक 🜣 ..... २७१ चमत्कारचितामणि माषाटीका ...... २७२ नातकार्छकारभाषाठीका ...... ९७५ प्रश्नचंडेश्वर भाषाठीका ..... २७६ लघुपाराञ्चारी भाषाठीका अन्वय सहित --- ०-३ २७७ सहर्त्तगणपति क्षः...... २७८ सहर्त्तमार्चंड ..... पुस्तक मिलनेका ठिकाना-खेयराज श्रीकृष्णदासः " श्रीवेंकटेश्वरः" छापासाना-

843

त्र्यथायनांद्रान्यनम् भनवन्त्रम्

स्राधारम्भक्षणाद्यात्वसरान्यसम्बद्धणेः भक्ता स्यादम्बरन्यप्रफलां यन्सुमितंपथम् १३३सृष्ट

तिभिभिस्वदेवाक्यसमितेस्तयाः १३४ यातोः

त्वतः सृष्ट्या रम्भतो गतवत्सरा देशिकाः स्व

यमार्थे क्षेत्राद्वयवसंयुताः १२५ त्यत्वत्वेदिहता वन्त्रपूर्व भाषस्यात्तती त्युद्धपूर्वकम् स्वर्णिक् जायतेतस्

ग्रह्मान्त्रता त्यः जपूर्वकम् स्वर्षिक् जायत्तर्यः इत्याद्यन्यहितम् १३६ कत्यातद्रतुभागाः स् ध्रात्यसम्बद्धाः द्याद्यसम्बद्धाः

क्त्रसम्मणीयकाः तात्रमाधिकाः १३७ व्याश्य प्रसान्तरे गायनोद्याः

त्र्यूयपसान्तरे एायनाशाः गुह्नीयं दर्यक्षपद्पञ्चताने युक्तं गुणुं भवेत् रवा बाह्माः

आष्टाब्ध्याभिहेलागुणतं भूदिनैभेजेत् १३० व्यापादेकम् । अवापादेकम् । अब्धः भागमुखनागुण्यन्यस्ये स्तुत्रोषितम् वे

बाएंभ्यं त्र्यत्योर्डस्वर्णपूर्वापरंभवेत् १३५ तद्भा

१४० तन्नागा भार्क्तावे-श्लेषान्मार्गमंत्रामुख भवेत् । राशिन्त्रऋस्य भागीनास्म

वेगजाः १४५ भानिश्चन्याऽ स्वस्थानगाः स्मृताः तेस्वस्वस्थान तोभानिपूर्वमार्गीदाकोान्मितैः १४६ चके पूर्वस्थि-

ताः मोक्ताः पश्चात्प्रष्ठपथा राकैः सूर्योदयाऽस्तयोर्गध्यक्षिप्तादिनमुदीरितम् १४७

## श्रथपरमसिद्धान्तः प्रारभ्यते. ३७ श्रीगणेत्रायनमः दत्तीवक्राननं नर्त्वा गणेत्रादेवः वान्दितम् श्रेष्ठंपरमसिद्धान्तं करोमि मनन प्रियम् १ यज्ञा वेदोदिताः यस्मात्स्युर्यज्ञाः समयाश्रयात् त-त्काळंज्योतिषाधीनंबेदाङ्गंज्योतिषंततः २ दाब्द्शाः स्त्रं मुखंतस्यत बोबोज्योतिषंमतम् निरुक्तं अवएात-स्यकलांवेदकशीमतं ३ शिक्षातन्नासिकाङ्गेयांछन्द स्पादइयंमतम् हीनं नेत्रेइयंयस्य कर्णादीः किंपरा-कमम् ४ भवत्यऽस्माह्विजःपूर्वज्योतिषंप्रपठेत्त्वः छ तल्थ्याभिजवेदायं शास्त्रंतदशिकंपठेत् ५ गणितेमा अस्तिलंकर्ममात्रम अस्तियतस्ततः स्त्रस्मि-न्यरमसिद्धान्ते वच्य्यादौगणितांशकम् ६ त्र्यथपरिभाषा. गुञ्जासिः पंचाभिमाषिते भूषैः कषिमीरितं माषेवीदाँनि तैः सांगात द्वयं कोलं मुच्यते ७ कर्षो मितसुवर्ण

परम सिद्धान्ते

सुवर्णसंमुदीरितम् कषैवेदेंमितैलेकिपर्लम् नाविच क्षरोः ८ गुद्धाभिः पड्नहै छंक सेटेतेः वर्रपविर्मतस्

भूपात्रांसेटकस्येवषट्टंकं समुदीरितम् ९ सेटै: ए-चोनितेस्तोल्येपाइते धीर्टका स्मृता पुन्यपेद् मितैः सेटैक्त चोल्येमण्यीशितम् १० रोव्यंटंकं मित्दुम्मं-निष्कंतन्मितहाटकम् सील्ये भूपपरी ईर्म्यते पूरीनि

ब्कंभीरितम् ११ त्र्यष्टभिस्त् डुलैगुर्ञ्जा गुञ्जाऽर्द्धवर्क मुच्यते त्रिगुँद्धांबर्छमारव्यातं तैरहें धर्शांच्यते १२ भार्नुभिर्मुष्टिभिर्मानं तहेदैः प्रस्थेज्यते तैर्पूर्वेश्यो-

दितंद्रोर्एतं द्रूपैः रवारिका भवेत् १३ ऋजी छर्यु छिभि

क्तैर्केस्तर्यंकुडवोच्यते तेवेंदेर्नाठिकाताभिरं एवि रार्ढकोच्यते १४ तद्युगैर्भारभारज्यातं तत्पीडायीचकी-र्चिता ऋष्टभिस्तिर्रुविस्तारैर्धवविस्तीरमीरितं १५ त्र्यष्टभिर्यविक्तारैरंशुर्लेव्यासमीरितम् तैर्देदाँश्वित् मैईस्तदैर्घ्यहस्तमुदीरितम् १६ इत्थमंगुरुविस्ताः रमंगुळंसमुदीस्तिम् हस्तैवेदं मितैदं एंडं इस्तैरऽ अ

योगान्दकरणम्

स्तरंतारमें: १७ कोर्जाः स्वात्कोशयुर्मेनुगन्यूति परि-कीर्पतार्थानं वास्त्रिक्षिक्षे कोर्जीवर्याः स्वाद्यिभिः क रैः १८ क्षेत्रवेत् वुर्वे पतुर्वे निवद् कीर्तिनं वुर्धेः विका रेह्येकहर्त्ताः स्वाद्दे धर्मेचैकंकरस्तया १९ वेधेत्वेकंक रस्तम् ह्येकहर्त्तां प्रभोन्यावे एकहरूत्तपनो भाण्डोम-गर्धस्वारिका भवेत् २० प्रसिद्धालीकतो होग्यारिमा वाययोचिता इतिपरिभाषाः

त्र्यथांकसख्यासं<u>ज्ञा</u>

एको देश शत आश्र थे सहस्र स्वर्ड्य स्थाप २१ एको देश शत आश्र थे सहस्र स्वर्ड्य स्थाप श्रक्त का स्वर्ण स्वर्थ अतिस्वर्थ अस्ति प्रशासक स्वर्थ अस्ति अस्ति स्वर्ण स्वर्थ अस्ति अस्ति स्वर्ण स्वर्थ अस्ति अस्ति स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्य स्वर्ण स्वर्ण स्वर्य स्वर्य स्

त्र्यथयोगात्तरकर्णम्

योगोऽन्तरंयथास्थानंऋमाहोत्क्रमतो भवेत् उदा-इरएाम् - द्दी पंचेदादेशे शती नायोगंतदऽर्हती परम सिद्धान्ते

न्द्रीनंबद न्यासः १०।५।१२।१०० एषां योगेजातम्

१२७ इदमयुताद्धीनेजातं ५८७३ .

**ऋथ गुरानम्** गुरो नोत्सारिते नैव हेन्याहुर्यक्रमोत्क्रमात् २४ स्तेच्छयागुए।स्वण्डैर्वाहत्सागुएवं पृथक् पृथक् तदै-क्यंवाभवेद्गक्तोगुएाः शुह्यतियेनच २५ तेनस्रब्ध्या चत दुएचंहत्वातज्जायतेथवा स्थानस्थैर्गुणकस्यै-वहा ह्वे ईत्वापृथक् पृथक् २६ गुएयंकत्वायथास्थाः न मैक्यंतज्ज्ञायतेथवा इत्वागुएयं गुऐानैवहीष्टोनाढ्ये नतरुलम् २७ इष्टेनगुणितंयुएयंयुक्ताहित्वातुः दाभवेत् उदाहरएाम् — पंचार्करविभिर्हत्वातद्भा-नुभिर्भिक्तावद न्यासः गुएषः १२५ गुएाकः १२ गु-एोनोत्सारितेनेतिकृतेजातं १५०० श्र्यथवा गुएास-

ण्डे कृते ५७ व्याभ्यां पृथक् गुँधये गुरिते युनेचना तंतदेव १५०० त्र्यथवा गुएाक श्वर्तुं भिर्मकोलब्धं ३ एभिऋतुँ भिश्च गुण्येगुणितेजातंतदेव १५०० खा

थवास्थानविभागेरवएडे १।२ त्र्याभ्यांपृथरगुरिये गु-शितेयथास्थानयुतेचजातंतदेव १५०० त्र्यथवा चतुँ रूनेन ८ गुऐन चतुर्भिश्वॅपृथक् गुएये गुरीतेयुतेच-जातंतदेव १५०० त्र्यथवाद्विसत्तेनगुरोन १४ गुरुँपे

गुणिते द्विशेणित शुण्यहीनेच जातंतदेव १५०० इति-गुणुनप्रकारः ग्राथभागहारविधिः उहा छेदः गुद्धवति भाज्या<u>ऽ</u> न्याद्यद्वुएस्तत्फलं भवेत् २८ केनामवर्त्यत्त्वेन छि.झान्यो सम्भवे भनेत् जदाहरणं-न्यासः भाज्यः १५०० भाजकः १२ भजनाञ्चव्योगुर्यः १२५ त्र्यथवा भाज्यहारीत्रिभरऽपवर्निती ५०० चर्तु र्भिर्चा <u>३७५</u> षड्विची <u>२५०</u> स्वस्वहारभक्ताः फलेत देव १२५ वर्गरीतिः - स्वेद्रावर्गीच्यते घनरीतिः वर्गी

मूख घरत घनो भवेत् २८ वर्गोदाहरूएाम् – नर्वानां विश्वतृल्यानां त्र्यष्टांकरामाष्ट्रामं पंचा श्रेकरवेत्रेयेका एां**व**गन्विद् न्यासः ५।१३।३५८ । १०००१०५ एषां यथोक्तकरुऐनजाताः वर्गाः ८९ ।१६८ । १५८४ ०४।

परम सिद्धाने

१०००२१०० ११०२५ पुनर्धनरीतिः तृत्यरात्रित्र-यवधंगीयतेत हुनंदुधैः पुनर्वर्गरीतिः तुत्यरा स्योस्तु यहातंतहर्गपरिकीत्तितं ३० स्वोर्डस्थाप्या ५न्त्यव-र्गल्ल हि हो। उन्स्र हान्त था उपरान् पीत्वाँ उन्त्यन्तुततो त्सार्यदेसचेकस्थेलाऽन्तरे ३१ इत्यंराज्यंऽकपर्यः नंकवास्यानचुँतिः कृतिः प्रकारान्तरेणधनरीतिः

स्थाप्पाऽन्त्यस्य घनंचाऽन्त्यवर्गेत्र्यौर्घोह्नतंन्यसेत् ३२ एकर्त्थलाऽन्तरेदक्षेत्वादिवगिऽन्ययोविधं त्र्यौहतंत न्यसेहं से ऋषदेशाऽन्तरेतथा ३३ स्थानेत्वीविधनं देंसेचैकदेशाऽन्तरेन्यसेत् तद्यथास्थानसंस्थानां-योगंतत्र वनं भवेत् ३४ इत्थमेव त्रिदेशादिर जायते धनंम् त्रिवतः पूर्वराद्यादाव र न्यंतदासका रेत् ३५ धनोदाहरणम् एकादीनांनवान्तानांतथा नवधनस्यतथापंचाब्धियानां घनान्वद न्यासः १।२

शक्षापाद्दाणाद्दापायर्थारण्डम एषां ऋसे-एक्तिताः घनाः १।८।२७।६४।१२५।२१६।३४३

षत्र । १८० ४२०४८ : १२०६८ इहर ४३६२५ स्रमदितीय प्रकारेपानवसन सन् पर्वोकाः १११३२४८ एषायोगनवसन ७२५ सन् ३८०४२०४८ : १९४५६

# व्यव्यवर्गमूलकमः

सन्काऽन्योजार्क्तिर्देष्ठेष्ठेनाप्रसमं फलम् युल पन्कीक्षिक्षयन्तर्माचीजनस्त्यजेन् १६ स्यान्युलंब युनिह्मिष्टेनाप्तसमंत्रिति उदाहरणस्- पूर्ववर्गाणां सूल्यार्यासः ८१।१६८।१५८४०४।१०००२१००-११०२५ क्रमेणाळ्यानिस्लानि १।११।११९१००००००, ब्याय्यचनसूलक्रमः प्रान्यमेनद्वेऽ घने चैवं हिलाचाऽन्त्य घनाह्नमम् ३७ए थक् मूलेनस्त्र प्रेने चैवं हिलाचाऽन्त्य घनाह्नमम् ३७ए थक् मूलेनस्त्र प्रेने चैवं हिलाचाऽन्त्य घनाह्नमम् ३७ए चर्चान्यसेसुक्षयर्नीज्यन्त्याहनंत्रजेन् ३८ भानितावा चतस्याद्याह्ननाहिलाघनंपदं स्त्रान्य पृथङ्कृत्य

प्राग्विञ्चेदिति उदाहरए।स्-पूर्वधनानांमुलार्थेन्यासः

परमसिद्धान्ते

१।८।२७।६४।१२५।२१६।३४३।५१२।७२९। ३८७४२०४८*५*।२०६८३६४३६२*५* ऋमेणास-ब्यानिसूल्यानि १।२।३।४।५।६।७।८।५।७२५ ।३७४५. ऋथभिन्नपरिकर्म्माष्ट्रकस् त्रत्रादौभिन्नयोगान्तरविधिः त्र्प्रहारेस्थापयेदेकहाः रंतद्भिकर्म्मिए। ४० भिक्तयोगान्तरेन्योन्यंराशी-

नामु भयोस्तथा हारांशी भाजकेन धीरवस्वहारांश कविना ४१ तुब्यछेदाः समछेदौ स्युः स्यातां सम्भवे-सति त्र्यात्मितैर्श्यिताभ्यांवाहारैन्छिज्ञाञ्चमर्हिती

४२ स्वांशंहारंविनाहारभागावेवपरस्परम् वाबहूनां इयोत्सुत्यहारान्तस्यहराविति ४३ तुत्यहारांत्राका चातुत्त्यहारांदायोस्तथा संयोगंवान्तरं कत्वाहारा संवत्फलं भवेत् ४४ तुल्यछेदविधीहारघातंस्वस्व-हरोद्धतम् स्वांश्रघं स्वस्व भागंतु परहार घ्रवद्भवेत् ४५ तत्रैक्यंवान्तरंहारघाता प्रंतत्फलं भवेत् उदा-हरणम्- पंचांत्रात्र्यंत्रायुग्रामंतथापादार्ज्जीनरंवद

ई ने उक्तवकरणाज्जाताः समछेदाः <sup>नु</sup>ष नेष ४५ एः षांयोभेजातं पर्वे हरभक्तेजातम् १५ न्यासः है रैऋ नयोरन्तरेजातं है .

त्र्यथभिन्नगुए।नविधिः

द्विद्वाताप्तंचांशवधंस्याद्भिसगुएा नेफलम् ४६ उदा-हरणम्- सत्र्यंत्रोनैकेनाहतं सार्द्धदलेन प्रांत्रारंवद न्यासः ३ १३ सवर्शितेन्यासः 🖁 ३ गुणितेजातं १२ इ. हरभक्ते जातं २ न्यासः २ ने गुणितेजातं देह-रभक्तेलब्धं २५

ऋथभिक्रभागहारविधिः

परिवर्त्त्योदाकंहारं हारस्याधीवधीद्वृतम् ऊर्ध्वधातंफः लंभिनेभागहारविधीभवेत् ४७ उदाहरएां- सन्यं त्रीकोद्धतंयुग्मंतथास्वाश्विपादांशकमद्वीद्भृतंवद. न्यासः 🖫 दे भाज्यः दे भाजकः 🖁 भजनाञ्जबधी-लब्धिः र न्यासः भाज्यः है भाजकः र भजनालुब्धं

परम सिद्धान्ते ग्राध्यागांत्रांत्रविधिः धिद्वातासंचांत्रावधमंशांत्राांत्राफलं भवेत् उदाहरणः म्-निकस्पार्दस्यव्यंशस्ययुग्यपादांशकोवदुस्त ष्टानांषोडशांशंचलेकस्याद्धीदृतंबद न्यासः १ २ ३ ष्टे उक्तवज्ञातं की न्यासन्ह हैसवर्णितेजातं १६० हर मक्तेजातं १० ऋषियिन्नवर्गादिविधिः वनेकि वनीवगीपिदे प्राग्वद्शांशयोः ४८ उदाहर-एम् - सन्यंत्रीकस्यवर्गेतसदंतद्दनंतन्यूलंब्रूहिन्या-सः है वर्गः है मूलं है ऋस्यधनं हैं तन्यूलें हैं श्चयस्व भागानुबंधस्वांशापवाहयोर्विधिरुच्यते. स्वांशाळ्गेनेलधःस्थेनहारंहन्याद्वरेणच स्वांशाळ्यो नेनते नांशान् इन्यात्तत्यात्सवर्षितः ४५ उदाहरणं-त्र्यं विर्निजार्ड् संयुक्त स्त चरचित्रवानितोच्यतां यु म्मपंचांशी निजाष्ट्रमांशीनीततः स्वचतुर्भिः सप्तमां-दौर्हीनौषद श्राईनिजाक्षाष्ट्रां युक्तं विकाधिही-न मुच्यताम् न्यासः 🖠 🎍 सवर्शिता जाताः

६ २१ . हर्षः ऋथापरोदाहरणम् एकस्यरुडां-

राकेनोनेनैकचुतुः षष्ट्यंराकेननिजे नहीनसप्ति मुच्यतांन्यासः <mark>'द</mark>्दे यथोचितकर्णायन्यासः

दूर ११ यथो- देर ११ वितंन्यासः १ विशितेजातम् ७०३ श्राथान्य द् ७११ दाहरएां-

निजसाई तृतीयांशोनखांकंवद न्यासः वि यथोचितं न्यासा व उक्तवत्सविर्णितं जातं है र

व ग्रन्यद्दा है हरराम् निजसाई तृतीयात्री-नयुग्मान्येनहीनंखांकंवद न्यासः दे दे ययात्र

युग्मंहीनं पृथक्रस्थाप्यउक्तवला 🔓 🤻 वर्शितं जातं १५ हरभक्तालुब्धम् १५ सुम्मपृथक्रश्याधि नंहित्वाजातम् १३

न्त्रथशू-यपरिकर्माष्ट्रकम् खद्यंखोनंसमंखस्यवर्गदौखंखभाजितः राजिः श्रुन्यहरोझेयोखाः खंजायतेथवा ५० श्रुन्यहा-

रेखनिप्रश्चचिंत्यंशेषविधाविति यत्रनास्तिहरेतः

त्रज्ञेपश्चयहरंबुधैः ५१ तत्रैविवयसेदेकंछेदंश्च यहरस्थे एवमेवगुणाभावेश्चयंगुणकमुच्यते ५२ तत्रश्चयुणस्थानेगुणमेकंवुविन्यसेत् उदाः

५२ तत्रशूचगुणस्थानेगुणमेकनुविन्यसेत् उदा-हरणम् — रूपहीनंचरूपादश्यंस्व वर्गचतत्पदस् धनंघनपदंखस्यस्व घः पंचीन्सितंवद् पक्षंरवेनो-खतंब्रहित्व घः स्वार्दसमास्वतः पक्षायंग्वस्ततः

दृतब्रूहिरव् प्रः स्वार्द्धसमन्तिः पश्चायस्त्रतः र्कजातकस्तत्समुच्यताम् न्यासः ० एतदेकहीनं जातम् १।० एकयुतजातं १ सस्यवर्गे० मूळं०

जातम् १० एक धुतजात् १ खस्यवंगः भूकः धननमूळं न्यासः ५एतेखेन गुणिताः जाताः ० न्यासः ५ एतीख भक्ती ५ यदज्ञाती राशिस्तस्य गुणः स्तार्दे भेगः ५ गणकः २ द्वारं भरते दरसम् ६

२ एनास्व भक्ता २ यवज्ञाताराशिस्तस्यगुराः स्वार्ज्जक्षेपः २ गुराकः २ हार भूत्यः दृश्यम् ६ ततोवस्थमारोनविलोमविधिना इष्टकर्म्मणावाः रुक्षोराशिः २ इति भूत्यपरिकर्माष्टकम् अध्ययस्तिविधिरुच्यते

अयथ सावावरूचा. गुण भाजकबोर्वर्गम्ह्योत्सर्णवोर्मियः ५३ व्य-स्तंकलाहितहृश्येपापाग्निर्जायते खलु स्वादाा- द्योनेतुभागादयेनो हरस्तु हरो भवेत् ५४ भागस्त विकतः कार्योच्यस्तेतच्छेष मुक्तवत् अदाहरएाम् यः

विरुतः काय्ययस्ति चित्र भक्तः तत्त्वादीन स्त्रामीने जयुम्मचर्णानित स्त्रिभक्तः तत्त्वादीन स्तस्यवर्गस्तवियुक्तस्तत्वदे भक्तिकथ्यमेकं चेवः थमवद् न्यासः गुणः ३ क्षेपः छ भाजकः ३ कारां १ वर्ग धनं २ मृह्यहरः २ दृश्यम् १ व्यस्तेनययोक्त

धमवद न्यासः गुणः १ क्षेपः है भाजकः १ न्यः १ वर्गे धमं १ मूलंहरः १ दश्यम् १ व्यक्तेनयः करऐोन प्राधाशिजीतम् इ न्याथधनएऐपरिकर्माधकम् तत्रोधिविच्चनाक्राणीसक्ष्रं ज्ञेयम् ऋएषोधिनः गयोगेस्यादिवरेन्तरम् ५५ धनएपियोधिवर्ये

तत्रोधिकचुनाक्रएषिक्कं त्रेयम् ऋएषोधीनयोयीं गंधोमेस्याद्वियरेन्तरम् ५५ धनार्पयोध्वयिक्ष्रेयेषो गंधोमेन्तरम्भवेत् ऋएषोधनयोधीतं धनस्याद्वतः नंधनम् ५६ स्याद्दणस्यर्पयोधीतं स्वर्णयोभीनयं स्वयम् उदाहरएष्म्- युम्मतक्रयोधीनयोस्तयाऋ-एषोचीमंचान्तरं धातं धातादुष्यभक्तात्मकलवर् न्यासः २१६ योगंट त्र्यन्तरं ४ वधं १२ गुएभ-क्ताखुन्धं ६१२ न्यासः है १३ योगं है ऋनरं है वधं १२ गुए। भक्ताद्वस्य है। द्रेन्यासः १ (६ योगः ४ आत्तरं १ वयं १२ गुए। भक्ताद्वस्य ६। द्रेन्यासः २। द्वे योगं ४ अन्तरं १ वयं १२ गुए। भक्ताद्वस्यं ६। २ अस्यस्वर्शवर्गीविधिः संवर्गत्वर्णयोः स्वस्त्रमुक्ते स्वर्णययोभिते ५७ मू

लं भास्तित्ववर्गता हुए।वर्गस्यतस्यच उदाहरएां-धनस्यक्षप्रहृपस्थतः थान्तर्गस्यक्षप्रहृपस्यवर्गः बृहि एउरोक्षपोत्रगीतः न्यासः क्षपं २ क्षपं १ वा तीवर्गोक्षप्रवर्गः ४ क्षपवर्गः ४ मूलेक्षपं २ क्षपं १ एएवर्गः ९ तन्युळं०

एवगः ५ तन्यूठ० अयस्रराश्यून्ययोगानारविधिः

अध्यत्यत्या भूच्यानाकरावादः रवद्येरवोनेसमंस्वर्णस्वाद्यस्वभारितम् ५८ उदाहरएगर्थम् - न्यासः रूपं २ रूपं ३ रूपं वो गमन्तर्रवादिकतं रू २ रू ३ रू ० एगानिस्वाद्य गानिजातानि रूपं ३ रू २ रू ०

न्प्रथरवण्डवर्गविधिः

स्थात्तवएडयोर्वधंदि घ्रंखण्डवर्गेक्ययुक्कृतिः उदाहर-एाम्- षड्विहीनयुगानांचवर्गब्रुहि वचक्षएा न्यासः ४। द्वे जातोवर्गः १६ खण्ड ४।६ योर्वघं २४ द्विघ्रंजाः

तंत्रीषं ४८ रूपं ३६ सर्वयोगाइशानां १० वर्ग १००सः संभवतिवर्गः १६ दोषं ४८ रू ३६ प्राग्वन्मूलयो ४। ६विधं २४ हिम्नंशेषादित्वास्लंस्यादेवंसूलं ४। ह

**अथेषकर्मविधि**रुच्यते त्तद्मभाविधितुस्येष्टराद्राः क्षणोङ्गोथवा ५५ रा स्यंशैर्वाञ्चतोहीनोदृष्ट्रप्रेष्ट्रमनेनत् भक्तंस्यात्र्-

र्वराशिश्रेद्वीपक्षीयत्रतन्तु ६० इत्थंहारान्तरेणाः समिष्टघ्रदृश्ययोस्तथा विश्लेषयेकमानंस्यात्तसा देशेनुपाततः ६१ उदाहरणम्-वेदघः स्वंत्रिशः गोनो मूपभक्तः समन्तितः राशेरुद्धाब्धिषड्वागैः को राशिविन्धसमितः न्यासः गुए। ४ स्वन्निभागहीः नः 🕯 हरः १६ राज्यंत्राः 🦫 🖟 हत्वयं १३ क ब्यितमिष्टं ३ वेद घ्रः १२ स्वित्र भागहीनः जातम् ८

१६

युतोहरीजातः 🖁 इष्ट ३ घ्रहरूप ३८ मनेना 🕏

गः रेपर इदंकात्यतिके १ ष्टादूनं कला रोषं रैपर त्र्यनेनामंकत्पितैके १ ए घ्रदृश्यं ४ जाताराशीहंस-संख्या १००८ तृतीचोदाहरणं-रादोरूबंदाासांदा षष्ठान्यृथक्तान् द्लादोषं गोमितंब्रू हिराशिम् न्या-सः है दे है हरम ८ उक्तवकरएगा ज्ञातोरा शिः ३० यथे एकर्म्मि ए। रोष जाति विधिः छिद्दरय घातमंत्रोनछिद्धाता संफलम्भवेत् त्रोषजा-तिविधीसिद्धिर्वान्यस्तेनेष्टकर्माएगा ६२ उदाहरएां-स्वाईदेवालयेशेषा युग्मत्र्यंशीगुरोर्ग्हे शेषस्या-

त्युञ्जेसर्वान् हंसान्वद न्यासः है है है हिस्सं ४ऋ मेणसवर्णनं द्वाभ्यामपवर्ति । १ १ ते हैं के ते

त्राष्ट्रांशः स्वनवांशादयास्थितः खेयाताः वेदहंसाश्चे-

रवव्यक्षाद्यंवन भेदे गतं षष्ठनिजसप्तांकादवंनद्यांत-

मंप्रायात्रीः १२ ऋषिहतीयोदाहरएाम् - पुंजाई

ग्मधेष्टकर्माणि दोपजातिविधिः र्द्रग्रहेदत्वादीष्टंग्रुग्मोखिलंबद न्यासः 🔁 🤰 दृह्यं २ यथोक्त करणेनजातंसर्वधनं २४ ऋषवातदेवन्या-दृश्यं २ ऋबस्त्य १ मिष्ट्राशिं प्रकल्प्य भागाप बाद[३] विधिना स्वांझाढ्योनेत्वधस्थेनहार्रह्न्याङ्ररेएा चे- र्या दिनासवर्णितेजातं भेर स्त्रमेन इष्टा १ हतं दृष्टं २ भक्तं जातंसर्व धनं २४ ऋषविलोमविधिनान्या-सः है सांदाहीनेन्यासः दे व्रथभागानुबंधेनजातं सः है वंधनं २४ अथेः दे एकम्मिएिविन्देषजात्युः दाः 🖥 हरणम् पंचांशः 🍳 त्र्यंशीतयोख्यन्तरान्वरा कोः र पृथक्पृथम्लास्प्रीष १ चेद्राक्षिवद् न्यासः

पि है दे हश्यं १ जातो राशिः १५ सर्वेतेव्यस्तेनापिति द्यानि श्रयदिपसजात्युदाहरएां त्रिशेष मेकस्य धनं षड्याः दशान्धारत्वपरस्यतुल्यमील्या ऋणं तथाशेषं

बारंतबाचतस्यतीतृत्यधनीचेदेकाश्वमीत्यंवदयदाद्यकः नस्बदा रांद्रामन्यधन धनदोषंऋएांतथात्रहि ऋत्राख मील्यमञ्जातं तस्यमानं कालित् मिष्टं ३ त्र्य्रतुपातेन चेदेका

मील्यं २० कत्यितेष्ट ३ प्रीहक्यीच ८।१५ ब्रोधनार्थे न्यासः १८ हृद्य ८ यावत् १८ तावत् ३० ऋपं ५ छ-

पं है। यथात्रानयों १८।२० रन्तरेला १२ संदृश्यवी ८।१५ रन्तरं २४ लब्धमेकाश्वरयमील्यं २ पुनरनुपातेः

नषएएगोमीत्यं १२ दोषा ३४वमाद्यस्य धनं १५ एवंद्शाः नां मीत्यं २० शेषर्ए ५ युतं १५ जातमन्य धुनंच १५ ऋ थान्यन्यासः द हश्यं द अत्राय्यनेयोरेन्तरेए॥ द संदश्ययो द देश्वरं की द क्षेत्रकार हिन्तरेए॥ द क्षेत्रकार हिन्तरेए॥ द क्षेत्रकार हिन्तरेए॥ द क्षेत्रकार हिन्तरेए॥ द क्षेत्रकार हिन्दरेश का व्धमेकाश्वस्यमानं २ प्राग्वत्तयोधीने १५। ३ ऋथवा-त्र्याद्यधनादन्यां श्रेणुगंत छेषस्वंतत्वं २५ चेत्तयोधीने वद् ऋत्राद्यधनादन्यधनंत्रिगुएगोक्तस्तर्हि ऋादांत्रि-गुणीकत्य किसतेष्ठवशाच्यासः ५५४ हस्य ३७ प-. श्रमो ५४।३० रन्तरेणा २४ मंद्रस्यमो २७५५ र-न्तरं ४८ लब्धमेकाश्वस्थमील्यं २ तथाषणुगां मील्यं १२ होष ३ धतं १५ जातं प्रथम धनं १५ एवं हितीय धनं ४५

श्वस्येदं ३ मीत्यं ३ तदाषणां मीत्यं १८ एवंदशान्धानी

80

परमा सिद्धानी

श्चर्यान्यदुदाहरणं एकनरस्यरत्वानि माणिक्यानिपंचाः नि ५नीलान्यष्टीट मीक्तिकानिसप्तमितानि ७ रत्नमानी त शेषंधनं खांकमितं ८० न्य्रान्यनरस्यरत्नानि सप्तमाणि क्यानि ७ नवनीलानि २ वएमी क्तिकानि ६ रत्नमानीत

होषंधनं दिषष्टि ६२ मितं तीतुल्यस्वीचे दत्नमील्याच-द काव्यितमिष्टं ३ कत्यितंइष्टं २ कव्यितं १ स्प्रनुपातेन-पद्मीन्यसः १५ । १६ । ७ दस्यं ५० अत्राद्ध स्य ३८ परे

र्षः ६२ चोरन्तरेला७ संकत्यितेष्ठ १ घ्रदश्यचीरन्तरं २८ सः ब्धमेर्कत्यमीत्यं ४ चेदेकस्येष्ट १ स्येदं ४ एमां ३ लब्धं

मील्यं १२ पुनरेर्कस्यमाणुक्यस्वेदं १२ चेत्यंचमाणुः क्यानां मील्यं ६० एवं प्रथमपक्षेमील्यानि इ० । ई ४। ३८ दीवाद्यमेवांयोगं २४२ त्र्याद्यस्यसर्वधनं २४२ एवम-न्यस्यापियथा १एकमाशिक्यस्येदं १२ चेताप्रमाणि क्यानां मील्यं ८४ एवं द्वितीयपक्षेमील्यानि दर्थ । ७२।

<sup>र्श</sup> एषामेक्यं १८० शेष ६२ सतं २४२ जातं दितीय

٦,

धनंच २४२ एवमिष्टवशाह्रहुधासमधनभवति अ-धान्यदुराहरएा एकोवदनिदेहितंतत्व द्वव्यान्मेहिको भवति अयरोपिच दुर्शमादेहिल ह्व्यान्मेषहुँएगे भ

वतितयोधेनेवद् अत्राद्यापरयोः कलितेष्टेधेनेन्यासः हर्दे केर्व अनयोः परस्यशैने यहीते आद्योदिर्गुणि-हर्दे केर्व अनयोः परस्यशैने यहीते आद्योदिर्गुणि-तः स्यादित्येकालापो घटते अथाद्याहर्गीपनीयदर्शे

क्तरंगादित्येकोलापो घटते अथाद्याह्यापनीयदर्शे भिःपरधनंपुतांषडुं एांस्यादिति आद्याद्यंषडुं एगे ऊत्स्वा-सः १९ ह ६६० अतः प्राग्वख्ळभेक शस्यमानं ७०

्रिक्त ये ७० चे ह्रास्थ्य १४० इद सहस्य शेषमादि धनं ४० एवसन्यधनं १७० च्यान्य १५० इत्यान्य १५० च्यान्य १५० च्याय्य १५० च्याय्य

तिपिएडामा १२।१५ ।२२।२८ मन्तराच्छेषमन्ति.३ मितं भवति, **न्य्रयसंक्रमए विधिः** योगंतु ह्यन्तरेणोनसुक्तं रुखाततीर्द्धिती स्यातामसा धिकीराशीतीतत्संक्रमएां भवेत् ६४ उदाहरएां ययो-चेनिनखंवेदमन्तरंतीराज्ञीवद् न्यासः श्लोगं २० न्य्रंतरं : ४ राजी-१२।८

# न्यथ विषम कर्म विधिः

त्रावयो द्यतियुगद्रोचरावयो योगकते स्तयोः कला भेदं भवे द्राक्योरन्तरस्यकृतिस्तयोः ६५. राज्योर्वर्गवृतीकृता राज्योचींगकते स्तवा भेदंराखीरत्तयोज्ञीयं हि प्रधानस-मंख्लु ६६ वर्गन्तरं भवेद्रादयीस्तयीयींगान्तराहातिः घाते दि घ्रेतयो भेंद वर्गयु न्कातयोस्तया ६७ रादयोर्व-र्गयुतिस्तत्तु विज्ञेयागए।कोन्तमेः त्र्यन्तरेए।। दुर्तवर्गभेन दंयोगसदीरितम् ६८ राखीर्योगसतीराख्योर्घातंचे-दाहतंबुधैः हिताचान्तरवर्गःस्यादगैर्वययुतिवर्गयोः ६८ विश्लेषस्यद्वंराज्योधीत मुक्तं विच स्एौः उदा हरएां भुजाञ्ज्यू नात्पदं व्येकं को टिकर्णान्तरं यदि च-त्रतत्र भुजंकोटिं कर्षब्रिहिविचसए। त्रात्रकोटिकः एक्तिरमिष्टं २ ऋतोब्यस्तादाहः १२ इष्टं २ सैकं ३

परम सिद्धानी.

રર

वर्गः द त्रियुतः १२ वर्गः १४४ अप्रयंकोटिकएविर्गाः न्तरं १४४ तयोर्योगान्तरघातसमं १४४ इष्टः २को-टिकर्णान्तरेए। २ भक्तभयं १४४ जातं ७२ स्प्रयंथोगः ७२ ऋन्तरेए। २ ऊंनसुक्ते ऋर्ष्टिनेजातीकोटिकर्णी ३५। ३७ इष्टवशाद्भुद्धा भुजकोटिकर्णाः स्युः त्र्राथापरोः

दाहरएां खाब्धिदीं कोटिकऐक्यिंकोटिबाहुवधंतथा खाई वन्नभुजंकोटिंकएंतिन्नोच्यतांखल् स्त्रन्नभुज-कोटिवधो १२० हियाः २४० तद्यतिवर्गस्यवर्गयोगस्य चान्तरं २४० चद्भुजकोट्योर्वर्गयोगः सखकर्एदर्गः

त्र्यतोदोः कोटियुतिवर्गस्य कर्णवर्गस्य चान्तर सिदं २४० योगान्तर्घातसम् २४० श्रातइदमन्तरं २४० योगेना ४० मंत्रव्यं ६ दोः कोटियुतिक एान्तिरं ६ त्र्यनेन युक्तो-ने र्डितेयोगेजाते दो: कोटियोगकर्णे २३। १७ दो:को-टिबोगः २३ कर्णः १७ दोः कोटियुति २३ वर्गे ५२८

चतुर्गुए। घातोने ४८० दोषंदोः कोट्यंतरवर्गः ४८ । मूलं ७ इदंकोटिभुजान्तरं ७ भुजकोटियोगे २३ सु

युक्तीनाई कित्वाजाते भुजकोटी १५।८ भुजः १५ कोटि:८ श्रथकिंचिद्वर्गकर्मा -

इष्टवर्गेगजैर्निघंव्येकाईमिष्टभाजितं ७० एकः स्या-त्तत्रुतरुई सैकंराशिः परीभवेत् वर्गयोगान्तरे ब्येके राः

क्यो स्थातांकतीतयोः ७१ उदाहरएां वर्गयोगान्तरे

ब्येके मूलदेतीययोर्वद काव्यितमिष्टं है ऋस्यकतिः र के ऋष्टगुणोजातः २ ऋयंव्येकः १ दक्षितः दै इन्हेन हृतः जातः प्रथमोरात्रिः १ त्र्यस्यकृतिः १ द्रविता दे

सैका है अयमपरोराशिः है एवमेतीराशी के है ए-वमेके ने छेन जाती इ है दिके ने छेन है उर

ऋथ मूल गुए विधिः

मुण् झपद्युक्तो नरादोरई गुणस्यच वर्गेण युक्त दृष्ट स्यमूलमई गुऐनहि ७२ उनं वाख्यंततोवर्गे प्राधाशि-जियतेखलु चेदंदीरूनयुक्तः स्यादंदीरूनयुनेनचण्ड एकेन् गुएकं दृश्यं भक्खाता भ्यांततो क्तवत्. उदाहरएां राशेः सप्तगुए। म्लार्द्धीनासु भशेषंचेदाशिवद् न्यासः

परमासिद्धानी

मूलगुएाः दें दृक्षं २ ऋईगुए।स्ववर्गए। देई युक्तस्य

हैष्टरम दी मूलं हे अईगुरोन है उनलादाड़ां है

वर्गीकृतंजातोराशिः १६ उदाहरएां त्रिशुरी विजयूरी र्श्वनः दिक् कोरात्रिर्भवति न्यासः गुएाः ३ दृश्यं १० गुराा

३ई है बर्गेएा है सुक्तस्यह १० घ्रस्य हुई मूछं ई ऋईमूलगुरो है युक्तलादून है वर्ग ४ राशिः ४ उदाहरएां रात्रोर्मुळ ह्रयंदत्वा रात्रोरूयशंत्राकंपृयण्दता दोषंयुग्मोन्मितं धनं चेत्सर्वस्वरात्रिवद न्यासः गुएाः र त्रिगुणाष्ट्रांचाः है श्रथवाष्ट्रमांचात्रयः है है है ह-इयं र एकोनां है दोनाने है नहदयं र मूलगुएांचरभन क्ताहरां दे मूलगुणं दे अर्द्धगुण द वर्ग हुए दृश्या देवंजातं १४४ मूलं पुरार्ह्सन देवन त्वादाढत्रं ४ वगोरिगादीः १६ उदाहरएां द्रव्यस्यरादीः पादांश मूळं राशितकी एमां शादां दत्वा शेष युग्मं चे द्वा विवद न्यासः गुणाः है अप्रवरादोः पादांदां मूलगुणां है तर्हिद्दय र पादांदां दे दृदयं क्रेयं दे भागाः है

त्रैराशिकाद्योजराशिकविधिः

प्राम्बन्जाती गुराहरूयी ११२ गुराः १ दृश्यः २ प्राम्ब-क्जानंताद्रीचतुर्थोदां ४ एतचतुर्भिग्री**ए।**नंजातोद्रव्य त्तविः १६ उदाहरएां त्रिभिः स्वमूत्रै र्युतंस्वपादाद्यं चेंदांजातं चेद्राशिवद न्यासः भागः है मूलगुएाः ३ दृश्ये ११ स्त्रवर एकेनां है शेनाखेन है मूलगुरांह-

खंच भक्ता ताभ्यांप्राग्दज्जातोराधिः ४ .

ऋय श्रेराशिकाद्योजनशिकविधिः रुभयोः कलात्वल्पराशिवधोद्गतम् बहुराशिवधंज्ञे-चातेतयैवच राशिमण्डल संख्याया विझानेनोच्यते-हरः ७६ राशिस्तत्रोन्थते सन्निः फलएवाथकथ्यते राज्ञिर्वधविधीहारः पशयोरुभयोरपि ७७ तत्रोजः

फलवोर्ह्यारयोत्र्यापिद्यन्योन्यंपरिवर्त्तनं ७४ पक्षयो यंफलं त्र्याद्योजरात्रिके ७५ वहुरात्रिवये स्वल्परात्रि राशिके ब्हातस्थाने सर्पी कतिं छि खेत् आदेः फलं यथादाः स्थात्तवादाः परपक्षजं ७८ यद्गणादााऽवि कंवा ऽत्यंस्यात्फलं पूर्व पक्षजं तद्व एगंदा। उधिकंवा असं

परम सिद्धान्ते રદ

स्यात्तस्यात्परपक्षजं ७० इच्छाद्यत्थफळीयत्रस्याः तांतुत्यकुले भते। तत्रादि फलयोरेव परिवर्त्तनमावरे-

त्वन्यजातिर्मध्योत्थितंतयोः ८२ इच्छाहतं फलंबाहि भक्त मिच्छाफलं भवेत् एत श्रेशादीकं चादिनि प्रमि च्छो दुर्नं फलं ८३ इच्छातोत्थं फलंब्यस्ते झेयं त्रेराशि के खलु च्छेदं यत्र भवेत्तत्र झेयंच्यस्तो जरा शिकं ८४ यभेच्छावर्द्दनालुब्धेर्न्यूनलं जायते थवा ऋासवृद्धि फलेजेयंव्यस्तंत्र्याचोजराशिकं ८५ प्रकारान्तरेण वाद्यन्यपर्स्थयोत्तिर्ध्यक् संस्थयोः परिवर्त्तनं केवलं फ-लयोः कत्वानपृथक्तत्रहारयोः ८६ स्त्रस्योन्यंतुततो भक्तास्वत्यराद्गिवधेनहिः श्राधिराक्ष्याहतिंलच्यं तदि च्छाफल मुच्यते ८७ श्रेराशिकोदाहरएां दम्मह येन सेटंलभ्यते चेत्सार्द्धत्रयेणद्भम्मेण किलभ्यते न्याः

चवंदाप्रमाणेननीचगादीहरंबुधैः ८१ हलातन्त्री चराशिस्त हुच्चजातिः प्रजायते न्य्रादिराशेः फलं

त् ८० इच्छायाः प्रथमस्यापिसर्वश्रैककुलं भवेत् नी-

नैराशिकाद्योजराशिकविधिः २७
सः १ १ ५ प्रे प्रस्कंपरिक्तंन्यासः १ १ १ सम्बद्धारि ।
११ ५ वर्ष १ १ सम्बद्धारि ।
११ ५ वर्ष १ १ सम्बद्धारि ।
११ ५ वर्ष १ १ सम्बद्धारि ।
सन्द्धारि ।

स्मिन्यासेरादि।त्रयंतस्मात्रीराद्मिकेएान्यासः (२।१।५) त्र्यत्रत्र्यादिः २ त्र्यादेः फलं १ इच्छा <sup>५</sup> इच्छ<sup>े</sup>हतं फ१-छं ५ आदि भक्तं इच्छाफलं ५- प्रकारान्तरेश  $\left|\frac{1}{2},\frac{1}{2}\right|$  फलं परिवर्त्तन्यासः  $\left|\frac{1}{2},\frac{1}{2}\right|$  चहुराक्षि $\left|\frac{1}{2},\frac{1}{2}\right|$  च बहुराक्षि $\left|\frac{1}{2},\frac{1}{2}\right|$  च बहुराक्षि  $\left|\frac{1}{2},\frac{1}{2}\right|$  च बहुराक्षि  $\left|\frac{1}{2},\frac{1}{2}\right|$  च बहुराक्षि  $\left|\frac{1}{2},\frac{1}{2}\right|$ फलं हैं ऋषवान्यासः २।१।५ । ६ फलं परिवर्त्तः न्यासः २ । ६ ॥ ५ । १ बहुराशि 💆 १ वर्ध 💆 छ-घुराशि |२१६ |वधेन २ भक्त मिच्छाफलं 💆 न्य्रथ बान्यासः दे हैं हारं फलं परिवर्त्यन्यासः ३। ७ बहुराज्ञि १ राशि २।२।५ वधेन ४ भक्तं जातंफलं 👸 स्त्रप्रद्रमः द्वयस्यहारं १ एक सेटकस्य हारं चाप्येकः १ कल्पितः पुनस्त्रेराशिकोदाहरएम् बस्त्रह्यस्यमीत्यंनिष्कंचे

२८ परमासिद्धान्त

ब्रिनिक्केः कत्यम्बराणिलभ्यंते न्यासः 📴 💐 ग्रा श्रेन्छाफलयोरेक जातित्वादाद्यंफलंपरिकर्त्यन्यासः

त्र च्या करुवारक जाताता त्या करुवार परान्यासः

| १ र् | प्राप्तरक्रलं परिवर्त्तान्यासः | १ र् र | जक्तवछ्रह्यम्बरूजमानं ६ पुनरिपत्रैसाविकोदाहरएं येजीवा ब्यष्टसेटक मज्ञं चतुर्भिर्दिनें भें कृति तेदरासे

वाना अष्टक्षरकन सं चुना देन न स्नात तर्गत टकम संकल्पासितै हिनै भेष्मतिन्यासः हिन्दे के स्तवसुच्धाः दिवसाः ५ अयपुनरिषत्रैराशिकांग्रहेन

स्पान्तु व्यास्पतः अअवन्तराजनाराज्यसम् रएांचतु वें सपादेक च्लारिंशाद्विद्रम्भेरूयंगसेटकः ६२ ममक एतमानीतं तत्सकृपटंकलातन्मध्येसक

पटैकसेटकस्यमील्यनवपर्यंज्ञातंत्रेत् सर्वस्मिन्धतेक् तकपटसेटान्तकादिन्बद् न्यासः इस्माः छ्तमील्यं-४१ हे छतसेटकानि ६३ नवभिः परीः सकपटमे-

किंवा कद्लीफलम् ऋथवादयासान्त्रभक्तं वापरिपाः चितिपण्डालुकादिकम् अथव्यस्तत्रैराशिकोदाहरणं वर्षत्रयस्यप्रारोमेल्यिंतर्कचेन्नन्दाव्दस्यवारोमेल्यिंवद

न्यासः | र् र् प्राग्वद्वहुराशिवधः १८ लघुराशि ाट्ट वर्धर भक्तः लब्धंमीत्यं २ ऋषवान्यासः शिदार् ऋत्रादिः ३ फलम् ६ इच्छा ८ व्यस्तत्रैरा-

दिकलादादि ३ हतं फलं ६।१८ इच्छा २ भक्तं फलं मी व्यंजातं २ पुनर्व्यस्तत्रेराशिकोदाहरएां कस्मिन् चि-द्राशिश्रिभर्भक्तातर्केफलंचेत् नवभिर्भक्ताकिस्फ लंभवेत् न्यासः | है। ६ | प्राग्वस्तव्यं २ पुनरपिव्य

स्तत्रैराशिकोदाहरुगम् यहस्तुहादशा जीवाः त्रिभि दिने भें क्षितित इस्तुवेदो न्मिताः जीवाः कति दिवसै भं-

क्षंतिन्यासः विश्व ४ फलं ३ हारं ४ च परिवर्त्त्याः सः ४ ११ वक्तवत्करएाञ्जब्धं ४ त्र्यथापरोदाः

हरएां यत्रमर्मे दादशानरास्त्रिभिदिनैः कुर्वन्वितंकर्मे वेदोन्मिताः मनुष्याः कतिदिवसैः कुर्वन्ति न्यासः रि परमसिद्धान्ते.

.30

न्तरं युग्यंवर्षे से कितवान्तरं न्यासः। पक्षयोः फल्लं परिवर्त्त्यन्यासः -

प्राप्तकलं ८ ऋष्यपंचराशिकोदाहरएां मासेरवासे

बहुनाराज्ञीनां १२।५।२ वधः १२० लघु-राशि १ । ५० । ६ वधेना ५० प्तः लब्धंतथान्तरं त्र्यथप्रकारान्तरेशान्यासः ११५० । २ फळं परिवर्त्त्यन्या-१२ । प सः ११५० कि बहुनां राशीनां १२ । प वधः १२० लघरात्रि १।५०। 👡 वधेन ५० भक्त स्तदिच्छाफलम् 🖫 वास्यासः १। ५०।२ ॥ १२ ।५। 🏎 फलं परिवर्त्त्व न्यासः ११५०१ भा १२१५ १२ बहुमां १२१५१२ वर्धः १२० खत्परादि। ११५०१० वधेन ५० भक्तंलब्धसिच्छ। फलं २ दे । श्रयकालज्ञानार्थन्यासः ५० ५ लंपरिवर्त्त्वन्यासः १००० बहूनांसादी-भायता पुर वधः पुर २ १२० लघुराझि या र वर्धे-न १० भक्तः लब्धामासाः रेश्रयस्त्रधनार्यन्यासः ५ १ परं परिवर्त्त्वन्यासः र् १०० प्राग्वल्लव्धं मूलं-

धनं ५ व्यथव्यस्तपंचराशिकोदाहरणं वेदसेटक व-रतुषोडशाजीवा एकस्मिन्दिने भसंतिचेत्सेट इयवस्तु वक्तमिताः कल्युन्मितदिनैर्भक्षंतिन्यासः |४१२ फलं १६/८ | हारंचपरिवर्च्यन्यासः |४,३६|प्राग्वः |११८ | द्वः

व्यंदिनं १ पुनर्वस्तपं कि वि चराशिकोदाहरएां तिचेत्यंचो मिताः जीवास्तिथिभिर्दि नैः कति मितवस्तं भक्तंति न्यासः | १० ५ | फलं परिवर्त्यन्यासः | १० ५ | उक्तवसुद्धां१५ | ४० ०० ज्याशसाममाक्षिकोव् ० ४० हरणं दिस्तारेत्रिकरै स्कल्याः दे र्घ्यवेदोान्मिताः करैः येवस्त्राः भास्करास्तेषांमीत्यंखान्नोस्मितं यदि वि स्तारे षाप्मिताः हस्तैः दै ध्येनागोन्मिताः करैः चेवस्त्राः

षिताः स्तेषामीत्यं ब्रह्मिवचसएा न्यासः है है

उक्तवलुब्धंमीत्वं २० त्र्यथवा विस्तारदेर्घ्य ३।४ घातं १२ एक बस्त्रस्यक्षेत्रफलं १२ इाददा १२ गुणितं १४४ द्वाददाबस्त्राएगं क्षेत्रफलं १४४ एवंपरपक्षेवस्वाएगं क्षेत्रफलं २८८ ततस्त्रीराशिकेणयथास्य १४४ मीर्त्य १०चेत् २८८ मील्यंकिमितिन्यासः १४४ २८८ लब्धं मील्यं २० ऋथवा श्रेराशिकद्वयेन पंचराशिकः फलं त्रैराशिकत्रयेपासप्तराशिकफलं त्रैराशिकचतु-ष्केएानबराशिकफलं श्रेराशिकपंचकैरेकादशराशिक

खुमिते इहिल्यम नेसलरं बुध न्यासः र्द्ध के क कवस्र स्में मिलंद्रमाः ७ ऋषेकादः १६ ५० श

फलं षद्धिरुवैराशिकेरुत्रयो दशराशिक फलमित्यादिकं भवति ऋथनवरादीको उदाहरएां या नीष्टिकानिः विस्तारे त्वष्टभिश्चां गुलै स्समा दे धर्ये सूर्यो गुलै स्तल्या वेधेवेदां गुरु स्तथा दम्मैः षोड शभिस्तानिरु भ्यन्ते चे च्छतानि हि विस्तारंगांगुरी स्तृत्यादी धीराकांगुरी स्त्रश वेधेपंचां गुरुस्तुत्या व्योभाव्यांनी ष्टिकानिच द्रम्मैः क

नैरादिकाचो जरादिक विधिः राद्यिकोदाहरणं विस्तारेष्टांगुलैहें धिद्वाददीरंगुलैस्समाः वेधेदेदांगुळैस्त्रख्यास्तीत्येसेट हयोन्मिताः द्रमीर्ना गोनिः तै: पड़ान श्वन्तेश्वन्यदि द्विताः एवं शक्तां गुरी दें धेर्य दि-स्तारे गांगुलोन्मिताः वेधेपंचागुलै स्तव्यास्तीत्ये सेटव योग्मिताः पट्टारवाश्चिमिता द्रम्मै र्लभ्यन्तेकिरद्भिः तैः चातः ६ ६ ६ ज्ञान्य ज्ञान्य । ५ द्वे गुळैस्तुल्यास्तील्येसेट द्वयोन्मिताः येप ट्रांत्रष्टिभिस्कल्या क्तेयामानयनायदि भाटकंषट्यणाश्चेक्त्यहेदोकोदा पंचके दैर्घोदाकांगुर्हेस्तुख्या विस्तारें गांगुरहेस्तवा पिछे

वाएगंगुळै स्तुल्यास्ती त्येसेट त्रयोन्मिताः येपहाः स्वा-व्यं प्रसेषां भारकं योजने कियत् न्यासः ५६ ६५ सञ्चाः भारकेपएगा ५ है पएगानांद्र १५ ६५ स्वकृरएगीतिः पएगानांद्वहरं सूरीहैत्वा -व्धं यस्तेषां भाटकं योजने कियत् न्यासः १२ स्युर्दम्मजातिगाः तेपशाएवमस्रिलाः

छि हुमानाःस्युरुत्कुलाः ८८ स्त्रत्रव्यस्तसप्तराशिका

ग्रदाहरणानिविस्तार भयान्त्र लिखितानि

त्र्यथ भाएड प्रतिभाएडकविधिः

मिथोवस्त्वर्जनेवस्तोः पक्षयोः परिवर्त्तनात च्छेटयोः फलयोर्व्यस्तेलव्यस्तेमीत्ययोरपि ८८ ऋत्यरात्रीव

धाप्तंस्याद्वहु राशिवधफलं उदाहरएां दम्मे एगाम्त्रा-ष्ट्रकंचत्रपरोनदाडिमह्यं लभ्यन्ते केवलाग्रेरालभ-

न्तेकतिदाहिमाः न्यासः | १६ १ मील्यंफलंपरिवर्त्त न्यासः | १ १६ उक्तव | १ ००० सुद्धानिदाहिमाः

नि ४ पनरुदाहरएां व्यस्तं दिग्भिईमीः

षोडशाब्दस्यत्रगोलभ्यते स्वाश्विभिर्दम्मैर्वेदाश्वि वत्सरास्त्री प्राप्नोतिचेत् वेदमिताब्देन तुरगेएा कतिव

र्षमितास्त्रीप्राप्तोतितह्नद् न्यासः १९०२० व्यस्त-त्वात्केवलं पक्षयोः फलंपरिवर्न्य ४ फेप्ट

१६ २० १६ २४ फेप्ट ४ स्तत्रैराशिकेए। ४ वर्षतुरगस्यमीत्यं ४०

वैशाबिकेएा २० द्रम्मैः २४ वत्सरास्त्रीलभ्यतेचेत्४० द्रम्मैः कतिवत्सरास्त्रीइति २०१४ घातं ४८० द्र-म्मं ४० भक्तंफलं १२ वर्षास्त्री

स्मयमिश्रय्यवहारः

सानकालहतं मानिकालहतं फलं ५० मिश्र प्रेनेततं देश्योत्तराताम्मूलकलान्तरं फलं ५० मिश्र प्रेनेततं देश्योत्तराताम्मूलकलान्तरं स्थादि ष्टकर्मजञ्च कंपियोहिला कलान्तरं ५१ उदाहरणं पश्चकेनश्च तेनवेद् स्लंपसंस्कलान्तरं षोडशंचेत्य्यक् बृहितन्न मूलकलान्तरं न्यासः 🍀 १६ लच्चेक्रमान्मूलकलान्तरं १०६ व्ययवा एकं १ मूलधन मिष्टमकल्य १ तस्यवर्षेकलान्तरं जातं है मूलधने वेष्टाव्यंश्चातं द्वयवर्षेकलान्तरं जातं है मूलधने वेष्टाव्यंश्चातं द्वयवर्षेकलान्तरं इर १६ व्ययक्ष्यस्य १० मिश्रा १६ द्वर्षेकलं ६० सिश्चा १६ द्वर्षेकलं ६० सिश्चा

## श्रथमिश्रान्तरविधिः

स्वत्यमानफलेनासंबहुमानफलंफलं कलैकेना ध्युत तेन भक्ताहीष्टकतिंफलं ८२ त्र्यन्यमूलधनं हो य

परम सिद्धान्ते 38

मिष्टवर्गाऽन्वितं फलं ऋाद्यसूल धनं तुल्येकाले तुल्ये-फलेययोः ५३ उदाहरएो पंचकशतेनदत्तं यत्फल वर्गीनं तहदाकदातेनदत्तं तुल्यः कालः फलंचतयोः य-

थात्रबह्मितिफलं १० लघुमितिफलेनामं २ एकोने-ना १ मं इष्ट ४ वर्गे १६ लब्ध सन्यस्य धनं १६ इदं १६

इष्ट ४वर्ग २६ युतंजातं प्रथम धनं ३२ त्र्यतोजराशि केएाकाल: मासाः 🕇 फलंच ४ दिकेनेष्टेन २ त्र्य-न्यथनं ४ प्रथमधनं टकालः मासाः ५ फलंकला-न्तरं २ उदाहरएां एकक शतेन दत्तं यटफल वर्गीनंत-त्पंचकदाते न दत्तं तुल्यः काळः फळंचतयोः त्र्यत्रापि

लघु १ फलासंबहु ५ फलंलब्धं ५ ऋनेनेकोनेना ४ प्तमिष्ठ २ वर्गे ४ लब्धं १ द्वितीयधनं १इदं १ इष्ट २ वर्गा ४ढवं त्रथमधनं ५ समकालः मासाः ४०फलंच २ एवसिष्टवशाह हुधा. त्र्यथभित्रान्तरविधिः

योगान्तरेविलोमेनस्यातां प्राप्वत्तयो धने उदाहरएाम्

मिद्रास्त्रविधिः રૂહ पंचलदानेनद्रमं यत्फलवर्गाद्यंतद्द्रशकदानेनद्त्तंतुः व्यःकारः फलंचतयोः स्त्रत्रापिलघु ५ फलासंबहु १० फलं २ व्यनेनैक १ सुनेना ३ मं ३ इष्ट ३ वर्ग ४ लखं मन्ययमं इत्तदिए १ वर्गे ४ दिला ६ प्रयमधनं ६ कालः मानाः १०फलंच ३ इष्टवशाहहूधा स्युः तथामिश्रा न्तर विधिः इष्टांत्यस्यसमूलस्य फलस्येष्टाहते गुरो ८४ भेदंतेनासभिष्ट झहस्यं मूलधनं भवेत् उदाहरणं पाँचक बातेन ह्मं नूळं सकलान्तरं गतेवर्षे द्विगुणुं बोड बाहीनंल-च्यं पृतं धनंबद् न्यासः दृश्यं १६ गुंग्रं २ ऋत्र मूलक्षां इंडः ३ इप्ट ३ झगुण्नं ६ इत्र्यंच ४८ ऋतः पंचराशि केए। १० १२ सना ३८४ २४ स्थापि १ कलानारं दें एतन्म्-सना ३८४ ३४ स्थापि १ स्तारे ए। ६ प्रदेश ४८ लब्धेमूलधनं ४० कलान्तरंच-४ न्त्रपरोदाहरएां पञ्चकशतेनदत्तंभूलंसकलान्तरम् वेदाब्दैस्त्रिगुएांयुगाधिकं लब्धं मूलंसमाचस्त स्त्रत्र एके १ नइप्टेन प्राग्वचनुष्ठीवर्षेषु कलान्तरं 况 मूला १

खं भ त्रास्येष्टभग्रगुणे ३ नरं दे तेना दे प्तं इष्ट घ्रदृश्येष्टल्यं मूलधनं १० कलान्तरंच २४

अथभिश्रांतरविधिः

स्वस्वमानहृताः स्वस्वकालाः स्वस्वफलो दुताः ८५काः क्षेःस्वस्वगतैराप्तास्तेमिश्रघाः पृथक् पृथक् लब्धियोः गोद्धता युक्तखएडा भिन्ना भवन्तिहि ५६ उदाहरणं एकपंच विकदातै र्दन्तं स्वएंडे स्त्रिभिर्नरवं स्वएडान् पट

इब्ह्ममासेष्ठुतुत्यमासंफलवद् न्यासः 峰 ६ १२२ ११ ५ भित्रधनं २० ऋमाःज्ञातानि खएडामि १०१६

।४ पंचगशिकेएातेषांसमकलान्तरं है 🎘 त्र्यथ मिश्रान्तररीतिः स्युः फस्रानि पृथक् क्षेपाः मिश्र-माः स्वैक्य भाजिताः उदाहरएां एक स्यत्रिमितंद्रव्यं-

द्वितीयस्याक्षभिर्मितं तृतीयस्यांगतुल्यंचेन्तदैक्यविश-जात्फलं युग्पवेदो न्मितलब्धतेषां लब्धिं पृथग्वद न्यासः क्षेपाः २।५।६ मिश्रधनं ४२ जातानिधनानि ८।

. १५।१८ एतानिस्वस्वादिधनैस्त्रनानिसाभाः ६।१०।१२

ब्य्रयमित्रान्तररीतिः यातस्राप्तफलानिस्युः क्षेपाः प्रा-ग्दत्ततः ऋगात् ५७ 'उदाहरएां एकद्दित्रिषुमासेषु रामाए।। मासिकं फलं रामंबेदो मितंबाए। प्राप्यतेऋमञ्जो यदा पंचपट् दशमासानां मध्येभिश्रं नृषोन्मिनं प्राप्तंचेः त्सत्वरंतेपांलाबिंबूहि पृथक् पृथक् न्यासः मिश्रं १६

क्षेपाः १५।१२। ५° क्षेपयोगः १३१ मित्र१६ घाः क्षेपाः क्षेपयोगभक्ताः पृथक् फलाः ऋमेशः **क्षि**क्षि **ऋ**थसिश्चान्तरऋमोत्यते स्याद्यकपरिधेर्दरते भेका मार्गकराः फलं तद्यक्र अ-मणुस्यैवमानं क्षेत्रं विचक्ष्णेः ५८ चक्रीहतंचक्रफल मिच्छाच्याविभाजितं स्यानत्कांसाच्याफलंतच्या भ्रमणं भदेत् ५८ उदाहरणं यद्यऋपरिधिईस्तै ईः दरीः सम्मितो भवेत् तच्चक भ्रमणान्दुक्त मार्गेषष्टिकरा त्मके तत्त्रक श्रमणास्यैवमानंकत्युन्मितं भवेत् तत्रष-ट्करचक्रस्यमानंकिभ्रमए। स्यद्वि न्यासः चक्रपरि-धिः १२ मार्गः ६० चन्न भ्रमणमानंजातं ५ न्य्राधापर

परमासिद्धान्ते

चक्रपरिधिः ६ भ्रमणमानंजातं १० न्य्रथयोगसियविधिरुच्यते

न्द्रध्यामाभियाविधिरुच्यते यह्युवेगाद्दि नायांस्याद्वर्रवायां घटिकाजवात् मासायं मासवेगाच्यवपद्यितज्जवाद्भवेत् १०० वेगभेदोद्दतं भुक्तं भुक्तिभेदंफलंभवेत् तत्फलंयोगककालं वि-झेयवेगककुलं १०१ तेनध्रीतुतयोवेंगीस्वस्वयात

शुक्तं भुक्ति भेदंफलं भवेत् तत्फलं योगं कलाढं वि होयंवेगकःकुळं १०१ तेन प्रोत्तित्वयोर्वेगीस्वस्व यात समन्वितो तुल्योस्तस्कततस्कत्योस्तस्कतः पूर्ववन्यु-हुः १०२ कलातीस्तः समावेवं विन्द्रप्रेयेगीग्रतीयिः मन्देल्ययन पूर्वन्तु यद्याताळ्यसमीरितं १०३ ततस्कि-सन्देलेयन पूर्वन्तु यद्याताळ्यसमीरितं १०३ ततस्कि-सन्देतिहलातीतुल्यावेवकीर्नितो तयोस्कविवरस्य-स्ववेग प्रंफलदो द्वतम् १०४ लब्धं प्रभवन्तयोर्वलास्या-तांतीतु द्वतीससी इयोमार्गगयोः किंवाहयोर्वकमयो

स्त इतेहिलावौतुत्यावेवकीर्तितो तयोस्कविवरस्य स्ववेगम्रंफळदोष्ट्रतम् १०४ लब्धंमान्वस्योर्वलास्या-तांतीतुत्रुतीसमी द्वयोर्मार्गगयोः किंवाह्योर्वकमयो भवेत् १०५ वेगैक्यं फळदवेग भेदंतद्भिन्नयोर्भवेत् उदाहरएा यञ्जीवएकस्मिन्दिने स्प्रप्तसुन्तिस्योर्मार्गितको संगच्छितितेन सुक्तमार्गकोशायतुर्देशकं योपरोजी-क्लदेकस्मिन्दिने द्वाविशकोशमितं मार्गमञ्छिति

तेन भुक्तं क्रोदाह्य मार्ग चेत्तयोर्योगकालंदि ना त्त्रयात-योत्तुत्यं भुक्तमार्गचान्यक्ष न्यासः गतिः २८ युक्तमाः र्गे १४ ऋपरस्यगतिः ३२ भुक्तमार्गे २ गत्यन्तरं ४ ऋ

न्तरं १२ लब्धं दिनानि ३ तुल्यं भुक्तंमार्गे ५८ १५८ ब्रा-न्यन्यासः गतिः २८ भुक्तं २ गतिः ३२ भुक्तं १४ यातं

युनिकालं ३ तुल्यं भुक्तमांगी ८२।८२ एवं ग्रह्मयोगीति

भ्यां ऐरव्ययातयोगंकाठौतुत्य भुक्तं लिप्ताभागादिकं भवति ग्र्यमिद्धान्तरविधिः गाम्यागाम्योर्जवैक्ये न भ क्लातहतुरान्तरं १०६ भोग्यं स्थाद्योग रु त्कालं वेगपित कुलाँदेकं स्वाद्यस्मादुः द्ववोवेगस्तद्दे गजनकोच्यते १०७ कुलंतुदिनादिजाति भीवति उदाहरएां नगरान्तरंखि

विकोशोन्मितंयत्र १५० स्वस्व नगराह्री पविकी एक-दिनस्यगतिभ्याद्दाक्रोहा १०तिथिकोदा १५ मिति भ्यां परस्परं पर नगरंगच्छतः चेत्तयोर्युतिकालं भुन्तं मार्ग-

ञ्चोच्यता न्यासः ग्रांतरं १५० कोरोहिनगती १०।१५ गतियोगं २५ लब्धंयोगदिनानि ६ तत्र प्रथमस्यल घुमः ४२ परमासिद्धान्ते

तरथान्यन्दगते भुक्तमार्ग ६० न्य्रप्रस्य भुक्तमार्ग ६० एवंवकीमार्गी यह योरपिझेयं न्य्रथिमयान्तरविधिः भागे मिक्त हरेक्या प्रमेक पूर्विक्षएां भवेत् उदाहरएां कुर्वनिदिन घर्कार्द्वयोः कर्म पृथक् पृथक् वंवेतेचे निमिललातं कुर्वनित्तरस्याद्याः हर्म भूषक् पृथक् वंवेतेचे निमिललातं कुर्वनित्तरस्याद्यः हर्म भूषक् भूषक् वंवेतेचे निमिललातं कुर्वनित्तरस्याद्यः हर्म भूषक् भूषक् वंवेतेचे निमिललातं कुर्वनित्तरस्याद्यः हर्म भूषक् भूषक् व्यक्षित्रच्येद्यः निर्मिललातं कुर्वनित्तरस्याद्यः हर्षे

ब्ध सभ्यभ्यं विकार मिश्रोच्यते
नीचो चकुलयोर्न ध्येय दुएात्ता इस्तं १०८ कत्यानी
चकुलयोर्न फलं नजुङ्ग द द्वेत् स्वमील्याः स्वाराकै
निद्यास्तीत्यासात्तेलवाश्यपि १०८ स्युर्मिश्र्याः फले
क्यामाः मील्यास्तीत्याः पृथक् पृथक् अदाहरएां तस्कुलः विपर्णी निष्केएापादोनेन तील्येचतुर्विद्यत् मिताः
कथ्यन्ते तथानिष्केएामील्येनतील्योष्ठेरामिताः मा
धाः रुश्यन्ते तथानिष्कार्षेन मील्येनतील्येवदीन्मिताः
युद्धाः कथ्यन्ते तथानिष्कार्षेन मील्येनतील्येवदान्मिताः
युद्धाः कथ्यन्ते तथानिष्कार्षेन मील्येनतील्येवदान्मिताः
युद्धाः कथ्यन्ते वस्त्रं चासिक्स्री भागैस्तास्थिक पादेन
यादीचताम् न्यासः कमानील्यानितन् पहुलानां २४

माषानां १६ मुद्रानां ४ मील्याश्वतरङ्कानां 🧎 मा-पानां १ मुद्रानां १ तएडुल भागाः ५ माघ भागी २ मुद्रभागः १ स्वमीत्याः स्वस्वभागं द्वाः | १५ | २ १ तील्यासाः 🗓 है है फलेक्यं 😘 मिश्रं है त-एड्डमील्यं दे |तएड्डतील्य रूड्ड माषमील्यं दे मापतीलं के मुद्रमील के मुद्रतीलं के यथा पोडराद्रम्मानामेकोनिष्को भवति द्रम्माधोदेश स्थ मे-कादिकं हरं पोडशाहतं कलातस्माद्वाम्मान्त्रिष्कवा-

तिफलंभवतीतिपूर्वेझेयं श्रयवा एतस्मिन् ऋयविकः य गिति इ एकर्म्मए गाफल यो गासं मिश्रमेकस्य मार्न स्यारपुनस्त्रीराशिकेए। एकस्येदंचेदेषां किमिति . त्र्यथ रत्निसिश्चक्रमः

नरदानवधेनोनरत्नवोषैर्विभाजितम् ११० इष्टंबादो-षरतीस्तु शेषरत्ना हतिंभजेत् लब्धंतत्त्वस्व के के कर-त्त्रमील्यमुदीरितम् १११ तस्मान्युल्यधनाः सर्वेजाय-न्ते तेहिमानवाः उदाहरणं सुक्ताःबाएगन्त्रगाः वज्याः

परमसिद्धान्ते SS

मएायः सागराः धनाः रामाएगं मिथएकेक दानान्त्रत्य-

धनान्वद् न्यासः ५।७।४ दानं १ नराः ३ नरदान वधेन ३ स्वस्वरत्वसंख्यावर्जिता दोषरत्वा मुक्ता २वः

ज्ञा ४ मणिः १ इष्टं ८ प्रकल्पास्वस्वरत्नदीवैरिष्टं ८ भक्तास्वस्वैकैकरत्नमील्यंजातं मुः ४ वन् २ मः ८

मुक्तानां मील्यं २०वः १४ मः ३२ त्र्यतोसमधना निः २२।२२।२२ एकेक दानात्स्वस्वरत्वशेषाणि मुक्ता३

वज्जाः ५मं-२ यथासुन्कारत्वीनरेरोकं वज्जीनरायर कं मिए।युक्तायदक्तंतर्हिनद्रस्वदीषं ३ एवं कञीनरेशी कं मक्तारत्वीनराय एकं मिश्रुक्तायदत्तं तर्हित इत्व शेषं ५ एवं एकं प्रथमाय एकं द्वितीया यहत्वा तृतीय-

स्यमिएदोपंजातं २ त्र्यथवाशीषरत्वा । सु-२ | व४ | स-१ | हतिं शेषरत्ने भीवत्वास्वस्वरत्नमील्याः मुन्धं वन् सम् ८ समधनानि २२।२२।२२

त्र्ययसुवर्णान्मादीनां ऋयविऋयविधिः एकैकस्यतुरवस्विवमीत्वानतील्यताहितं ११२ रुवातेः

सुवर्णानादीनांऋयविऋयविधिः. पांचुति भीज्यंविङ्गेयंगएकोत्त्तमेः त्तोल्यानामेवयोगेन भक्तं भारवंचयक्कलं १९३ तौल्यानांचोगमध्येतुमोल्यमेकस्य तद्भवत् तद्वचैक्यवर्णः स्यादैक्यमीत्यंच नन्द्वेत् १९४ मलत्तंयुक्ततील्यानां योगमध्ये कुमील्यकं मलयुक्तील्यः योगेनहत्वाभाज्यसुदीरितम् ११५ तच्छोधिते नती-स्येनभक्तंलव्यंफलंभवेत् एकस्यशुद्धमध्येततन्मीत्यंजा यतेख्य ११६ शुद्धस्यैवैकमील्येन भाज्यंतत्परिभाज-

नमीत्यस्य ती त्यासंचत्फलं भवेत् ११८ तत्फलं मील्य-मानंतुचाङ्गातस्यहिजायते ऐक्यमील्यञ्चतील्येक्येवि <u> १</u>ठेपंचसमाचरेत् ११५ तील्यमील्यवधैक्यस्यतच्छेवं चसमुद्धरेत् भेदेनैक्याज्ञातमील्ययोर्फलंचत्रजायते १२० त्र्यञ्चातमील्यमानंतुतन्त्रीयंगएकोत्त्तमैः उदाहर

एं यस्यैक माषकस्य सुवर्णस्य मील्यं युग्मोन्मितं तः

चेत् शृद्धतील्योच्यतेस्वर्णान्नादीनांक्रयदिकवे ११७ तील्येक्येचेवमोल्यक्रेतील्यमील्याहतेश्रुति हिलाविहिः

त्सुवर्णमृष्टमाषोन्भितं यस्यैक माषकस्य मील्यं वेद तुल्यं-

परमसिद्धान्ते યદ तद प्यष्टमाषो न्मितं यस्यैक माषक स्यमीव्यंवसु सितं

तहेद गुम्ममाषो सितंचे त्तदैथ्यवर्णवद तत्रसवर्णस्था नेन्द्रान्तादिकं माषस्थाने सेटकादिकं ज्ञात्वा एतदुदाहर-

त्र्ययवातन्मध्ये एकस्यमीत्यमज्ञातं चेन्त*न्*गीत्वंबद ग्रयवा एकस्यतील्यमज्ञातंचेत्तन्तील्यंवद न्यासः मी २ ४ ८ गी ट ट उर एरिट शुद्धतील्य ३० ऋन्यन्यासः र है है | ट ट रेप्ट | मीत्यंजातं ४ श्रायवा श्रान्यन्यासः है 💆 🗧 तच्चोक्तवत्करएगल्लब्धंनील्यं २४ द्विनीयोदा-त्याहति १६१०। १८२ युतिं २०८ हित्वादोषमञ्चात०स्यः तीत्या दसमज्ञातमीत्यमानं जातं ४ तृतीयोदाहरशे ऐक्यमीत्यं ६ तीत्येक्यं १६ ऐक्यमीत्य प्रतीत्येक्ये १६

श्चेच्छोधनाश्चिदा ३० निताः जाताः तदैक्यवर्णवद

रऐ। सर्वेमाषाः ४० त्र्यथवासेटकाः ४० मलयक्ताः

एो ऋन्तादीनामैक्यवएंविद ऋयवा एतस्मिन्नदाह

न्तरं कत्वाशेषं ४८ ऐक्यमीत्य६ श्रज्ञातमीत्य ८ योर्भे

टेसं २ भक्तं लब्बं २४ जातं तीत्यं २४ न्त्रथमित्रमध्येएकद्वित्र्यादिभेदानवनविधिः क्रमस्यैकद्तानंकान्व्यस्तानेकोत्तरस्थितान् १२१ सिः द्वेननिज्ञपूर्वेणहत्वातस्माद्ययाऋमं एकद्वित्र्यादिभेदाः स्युरिटंसाधारएांमतम् १२२ उदाहरएां एकद्वित्र्याद्या-ब्यपडुसभेदान्बद न्यासः ६ ५ ५ ५ ६ ऋमा-ब्साताः ६।१५।२०।१५।६।१ मिष्ट ऋम्स स्वर्णक कटुक तिक्त कषायरसाना मेषांयोगं षडुसभेदाः ६३ इतिमित्रव्यवहारः समाप्तः

ग्रयश्रेद्वीव्यवहारः नत्र संक्रिति विधिः गच्छाईसिक गच्छ प्रमेका द्यंत युति र्भवेत् नत्संकिष्ठतसंङ्गः स्यान्द्रत्वातेनाश्चियुकृपदं १२३ त्र्याप्तंसंकिलतानांतुयोगं झेयं विचक्षएीः गच्छां द्विगुणिः नंसैकं कत्वासंकलिताहतं १२४ रामाममे कपूर्वाणां

परम सिद्धान्ते 80 वर्गी एगामैक्य मुच्यते एक दीनां धनैक्यं स्याद्वर्गं संकिरः

तस्यच १२५ उदाहरएां एकादीनांपंचपर्व्यन्तानांचतुः ष्कर्मान्वद् न्यासः १।२।३।४।५ संकलितानि १।३ ।६। १०। १५ एषामैक्यानि १।४। १०। २० । ३५ वर्गैक्याः . नि १। ५।१४। ३०। ५५। धनैक्यानि १। ५। ३६। १००।

ग्रयश्रेद्धन्तर विधिः रुद्धि ध्रंब्वेक गच्छन्तु साद्यमन्त्यधनं भवेत् ऋाद्यन्तै कदलं मध्यंसर्वम्मध्यं पदाहतिः १२६ सर्वे गच्छो दुतं व्ये कगच्छ झार्द्धचयोनितं स्त्रादिस्तदुच्यते सर्वे गच्छासं

मुखवर्जितम् १२७ व्येकगच्छद्लेनासंदृद्धिः स्यात्त-च्ययोत्तरः द्विष्टसर्वचयप्रचत्तराई मुखान्तरात् १२८ वर्गाद्यतसद्चादिहीनमईचयान्वितम् उत्तरे एगेयुतं लब्धंगच्छं ज्ञेयंचतत्पदं १२५ उदाहरएाम् वक्रेरामं चवेयुग्नंगच्छंयत्रयुगोनितं तत्रतकीनितान्कर्गान्शी-प्रब्रुहिनिचसएा न्यासः स्प्रादिः ३ चयः २ पदं ४ स्प्रन्तः धनं र मध्यधनं ६ त्र्यादिधनं ३ सर्वधनं २४ .

समादि रूत्तज्ञानाय श्रेक्षन्तर विधिः ग्रथद्विगुणचवादिफलान्यनश्रेद्ध्यंतर्विधिः

त्र्योजेगळे चदेकोने गुए।लक्ष्मए।मालिखेत् तुत्येनइ छिते-

वर्गिचन्द्रमेवंसमालिखेत् १३० तद्गच्छक्षयपर्यन्तंक

नान्येगुएको भवेत् न्यस्तात्त दुएवर्गीत्यं फळमेके न व र्जितं १३१ एकोनंगुएकिनासंख्यालब्धंम्खाइतं त-त्सर्वेगणिनंडोयं धीरैस्तत्र गुणोत्तरे १३२ उदाहरणं -

ऋाटिर्नेत्रोत्मितंयत्रचोत्तरंत्रिगुणोत्मितं गच्छंपंचो-नितंनत्रसर्वेद्रहिविचस्ए। तद्दत्तकीमितेगच्छेसर्वे द्रुहिदिचस्पण न्यासः ऋादिः २ चयः ३ गच्छः ५ बह्वी

ू मच्छ प्रश्निक्ष १४२ व्यक्ति १४२ व्यक्ति १४२ व्यक्ति १४२ व्यक्ति १४२ व्यक्ति १४२ व्यक्ति १४१ व्यक्ति १४१ व्यक्ति १४१ व्यक्ति १४४ व्यक्ति त्र्यसमादिवृत्तज्ञानायश्रेखंतरविधिः

गच्छंपादाक्षरमितंद्दिगुणतुच्यं भवेत् पूर्ववचद्धः स्था-नादु एतर्गभवंफलं १३३ भेदानांसमस्तस्यसं क्या-ज्ञेयाविच स्एौ: तद्दर्गनिजम्लोनं चत्तस्याई समस्यहि

१३४ समन्तस्यभेदानांसंख्यावर्गरुतीतथा भेदानांस-मर्च्तस्यसंख्यावर्गपरित्यजेत् १३५ संख्यास्यादोज रक्तस्य भेदानां निजन्छन्द जा उदाहरएां नुत्यानामई समानाविषमाणां स्तानां पृथक् पृथक् त्रानुषुप्चंद

सिभेद संख्यांवद न्यासः उत्तरोद्विगुणाः २ गच्छं ८ वद्धी ४ वर्ग । मुक्त २ वर्गः १६ व २ ५६ मुक्तवर्गनं फ-लं २५६ समग्रत्तभेदानां संख्या २५६ ऋ

स्ववर्गे ६५५३६ स्वयूलोनं २५६ ऋईस मचत्तानां भेदसंख्या ६५२८० त्र्राय २५६ वर्ग६५५३६

न्त्र्रस्यवर्गे ४२८४८६७२८६ न्त्र्रस्यमूलं द्विलाविषमव्-त्तानां भेदसंख्या जाता ४२ ८४ ८० १७६० त्र्य ष्टास्तरप दस्यसम्यस्मेदसंख्या २५६ ऋईसमभेदसंख्या ६५-

२५० विषमचत्त्त भेदसंख्या ४२,८४,८०१५ ६०

श्र्यथसमञ्ज्ञादिपरिज्ञानम्

चलारं श्वरणा यस्यचिद्धितास्तुत्यलं सणैः १३६ तुः ल्यरेनोदितस्तनुन्धन्दशास्त्रविशारदेः तृतीयमादिव- . इस्य हितीयमन्त्यवद्भवेत् १३७ कत्खण्ड समयक्तं स्वान्त द्विचांविष्मंभवेत् इतिश्रेढीव्यवहारः समाप्तः

न्यान् नाप्यन्यप् आजनाः स्प्र<del>यक्षेत्रव्यवहारः</del>

य्न्यिक् विचारायें विद्धः भूत्यं विद्धाल्याते १३८ स्वा-नमावं प्रवेशस्य भागमात्रं भवेत्राद्धिः तत्र्युः स्वंगीयतेयः स्या भावश्रेष्टिरक्ते तत्त्वया १३५ वैर्थासस्यानमात्रः स्वा-नन्तु भागकरोत्त्याते वेशाभावो भवेद्य जनत्र संत्रोतिगद्धः ते १४० स्नेत्रदिन्द्ययाव्यासीव्यस्तवाश् समीद्वयैः इत्वान कास्त्रयोत्त्रींगस्थानं केंद्राविधंभनं १४१ स्नकेद्रः

> न्यासःदोःकोखकारगरेखाक एक्सिपगतायवा ऋजुनन्तुसमारे खारण्याताजगतिमन्यतं १४२

विद्युद्ध्यातारेखाशांकां निर्माणकार्या १० र विद्युद्ध्यातारेखाशांकां निर्माणकार्याः वर्व्यगरेखानिगद्यते १४३ ष्ट्रशामस्तकदेशास्वियोग संधिस्ववंगता यारेखाकुराडव्यकारा विवरेखाहुसारस्ट ता १४४ तत्रोद्धीयोगस्यमस्तक्रस्यपेचकैः परम सिद्धानी

स्चीरूपसमैश्चित्ररेखाभवतिमस्तके १४५ श्रथभुजकोटिकर्एज्ञानम्

तिर्च्यग्भुजं भुजङ्गेयंकोटिस्तूर्धभुजोच्यते कोटिबाह्न प्रयोगिध्येयत्सूत्रांतच्छुवोच्यते १४६दोवीतिकारिवगिद्यान्यूढं तच्छ्रवरोगभनेत् कोटिवगीनितात्कर्णवगन्म्रिलं भुजंभनेत् १४० दोक्कपृविर्गयोर्भेदान्मूलं कोटिस्तदुःच्यते उदाहरणं कीटिर्वेदोन्मिता यत्र बाहरूविभिनिततथा कर्णः पंचीन्मितंतत्र शीव्रं कोटिः ४ भुजः३ कर्म्मत्रयंवद् न्यासः केरि

ऋयसमकोटि अजकरणस्

कर्णः ५ त्र्योजदोः कोटि घानोत्यं मूलं यत्स्यात्कृते रिव १४८ त-कोटि भुजयोस्तृत्यंमानं ज्ञेयं विचक्षापौः उदाहरणां यत्र भूपोन्मिताकोटिः १६ नववाहु ९ स्तत्रसम्भुजकोटीः व्दकोटिः १६ भुजः ९ वधं १४४ मूलं १२ समभुज १२ कोटिश्र ऋथसमकोटि भुजवेधानामानयनविधिः ऋोजदोः कोटिवेधानां घातान्मूलं घनादिव १४८ वन

समकोटिभुजवेधानामानयनविधिः द्दोः कोटिवेधानां तुल्यं मानंत दुच्यते उदाहरएां यत्रहाद-

शकोटिः १२ नव ९ भुजः सुम्मो २ न्मितं वे धंतत्र समकोटि भुजवेधान्वद् न्यासः कोटिः १२ बाहु ४ वेधः २ घातः २१६ मूलंद सममानं भुजः इकोटिः इ वेधः ६ स्त्रा-सच मूलानयनं तत्थवगिन्तरं छलासैकल व्य छतीह-रः १५० स्वाद्वरेणोद्भृतंमूलस्यावदोषन्तुनत्कलं स्वा-न्यूलकुलजांतत्तुवर्गासन्तपदम्भवेत् १५१ सैकलब्ध्य-नेक्ता भेदं लब्ध धनस्यच तेना सं धनसूलस्य तवहो वं फलंभवेत् १५२ तद्वनासन्तम् लंस्याद्भिनवर्गधनेतः था हारांशवधम्छंतुहाराप्तंतत्समीफां १५३ वर्गमू-लंतु विज्ञेयं घनमूलंच पिड़तैः उदाहरएां सार्द्ध वेदस्य वर्गमूलंत्रया घनमूलंचवद न्यासः 💃 हारांश २।५ सः त १८ मूर्ल ४ मूलावरोषं २ मूल ४वर्ग १६ सैकमूल ५ वर्ग २५ वर्गा १६। २५ सरं ५ तेनासंस्लावशेषंजातं लं <sup>१९</sup> स्त्रन्यन्यासः धनः <sup>५</sup> हारांत्रा २।९ घात**१**८

है मुलयुतं जातं है हारासंजातं भिन्नवर्गेनिकट मू-

परमसिद्धानी

मूर्ल २ मूलावदोषं १० मूलेधनं ८ सैकमूल ३ धनं २७ धनयो ८।२७ रन्तरेएगा १८ प्रांमूलावरोघंजानं 🤐

मूलयुतंजातं १८ हार १ भक्तंजातंभिक्यधने निक टम्लं इट स्स्मम्लानयनंतुज्योत्यत्तिस्थानेकथया-म स्रियाऽकरणीगतेष्ट भुजाकणीकोटिरचनो-च्यते. इष्टाप्तमिष्टदोर्वर्गेलन्धमिष्टादावर्जितं १५४

कत्वाखण्डे भवेतांतीकएिकोटीखनेकघा इष्टयोर्व-र्ग भेदन्तु बाहुः स्यादिष्टयोस्तयोः १५५ वर्गयोगन्तुतत्त्र-

मेष्टताडितं १५६ दोः संज्ञस्यात्तुकोटिस्साबिष्ट भीत

र्ग्यस्यासचाऽकरएगियतं व्येकेन ही एवर्गेए। भक्तं हि-द्भजोनिता तज्जात्यंजायतेकएं चिायकएँ यमाहतम् १५७ हीष्टद्रांतिष्टवर्गेरासैकेनामन्तुजायते कोटिको टिगुएांतिष्टंकलातच्छवरोन्तरम् १५८ दोः स्याद्वा लिष्टयो घीन दि प्रको टिस्तदुच्यते उदाहरणं यत्रसेष्ट भुजंद्वादवातत्रकर्णकोटीवद् न्यासः इष्टभुजः १२वर्गः १४४ इष्ट २ भक्तः ७२ इष्टेन २ युक्तोनाद्वीकतः कर्ण

कर्एकोटियुतिबा॰क॰ भु॰क•भु•नयनम् ५५ .कोटी ३७।३५ एवमिष्टवद्या इहु धाकर्णकोटी स्यातां ग्रयवाइष्टं भुजमिष्टकोटिरितिज्ञाला उक्तवल्कला कर्ए भुजीस्वाताम् न्त्रयमकारान्तरेषोष्टकर्षाद्भजकोट्योच . नयनम् इष्टवर्गेए।सेकेन हिप्तकर्एविभाजितं १५५ फ-लमिष्टाहतंदोः स्यात्कोटिः कर्एफळान्तरं उदाहरएाम् यत्रतिथिमितंकर्णतत्रभुजकोटीवद् न्यासः कर्णः १५ दियाः ३० इष्टः २ वर्गः ४ इष्टवर्गेणसैकेन ५ दिय्रकर्णः ३० भक्तः फलं ६ इष्टाहतं फलं १२ भुजः १२ फल क एारि न्तरंकोटिः ८ इष्टवशाद्वहुधा. श्चरकर्णकोटियुतिबाहु ऱ्यांकर्णको-

. टिज्ञान मथवा भुजक् ऐवियकोटि भ्यां कर्णभुजानयनं विरच्यते कोटिवर्गीयवाबाहोर्वर्गः खएडोचितोज्जृतः १६० लब्या खएडोचिते हिस्बेहीन युक्ते दळीकृते खएडे हे खएड योग स्पविज्ञेयेदोः श्रवारुती १६१ तेकोटिकएन्हिपेवाज्ञे ग्रेस्वएडे विच साएीः यस्यरवएडानिस्वएडेवा स्युस्तत्स्वः

परमसिद्धान्ते પદ एडोचितोच्यते १६२ उदाहरएां श्रप्टकरनुत्यदीर्घवं

शोवायुनैकदेशेभयः स्वम्लाट्बिकरेभुनेतद्रयस एड: श्रुतिक्तपुरुभुश्चेत्कर्णकोटिक्दपेवंशस्वण्डेवद्न्याः

बाहुः ४ वर्गः १६ खएडोचितेन

८ भक्तः फलं २ त्र्यतोवंशखएडेकोटिकर्णऋपेकोटिः ३ कर्णः ५ उदाहरणां शिवमन्दिराद्वानिंदाद्वस्त भूमी

पूर्वस्यांविष्गुमन्दिरं शिवमन्दिरात्बोडशहस्तो निः

तेचाम्येब्रह्ममन्दिरं शिवविष्णुमन्दिरान्तरे कस्मिन्धि-द्ज्ञातस्थाने गरापतिमन्दिरं गरापतिविष्यु मन्दिरान रसमं गणपतिब्रद्धमन्दिरान्तरंचेत् दीवगरोदामन्दिरा

न्तरं तथाविषा गरोश गृहान्तरं नथा ब्रह्म गरोश गृहान्त-कोटिः १६ खएड-उक्तवत् चिवगरोशा

विष्णु गएोशान्तरं २० ब्रह्मंयह ब्रह्मगरोशान्तरम् २० स्त्रश्यकोटिकर्णान्तरबा-

इभ्यांकोटिकएचिंगनयनम् कोटिकणी-

·न्तरेशासंदोर्वर्गकोटिकर्णयोः विश्लेषेशोनयुक्तोर्द्धेताः वुक्तीकोटिकर्एको १६३ उदाहरएां कोटिकर्णान्तरमे कार्ड्यत्रवादुर्यमोत्मितंतत्रकोटिकएविद न्यासः कोः टिकर्णयोरन्तरं दे बाहुः २ उक्तवत्कोटिकर्णे हिं ८ है

*ऋ*थोडडीयमानानयनम्

दि प्रकोटियुतेनैववाह् ना परिभाजितं बाहुंकीटबाहु-तंरुत्वाह्युडीयंतिभगद्यते १६४ उदाहरएां वेदोिन-तेकोटिरूपे कपिद्वंगतमेकः पथेनान्यः किंचिद्र्ध्नेग-त्वाकर्णस्त्रपोष्टोन्मिते भुजे उत्तीर्यतयोः समगमनंचेद् ड्डीयमानंबद् न्यासः र्रे े भुजः ८ कोटिः ४ समगितः १२ लब्धमुड्डीयमानं २ कोटिः ६ भुजः ८ क-त्र्ययान्यत्करणविधिः दोः कोटियुतिवर्गीनात्कर्णवर्गाद्यमाहतात् सूले दिस्ये

न्तरंयोगं योगेना सिविभाजिते १६५ स्यातांनीको टि-बाहूबाकएविर्गाद्यमाहतात् दोः कोटि भेदवर्गीनान्स्-लेहिस्येन्तरेएाच १६६ भेदंबोगंदले कला तबैकब

परम सिद्धांन्ते 40

. स्मरेन्द्रजम् त्र्यन्यत्रैवस्मरेकोटिं तसिद्धिः स्याद्यथात था १६० उदाहरणं यत्रपंची-मितंकर्णभुजकोटियो-गंनगंतत्रबाहुंकोटिंचवद न्यासः

५ दो: कोटियोगः ७ जातेकोटि भुजे ४। ३ वाकर्णः ५ भुजकोटबन्तरं १ जातेकोटिभुजे ४ । ३ त्र्ययवा भुजः

३ कोटि: ४ . **ब्र्यथकर्ण्**यो**र्योगा**लुस्बादिपरिज्ञानं तुत्यभूमिस्यलेबेण्वोरन्योन्यमग्रमूलयोः सूत्रयोग स्यलाद्देण्योर्घातंवंदीक्यभाजितं १६८ लम्बः स्या-निजवंश द्वा पृथ्वीवंशेक्य भाजितास्वाबाधा भूमिस्र-एडः स्यालुम्बान्दुलम्बयोर्वधं १६५ स्वाबाधाभाजितं लब्धमन्यवंशसुदीरितम् स्वाबाधालम्बवर्गेदयसूलं कर्रोवाकं भवेत् १७० पृथ्वीकर्णावायो र्घातंतस्या बाधोड्वतं फलम् पूर्णकरोन्चिते पूर्णकरतिलम्ब-मर्दितम् १७१ कर्णांदी नो दूर्वलब्धं तहं दांस मुदीरि-

तम् उदाहरएां रामषिमितयोर्वशयोर्परस्परसूला-ग्रगयोः सूत्रयोयोगस्थानास्नुम्बादिकान्वद् न्यासः



वंशी ६।३ योगः ८ छन्धः २ वंशा-चरभूमिः १२ चेछुन्बादुभयत्रभूख-एडे ८।४ वाभू १८ श्रेलबाधेभुखएडे

१२।६ भूवद्याद्वहुधा भूखएडे स्यातां

## श्रया ५ सेत्रविचारः

वजैवलधुरोयोंगंतुत्यंवात्यंमहाभुत्तात् १७२ ऋजुरोः संत्रमसेवांदेशे यंध्रष्टभाषितम् उदाहरएां यत्रचतुर्धः वैद्यादयाद्वितिवर्शीन्मिताः भुजाः त्रिकोरोष्टाधि स्तो-म्मिताः भुजाः एष्टेरोहिष्टास्तजतदक्षेत्रकृपेहिन्याः सः

बहु भुजं १२लघु शशह योगं ११ वावहु भुजः ८लघु शह योगंट ऋषवाभुजदालाकयान्त्रक्षेत्रोपपतिः

## **ग्रयत्र्यस्य सेवप्रतानयनमुच्यते** विकास स्मेरिकं वार्ट अधिमाणिकी १४१२ च्या

क्षेत्रेत्र्यस्मेरंपरेकंबाहुं भूरितिपाखितैः १७३ व्यस्तेतः द्रज्ञयोगींगं भेदग्नेतद्रजोद्धतं द्विस्थालव्ध्याधराही- परमसिद्धान्ते

६०

नयुक्तातह् ितातयोः १७४ स्त्राबाधे भुजयो र्भू मेःख-एडे झे ये विचक्षापीः स्वाबाधा बाहु कली स्क यदि की पा सदंभवेत् १७५ तल्लम्बं भुजयो स्वयोगात्कोटिसमंभ वेत् तद्भुलम्बाहतेरई व्यक्षे सेत्रफलं भवेत् १७६ सर्व

बाह्वेक्यखण्डंतुिलिखाऽधिस्यलेषुच हिर्लेकैकस्य लेबाहू न्रोषधातपदं स्फुटं १७७ त्र्यस्रे संवपलं होः यं चतुर्बाद्वादिकेतया क्षेत्रेक्षेत्रफलंस्यूलंबिक्षेयंपाएँ नोत्तमीः १७८ उदाहरणां व्यख्नेवाकामिते भूमीवा

द्वविश्वतिथीसमीयत्रतत्रसेत्रफलंबद् न्यासः स्ः १४ भुजी १३।१५ लब्धे त्र्याबाधे ५।५ -लम्बस्य १२ क्षेत्रफलम् ८४ ऋ

धऋणावाधोदाहरणं नवतुल्यक्षिनीसप्तद्दाद्दाः मितीबाह्यन्नतत्रत्र्यस्त्रेक्षेत्रफलंबर्न्यासः भुजी १७।१० भूमिः ५ न्य्रव्यनिर्वाहार्थे



सप्तद्शोन्मितं भुजं १७ भूरितिज्ञा-त्वानत्र नवद्शीबाह्यस्मृत्वासार

भूः १७ बाह्न ५। २० ऋावा-विष १५४ सम्बः <sup>७२</sup> क्षेत्र

फलं ३६ त्र्यथवा सर्वभूमिः १५ त्र्यर्थात्यृथ्वीऋणावाधयो र्चीगं १५ तछुम्बट घ्रमर्ड ६० तत्सर्गावाधासहितस्य क्षेत्रफळं ६० तस्मिन्ऋणाबाधैव सूम्य ६ ई ३ लम्बाट

हतं रुलाजातमृए।क्षेत्रफलं २४ ताँहिलाजातं सेत्रफ-लं ३६ ऋयवा भुजी १०। १७ भूमिः ८ त्र्यस्रेतद्भुजयो र्योगनित्यादिनाळव्यं २१ त्र्यनेनभू ऋनानस्यात् त्र्यस्मा-देवभूरपनीता शेषाई मृएागताबाधा दिन्वै परी त्ये ने-त्यर्वः तथाजाते त्र्याबाधे ६।१५ त्र्यतउभयत्रापिजातोः लम्बः ८ फलंच ३६ ऋथवा ८।१०।१७ बाहू नांयोगा ३६ई १८ चतुः स्थितं १८।१८।१८।१८ बाह्मभिर्।१०

190 विरहितशेष ५।८।१।१८ वधा १२५६ <del>-</del>मूलं ३६ स्फुटं क्षेत्रफलम् ३६ ऋणाबाधास्थले प्रकारान्तरेण फलनयनं त्र्यस्त्रेतुभुजयोभेदंयोगनि घ्रंभुनोद्धतम्

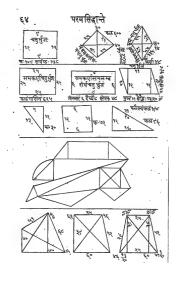
. परमसिद्धान्ते चेत्फलं भूभिनश्रोर्द्धे भूमिहित्वाफलेदलं १७ ९ जायते

सासयाबाधाभूफलेक्यदलंतया न्याबाधालधिकस्यैव वाहोर्झेयाविन्दक्षरीः १८० स्वावाधाबाहुरुत्योस्तुभे-द्मूळंतु यद्भवेत् तल्लम्बमुच्यतेनेनचावाधे गुणिते पृथक् १८१ विन्द्रेषार्द्धतचीरतत्रत्रयस्त्रस्त्रेत्रफलं भवेत् न्प्रथन्तु र्भुजादि सेत्रेफलानयन विधिः चतुर्वाह्वादिके सेत्रेबुद्धात्यस्मान्यमादिकान् १८२ रुत्वातत्रततस्तेषांत्र्यस्राणांफलसंयुतिं रुत्वाक्षेत्र-फलतस्य क्षेत्रस्यैवहिजायते १८३ व्यस्रेलम्बसमीप-स्यकर्णस्य भुजस्यच वर्गेलम्बकृतिं हित्वासूलं भूखाड मुच्यते १८४ त्र्यावाधासिद्वाहुस्तुतद्भ्त्वएडमुदीरि-तम् कोटिलम्बाभिभङ्गेयंकएविषकल्यकारयपीम् १८५ तम् स्परितिबाह् बाह् झेयीविचसंरीः तत्राबाधेचलम्बं चह्यानचेत्तत्फलंखलु १८६ तुल्यबाहु चतुष्कोए। सी-त्रेत्वेक भुजस्यच वर्गेवेदाहते भेदादेक कर्णकृते: पदं १८७. त्र्यन्यत्करोचिते घातंयत्तयोरोजकर्एयोः तस्याईतत्क

सेत्राणामाकारज्ञानांविभिश्वनादीनांविद्वानिः ६३ छंज्ञेयं सेमेनुत्यचनुर्भुने १८८ छम् ग्रं भूमुखेक्यार्द्व तुत्यक्येचनुर्भुने यस्तक्कोच्यनेतृत्यकर्णसेनेचनुर्भु जे १८८ वाहुकोटिनधंमानदिक्षेयत्तक्करस्वतु रस्त बाहु युत्तसेनेटसाकारांशककतं १८० पृवक्कलाक छेचोत्वेयुस्त्वासेमकलंभनेत्

वाहु सुनतम प्रचाकाराशक्रक १९० प्रवक्तक के चोरचे बुक्ता सेत्र फल भवेत . ग्राथको माणामाकारज्ञानार्थे विभुज्ञा-दीनां चिद्धानि लिख्छो ते क्षेत्रक क्षा प्रधानिक क्षेत्रक विश्वक प्रकार प्रधानिक क्षा प्रधानिक क्षेत्रक विश्वक





उदाहरणम् चत्रभूमिः राऋमिना बाह्न विश्व तिथिमिती तत्रक्ति फलंबद अत्र भूमिरिन्द्रमितासुखं नवमितंबा-इ स्वीदिश्वीन्मिती तत्रक्षेत्र फलंवर स्त्रतत्व तत्व-पंचाबि पंचाबिमिताः भुजाः २५।२५।२५।२५

स्वित्रिमितः वा राजीमत स्त्वेकं कर्णस्त्रत्र विषम कर्ण-समचतु र्राज क्षेत्रफलंबद यत्रविस्तारंषाएमेतं दैर्ध

मधोन्मितं तत्र समलम्ब समकर्णा दीर्घ चतुरस्त्रे शुेत्रफ-लंबट यत्रभूः श्रुतिसमामुखंशिवं बाहू नखिवनीत त्रसेत्रफलंबर यत्रमुखंकसोन्मितंबामबाहः साधि मितः दक्षिणबाहुरष्टार्भिमतः भूमिः पंचादिमिता तः त्रक्षेत्र फलंबद यत्रवामबाहुर्नर्न्सैत्रिमितः दक्षिए। बोहु इर्वस प्रमितन्त्रम्यवाम भुजस्तलोन्मितः भूमिःप ष्टिमितातन्त्र क्षेत्र फलंवद .

श्रयक्षेत्रफलात्कोटि <u>भुजा</u>नयनं तुत्यकर्णा चतुबहि सेत्रे सेत्रफलं भनेत् १५१ कत्यि-तेष्ट भुजे नैवकोटि: स्यालोटितो भुजम् व्यस्नेदि हा परमसिद्धान्ते

फलादेवंकोर्टिः स्याब्कोरितो भुजम्

श्रयधनफलक्षेत्रफल पृष्टफलानां

रहपद्मान मुच्यते. सर्वतोवेधविस्तार्देध्येस्तिल्यंधनं भ वेत् तत्वंडगाः

नित्तत्यानिजायने बाह्यतः खलु १५३ तुच्येश्वतु र्भुः जैर्दात्यं कर्री ह्याचितम् क्षेत्रंत द्वीयते तहत्पृष्ट-

क्षेत्रसदीरितम् १८४ -**ऋथिषमगोलिषमञ्**त्तयोः सम

गोलसमञ्ज्ञ समब्यांसकरएऋम-

उन्यते

त्र्यत्यवत्तस्यते गोलमधिवृत्तस्यलेतया मापयिता तुतद्योगम्मापितस्थानसंख्यया १८५ भक्तातत्य-

रिधि ईं य एवं विषमकुण्डले व्याल्याधिव्यासंसंयोग म्मापितस्थानसंख्यया १५६ भक्त्वासंविस्तृतिर्ज्ञी

या तद्व तं कुरुडलोच्यते वाल्याधि एत्त संयोगम्मापित स्थानसंख्यया १८७ उद्धतंपरिधिर्झेच इत्यंसर्वत्र

र्यन्तव्यासयोर न्योन्यमानवनम्

σş

श्रयन्यास जान एक प्रात्यस्थलात्स्त्रमन्य प्रात्यांशकं गर्न १५८ वृत्ते

मर्वाधिकं यत्स्यान्त हुयासंसमुदीरितम्

वृत्तंद्रज्ञानलांगवासरैः भक्ताः नागो रंगाश्रांकवेदेव्यासान्यतेखळ

भिहत्वा वृत्तंखाँकार्कभिक्तवा तावऽ-न्यान्यगुणाप्तीस्तरसामान्येश्त्तविस्तृती २०१ न्यःगीः

व्यास झाः श्रृतियः त्रीले भिक्ताः स्यात्स्युलमण्डलः

. न्ह्-याः वृत्तं शैळाँहतंस्यूलं शुत्योंसंब्याससीरितम् २०२ सप्तोनितेंब्यासे वत्तवद् वताइयास चोन्क **व्यासः ७ परिधिमानं स्**स्मं नाम न्यांसः

सामान्यपरिधिः २१ १२ ३८

७ सामान्यपरिधि २१ <u>१२३</u>५ जातंच्यासं ७ परिधि

स्यूल परिधिस्तु २२ परिधि २१ वपदर्प

परमसिद्धाने.

Ec

६० परमासङ्ख्या श्चेत्र२ इशासः ७ **ग्राथ्य-त्तसेन्रसेन्नप्रकलानयनम्** एन्ता ४ देव्यास स्वयुक्त एनसेन प्रकल्प वेत् व्यासन-र्गाहृताः सुन्मसितुर्यमहिवाक्ताः सत्विषुद्वीसरे भेक्ताः

गहिताः युःमस्तायुःमादवाक्साञ्चलं विद्वासर सक्ताः चत्तक्षेत्र फळं भवेत् उदाहरएा समन्यासो भिनेदः सक्तेत्रे फळंवद् न्यासः विद्वासः व परि

धिः २१ निष्दुर्भ अध्यमिले पृष्ट फला मयनस् र ज्यहर्भ अध्यमिले पृष्ट फला मयनस् व्यासं रत्ता इतं यत्त झोले पृष्ट फलं भवेत् २० १ निर्मि नागा अता न झंब्यासंविस्तार ताडित म् पञ्चनित्रन पञ्चासंगोले पृष्ट फलं भवेत् २० ५ उदा इरए। म् दाः

चन्नाप्तगालपृष्ट्यभलं भवत् २०५ उदा इरशम् ४६। ल विस्तृतिः शैलातपृष्टास्त्यं भलवद् न्यासः ज्यासः ७ परिधिः २१ १५४८१ गोलेपृष्टफलं १५३ १९६०

श्रथ गोले घन फलानयन स्व प्रव्यासा हता दूनास्पर्देषडंग विवाहतात् गाँ छ-ऋषाकवाणामाद्वोले घनफलं भवेत् २०६ व्यासव

न्द्र्याकबाएगामादाल घनफल भवत् २०६ व्यासव-गहितव्यासम्प्राणी आकसागरै "हलाषट्तिकेषट्च- रत्तक्षेत्रस्य सेत्रफळो पपितिकम् इ.५' ट्र चर्दी संस्थादेव सम्मनेत् २०७ तत्वयद्ग्यमङ्का इयेक्षै गीळ धनंभवेत् उदाहरणां प्रहोजज्यासं सातृज्यं तहोळान्तर्गतं घनफळवरच्यासः गोळ ज्यासः ७ परिधिः २१ न्यूहरूप् स्वग्रज्यासः ५५ गोळस्थान्तर्गतं घनफळनात म्-

२१२ <u>६८०३१६०४४</u>

ब्यथान्योक्तं धनफलानयनम् गोले विस्तारवर्गप्रं चतांतर्कोद्धतं भवेत् २०८ स्यूलं घनः

फलंबेतचाऽन्योक्तंचाऽपिलीकिकम् उदाहरणम् व्यासः ७ परिधिः २१ <sup>१५४८१</sup> व्यासवर्गः ४५ उक्त

वज्जातं धनफलं स्थूलं १५९ रूप्टू दुर्हेष् अप्रथनसंश्रास्य क्षेत्रफलोपपति अमोतिस्थते.

रत्तव्यासम्भिन्नेननह्यासे नैवं सम्भन्नेत् २०५ छ-ब्रोनैकादिकं पूर्ण विस्तारानां पृथक् पृथक् इत्नाविस् त्योज्ञानस्यां स्त्राच कुएडस्यान् २०० एकंविस्तार जर्मात्रवर्षुः मेकफलं मतम् हितीवन्यासनं स्तर्भके 100 व्यासज कुएंडले २११ युक्त्वायुग्मोद्धतंलब्धंतद्विती यं फलंमतं तृतीयव्यासज्ञञ्जांद्वितीयव्यासजेतथा २१२ इत्ते युक्तवा चतत्त्वएड तृतीयं फलमुच्यते र्थव्यासजंदनं तृतीयव्यासजेतथा २१३ चन्तेयुक्ता तद्रईच तच्चतुर्थेफळमतं एवंस्वस्वसमीपादिजं ऽर्द्धफलं भवेत् २१४ प्राग्न्यास घ्रफलेक्याऽर्द्धे रन क्षेत्रफलं भवेत । इत्तरोत्रफलं यत्त हुत्ते पृष्ट फलम्पृत ययाव्यासः ७ ई श्रमिन्नेन ७ भक्तः उर्वे त्र्यनेनैकं १ हला प्रथमव्यासः १ के तेने प्रयमेन्यास १ के स्यपरिधिः १८४०८० चतुर्थन्यास ४ दू स्यपरिधिः

गोलस्यपूष्फलधनफलयोक्सपनेसानवनः ७१ चतुर्यफलं २५००७१२ प्रमण्यासः ५ कं स्वर्धाः । १६ १८०६ प्रमण्यासः ५ कं स्वर्धाः । १६ १८०६ वर्षाः । १८० वर्षाः ।

एतस्मिस्त्वन्तिमञ्जासं राज्यासं समंभवेत् राजीत्याः विस्तृतिर्भिनायत्रतत्र विचक्त्योः २१६भिन भागा व्यथनोलस्यपृष्टफल घनफल्यां रूप-पत्तेरानयनऋगंबच्यंते एत्तस्यांद्रिवेंबंबापसंख्याचत्तद्वे भवेत् २१७ ग्र-भिन्ने <del>धारा संर</del>व्याभिश्वापसंख्याविभातिता ग्राभि ने खासपर्यन्तं लब्ध मेकादिभिर्हतम् २१८ कतापृ-यक् पृथक् चापाः स्युस्तेषांमी विकाफठान् द्व्यानयेवि

परमसिद्धानी. जसांनिध्येतत्फलं प्राक्फलान्वितम् २१५ रुखाई

विस्तृतिर्ज्ञीया सर्वे विस्तृतयो बुधैः नागा छा आंक वेद

घ्रास्तत्वेषेड् दिन भाजिताः २२० स्युर्चनास्तेपृषड्डिः ब्रा विस्तारैः साँगरोजनाः लब्धयोगंतन द्रोल खण्डे

घनफलोच्यते २२१ चत्तानांसंयुतिगेलिखएडेपृष्ट फलोच्यते अईयुग्माहतंकलापूर्णगोलफलं भवेत् २२२ ययास्तं ३६० स्ताई १८० चापसंख्या ८० श्चिमिद्यनुस्संख्या ५० भिश्वापसंख्या ५० विभा-जितालब्धम् १ त्र्यनेनैकादिकमभिक्षधनुः पर्य्यन्तं हत्वाचापाः स्वांकसमाः ५० जाताः १।२।३।४ ।पाद्वावादारा १०।११ ।१२ ।१३ ।१४।१५।१६ १९७१८ । १८ । २९ | २२ | २३ । २४ | २५ | २६| २७ ।२८ ।२८ ।३० ।३१।३२ ।३३।३४ । ३५ ।३६।३७ । इटाइट्राप्टना ४१। ४२। ४३। ४५। ४५। ४६। ४७ । ४८ । ४४ । ५० । ५१ । ५२ । ५३ । ५४ । ५५ । ५६ । ५७ । पदापत । ६० । ६१ । ६२ । ६३ । ६४ । ६५ । ६६ । ६७

गोलस्यपूर्धफल घनफलयोरू पपरान ह्ट | ह्रे । ७० । ७१ । ७२ । ७३ । ७४ । ७४ । ७६ । ७७ 100104100109102103108104108100 ICC IC५1 ५०। एवंकमादेषां जीवाफलानियथा प्रय-मस्यस्या भागमुखा ११५२ । ५२ हिर्नायस्य ३१५८ । ५७ तृतीयस्य ५।५४।५० चतुर्यस्य ७।५४ ।३६ पंचमस्य ५१५.५१५३। एवंसर्वेषांहियया प्रथमकोषात्पूर्वे श्र-न्यव्योदंत्रत्वलंचनून्यं अयमकोष्ट्रफलन्यून्यकोष्ट फलबोरैक्या १। ५८ । ५२ ई प्रथमकोष्ट्रवासं जातं भा-ममुखं २। ५४ । ५४ । ३० दितीयकोष्ट ३। ५४। ५७ प्र-थमकोष्ट १।५५।५५ फलयोगा ५।५५।५६ ईंहि त्तीयस्यव्यासं २।५८ ।५८ द्वितीयतृतीययोगाईत्-तीयव्यासं ४।५८।५३।३० एवंचतुर्यव्यासं ६।

५५।४३ पंचमव्यासं ८।५४।२४।३० एवंसर्वेज्यासाः भवन्ति परिधीनांचीगंपृष्ठफलं सेन्नफलानांचीगंच-न फलंगोलाई भवति तद्वि घ्रंपूर्ण फलंभवति एवंपं-चकोट्याद्धि ५०००००० वस्तर्गोलजेनधनफलेन

तयापूष्ट्रफ्लेनानुपाता द्वीलस्य घन फलं यूष्ट्रफलंचा-नये दिति. श्रथस्थुल जीवाद्यानयन मुच्यते चत्तंचापोननिघातु स्वाचाद्वयमीरितम् वत्तवर्गः

हनात्र्यसा वेदाप्तात्र्याद्यवर्जिनाः २२३ वेदासासा त्फलेनासमाद्यविस्तारयोर्वधं स्यूलज्यानायते :

जीवाव्यासयोगान्तराहतेः २२४ मूहोनव्यासरव-स्रमञ्ज्याच्यासजस्युटं वार्षास्यात्स्रसम्बा णोना इशसात्सू स्मशरा हतात् २२% सूळं द्वि घ्रेस्फ-टज्यास्यात्स्समज्याऽईकातिं भजेत् स्रस्मेवीणाफ लंस्ट्रमबाएगदर्कयासमुच्यते २२६ तुर्घ्योशंचत्त वर्गस्य पंचे झं जीवया इतं वेद ई व्यास संयुक्त जीव-यासंफलंभवेत् २२७ तत्फलं वृत्तवर्गस्य पादांशपरि

नीवाबाहुः व्यासः कर्णः श्चानयोर्वगन्तिरकोरिज्यावर्गः तङ्या-व्यासयो योगान्तर वात्समः तन्मू उ स्ट्रस्म कोटिज्या स्थात् स्ट्रस् ज्याव्यासयोः योगान राहतेः मृत्रं सूरेम कोटिज्यास्या बुज ज्योत्या एवं कोटिन्योत्वा सूहमे मुजज्या स्यात् सहमकोटिज्यांवा मुज-ज्यां ब्यासेहित्वातत्त्वएडं स्ट्रस्म शरस्यात्

स्यूल जीवाद्यानयनम् वर्जयेत दोषमुलोनितं यत्तरबएडं चाप मुँदीरितं २२८ स्युठाचेन्मोविकाचापसूरमस्यस्यकायदि स्रात्रै त्तकार्मुकंस्थूलं विज्ञेयंगणकोत्तमैः २२४ चत्तंतत्र्य स्त्रपूर्वाणांतुत्यानांकोणसंख्यया भक्तस्तपरिधिश्चा-पंज्ञेयंत्रज्ञापमीर्विकाम २३० देर्ध्यमुक्तं तंथैकैकको-एक्सेवहितत्तया एकेकस्यभुजस्येवपरिमाएंनिगद्यते २३१ चयाच्यासः ७ चत्तंस्यूछं २२ धनुः ३ स्त्राद्यः ५७ वृत्तस्य २२ वर्गः ४८४ पंचाहतः २४२० वैदाप्तः ६०५ त्र्याचर्हानः ५४८ वेदासः ५ल १३७ श्राद्यपृष विस्तार् ७ चोर्वधं ३५५ फलेन १३७ भक्तंलव्यंस्युल

ल्या २ <sup>१२५</sup> त्र्यथयथा ज्यासः १० जीवा ६ योगः १६ न्त्रन्तरं ४ घोतः ६४ मूलं ८ व्यासे १० हिलाई १ शह .१ व्यंस्तान्जीवा ६ व्यासम्ब १० स्त्रययथा व्यासः १४ जीवा ४ परिधिः ४४ वर्गः १५३६ वेदांशः ४८४ पंच-प्तः २४२० जीवया ४ हतः ८६ ८० वेद प्रव्यासः ५६ जीवा धयुक्तं ६० त्र्यनेन तड्कं फलं ४८४ वत्त २२

परमसिद्धानी.

वर्ग १५३६ पादे ४८४ हीनान्यू उंचनार्डे हिला स्यूलंधनः वा ४ न्यासः



श्रथसचनम

स्रमंजीवादिकर्मीचस्रस्पेवर्गपदंतया स्रस्मंधन पदंचाघ्रेज्योत्पत्तीकथयाम्यहम् २३२ उद्देशकसम् राजीनांचऋचन्तेतकोएँ।: खांगगुरुगाःस्मृताः तासिः बर्डीशबाहुज्यात्वेककोएाज्यकाभवेत् २३३ तत्राऽ र्थाज्याकलाषष्टितुँल्या ज्ञेया विचसपुौ:

श्रय बंधमुख घन हस्ताकारस्यभा-एडस्यक्षेत्रफलानयनम् वेधविस्तारयोगद्यद्वि घ्रदेर्घ्येणसंयुतम् २३४ वेध-

विस्तारयोर्द्धि प्रधातंकत्वाविचसपौः तहनाकार-

भाएडस्यक्तेयं सेत्रफळंख्यु २३५ खतावं विकारे २ दैखें २४ वेधे ३ तस्यसंत्रफळं ५२ भवति ऋषवादो-ऋफळानामैक्यात्युक्तान्युले विक्तातादीना वन्यस्यक् कस्यसमपानं स्यात् ऋषया व्यवस्यपुरवानां सेत्रफळे लेक्या नळीता त्यपषां ग्रह्मोनान्युलं स्ट्रे देक भाएड स्य बय सुरवकस्यसममानं स्यात् चंधमुरवानां होत्रफळे क्यं नक्तिस्यामानं स्यात् इतिहोत्रक्यवहारः ऋष्य स्वात्रक्यसममानं स्यात् इतिहोत्रक्यवहारः

सुन्यकस्यसममानंस्यात् इतिहोनस्यवहारः स्ययं यातव्यवहारः श्रवविधादिपरिज्ञानंविधीयते नीचलसुञ्चतापिष्टं गम्मीरंवेधसुच्यते मर्वत्रविष्ठमसेत्रेस्यस्वजातिस्यः छेषुच २१६ मापयेन्मापितैक्यन्तुमापितस्यानसं-ख्यया भक्त्वाययोचितंतुस्यतस्रव्यानायतेत्वत् २३७ दैग्यीवस्तारवेषानां घातंपमफलम्भवेत् से-श्रामिष्पकलेवधनिप्रधानक्षत्रस्यवेत् २३८ स्राथस्यत्ते धनफलानकृष् ७८ परमसिद्धान्ते

वेधक्षेत्रवधंतुत्यखातेधनफळंभवेत् उदाहरएां चरचखातस्यत्रिषुस्यानेषुदशैः द्विवैः स्व्वैंस्तुल्याः

देव्याः १०।१९।१२ पंचैस्तर्भै रगैस्तुत्याः विस्ताराः ५।६।७ युग्माभ्यात्रिभिर्वेदैकस्मिताः वेधाः २।३।४

स्युक्तास्य धन फुल म्यद न्यासः १६ विषय साहः व्यालसीन १० १ विष्य साहः ६

उक्तवत्करणात्समरवाते दैर्घ्यं ११ विस्तारं ६ वेघः ३ एषांघातं घनफलम् १५८

त्र्यथ वाटिकारि खातस्य घनफलानयन तलनम्खनार्डचक्षेत्रवे धामिमहितम् २३८ व

तलजमुख जाईच सेत्रवे धाभिमहिंतम् २२५ रू खानयोस्तु संयोगं फलस्याद्वाटिकाधनम् तुल्यस्वात फलन्यरोः स्वीखातेफलम्मतम् २४० उदाहरएां यस्याः वाषाः सुरहेदैर्ध्य इस्तैः स्वरीमितं तथादि-

पत्याः याणाः सुरवद्ध्यं इस्तः स्त्र्यान्यतः तथावः स्तारेद्द्य इस्तोन्मितं तलेदैर्ध्यतिकीन्मितं विस्तारं प चहस्तोन्मितं वेधंसप्त इस्तोन्मितंतस्याः घनफलेद्द

| न्यासः | क्षेत्र क्षेत्र भूत भूत                         | देश्य दे ६<br>क्षेत्र १५ घनं क्ष्म<br>देह     | देश के हैं<br>घन हैं।<br>सैन हैं |
|--------|---|---|----------------------------------|
|        | सेत्र १५<br>१०<br>यन १५                         | वि-५ क्षेत्र ३०<br>पूर्ण यन वेदः ७<br>समं २१० | कि ५ क्षेत्र १५<br>यनं १९५       |
|        | क्षेत्र पूर्व<br>क्षेत्र पूर्व<br>क्षेत्र पूर्व | हैं ६ क्षेत्र १५<br>धनफ- केंद्र<br>है १२      | を と                              |

सर्वधन फलेक्यम् ६३० सर्वधन फलेक्यम् ६३० सर्वधन फलेक्यम् ६३० सर्वदेर्षे १२ विस्तारं १० तलेदेर्षे ६ विस्तारं ५वेधः १० तल्ज होत्रफले ३० सुरवजं सेत्रफलाई ६० तीहो त्रफलेविध प्रोजाती २०० १४२० त्र्यनयो गिम् ६३० धनहस्तफले ६३० उदाहरण् यस्यसमस्वातस्यदै-ध्वंहस्त देवत्याविस्तारंहस्तद्वयं वेधनकहस्तान्मि तत्तस्य धनफलेवद् तत्तुल्यस्य स्वीरवातस्य समफलेवद् तथायस्य एत्तरवातस्य व्यास्सातिन्ववेधं वेदोन्नितंतस्य धनफलेवद् तथाएत्तस्वातस्य स्वीरवातस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वीरवातस्य स्वीरवातस्य स्वीरवातस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वायस्य स्वीरवातस्य स्वायस्य स्वयस्य स्वायस्य स्यायस्य स्वायस्य स्वाय परमसिद्धान्ते.

विस्तारं रे वेधः ६ ६-

यत्त स्वीखात

स्तारं २ वेधः धनफलं २४ घनहस्ताः २४ सूचीखात फठार्थेन्यासः दैर्घ्ये

स्चीरवातः -न्यासः

परिधि:

त्त सूची खांत फलार्थ

न्यासः ७ परिधिः

श्रयचितिव्यवहारः स्मयभित्तेर्घ

फलानयनम

भित्तिन्द्रोदिष्टिकानांतु हीष्टिकायन भाजितं

भित्तेर्घनफलं भित्ते रिष्टिकाना म्मिति भवित् स्युक्तरा उच्छयंभित्तेरिष्टिकोच्छ्यभाजितम् २५२ एवमइम

चिते रक्षान् विज्ञेयंपाएडे तो त्तमैः उदाहरएां यस्या-

इष्टिकायाः दैर्घ्यपादोनेक हस्तोन्मितम् विस्तार मर्द्ध ह स्तोन्मितं वेधं हस्ताष्टमारां चेदिष्टिका वनंवद यस्यां भित्ती देर्घ्यवेद मितंह रते विस्तारंत्रिक रोन्मितं वेध सुमी-नितं तत्रचितियनंचिता विष्टिका संख्याचवदः इ-ष्टिकान्यासः वैद्यी है विस्तारं है वेधः है इष्टिकायनं है चितिन्यासः दैर्घ्य ४ विस्तारं ३ वेधः २भित्ते 🔢 🗍

र्घनफलम् २४ इदमिष्टिकाघनेन हैं। भक्तंचिता विधिकामितिः ५१२ चितीतराश्च १६ एवंषाषाए।च-येपि इति चिति व्यवहारः समाप्तः

ं ग्रंथेककृत्व व्यवहारः

दैर्घ्यवेधाह तदारो रेकाढेथैदरिएएस्यलैः २४३ हत्वासे-

त्रफलंसर्वपद्वानांजायतेखळु उदाहरणम् यद्दारोरे-कप हस्यपिएडं मूले हस्तोन्मितमञ्जे भूपांगुलोन्मितंदै-र्ध्य लेकत्रांगहस्तो नितमन्यत्राश्चिकरो नितं तत्या-न चतु च्के हुदा येते चेन्तरपड़ानां क्षेत्रफले क्यंबद सासः



न्याधान्नकचान्यक्रमम् वैधविस्तास्त्रोधानि मेकाब्धेदीर्शस्यकैः २४४ हलाति-र्यक्तयादाकदीर्यातेचेत्कं भेवत् उदाहरण् यस्यैक पेदृस्यदारो विस्तारं सार्द्धं हस्तोन्मितं पिण्डहस्तद्वयं तत्स्यानवयेषुतिर्यक्तया विस्तारस्त्रपेरणदार्थातेचे-न्याद्वानां सेत्रफलं सर्ववद् न्यासः ३ ६ दारणसंख्या काष्ट्रविदारणुकर्मणी भाटक ए० ८३ ३ भैका ४ पिएडः २ विस्तारः है वध ३ सैक दारण प्रा १२ सेनकजैक्स्मू २ इस्रधान्योत्यक्तानयनविधिस्त्यने

प्राप्त क्षेत्रकरीयम् १२ श्रायान्योन्यफरानयनविधिरुव्यते नी-बोच्चकुरुयोर्मध्येय हुणस्त हुनाह्नम् १४५ उत्तम-स्ययनतत्तुनीयज्ञातियनं भवेत् नीचोच्चवं रायोर्पध्ये

स्यक्षतंत्तुं नीचवातियां मनेत् नीचीव्यवायोगिध्ये चहुं पातहुनो दुतम् २१६ नीचवातियनंत्रव्यसुद्धः वाति दनोच्यते चहुएवंद्ययोगिध्ये तहुर्गेगुस्समाहत्त्रम् २१७ उच्चक्षेत्रफलंत्रयां नीचक्षेत्रफलोच्यते चहुएां कुळ्योगिध्येतल्ल्लापरिमाजितम् २४८ नीचक्षेत्रफ ले ज्वयसुद्ध सेन्नफलोच्यते उच्चवातियनास्येन नीच

२१७ ज्ङ क्षेत्रफलत्रत्र नीयसेत्रफलोच्यते यहुएं कुरुवोर्मध्येतत्कत्यापरिमानितम् २४८ नीयसेत्रफ लं ज्ञ्यमुद्ध सेत्रफलोच्यते उद्यवातिप्रमानीय नीय केत्रफलं मवेत् २४४ नीयसेत्रफलाच्यापित्तमस्य पत्रनिह ज्ञ्यसेत्रफलाना ह्रानीय ज्ञाति प्रनगहि २५ नीयसंग्र घनाच्यापित्त्व सेत्रफलेनिह अथकाष्ट्रविद्रारण् कर्मिणिनाटक फले

नीचररा घना चाषित्च सेन फर्ज नहि. ऋथकाष्ट विदारण कमिणि नाटक फर्जे क्षेत्रफलज्ञान सुच्यते. वेयदै च्यां इति दरिरम्थस्त दारणस्यकेः २५१ दारणी यफलं झेयं तद्विदारए। कर्मिए। वेधविस्तारयो र्घात मभ्यस्तंदारणस्थतेः २५२ तिर्चक्तयातु तहारोर्दार "ऐातत्फलं भवेत् उदाहरणं यस्यैकपट्टस्य दारो देधियं-

बहस्तो नितं पिएडं हरताईयं तत्स्थान त्रयेषु दैर्ध्यक्-पेए।दार्ध्यते चेन्तझाटकायसेत्रफलेवयंवदन्यासः देः र्घ्यः ५ वेधः २वर्धं १० दार्एास्थानैः ३ हत्वाजातंदा-

रणीचफलंग्२० उदाहरणं चस्यैकपदृस्यदारोःपि-एडं हस्तइ यो मितं हस्तो मितंतु विस्तारं तानिर्यक्त याचतुर्षुस्थानेषुदार्व्यते चेत्तद्दारशीयफलवद् न्याः सः पिएडः १ विस्तारं १ वर्ध २ दारए। स्थानै : ४ हता -

जातंदारणीयंफलंग्ट इतिककच व्यवहारः ऋय राद्मिञ्चवहारः 🕆 मध्येधान्यादिराशीनांयत्सूत्रमग्रचत्त्रयोः २५३तः इर्मा इत्त जंन्यास खएडवर्गी नितात्पद्म् वेधः स्याइ

त्त वर्णात्रावर्गवेधवधं सुधैः २५४ स्थुलं घनफलं झे-यंवार ज्ञानयोर्वधं वेधघं भारकरातं स्वात्स् स्मं

पादोनाई पाद राशिनां फलानयन टेप् राशिधनंपत्रम् २५५ उदाहरराम् यस्यधान्यादिरा-शेर्ट्सं द्वादशहरतो। भितं वे धंसत्र्यंशैक हस्तो। भितं तस्य घन्फलंबद् न्यासः/ राज्ञिः वेधः ई स्यूलं घनफलं <del>दे</del> विकरे १ वेक पूर्ण सूरमं धनफलं ५ ट्रिय ं व्यथपादोनार्द्धपादराशीनां फलानयनसुच्यते सत्रिभागैकयुग्मान्धिनिष्ठात्तुपरिधेः फलम् स्यात्पादोना र्द्ध प्रावादारादीः स्वगुराभाजितम् २५६ ज्वाहररां यदा शिय्तंदादराहरतसम्तदांशेः पादोनाई पादांशघनफ-लान्बद् न्यासः **३** गुण्झेपादोन धनफलं ५ ट्विप गुरां है भक्तजातं <u>घन</u>फलग् १ १००५६ श्र**यार्द्ध** रादोः युरा २ पूर्ण परिधि १२ तहन फलं ५ ट्रिप् गुणा २ भक्तं जातं घन फलं २ है १९३६ त्र्यथपादरादोः न्यासः ्रिंग्य गुणाः ४ पूर्णप्रिधिः

१२ तहनफलं ५ ट्यूप गुणा ४ भक्तं जातं पादसहो र्घनफलं १ ३३५३ स्त्रथराशिफलोपपत्तिरुच्यते

भक्तावेधमभिन्नेनतेनवेधनयत्फलम् तेनचैकादिनि मेनव्यासहत्वासमुद्धरेत् २५७ पूर्णवेधेन विस्ताराःसु र्वेधान्तमितिऋमात् विस्तारमित्तमंचात्रपूर्णव्यास समंभवेत् २५८ भिन्नारायुक्तवेधस्यनान्तिमंकोष्टमा-चरेत् श्रन्यवे धस्यविस्तार एत्ती श्रन्यौ स्मृतीवधैः २५८ श्चन्य प्रथम योर्व्यासयोगं युग्मो द्वृतं फल्यु तन्त्रेयं प्रथमं चायविस्तारंप्रथमस्यच २६० द्वितीयव्यास संयुक्तं स लाईस्याद्वितीयकम् हितीयच्याससंयुक्तां तृतीयक्तिः तितथा २६१ कलाई त स्तीयाख्यं विज्ञेयं गणकोत्तः मैः तृतीय विस्तृति युक्ता चतुर्य विस्तृती बुधैः २६२ कत्वाखण्डं चतुर्थारूगंस्यात्फलं चैव मेवहिः तत्पूर्वव्याः सरवंडंतुफलमाद्याद्धयंमतम् २६३ दिश्चमाद्यं ध्रवं ज्ञेयमादांतज्ज्ञवकानितं द्वितीयाख्यफळंज्ञेयंतद्विती-यं अवान्तितं २६४ तृतीयाल्यफलं झेयं तृतीयंचअवा

राशिफलोत्पन्ती रुच्यते .

Ċ

वान्तितं न्यत्तर्थास्त्रंफलंडोयभवंसर्वे थवाफलाः २६५ ४५०८८ त्र्यष्टांष्ट्रांभ्रांकसिंधुञ्चास्तेतेस्वस्वफलाभिधाः तत्वेषेड्रा

सरैभेक्ता जायन्तेकुएडला:खलु २६६ कुएडलच्यासयो · घोतं वेदामं सेत्रमीरितम् सेत्राणां संयुतिकृतास्याचडाशि घनंफलम् २६७ कुएडलानां युतिश्वात्रराज्ञेः पृष्टफलं म-षेत् वेधवृत्तवधार्द्ववाराज्ञेः पृष्टफलंभवेत् २६८ ययारा शिपरिक्षिः ३६ व्यासः "एट२५०० वेघः ४ अभिन्नवेधेन ५ भक्तः फलं १ एवमुक्त बह्रेध ४ पर्य्यन्तव्यासाः प्रथम व्यासः ४५०६८ हिन्व्यान ४८१२५० पुरुव्यान ४५१८७५

चन्वेत्रासः एरेन्टर स्पष्टब्बासा एव फलानि पयोग्यानि प्रथमफलम् द्रहरू

द्वर्ष्ठ वर्षे देशते वियाः ह०२४०७५ ३६

स्प्रस्यारुवेदाः रादोर्घन फलवा १३७ ३० हट सदीः पृष्ट-फलं ७२।। इष्टार् कस्याऽधमकुळं कलातस्य फलात्कलं

द्रष्टाः ऽकस्यानियतानुतत्त्व्समं जायते फलं २६८ अध रावोः स्यूलफलोपपत्तिः

यत्तरामांत्रीकं यत्ति हिस्तार्रस्यूलमुच्यते तेन घ्रयत स्यूल सेन्रफलंभवेत् २७० क्षेत्रंवेधाहतं कला एत्तरवात समंफलम् विज्ञेयतं दुरी र्भक्तं स्यूलंराशिफलं भवेत २७१ ययाराशिपरिधिः ३६ स्यूलब्यासं १२ चन्तपादं ८ वेधः४ यत्तपादाहतं व्यासं यत्तसेत्रपालं १०८ विधाहतं वत्तावा-

तसम् धनफलं स्थूलं ४३२ तब्रोदां चत्तरवातस्य सूचीखा-तसमरादोः स्यूळंघनफलम् १४४ इतिरात्रिव्यवहारःसमा

त्र्ययन्छ।याव्यवहारः-छाययोः कर्णयो आऽपि भेदयोर्वर्गयो सत्त्रयोः भेदासंदिष्ट

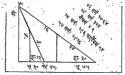
शको सुवर्गला श्रिसादुच्यते २७२ सैकेलब्धेः पदेन प्रा

**छायाञ्चवहारः** 

कर्रायोरन्तरंहिधा छाययोग्न्तरेणोन युक्तमर्द्धे प्रभेरमृ ते २७३ छारचीर्चीगवर्गेनुकर्एचोरन्तरस्यचं वर्गस्यैनाः न्तरंकत्वानेनाप्तंद्वि द्वेशंकुनं २०४ वर्गतत्सेकलन्यस्य मूलकर्णान्त राहतम् हिस्य भेक्येन विन्हेषयोगमहे प्रभेस्मृते २७५ कर्णचो श्वायचो श्रीवचोगवर्गान्तरेष्ट्रः तम् यहरीदि प्रेशकोस्त्रत्यस्येकोन्तरात्पदं २७६ कर्ण योगाहतंद्विस्य भैक्ये ना इयोगसंयुतिम् कतारवएडे प्रभेस्याता छाययोऽरन्तरस्यच २७७ वर्गेकरोक्यिवर्गस् भेदं कत्याहरो भवेत् दिश्लेशंकुरुतिं भक्ता छेदेनफल

चपयो २७८ भेदमुलाहतकएियोगंदि स्थापिनंतया भाभेदेनान्तरञ्जतिकलाचाऽर्द्वीप्रभेरमृते २७५ जहाः हर्र्लम् एकदीप्रमकारीषोड्डीषोड्डी भागांकितचोः क्रीलची न्छाययो रन्तरम् अष्टेर्न्स् प्रमितं कर्णयोरन्तरं श-ऋप्रमितचेत् छायेवद् त्र्यथवा भैक्यद्व्यव्धिमितंकार्ग तर राक्रोन्मितं चेत् छायेवद न्य्रयवा भायोगं द्यब्धिमि तं कर्णबोगवेदासँ समचेत् छायेवदं अववा छार्येन्तरं

नागेन्दु भित कर्णयोगवेदासँ प्रमितचेत् छायेवद नास



राकुः १६ राकुः १६ भान्तरं १८ कर्णान्तरं १४ व्यनवोः वर्गान्तरेणा १२८ महिमशको १२वर्ग १०२४ कब्बंटनै-कं ५ यूळ १ मकर्णान्तरे ४२ भान्तरं १८ युक्तोनार्हें जाते छाये २०१२ कर्णी १४१२० व्ययवाशांकु १२११२ मात रं ४ कर्णान्तरं २ छाये ५१५ कर्णी १९१५ कर्णायोगः २८वर्गः ७८४ छायायोग १४वर्गः १९ ह्मा श्रुप्तरं ४

## श्रय छायान्तरक्रमः

नावियुक् दीपकीच्यासंशकु दीपतलान्तस्शकु प्रश कुभाक्षेया दीपशकुतलान्तस्१८० शकुप्रभाहत

क्तंदीपोच्यास्यते दीपोच्यानरयो भेंदछला तच्याययाहतम्२८१ तत्कीलासंफलंदीपकीलयोःस्या त्तळान्तरम् भाग्रयीरन्तरद्याभा भाभेदासायरा भनेत् २८२ तच्छुमिनरयोर्घातं भार्मदीपीच्यामुच्यते शकुः झावस्त्भाशंकोराभयासाफलं भवेत् २८३ तहस्तो रुचताज्ञया वस्तु धारांकु भाषवा तहस्तोराभयाभ-क्ता शंकुः स्थादनुपातनः २८४ हक् सूत्रहिषकर्णः चुल्यक्षितीभवेत् २८५ तह्र ग्रह नु दीलायं यसायदीप-कस्यलं छायायेस्वस्थलंकिम्वाकोटययेस्वस्थलंभ-वेत् २८६ कीट्यप्रेस्वस्यतंत्रम्य छायाप्रे हम्पृहं भवेत् तहीपीच्यकतीहीपतलभाष्रान्तरस्यच २८७ वर्गमा

स्याद्राभूबाहुश्चभूभवेत् कोटब ग्रंहण्यहं स्वेष्टदेशं-. दंगचतन्मूलंहकाएंतिदुदीरितम् गम्यागम्यहःगृहान्तं भेदं तत्त्वस्थला इवेत् २८८ उदाहरणं दीपीच्छांदा दशैन्तुलं यन्नदीपतल भूमिस्थाना दामोन्मितेस्थाने भू •मी ऋष्टसमंकील मुद्बी कतं चेत्तत्कीलस्या भावद

परमसिद्धान्ते

र्ए १५ न्यासः तरं ४ शंकः ५

त्र्ययनाद्वादशैनदीपोच्ची नेदोन्मितेशकुदीपयोस्तला

त्तरे नवभागतुत्यं शंकु मूर्धी रुतं चेत्त च्छं को राभावद

या १२ उदाहरएं छाया शंकतला सरेदीं पीच्यं वद तथा छायाशंकदीपोच्छीस्तलातरंबद न्यासः छाया६शं-कः द तलान्तरं ३ जातंदीयोच्यं १२ न्यासः छाया६ दांकः ८ दीपीच्या १२ जातंतलांतरं ३ उदाहरएां दी-प प्रकादो दीपतला कि चिहरे हादशा गुलंदाक मूर्धीक तंबेत्तच्छायाचाष्टांद गुलोनिताजाता ततस्त सिने वसूत्रेतच्छंकस्थानात्सपादैक 🕉 इस्तीत्मिते दूरे द्वादशांगुलंशकुं स्थायतच्छायानेदयुग्मां २४ गुलसः •

शकः ८ तलयोरन्त

च्या १२ उक्तवंदकर-

ए।ज्जाता शंकु छाया ६ छ।या शङ्क भ्यां जातः करीः .१० छायाञ्रदीपन्लान्तर ८ दीपोद्धितिभ्यांजातं पूर्णकः

जातारांक छ

छाया अदीपतलान्तरं ६८ दीपीच्यं ३४ ई प्रथमरा-डू-तलदीपतलान्तरं १५ दितीयशंकुतलदीपतलान्तरं४५ प्रयमपूर्णहक्कर्णवर्गः <sup>६८७७</sup> द्वितीयपूर्णहक्कर्णवः f. 33504 त्र्ययदीपोच्यदाङ्कः भ्याहक्कर्णपूर्णभुजयोरानयनम्. ् शंकु वर्जित दीपीच्य कोटिज हक् श्रकस्पृशन् वाहुं शंक-त्यविलातुत.बुजस्य रुती वुधैः २८५ दीपीच्यनरविष्केः षवर्गमाचैवतत्पदम् दीपोच्यीन नरोनेन भक्तादीपो च्यताडितम् २५० तह् क्कर्णी भवेदाहं हजादीपी च्यकेन च विनृपदीपको च्योन भक्तांस्यात्युर्णदोर्धरा २८१ हुक् कर्णानयनार्थवाकोटि दीपीच्या संज्ञका क-त्यचेत्त्वस्थले हीषांतुत्येको चैंप्रसारिताम् २५२ होर्<u>स</u>् परमसिद्वानी

मिदीपकी च्यांवादीपी च्यांदी धराबुधैः नरदीपी च्या मे-हंभा शंकुदीपतलान्तरम् २८३ शंकुंकस्पितबाहुम्बा

शंकुं क्रश्रंनिजस्थलं ध्याला हक्कर्णमानन्तु ह्यानये दुक्त

वहुधः २९४ इतिछायान्यवहारः श्रयांका ध्वयवानयनम्.

इष्टांकस्या अवशोषंतु देशासु पणा हरोडून तत्कल दशमां द्याः स्यातच्छेषं दर्वाताडितम्२८५ हाराप्तंतच्छतार्वाः स्यात्तच्छेषंचदशाहतम् हाराप्तंतत्सहरूनाशं तच्छेषं

चदरीं इतं २४६ हारास मयुँतां शःस्यान च्छेषंद्दारीहिं त्य हाराप्तं लक्षकांशः स्थान्तच्छेषं दशसं गुणं २८७ हार्गः

संप्रयुतारीः स्यानच्छेषंदशेताडितम् हारभक्तं फलंचं-

रासंचपनः पुनः ऋर्बुदांशादिकं ज्ञोयमंकस्या ऽवयवं

न्तत्कीट्यंशंपरिकीर्त्तितम् २९८ एवंशेषंदशस्त्रणां हाः खकु २८४ उदाहरएम् खाँसवि यहरेरीासमंदकसार वयवंवद न्यासः भाज्यः ५० भाजकः १३ लब्धं ३ दशां र्याट अतौरां ४ सहस्रांदां ६ लक्षांत्रम् एवं ५।८।४० . गणितपांचा व्यवहारः

दोशाषाटाशादाशाषाटाशादाश्रप्तद्ययाक्रमं ग ३।८४६१५८४६१५८४६१५८४६१ इत्यंकाः विवानयनम् अयय गणितपादाब्यवहारः

नेदाःस्युर्देशघातंतुतचाकैक्येनमिहतं देशाप्तदेशतु-यंतंस्थानच्द्याहिसंयुर्त ३०० कत्वासंख्यायुतिस्तः रविज्ञेयागणकोत्त्तमेः उदाहरणम् दिकाएका भ्यांसं-

ल्या भेदान्यंख्येक्यंवद तथात्रिकनवकाष्टकै स्संख्या नेदानुसंख्यैक्यवद् तथायुग्गादिपञ्जान्तैः संख्याभेदा न्संरचेक्दंदद तथाचैकाद्यक्षपर्य्यनौस्संख्याभेदान्संखे

क्यंचवद न्यासः २।८ त्र्यत्रदेशद्भयं १।२ घातः २ जाती संख्या भेदी २ यथा २८।८२ स्त्रश्यस एव घाती २ कैक्य १० घ्रः जातः २० देशसंख्यया २ भक्तः फंलं २० देशदेये स्थानवृद्धवायुक्तंजातं १६० संख्यीवयं ११० दितीवन्याः सः ३।४।८ ऋत्रदेशाः १।२।३ घातः ६ मेदाः ६ यद्या ३५८।३८५।८५३।८३५।५३८।५८३ त्र्यंकानांयो गेन २० निर्माः १२० देशत्रेयेए। भक्ताः फलं ४० स्थान

परम सिद्धान्ते.

५६

च्ह्यादेशत्रयेयुक्ताः ४६६° जातंसंख्यैक्यं ४४४० तृतीयन्यासः २।३।४।५ देशाः १।२।३।४ वधं२४ भेदाः २४ संख्येक्यं ८३३२४ चतुर्थन्यासः १।२।३।४।५३

दाः १२० त्रांकी भरा३।४।५ क्य १५ मी १८०० देशाः माः फलं ३६० संख्येक्यं ३८८५८६०

त्र्यथ विदोष भेदानयनम् ' यावहे शेषुतुत्यांकास्तत्यकारैः पृथक्कृतैः ३०१ प्राग्नेदा उद्धता भेदास्तलारुयैक्यचपूर्ववत् उदाहरएाम् इिद्दे-कर्नन्द्रैस्तथायुग्माष्ट्रपंचेष्वक्षैः सरंब्याभेदान्सरब्ये

क्यवद् न्यासः २।२।१।१ त्र्यत्रप्राग्वद्भेदाः २४ द्यत्र देशहयेतुत्यांकीतर्हि पाग्देशहयां जाती भेदी शश्त्रा

ग्भेदाः २४ सम्भेदयोग ४ भक्ताः फलं ६ जाताः भेदाः ६ तद्या २२११ (२१२१) २११२ (१२ १२ १२२१)

११२२ । प्राग्वत्संख्यैक्यंच ४८५५ स्त्रपरन्यासः ४। ८।५।५।५ प्राग्वद्भेदाः १२० देशत्रयोत्य भेदै भीताः

फलं २० जाताः भेंदाः २० तद्यथा ४८५५५ ।८४५५५ ।५४८५५

एवविंशान्मिताः ज्ञेयाः संख्येक्यंच ११२८८८

ऋयोकपाद्गान्तरम् एकेकेनोन संस्थानिलंकानियदितत्रच ३०२ त्र्यंकाना

माहृति धीरे स्तंरन्या भेदाउदीरिताः उदाहरणम् एकै क हीनपर्देशस्त्रितांकानांसंख्याभेदान्वद न्यासः राट १७१६।५।४एषांघातेजाताः संख्याभेदाः ६०४८०

त्र्यथांक पाजाम्नरम् निरंकंचांक संघोगाइये कादेके

र्कवर्जिनाम् ३०३ न्यस्तानेकीनदेवीयु विन्यस्यैवक्र मस्यितैः भक्ताद्येकस्येके झौद्येश्तान्भेदाःस्यु स्तृतद्यं

२०४ उदाहरणम् मञ्जदेशस्थैर्यद्योगीविश्वोन्मतं

भवित तत्संख्या भेदान्वंद न्यासः श्रत्रांके क्यं १३. व्येकं १२ देशाः ५ व्येकदेशः ४ ऋंकेक्यं १३ व्येकं १२

एतं चिरेकस्थानान्तम् ४ एकेकरहितंबिन्यस्य १२।११। १०१८ क्रमस्येरेकादिभिर्भक्ता १९ १ १ । है । वातंसंख्या

भेदाः ४८५ इत्यकपाशः २०४. श्रीलक्ष्मीवृद्धभात्मजप्रे-मचल्लभविरचिते परमसिद्धाने गणितभागाधिकारः प्रथमः

ग्वांगांग्नि भिर्तिप्तास्यात्तत्वष्टयादिन न्मासंसावनंत्रिदौदासरैः सावनै भीवेत् १ निवादि स्ति बिभित्रीक चान्द्र मासमुदीरितम् सूर्यसंक्रमयोर्मध्ये सीरमासे मुदीरितम् २ स्वमासै इदिशीर्वर्षे विज्ञेयं गए। कोत्तमैः सोरवर्षनराऽब्दः स्यात्स्यात्सीराऽब्दोऽर्कवले रः ३ सीराऽव्दं सुरदेत्यानां घरनंदिव्यदिनं भवेत् दिवीः स्वागीमिभि ३६० धीरनीविषः स्याद्देवदैत्ययोः ४ तदेव दिव्यवेधः स्याहिन्याः स्टेः स्वरवंदाः कीभः स्याद्येगसः बढा १४८० वतः १९६० वसः १४४० वसः ४३२० प्राप्तः रकतादीःनामल्याना मेक्यमुच्यते ५ तद्युगस्यदेशाः सस् चत्रिहें हवेंकताडितः कमशः सत्यपूर्वाणामः ल्याना म्मितयोमताः ६ सत्येत्रेतायुगेचेव दापरेचकलीतया संधिः सूर्योशैकंस्वस्वप्रारम्भदिवसोत्तरम् ७ स्वस्व पूर्णिदनात्पूर्वमेवंसंधिः समृतोवुधैः सत्वादीवयं युगिदि व्यं युगै दिंबी: खरवांयुजै: ८ स्याद्र ह्याहिर्भिशतस्य विशेषि मासीमुच्यते तैरकैंवित्सरं हो यंतीः रातेरायुक

घटवादिमानानि .

ः च्येने 🗸 ब्रह्मणस्त्वायुषश्चैवयाताः पूर्वाईवर्त्सराः पंचा वाँद्रीन्यवर्षाणाम्मध्येऽयं प्रथमदिनं १० होयंबह्मदिने यातसीराऽच्याः परिभाजिताः प्रयुत्तध्रैर्युगेन्द्रै:स्युर्छि-सा ब्रह्मदिनेगताः ११ कोटि ध्रेह्मियेदान्देबाह्मकर्त

चुणां भट्ट तदेवब्रह्मणो घस्त्रमानं विदेशका को न्मितं १२ स्पेरिया तथानृ ए।। मुद्यमाचा भवन्तिहि रात्रीस्था पादिकंतह हुहुमणुः परिकीर्त्तिः ५३ त्रायनेप्रस्रवास मरऐ। विजयं भवेत् ययारात्रिद्युमानी रत्तस्तयामरए। जी-

वना १४ यद्दत्कुम्भकराः कलासचकान्मृतिकायसं स्वार्येकु वे तिहीत्यंतु नित्यंकु म्भस्यो द्वे १५ यथा वैके कचर्कतुकुर्वति घटकारकाः देहा उपसानपंचीनां यस्ता चकः स्थिरो भवेत् १६ ततस्त्रह्रिअयं याति होवं तह हिथे रिं भूः स्थिरामृत्समाः प्राणाः जीवाः कुम्भसमाः स्मृः ताः ७७ भूगोला द्वरसंस्थला भित्यमा प्रस्वरंति पर्य त्येवहिलोके शैक्तस्माह्या अंदशै १००० र्युगैः १८ हि-व्यैर्विधेर्युमानस्यान्त इत्तद्रजनीभवेत् मध्याद्वतन्त्रीत

ब्राइक्षेः सूर्याऽस्तंखखदिङ्गितैः १५ गत्र्यऽई खेँख पञ्चाद्धी राज्य नारवेश्वरवान्तकैः दिन्यैर्धुगैर्भवेद त्रव

गदिव्यं युगमतम् २० यदेहाची भवस्तासिं छीनस्त-त्प्रलयेविधेः स्यात्स्र्योनित्रजश्चेन्दुर्मनजोमुखजः शि-खी २२ कर्षाजीमारुतः प्रीक्तः कर्षाजः प्राराउन्यते

नाभिजला निर्देशस्या द्वाह्मशोमुखनो भवेत् २२ एववे-दोदितं सर्व विज्ञेयंब्रह्मदेहजम् स्वप्नभाते विधि स्वेताः जित्यमुत्पादयत्यऽतः २३ भूगोलोबह्यदेहान्तपर्यः

न्तंसुस्थिरोदितः ब्रह्माएडादिकज्ञानम्. नारिकेल फलस्यैव काष्ठव द्वीलका कृतिः २४ ब्रह्माण्डी महदाकारोचीत्यन स्लीखरेच्छया वाकटाहद्वयस्ये वसंपुटो गोलकारुतिः २५ ईचरस्येच्छयोत्पनोब्रह्मा एडस्व एडसह्याः ब्रह्माएडस्योद्रे भूमिर्भूमेर्बाह्यंस-मततः २६ त्र्याकारो खेचरा मेघपूर्वास्त्रीवां गुणा भूगोला द्योजने सम्बंदी भूवायुक्त ध्वंगः समृतः २७ तर्हाऽ ग्रेज्वेलन तुर्द्ध तस्यो द्वीचां वहा ऽनिलः तद्या म्यो नरवे

· समुद्रद्वीपादिकम् · गरस्यान्ततोर्द्धे प्रवहाउनिकः २८ नर्सेन्याद्वतिराख्याता

माशिचकस्यद्र्जनात् खेचराः स्युस्तदाधीनाश्चंद्र विचु क्र-रास्क्रेंगः २५ भी में ज्यार्कस्तताश्चाः वभानिताराणि

त्ततःसमीरणाश्चाब्धिप्रमिता ऊर्द्दृतोर्द्धृतः ३० उड्हानंदहञ्जीवस्तवहञ्चपरावहः लोकाः ७ भूस्रोकिं ं हो द्विल्व्यकानस्मात्सीस्यग्ऽयंभुकः ३१ स्वर्धीकंतुसुः यनः स्यान्वेमहञ्चलनम्ततः अर्द्धतपस्ततः सत्यब्रह्मा , एडाऽन्यंन्तरेभवेत् ३२ समुद्रद्वीपादिकम् समुद्र अमणुं सूर्ममतिदीर्घ प्रजायते तिहु धापूर्व पत्रा च्चयाम्योदंग्गमनंतया ३३ यत्रेदानीं समुद्रोस्ति तत्सः निन्धुः प्रकार्तितः यत्रेदानींना एवि।स्तिनदिसिंधुः प्र क्वीर्त्ततः ३४ त्र्यतीवनिरकाठेनसाऽर्णवस्थानतोर्णवः व्यं रर्णवस्थानकं याति सार एविनेव्य रर्णवीच्यते ३५ यसा-त्युर्व बुधै रुक्ता लंकादेव गहादयः पत्तना विवलस्था ने सिन्धी मन्नास्तु संप्रति ३६ त्र्यसम्भवजलस्याने चूर्णो त्यप्रस्तरादिभिः मन्यन्ते (त्रप्रतीतितु धीराः सिद्धान्त-

परम सिद्धानी कारकाः ३७ त्रिभौगंप्रथिवीमध्येसामुदांबु चवाह्यतः भूमि:पाँदांशकबाह्यात्पत्यसंदर्शिताजनैः ३८ समुद्र केवलं भूमी मृदुणाद्द्रीनादिभिः तनामानिततोलोकैः

कविताउन्यप्रमाणतः ३८ समन्ताज्जलधेर्मध्यभूमि स्तद्वीपमुच्यते द्वीपोनसमकोएाःस्यानचद्वीपाः स-माः स्मृताः ४० नद्दीपाः कुण्डलाकाराः नदीपा दर्पणो दराः चोः सद्योगम्बुदेर्युक्ताविषमाः कुत्रकृत्रचित् ४१ हर्यनेत्राः म्बुरास्तदहीपा भूमीप्रकीर्तिताः लवः एम्ब्या ऽर्णवात्सो म्येमेरोः सानिष्यदेशतः ४२ याम्येतद न्तरं हीपंजम्बारूयंविषमं मतम् मैर्ऋत्याग्नेयदिन्दै र्घ्वे भू मिदि भागको नितम् ४३ वाक्यासेयदि दैर्घर्वहर्तुं. नागांत्रकोन्मितम् पश्चान्त्रेर्त्रत्यदिग्दैर्ध्यगोश्रेचन्द्रांत्र कोन्मितम् ४४ द्वीपंतद्वीपराजः स्थात्तस्माद् ऽत्यानयो च्यते लंकातः पश्चिमेव्यसेतलेषेष्ट्यं ऽ र्याकान्तरे ४५ तद्यसाद्यास्यगंत्र्यशैतिस्यक् पंचीमिभिर्छवेः तद्विद्र ब्रायुदिग्वातम्मिश्रारव्यद्वीपसुच्यते ४६ सिद्धानांपन्तना

त्सीन्वेतिर्चकृति च्यूसभागतः पञ्चीस्वाऽसारापयेन नहीपमऽमराभिधम् ४७ तरेवकुरुपूर्वाणां वर्षाणांस्या-न नुच्यते नत्तिर्याभग्नकुरिलपत्राकारः समारस्यतः ४८ तस्यात्रयास्य गंतस्यमूलं मेरु समीपगः त्र्यामेरएड दलाकाः रंजन्त्रारूपंदीपमुच्यते ४५ तन्मूलं मेरुसानिध्यमध्ये-तृ इयु इस्तु स्वम् तदेवभारतादीना मेवपिशा स्थानम् च्यंते ७० सिद्धानां एत्तनात्पूर्व पश्चाझोमक पत्तनात् व्य केव्यक्तात्तर्इसांशंसीम्यगंदिसारोोसिसम् ५१ वायव्या

ग्रेयविस्तारं सीम्याऽपाँग्दैर्घ्यमीरितम् ऋमरद्वीपवन्त-ङ्कःस्याद्<del>दैर्ध्येविस्तृतावपि ५२ तस्यांऽयंयांम्य</del>गंतस्यम् लं व्यक्तगतं नतम् त्र्यमरद्दीपवद्दीपदक्षिएगः मरमुच्यते ५३ प्राकृष ष्टेंग्रीषुलंकातो यह्नयस् तस्यदक्षिणे तिर्य क्षांच्यस् भागानामध्येद्वीपंनवंगतम् ५४ प्राकृपञ्चाताः स्यदेर्ध्यनुत्रिर्श्नांभीतमतम् यास्योत्तरं न् विस्तारंखीं श्चांत्राप्रमितं मतम् ५५ तद्भायारिकापत्रवत्तन्मूळंतुः याम्यगम् विज्ञेये कार्युकाकारे द्वीपानांदै व्यविस्तृती ५६ परमसिद्धान्ते.

ग्रात्रान्येल घवोद्वीपां नोदिता विस्तृतेर्भयात्

द्विमालय भारतादि खण्डनयङ्गानम् लंकात श्रो तरे त्रिशंदैऽक्षांशप्रमितेगिरिः ५७ यत्ता है मालगारुयोहिस्तच्छेलेन्द्रश्वकीर्त्ततः प्राकृपश्चाहीः र्घतातस्यप्रत्यसंपरिदृश्यते ५८ लंकाशैले च्रयोर्भश्रे

वर्षेभारतसुच्यते तदत्तस्योत्तरे देशे प्राचीने खएडम् च्यते ५ तदेविकचरीवर्षः पूर्वाचार्चीः समीरितः तः

त्सोँम्येहरिवर्षस्तु महत्याचीन मुच्यते वर्णव्यव स्थितिः

खवएगारूव्यां ऽर्एाबात्सी म्ये वंगालात्पश्चिमेतय हों सिग्रोपूर्वे हाऽटकारव्यन दी तथा ६१ वर्गा विमान वेदो अनुकृष्ट्रवितस्थतयोगताः बाह्यसर्व देशेषुचाऽ

जा निवसनिहि ६२ याम्ये एह छुव सिन्धो स्स्वल्यांशम र त्तरेगतम् यत्राऽतिदेधिवस्तारवेधाः स्युस्सागरस्यच ६२ तन्महासागरस्त्रतेऽत्याश्चेदऽत्यसागरः स्यादेक सिन्धुनाभूमिस्समन्ताचीववेष्टितः ६४ यत्रोचासि-

**भू**पृष्ठग्रहयोरन्तरं लोकार्द्व व्यासम् धुतः पृथ्वीहीपंतत्रैवजायते 'सिंधी स्वतु हिंशो झेयाः सा-गराः युगसँम्मिताः ६५ लकाद्याः पत्तना देवनिर्मिताः मुनिभिर्मताः षट्संख्येकाः समुद्रस्य तोयेना उन्तरिता सिती ६६ ऋत्यादऽत्यतराञ्चैवंचाऽधिकादऽधिकासः था बह्माएडी कतचोगोलाः सिन्धावन्तरिताः पृथक् ६७ पृथकु चा अतेग भीरस्थाके चिद्र चुजल स्थिताः के चिनि-थोद्द्रप्रवाभ्यां हीना दूरंगना यथा ६८ संख्याही नास्तु ब्रह्माएडाः स्वेसस्व्यारहितेस्विताः तद्दन्मेघेचाः अक्र

भूव्यासपरिधिज्ञानम् भूपृषु ग्रहयोरन्तरं लोकाई व्यासस्

एग वालुकानितृएगाः सितो ६८ संख्य यारहिता एवंक ह्माएडाईश्वरस्यहि तेषाम्मध्येलिदं होकं ब्रह्माएडं प रिवर्तते ७० षट्ग्रास्त्राप येके बुद्धि खड़ेयाः सप्तार्णवा भूगोलपरिघेःखाभ्रषड्वामा ३६०० योजनाःस्मृताः ७। त्रासारीमिपितो भूने विम्बः स्याद्योजनीः स्फुटः खेटकसाएडलोकानांच्यासाञ्चल्यासवर्जितात् ७५

परमसिद्धांने थिवीपृषु खेटकसांतरं भवेत् कारयपीस्फ ट विम्ब ह्या दिग्युम्मोरगयोजनाः ७३ सत्यवेगघटी · क्ता लोकव्यासाःई मादिशेत् भूपरिध्यानयनम्

सत्य भुक्तिकलाऽभ्यस्ता लोकाऽईच्यासयोजनाः ७४ स्वेन्द्रेयुग्मगजैरासाः स्युर्भू परिधियोजनाः दि**ःज्ञानम्** स्वव्यक्षात्यास्त्राव्यक्षेयत्तत्युर्विदेशं भवेत् ७५ इत् तत्रिमंप्रश्चीन्मध्येयान्योत्तरं भवेत् सर्वेषामुत्तरं मे

र्रुयर्म्यः स्याद्रद्वानलः ७६ सिद्धानानगरेलंकाऽधः स्यानं विद्योदितम् भू सत्तपादेलंकायां यमकोटि स्तुप्राङ्कता ७७ भूरत्तपार्देलंकायाः पश्चाद्रीमपुरी स्मृता भू चन्पाँदेलंकार्याः सौन्येदेवपुरीस्मृता ५८ के स्थानं तस्माद्यास्यं तदु च्यते ७५ चौम्यंदेवालया तसंदी र सौम्बदेखां लेयात्तथा इन्हादिस्थानबोधार्थ मेरोः मो क्तं चतु हि शम्द यतो उथनां शके स्पूर्य स्संस्कृतो मेर्षभंगतः यमकोटिस्थलं नेरुदेशस्थैपरिदृश्यतेष्

त्र्यस्तरतन्मेरुवासीनां यमकोटिस्तुप्राङ्गता स्संस्कृताऽर्कस्यतुलासंक्रमवास यंयातिपश्चिमरोमकंततः दैत्यानांत स्यहं मवेत् ८३ स्वरतप्राके सन्तुखो भूला दक्षिएं। दक्षि र्ध्वन्तराद्भैमीङ्गेयाःषड्टेवपत्तनाः दिगुत्पत्तिः चल्याह्ने ऽर्कोदयँस्थाने भूत्वा र्रियेंदनंनरैः ८५ सन्म खंत्रांदित्रांज्ञेयं पृषं पत्र्यादिशांमतम् वामपाणिदि म्यंर्याभ्यंदक्षिए।हस्तगम् ८६ एवंदक्षिए।हस्तुच ह्युत्ताः नंपूर्वदिगैतम् तत्रमध्यागुलिः पाकैस्याद्याम्यमगुष दिग्भवेत् ८७ पश्चिमंकरमूलः स्यात्सीम्यंस्वल्यांगुढि

करे चाँमंचामकरेस्थानज्ञानार्थसमुदीरितम् ८४ भूरता र्भवेत् किन छांगुलि दिग्देवा विश्वे देवादयः स्मृताः क् भोनोः पूर्णोऽपमाशोनर्वाकाऽक्षां शान्तरेलः दयम् स्वव्य क्षस्यानतः सीम्ययास्येदिग्ज्ञानमीरितम् ८९ यमको टिस्थलादेव सीम्ये मेरु रुदी रितम् दक्षि रोतत्कुमेरुख पूर्वस्यासिद्धपत्तनम् ५० पश्चिमस्यातुतस्रकाविङ्गेय

गएं। कोत्तमेः यमकोटिस्थलाऽधःस्यंरोमकंसम् दीरि तम् ४१ एवं सिद्ध पुरात्सी म्याम्ये मैरुक मेरुकी वि-झेयोरों मकं पूर्व यमको टिस्तु पश्चिम ९२ झेयेसिद्र पुरा

१४ स्याउका ज्ञेगाविचकारीः सुमेरोर्दक्षिरास्थानेय मकोटिकदीरिला ८३ लंबारोमक पूर्वाणां कुमेरुई

सिए। मत्म सुमेरु यो तरेशोक्त मेवं सवैविनी स्यसात्रह द्मय भूपिएडानयनम्

. तिर्य ग्याम्योत्तरंतदद्रई पूर्वे प्रिंभवेत् पुरयोरनारेति र्थ्यभूमिन्यकलवाहताः ५५ तयोर्नगरयोद्धश्तमाग

विश्लेषभानिता लब्धभूपरिधेर्मानस्यादेवन्तनुपातन .म्र६ कक्षाऋसम् भूस्विष्रहेन्द्वीन्दुं क्राकेक र्के स्वार्क भानिचे हिस्वशत्त्रयोपर्स्थुपरिखेत्वाधारं

विनास्थिताः ५७ भूगोल निश्चयम्

भूपृष्ठः सर्वतो यामाऽ च रबुवित्यादिभिर्युतः किञ्ज क्यानकाः क्या माकारप्रणामीकुसमतथा कद्रबकुसुमाकारव्यूड ऋतुं ज्ञानम् १०० इसुममतम् ८९ त्तस्यानात्तत्त्वां हन्तस्य कृत्रु इसुममतम् ४९ त्तस्यानात्त्त्त्वां हन्तस्य हन्त्रस्य इस्य भवेत् इसमे इसोमीध्ये सान्यत्ताऽधःस्यव्मीकः १०० देवाळवस्यपाताव्यमसद्मवित्रह् जायतत्त्वुः

मेरुअपरमेरुअन द्वेत् १०१ स्पृष्टेयत्रयेसं त्मानमुपरिस्थितम् मन्यन्तेनिजदेशान्तु र्भूपादेतेपरस्य रम् १०२ तिर्चाम्बत्सान्धितानऽन्यान्यातालस्यांऽब्रि - सन्युखम् 'निजपाताल भूपृष्ठं यह तहानि जस्यलम् १०३ तस्मादिहोयमांसस्यें गोलेकोईत्तुकोण्यऽधः ऋस्वां गलाञ्जना एवस्वस्वानात्सर्वतस्सदा १०४ श्रवपस्य न्ति भूगोळच ऋकारसमंख्यु **द्यीतोष्णस्थानज्ञान** सन्द्रमणाः तस्स्थानाकतथायत्रलंऽशवः प्रपतिहिह १०५ भानी स्तच्छीतंलंदेशंतद्वयस्तेचीव्यमीरितम् अनुजानम् विषयुचिष ६ द होराज मड न्योन्य देव दैत्ययोः १०६ स्याचे न्मार्गलवे मानुः संस्कृतः सीन्यगोलगः स्युस्त द्वीऽर्क करोस्तीवा श्रीष्मेदेवलवंशिती १०७ देवानांदर्शनयाः वितरमाहेबांदेनभवेत् तहिनदेववैरि

१९० परमसिद्धाने लजायते १०८ सूर्यश्चेद्यास्यगोलस्थास्याद्युमा

ल जायते १०८ स्पेर्यश्चे द्वास्थिगोल स्थारमा ह्युमानस्य रहिषाम तम्प्रस्थे ६ कराः शीता हेमन्तेसीस्य भूतले १९८ तहुस्य रजनीमान देवाना वायते किल स्थीसी स्थार स्थार स्थारमा स्थानमध्य स्थारमा स्थारम स्थारम स्थारमा स्थारमा स्थारमा स्थारम स्थारम स्थारम स्थारम स्थारम स्थारम स्थारम स्थार

स्याहं पास्थाहं स्थानिषश्चतुं श्रीकृतुः १९० द्राहहसन् स्थान्यस्त्र प्राच्यस्त व्यवसाह् स्थिए। योज्यस्त प्राच्यस्य वर्षाविद्याद्र स्टलेबुधः १९० व्यसाह स्थिए। योज्यसान स्थान्यस्य स्टलेबुधः १९० व्यसाह स्थिए। योज्यसान स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थान्यस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्थानस्य स्य

वद्यान्यं भूरपर्वेषिणतिर्ववेत् ११३ । ४१७ श्रीलस्मीवल्लभात्मज्ञप्रेमवल्लभावरः चिते पुरमसिद्धान्ते गोलाधिकारोद्धिः तीयः २

ह देवामां राजर्डे देखानां दिनार्डी देवानां दिनार्डी देखानां राजिदकर देश ना सुर्वेदिये देखानां सुर्वात्तनं देवानां सुर्वादिये भवतिः

**ऋथ**ितृदिनोत्पत्तिः वन्द्रोडींशेतुपृष्ठांशेषितृएगांस्थानमुच्यत पसाऽर्डे भारकरो दयम् स्वय्येऽस्तं नुकर पसार्डे श क्वान्तेस्याविशादसम् २ मरुमध्याह्नादिज्ञानम् एवंमेरु निवासीनां देवानाम यनांशकैः संस्कृतेकर्कर्गे ऽईमजेगेके खिनोद्यम् ३ स्ट्योऽस्तं जूकगेतत्स्या न्पृगगेतामसीदलम् एवदैत्यालयस्थानान्यस्तस्या देनाई देन दलादिकम् ४ ऋतुराशिङ्गानम्.

संस्कृतोःकीरवैनांशीर्यत्संस्कृतोरकस्तुतद्भवेत् संस्कृ

तान्मुगगादकीत्परामासाउत्तरायगम् ५ स्वात्तद्दनः किंगाइकेंद्रियरामासा दक्षिशायनम् संस्कृताचापमा

व्यक्ति सन्तं भद्रये भवेत् ६ संस्कृतात्कुम्भगादकी च्छिशिरं भद्देये भवेत् स्याद्व सन्तो ध्व

नाइद्वेऋतुः ७ एवं प्रीष्माद्योरामाः ऋतवः ऋग - इोदिताः वर्षमानीत्पत्तिः.

निर्वेधाऽभ्यदयस्थानेशुद्धेतुल्यक्षितोबुधैः ८ वत्तं कतां कितं चर्केभगैः सर्वदिशाचितम् घस्रे अक्रा

निजेभानो भस्किराः देविय संहो ८ दस्यतेयनतहू-

त्ते भान् स्तत्रां अमाचरेत् तर्हिशीयिक्षेभानी रर्ज् वि-म्बोदयस्रो १० तत्पुर्वा ५ परगारेखामु छ य्येवर बि

स्तया तड्नो दृश्यतेयत्रतत्राऽप्यंडकं समाक्षिखेत् ११ पूर्वा चंड<u>कांश भेद घाः सा</u>वनाः षष्ट्रिकि प्रिकाः दिती-याद्यं दक्योमंच्य भागे भीताः कलादिकम् १२ पंचांग

विक्रिभि पॅर्टमेर्युक्तंतिमास्यलेफलम् कला घरनारि कंसीरवर्षमानंतदुच्यते १३ यथाकश्चित्तसूर्योऽभं क्रान्तिजे भारकरोदये मध्यपूर्वस्थले भारनेश्चीदययाः

तितिह्नात् १४ नित्यं प्रत्युद्यान्दृष्ट्वातत्प्रार्देशोद्या दिकानः भानोः प्राप्तेशतः पृष्ठभागेत इत्सरातके १५ जायतेऽकेदर्यचार्ज्यवधरिम्भेविनीद्यम् स्याद्यत्रार

क्रियतत्त्रत्रचीदयस्थानयोऽयोः १६ मध्यभागोञ्चता भानीः सादनाः खांगनाडिकाः वषीन्ताइकीदयस्थान

दांशकाहताः १७ लब्धंकलादिकं कदियैक्यके - ताल्लामादिस्यलेतस्याद्वर्षमानदिनादिका १८ निर्वेधाऽस्तमयस्थानेवाऽकीभ्रेकान्तिनेदिने इत्य क्तेरवेर इर्द्ध विम्बा इस्तंपरि हुइयते १८ यत्रांड कमाच रे त्तव मानोस्तदःपरेहिन दश्यते खर्र्ड विम्बारस्तं ्रहर्षे १९५१३२ १३१ १३४ इत्ला घरत्र मुखं सीर्यर्षे तत्परिकीर्त्तितम् कस्मिन श्चित्संत्रमस्याः ह्वात्पनस्तत्संत्रमं भवेत् २२ गए। र्क मध्यस्यचऋषुर्शिप्रजायते २३ तेरह्ना भूपृष्ठसं एकंसावन घरनंस्यादेवं वर्षभिति र्भवेत २५ वर्षेः श्रन्यरवरवा आसिगुणुवेदेर्युगो भवेत् स्त्रांकसंज्ञा रोराम् श्रोसगः प्रोक्तो पोदार छोर सक्तवा २६ सोन

भिभिद्यराशिस्यान्तरस्थिश्वकं मुच्यते **गतिजानं** 

न्मषाद्यात्पेत्र्यात्पूर्वस्यारुषभोदयम् तत्रमेषर्सतःप्र

थंपश्चिमंगतः स्यादेवंद्वितिषोपश्चात्संध्यायां दृश्यते दा-वंप्राग्वेगस्यात्पश्चाइक्रिणोज्यम् ३२ च-

एगिट्या इत्यकालेन कालेन महता इत्यगः खेचर रत्त्वः र्क्रश्रोन्सक्त्वापुनस्तत्रीवगच्छति ३३ भूगोलाद्दूरगः खेट स्थेत्तन्मन्द गति भीवेत् शीष्रवेगेतु भूगोल निक देखेचरों भवेत् ३४ राशिसं वत्सर्चकारास्यः ब्द

994.

कं षडदेवाऽभ्यः क्षसोऽ द्राइक्षा

ऽप्यःश्विरदान्तकाः ३७

द्रानः वर

हर्ग्द्रचेष्ट्रवासराः ४

- परमसिद्धान्ते

398.

गन्द्रदिनाः चान्द्राह्नाः खाष्टरवाश्रां-पायुगे न्याधिमासाः तर्कदेनामि भरूर रेर्ड इस्थिमासकाः ४२

हानिनेत्रासश्चत्यष्टा भ्रासपाए

14077300 नात्पात्तपूर्वकम् नक्षत्र दिवसाः स्र

भृदिः १५७७ दे १ पेटे २८ नाःस्मृताः ४४ भूभ्यूरस्

द्याः स्पृताः ४६ रिवमासोनिताश्चान्द्रमासा

मासकाः भूदिनास्वान्द्रयुभ्योनाः स्युस्वान दिवसास्नि थेः ४७ युगेप्रोक्तानुसारेणसर्वत्रैवं भवन्तिते

माब्दपूर्वकाः ४८

रचनकोना माह्याः स्वरवोदयाः स्मृताः कियतं युवज

[दनगएंग] नयनम्

वेशते ज्ञेवाइएवल्सराः १८ स्वस्वोक्ताः शृहिनरामा रा स्वस्त्राह्य युगिरिवेच् तहेरावर्धमानम् स्वस्ववर्धगतिर्भः

देयव्या युनानभेवत् तद्वावधमानप्रस्यवः वत् ५० वर्षमानभेवत्ययेच्यामा युग्ध्दिन् स्वयाद्वरीपाल्युमस् इधव्या सर्विः

मान्य च पुत्रव वृताः ४ । एववक च । अवमानाभादा माह्या रुद्धा ध्यानाभादा च्यूपमानाभादा च्या विमासकानिनाः ५२ रवित्र ग्री जनवस्त्राह्या ह्रस्य च्युप्तिकारा वृद्धा च विद्यानाभादा च्या

जनारमञ्जाः आवार्यकारमस्याः छन्यानारमस्यान ताः ५२ सावनोऽङ्गरामतस्यानः द्वयस्यवाससर् व्यसम् क्लीधारं नुपानेन प्रोक्तव्यस्तेनधीमता५४

शारवाःसितपक्षान्तेस्यादेकोदर्शमासकः ५५ **त्र्य्ययदिनगर्**शानयनम्

्रश्चयादमगुरानयनम्, शाकोष्टादिधनैस्त्रोके प्रश्वेत्रादिमासकैः दर्शास्त्र्यैःसं अ ुल्क्यर्षे वाक्षक्रवाः स्रुगुननानः नं ग्राधार्यस्थः

ाहर । क्षा का वार विशेष विशेष के विशेष विशेष

परम सिद्धान्ते

996

श्चर्कांख्यत्र्याद्वतोक्ताद्रधिमासकै : तत्योक्तरविमासाप्त क्तत्फलारधिक मासकैः ५७ संयुक्तो मास् वन्देस्तचा न्द्र मासोधउच्चेते तत्त्वार भिद्योद्भताद्भाद्यासञ्जादाऽ

हर्गए। भवेत् ५८ पञ्चपे असुतन्वान्द्रा इहर्गए। परिमर्हि-तम् उक्तोनदिवसैरुक्तचाद्रघस्रोद्धृतफ्लम् ५

त्वाचान्द्र दिनोधेतु स्याद् ८ ह्वा घोक वासरा श्रहर्गणाच्छाकानयनम् उक्तचान्नाह

प्रोक्ताऽधिमासेकैः स्यूलचान्द्र दिनीयतद्युक्त हिनाह्ने से: ६१ भक्तास भ्राप्तियातीनस्यूलचाइसु चन्दकम् तत्स्यूलमादिसंज्ञाह् चन्दमुक्तं विचस्रोः

तत्त्वस्वक्षेपसंज्ञोनात्त्वस्वाऽयत्यागतस्त्या स्यूली स्तन्धान्द्र बस्त्री बसूर्य बस्त्री बसीचती ६३ तज्ज्ञाताः हर्गणोत्थाभ्यास्त्रेयेन्द्रभ्यातिथिस्फुटाम् त्र्यानयेदेऽकी

भासनाः स्युम्ससाञ्चैत्रपूर्वकाः ६४ तचान्द्राऽहर्ग

स्युयोत्वदसराः घर्नम् ६६ शाकंस्याहा 8460430000

12111194 ७० घस्त्रीद्यसमकाकातस्य श्रवम 30

यः संचरयोर्युतेः प्रायदाः स्वत्रिषस्त्रोर्द्ध सीरमासेष्जायते ७४ त्र्यधिमासतुबद्वर्षेद्धऽधिमासदेयं भवेत तद्वर्षेक्ष

यमासंत्रिश्चयेनैयजायते ७५ चान्द्रात्स्युळतृतीये sब्दे त्वडधिमासः प्रजायते भौनो स्संक्रमयो र्मध्येय

दिदंशीइ यें भवेत् ७६, तह शैहियम् धंतु ह्य दिय मासो च्यतेसदा चंहर्षेदेशीयीर्मध्ये सूर्यसँक मंगाहरम् ५७

पस्मिन्भवतिमासेतुन्यूनमासस्तदुन्यते.

स्यमेषाःकी द्वतवासरैः युक्तं तको इन्वितं बस्त्रीधोर्क मुखीभनेत् ७८ मेषाऽर्क संक्रमाद्र-र्द्ध् वर्षारम्भं यदा भवेत् । चैत्र युक्कार्द्यमेषा उर्क संक्रान्त्योः रनारत्यजेत् ८० मेषाऽकं संक्रमात्पूर्वमद्ब्दारम्भेष्ट-

वासरी चेत्स्यातामिष्टमेषाउर्क घरत्रयोविवरत्यजेत्

८१ रोविषिए दिने यस पूर्य होय विच सारी: तत्रीक

दिनगणाभवरवेटादहर्गएगानः १२१ मानभिन्नचेरस्यान्त द्भुशानिमाचरेतु ८२ चैत्रसुङ्काः

चादिवसेवर्णारमं प्रजायते पूर्वीकाऽद्गरीगेचाऽधिमाः सामकेतुसंशयम् ८३ दर्शामां सेषुवैयस्मानस्मादेत सुनर्मतम् श्राथशाकोत्पत्तिः

पुन नेपा अप शाकापातः सन्य महास् नैत्रसुक्कादी रिवसे मान स्थान स्थान १९ या स्थान स्केतुनता होयाः स्थान स्थान स्थान स्थान स्केतुनता होयाः स्थान स्थान स्थान स्थान तेनाकं स्थान स्थान स्थान स्थान स्थान

त्त्राक चत्र तुक्काचनारः ८५ कत्या वक्कानम् पत्याः च्याके तेके मिततयाः चैत्र युक्कादा घरनेतुतस्यतः च्यास बासरात् ८६ यातंत्राकांनारं चैकं याताऽव्यं चैकं मीरितं

श्चायदिनगए। सवरवेटानयनम् ज्यायदिनगए। सवरवेटानयनम् ज्यानयद्वः स्वयद्वः त्यस्यप्रोक्तः सम्बद्धाः द्वारामः कृदिनाद्वाः ८७

यान्जानितः रवेटस्त्रज्ञक्रवद्नी भवेत् दिसगए।भवरवेटादहर्भए॥नयनम्

चुगरा, दुवस्वटस्य हत्ताचुगकुगसरः ८८ विष्ठान व नोषत्तिपत्नीनांचयोजयेत् तत्त्वस्र्यातिभजेल्छन्धय स्नामा द्वरोषकम् ८८ जायते तत्त्वस्रे ईला युगभूताः

म्बातस्यक्षेपवशाद्भवेत् तत्र्वरस्थानं मेदा तोर्कोद्येभवेत् ८७ मध्योमध्यजवांदाद्यान्सूर्यस्यक मुक्त मध्यमेशादिकम् ३।१८।५८ सुक्ता सूर्य सिद्धान्ती यो गुरुः

प्रकारान्तरेए।सम्बत्सरानयनम

मे ८८ दलातत्स्वात्स्वाऽपरप्राङ्गं मध्यरेखोदये

भूपिएँडयोजनै र्मक्तंमध्य गत्यं इदाका हत स् १५ पर्या त्प्रान्योजनी घंतुर्स्वर्शेद्त्वांत्राकादिकम् मध्यरेखोदयो द्भते मध्येस्वाउकोरिये भवेत् १०० मध्यं न्वाऽथयुतंकु-

त्वाज्ञाके गोधनरामकान् विङ्गेया वत्सरात्र्यष्ट दक्तर्म स्यक्लेर्गताः १०१ वैवस्वताह्वयस्यैवसम्ममस्यमनोः क-ले: मानेगतकलिहित्वाशेषं भोज्यकलि भीवेत् १०२

चके झैर्यात भाव्दें स्तु युक्तं राक्यादिकं गुरोः नितंखांगतेष्टं सम्बत्सरंभवेत् १०३ रू हे स्कान्तिकालेसम्बत्सरं भवेत् जीवंमध्यमञ मन्यते हायने इंखिले १०४ यसुसम्बत्सरो मध्याइ जोंड

क् कसंऋगणनहि "प्रसृत्रात्वेवतत्त्वोपंचातिसम्बत्सरा ह्यः १०५ प्रकारान्तरेणसम्बत्सरानवनम् . स्रके प्रा गुरुभाव्यास्त युगेसम्बत्सराः स्मृताः वैश्वला

1000 मा- ११ रहिः २८ घ४७ पर रष्ट्र यमे दरील सागरै: कर भूमितः

जीवभन्नजः १०५ याताः मानिः घु-प-

 शाके १७९८ फाल्युन दिन १८ गते भीमे दिन गए। ७६ ३३ तहुरु भ द्६४२२० वर्षे प्रः २७८०० ८१२६० राव्यव्द्वीयं १२०,२१७३ ४३२:

सारी रोषं २२,४८२० ७ ३२ त्र्यंशात्रीषं ४३ २८ ५० ६४८ वरी शेषं ७३०३५ इस पतः त्रोषं १२१७४३६५६४ सञ्चराज्ञिचकादिकं वर्ष १ राविटः त्र्यंत्र ४ घटी १६ पठा २७ दिनगरा भवगुरुः भगराादि श्रर्थाद्रात्रि चक्रादिः १।४।४।१६।२७ शाके १७८५ मध्यार्क चक्रपूरी शुक्र बासरे गुरु भवषादिक २।८७ ।१७।१

शाके १५८८ तुकेदिन ७६७८ प्रहोगत संबत्सवादिकं संब २२ मा २ दि २७ घ-२४ प-१२ संबत्सर्भवकं वर्षादिः १।०।४ ।१३।१२

्पूर्वपश्चिम देशान्तर ज्ञानम् १२५ मासुबोषतु हार भक्तां दिनाः स्मृताः १२८-दिनबोषादिकाः स्वार्गनिम्रा हारविभाजिताः सर्वस्थाः कीर्तितास्थैव

स्युभावा भावदशिषताः ११३ स्युभावा भावदशिषताः ११३

्र च्या प्राप्त स्वाप्त स्वाप

परेविदुः ११५. श्रश्च पूर्वपश्चिमदेशात्तरङ्गानम् स्वास्त्रपञ्चमाश्चानंवकत्त्रपाऽद्वेखवादिकम् स

सख्येतीयक्रानिक्णांच्या दूतम् ११६ तत्रकं शुज्जी वास्यातस्यात्स्यविशुजांकाकाः तेज्ञेयास्तुत्वे क्रान्ते राष्ट्रमञ्जद दोर्खवाः ११० नामस्यात्का अभाक्तयोजी ममुक्तसुर्विचेत् तत्करीनायदं भक्ता मध्याद्वज्या

प्रथम-व द्वाक्षवा नार भाष खाडू न मार्क्सवा मम्बं मुर्ति मेरीत् तकरीं नार्यद्व भक्ता मध्याद्व खा प्रकीर्तिता ११८ तस्यायक मुजाशास्तु विज्ञया उ स्रोतिकाः स्वकं मुन्ति भागोनं रुत्वातस्यु वीतांक्र परमसिन्हान्ते.

काः ११५ तुल्यगोले इत्तरं कलातकातां शाह गयोर 'त्र्राध्यदयेद क्षेक्ष भिन्नैका

काच्योस्तेसस्कताशाः स्युयोम्या बाह्वंशका यदि १२३ वर्हनेपिकेमादुरथाः पड्राशीनालवान्विताः सरकता-हासकातिजाश्चेत्तुदक्षिणाः १२४ भ्योनिताः कार्या ,जायन्ते संस्कृतां वाकाः संस्कृता बोषुमार्गीबान् वामदत्वाभवेत्स्फुटः १२५ एतत्स्फुटो श्र्यसांकाः दक्षणान्धेदुत्तर्दिक्करउत्तराश्चेद्दक्षिणदिक्वय् १ नतांश पढांशयो स्तुत्यमोळे नतांशे भ्योधिकाः पढांशा स्वेत्तर पलांश दिश्यित दिकात्रांतिः स्यात् त्त्यगोले नतांशे श्यो त्याः प महिक्का कातिस्यान् .

रदि कत्जायते खेचरापमम

लामध्ये वे गांशकादिभिः तह्न टीवद्ने हिलात र्यमध्यमः १२७ जायतेस्वपुरस् नोर्मध्यवेगस्ययत्फलम् १३२ लंकास्वव्यसंयोर्मध्य तज्ज्ञेययोजनादिकम् लंकास्वव्यसयोर्मध्ययत्तहे वान्तरं भवेतं १३३ स्वव्यक्षा ८ कींद्रयोन्मध्या छं-कारकीर्यमध्यमम् चेद्र द्वीमध्यरेखायाः पूर्वस्वा स्वस्थां भवेत् १३४ न्यूनचेन्स्थारेखायाः स्वस्थान्यिमे भवेत् स्वस्थानयिष्ठ्वस्थापूर्वदेशान्तरं भवेत् १३५ स्वस्थान्यिष्ठ्यस्थापूर्वदेशान्तरं भवेत् १३५ स्वस्थान्यिष्ठ्यस्थायद्याद्देशान्तरं भवेत् तद्याग्रणाधनपश्ची क्वोचं देशान्तरं खेः १३६ स्वानसावनिष्ठं स्धान्यस्वदेशातराभिधाः योजनाः प्रणिक्षिण्डचो जनैः परिभाजिताः १३७ फलिकाः स्वास्वदं पर्यादेशांन्तराभिधम् मध्येकालान्तरम्धः स्वास्वस्थान्योपिवेत् १३८ स्थातिबिद्धनस्टिंगपश्चाद्वा असिन्तर्भक्तमणि यद्धेसादिशमण्डमाद्वा असिन्तर्भक्तमणि यद्धेसादिशमण्डमाद्वा असिन्तर्भक्तमणि यद्धेसादिशमण्डमाद्वा इस्वन्तर्भक्षमण्डमाद्वा १३८ तन्मध्याद्वस्थानस्थान्तरम्भ

श्रयस्थायकराज्ञमः स् भीने द्वीपकराज्ञमः स् भीने द्वीपकराज्ञमः स् अन्दरपाष्ट्रचना स् अन्दरपाष्ट्रचना स्वताः स् उः चन्नोश्रद्यपुरेवाको स्ति। सं स्वीप्याप्यः राहो मंस्त्रीव्यापुर्वा ज्ञा भीमस्याउथ सु विदस्तया ४४९ पट्सपट्

पकाः राज्ञ्याद्य टमध्यमं क्षेमंत ज्ज्ञेयं गए। कोत्तमे ह्नानितष्टकोंकः प्रकीर्त्ततः घस्रोधः स्वस्व शेषजरवेचरे युक्तात द्वं हमध्यंस्यार्छकाऽकौ द कालिकम्१४६

्रः निजस्थानभूमएडलानयनम् . इस्तयोजनैर्निघालम्बाशज्यालवादिका

परमंसिद्धाने चकव्यासाराकरासानिजभूग्राममीरितम् १४७

निजन्य**क्षाज्ञानम्**. देवदैत्यांदावासीनांस्वस्याः नाह क्षिणोत्तरम् देवदैत्यांशयोस्संधिदेशं स्वव्यक्ष मुच्यते १४८

स्वव्यक्षाऽकींद्योत्कालात्त्वस्थाने भारकरोद्यम्

ज्ञेयं दैत्यांत्राके प्येवंदैत्यांत्रीद क्षिणी त्तरम् देव भा-गक्षितीसीम्य याम्यंस्वएंचिरंभवेत् १५० देशस्वव्यक्षयोभीगोरेतचरंचोदयाऽन्तरम् यतो भवतिरचव्यसदेशाः केदियकालिके १५१ मध्यमे-भारतरा दीनांदीयतेऽत्रततोरचे स्फुटोत्यचरसंस्त्र र देण्युरीतद्विपयययम् १५२ लक्षाच्याःस्त कालो र येख्टेदेवंषमाः धनम् स्वर्णतत्वस्युः टार्की-

939

दुशान्तर संस्कारोपूपणिः ज्ञानः प्राकृषेरदेशेन्वव्यक्षेत्रास्वरोदयम् प्राकृषया ज्ञायने वस्पादे स्वाप्वारस्यके १५४ क्षयं स्वतीय ने तस्त्रान्तिक्षास्त्रान्तराभिधम् स्वस्थानानमध्येत्वा

स्यंन्दुः प्रविपात्तरे ११५ योजमाः प्रिभू हेन्त्यो जन् प्राप्तु थाजिताः स्वकुशामितस्य्यसास्रंकान्त्रं योजनात्म्यताः १५६ स्वागायान्यस्यान्त्रं प्राप्तु प्रेष्ठाः योजनात्म्यत् स्वयान्यस्य

मयोजनैः १५७ भक्तालब्धंफलं भागपूर्वेदेशान्त-रंभवेत् मध्यरेरवाज्ञानम्,

्रिया स्थापना स्थापन स्थापन स्थापन स्थापन स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्थापना स्य

यथालडू १८ वित्तिकामे रूमध्येगा व्यक्षेत्वमध्यरेखाः यथालडू १८ वित्तिकामे रूमध्येगा व्यक्षेत्वमध्यरेखाः याः मुलेस्योदयेतथा १६० मध्या १ द्वे वा (स्तकाले

याः मूळे स्पेरियेतथा १६० मध्याः ह्रेवाः स्तकाले च राज्यः र्द्वेस्वाः अवासरे मध्यमाः सेपका होयाः 'परमसिद्धान्ते.

१३२

संस्कृतास्ते स्वदेशजाः १६१ स्वव्यक्षेचनिजस्थाने

मध्या ६ ह्रः स्थात्समसारो यद्गन्थोक्तस्तुलंकायाः

मध्याऽ द्वे खेचरी भवेत् १६२ तत्खेटेचर संस्कारं नहि

खेचरं स्वजवीं ध्यूनं कर सिद्धाङ्गानम्, भानोस्सा

हानयनम्.

देयं विचक्तरोः तहे शान्तर संस्कारं देयं तत्से चैरे १६३ एवंस्वव्यक्तरात्र्युऽर्द्धेस्वस्थानेस्यानिदादिं म् तहात्र्यः इदिवेखेटे तहेशान्तर संस्कृति १६४ देयं तच्चर संस्कारं देयं नैवहित हु हैं

श्रयभिश्रकालिक ग्रहानयनम् . घोत्यंलंकाऽकेदियेकालजम् १६५ .

संयुतम् मिश्रंपंचांगगीत्रंतत्सावनंस्यातकादिक म् १६७ मिश्रकालिकग्रहादिष्टकालिकश्र-

तश्रपंचांग जातीष्ट मिश्र भेदकला हतम् भागाद्यस्य जबस्वर्णस्येष्टोमिश्रा १ धिके त्यके

चराङ्गजांद्राानयनम्.

खेटेंग्याय- चालनदानोत्पन्तिः स्वमध्यादीम ध्यवेगोदिंचालनम् १६८ देयस्वएधिनएीतुक्कवेगे

<sup>"</sup>सि**श्रोत्प**त्तिः मिश्रकालेहिल**ङ्**गयां रान्यः द्वसमयं भवेत् १७०

सावनारव्यचरं होयं स्वस्वा ऽपक्र मजंचरम् वार्ष्यां-गारव्यचरं झेयं तच्च पंचागजातिकम् १७१ वावार्ष्यां गचरा<u>ऽद्वेत्यि</u>यचरंतुकलादिकम् तद्वार्ध्यांगचरं

<u> ज्ञेयंताराणीं भास्कर स्यच १७२</u>

ताराणां भास्करेस्यापि मार्गीदीः संस्कृतस्यच प्र-रफुटस्य भुजैर्झस्य संख्या यंद्र्यमिता भवेत् १७३ तत्तुव्यचरखएडैक्यंकलाभोग्यचराऽईकम् हला

तत्रांशकादौस्तु भक्ताश्र्र्यां प्रिभिः फलम् १७४ कु क्तातचरखरुडै क्येस्याचरं व्यावहारिक्म्

**ऋयचराद्भजाशानयनम्**.

938

दोषस्वत्रिवधेभोग्यभक्ते युक्त्वाः त्रदोर्लुवाः श्चेवंतुविपर्यस्तेहारंतत्रगुरास्मृतम् १७६ गुएक तुस्मृत हार भाज्यमेव फलं नागञ्चामध्यमत्वेकवह्न्यदो घाददाा-चराऽ द्वीनायोगस्वष्ट

परदेशोक्षप्रभानयनम् चरेण झंतत्फलं तुपलादिकम् स्वप्राकृचरद्वेन झं चरखएँडेक्य भाजितम् १७८ दिग्भेक्तं तत्फलं • न्यदे दोह्य ६ मा भवेत रूप तुल्या कराशिभुजांशकैः १८० ग्रमस्कृतं भवेत् तद्व आऽ १८१ स्यात्तयातद्विभोत्पनाऽ सूस्ममः त्रनाग गुणस्य-

ले १८२ चरयोरन्तरं यत्स्याहि त्रिभोत्याऽपमोत्येयोः

स्वत्वरपष्टगुए। झाऽक्षाभास्यात्स्य चरसस्कारदानस्थानङ्ग :कप्रिमेत्यनचर संस्कारकंखलु तात्का**छिक**-प्रहङ्गानम्, सावनेष्टकलोत्पनारवेटं तात्कालि-कंमतम् १८५ सूर्यस्यवार्ष्यागदिनार्द्वज्ञानम् भनीव्यंसदिना ऽर्द्धे तुवार्व्यागंयत्रजायते तत्त्व ५५में सम्भूतचरें (गैवहिसंस्कृतम् १८६ तद्वार्थ्या)

गदिनाऽर्द्धेतु भारकेरस्य समीरितम् सावनेष्टरात्र्यर्द्धज्ञानस् भाने।विर्धाग घर्माई युक्ताशून्याधिलिप्तिका न् तदार्ध्योगेष्टरात्र्यः ईजायते चाय वार वेः युक्तात कर्मा इतिस्वएडत्तुसावनद्युमितीतथा १८८ जायते स्वेष्टरा-• त्यः ई वार्ष्यीगंतकलादिकम् क दारक पत्र भादेशे चर खंडाः द्वा ५५ वर्ग ५५ वर्ग ५५

१३६ परमासिद्धानी. स्वब्यक्षेष्टरात्र्यर्द्धज्ञानम्, स्वव्यक्षेष्टर्न

र्द्धस्यात्स्वेष्टराव्यऽर्द्धसम्मितम् १८५. लंकारा**व्यर्द्धज्ञानम्**. स्वेषरात्र्यर्द्धक्षिप्तादीपुर र्वपश्चिमदेशजान् देशभेदकलान्दलास्व एतिनि

श्रमुच्यते १५० श्चर्कापरखेटानां चास्तोदय कालोप-

योगिचरकुलज्ञानम्. स्यासन्भगतानाच होकमऽस्तोद्यंभवेत् हितीयं निजहम्बृत्तदेशेचाऽस्तोदयं भवेत् १८१ ऋतस्य

रवगानांच तारा एगा दिविधोदये दिप्रकारा उस्तका-लेचयचरंयत्रयत्रच १५२ दीयतेत्त्रतच्यसावना ख्यचरंखल तत्राऽष्यः के चैरं झेयंसावनारूय चरंड <sup>धैः १९३</sup> देशान्तरकलाकुलज्ञानम्

वार्ष्यागैः षष्टिभिंकितैः सावनैश्वकुं कुएडलम् पूरि-भगतिभानुश्च ततस्तक्षिप्तिकाद्दिकम् १८६ प्राक् प<sup>र्</sup>चाद्देशजं मध्यरेखानः प्राक्तेपराभिधम् देशविश्लेष

सुरवोत्समध्यमाऽहर्गएषिरानयनम् १२७ इंमध्यरेतात्वस्थानमध्यजम् १८५ तत्पदाद्युः कुठतः <sup>दंशान्तर</sup> ज्ञावार्षान् सत्वनमतम्

ऋथ्यपुरवोत्थयध्यमा दूर्गण्योत्तानवनम् किस्तिस्य त्विष्टराकेषु गेपारके दिवता हुयेः १९६ विस्वर्येषद् पडामाना घर्माण्याप्रमान्वरेत् त प्रत्यक्ष होस्वानदेद मध्यमान्कश्चितेष्ठवान् १९७ निजदेशो स्वान्कत्याप्रेशतां स्थेवसाक्षरेत् पश्चित्यद्ध ह्वां स्वाद्ध हर्गण्या इपिसांक्षरेत् पश्चित्यद्ध ह्वां स्वाद्ध हर्गण्यात्र्या इपिसांक्षरेत् पश्चित्यद्ध ह्वां स्वाद्ध हर्गण्यात्र्या इपिसांक्षरेत्व पश्चित्यत्व स्वाद्ध हर्गण्यात्र्या प्रतिका मध्या विशेषा गण्योत्रात्त्रीः १९९ घरमञ्जयान्वरोज्ञे पाः पर्णाह्माक्षरं पर्णासाक्षरं पर्णाह्माकाः नारक्तात्रेष्ट

२०१ हलाभेददिनायस्यात्त्वए ष्ट्र घटिका द्याँखेदत्वा तत्स्वेष्ट्र वासरे दिकं सद्यं विज्ञेयं ति इन्हिणेः तिष्टतं सप्ते भिः सद्यं स-

चंस्याद्वारपूर्वकम् २०३ स्वेष्ठवारोन्भितंसद्यवारंयत्रन जायते घरत्रयोरन्तरं स्वेष्टसद्ययोः सद्य संज्ञके

ह्नाऽर्ज्वात्स्वेष्टघस्मदिनाऽर्ज्जकम् ऊर्न्होऽत्यंतिप्रीकाः

चत्यन्मितयदि जायते १०६ सद्येष्टेतन्मिततहि एदिलाभवेरस्कृटम् स्वेष्टसद्येष्टविन्छेषस्वेष्टसद्याऽ र्धिकोर्नैकं २० स्वर्णेलिसादिकं क्रोयं गुणं तत्पास्डितो त्तमेः स्वेष्टपर्रिष्टयोर्यत्रनेकदेशयदाभवेत् २०८ तंत्रतर्हितुसदोष्टात्स्वेष्टदेशोष्टमानयेत् तत्सदीष्टो च्यतेतस्माहुक्तवहुए।मान्येत् २०५ स्वर्णशाका

न्तरं लेक वर्षमध्य जवाहतं स्वर्शेता ह्रेन जे दत्वा मध्य मेपर्जि बुधैः २१० सद्यः कारो ऱ्य मध्यं तरखेट स्यहि जायते वेगस्वर्णगुऐनेवमध्यारव्यत्वेक यस्त्रजम् २११ हत्वादत्वाधनएंति सदाकाठोत्यमध्यमे इष्टकाठोड वतन्तुजायतेखेटमध्यमम् २१२ विज्ञेयंस्यजंचाः

स्तथा २१३ एकादिगुणितस्यैकंवर्षमध्य

जवस्यच. दन्तवेदगुएगकोटि

छेदाइब्दा ब्रह्मणोघस्त्रेसीरासंबत्सराः स्पृताः भीमस्यवेदखयमाः जीवस्या अखनन्दानि शु

तत्रेवपातच्याणि, मं शकदस्या-

१४० परमसिद्धानो

सुनीमस्य बु इस्याष्ट्रगजसागुराः २१७ र गी-भूतेर्धुगजीस्ताः शु शुर्कस्याः पिस्वरवेचराः श मनस्यास्तिस्तागस्तु हास्मवस्येषुच २१८ प्रोक्ताः

मन्दस्थाक्षरतागास्तुहारसम्बदराषुच २१८ प्राक्ताः भारतभचकाणि विजेमगतयोबुधैः बहुद्रजन्मदिनादनाब्दानयनस

ब्रह्मज्नस्विनाद्गताब्दानयनम् गोषनाश्चाबिगाद्वविभगोत्र्वद्वासामासगन्थः शक्यस्वाविभेजन्मकालात्स्युर्वत्सरारिहिह् स्वितोगताब्दाः कत्यारम्भलालात्वाभ्रस्या

स्पृष्टितोगताब्दाः कत्यारम्भसाणात्वा अस्वाः व्धिषङ्ग्योमतोयदे २२० सीराव्हे ब्रह्मणास्त्र्ये कृतंत्वपिष्ट्रनम् ब्रह्मणोऽस्यलेस्तुत्र्येषद्स-स्वीवप्रतानितः २२१ अपने स्वीवप्रतानितः २२१ अपने

कृतत्वारा घट्टमा अस्तर्शाः अपलस्तुत्यवर्स-क्ष्म् रण्यास्तर्भका है। स्वीतिपत्नानितः २२१ प्रपत्नेः पद्वशीर्धकं कालंतन भवमतम् भास्यस्पाप्तिनामाष्टपनासाकं निशा-करान् २२२ पुक्ताशाकेस् ष्टितोऽब्दा याताः

पूर्वबुधोदिताः

ब्रह्मदिनारम्भाद्गताब्दानयनम्.

•इ. १८७२८४७। १५ आकेगोस्यधरासप्तयुगगोद्दयद्<u>रिगोर्विधू</u>न् २२

युक्ताब्रह्मदिनारम्भाद्याताः सम्वत्सराः स्मृताः

ब्रह्मणोदिवसारभाद्याताब्दाः वर्तेताद्विताः २२४ कोट्यासाः द्विनगैरासाः चुकेठाः स्युविधर्गताः

काट्यासाः इनगरासाः चुकछाः स्युवधगनाः मन्यन्तराः ब्रह्मएगोदिवसारं गंकल्यारं मसुदीरिः तम् २२५ एकसप्तयुगैस्तुल्यमेकमन्यन्तरं भवेत

एकं मन्वन्तरस्येवसंधिः सत्यंद्यगोन्मितः २२६ एवः करवाष्ट्राब्धिवेदाष्ट्रस्वाग्नयः सीरक्तसराः एकंम न्वन्तरस्यैवविज्ञेयाश्चरससंधयः २२७ कत्यारम्भः

भारति विश्व तु काशावः । १२ श्री दार्शनी हर्षाः है शोके गो को देशायान् पुक्रतायक कि वित्त शता भ्यायत् पर्यपन्योत् स्त्रुक्ति विश्वत्यान् द्वस्तुः शतायित १०० वर्षयु मीतमन्त्रेत्व पुक्ति विश्व स्त्रुक्ति विश्वत्यान् द्वस्त्री आसीति १०० वर्षयु मीतमन्त्रीत्व प्रस्ति विश्वत्याः १ १ १ एकवर्षे पुक्रमात्रात्त्रीकि विश्वसाः १६ १९ एकवर्षे गुरुपात सुक्ति विश्वसा 185.

यः कल्यसंधिदिनान्ततः २२८ श्रून्याभाभा गखाक्षाष्ट्रा अमिनेस्तथा वर्षेस्ससंधयोयाता

मन्बन्तराणिते २२८ तत्तो स्यसप्तमस्येववै मनोस्तथा सप्तनेत्रयुगा याता ऋषावि २३० सत्यारम्भदिनाचातकालस्यात्ताहेनात्तकम्

मन्दोचराशिवर्षभाः सृष्टितोयातवत्सराः २३१हाः रवषौद्धता मन्दतुंगंचक्रमुखं भवेत्.

च्द्रतुर्गचनेवाऽनेनसमानयेत् २३३ मन्द ः विलोगगतयोदिताः पातरादयाः

स् १ वर्ष मन्दोसं भुक्ति विपता ६ प्रपापण स् । दिने नन्दोन्च श्रुक्तिप्रपठाचा १।८

स्यष्ट मंदोक्च पातानवनम् १८३ दिकंद्वेर्वे हिलापातस्भु वो भवेत् २३४ मध्यवेग ऽधिक तुंगवेगेशी प्रोक्ष मारिशेत् उद्धवेगाः धिकेम ध्यवेगम्दोन्त्रमारिशेत् २३५ उद्धाव प्रदर्शनी मारिशेत् २३५ उद्धाव प्रदर्शनी मारिशेत् विकास विकास स्वीत्र क्षात्र प्रतिकास स्वीत्र क्षात्र स्वीत्र क्षात्र स्वीत्र क्षात्र स्वीत्र स्वी

सार्यकृतिवाहिस हित्यार सानाः स्य भीमकाइनापामन्द्रतृत्यार स्वर्णान्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्यान्यान्यान्यान्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यान्त्यान्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यान्यान्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यत्यान्त्यान्त्यान्त्यान्यत्यान्त्यान्यत्यान्यत्यान्यत्यान्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्यत्य परम सिद्धान

त्तिष्यस्मजम् प्रस्फुटं मन्दे तुँगंच विज्ञेयं वि

प्रमुक्तिम् २४१ । ६५८ श्रीलक्ष्मीवल्लभात्मज प्रेमवल्लभविरचिः ते परगसिद्धान्तेमध्यमाधिकारस्तृतीयः ३

- श्रयक्तव्यासोपपत्तिः

व्यासाऽर्द्धवर्गाहि गुणा द्यन्यूलंस्यान्महच्छ्वः तु-ल्येचतुर्भुजक्षेत्रेतुल्यकर्एाद्र्याभिधे १ व्यासस्याऽ

र्द्रमितेकर्रीतन्म हच्छ्वराग्डर्दकम् होयमादि सुजं.

तद्वत्प्राक् कोटिः परिकीर्त्तिता २ व्यासाऽर्द्धे व्या-सरवर्षेड घतहहच्छ्वणोद्धृतम् प्रान्वाहः पूर्वको

टिश्चजायते पूर्ववत्तवलु ३ तन्महच्छ्वर्री पूर्वटेः

कंज्ञेयंविचसारीः व्यासाऽर्श्वमऽन्यकोटिःस्याच्छ

न्यमन्त्य भुजंमतम् ४ प्राक्तिकोटिवर्जितं व्यास खण्ड मादि शरोच्यते श्रून्यमन्त्याभिधंबाणां विज्ञेयं

१ स्ट्रत्पूर्णकरोच्यासार्ज्जबाहुः ज्यासार्ज्जकरोप्राग्याहुः स्थात्

चन्तव्यासोपपत्तिः नएकोत्तमेः ५ कोटिन्यासदलादिलातत्सर्वत्रशः गेच्यते वाएांव्यासाईतोहिताकोटिः सर्वत्रकीर्तिः ता६ कोटिंबाए।दलेबुक्ताचाउग्रेस्यात्कोटिखण्डकः व्यासार्हे : क्षदरं हिलास्याद : ये कोटि खएडक: ७ यत्त हा हद उंतत्तुं हा इमेदीः खएड उच्यते दीः कोटि -खण्डवर्गेभ्यान्म् छंटेकस्ते दुच्यते ८ व्यासाऽर्द्वाद्वा हुसएड ब्राट्टेकासाहाहुरुच्यते व्यासाऽहिकीः टिन्दएड प्राहेकामात्कोटिरुच्यते ५ न्यस्माऽदस्य

भुजस्याऽई मऽमेदोः खएड मुच्यते कोटि व्यास दलाः

दितालऽप्रेबाएम्तदुच्यते १० ज्याबाएगानयनेचे वंटेककोटि भुजादिकान् स्त्रानयेल्याः र्थपर्यनांगः रंबारंमुहुर्मुहुः ११ पूर्वबाहुकतीयुक्तापूर्वबाएा फिनबुधैः तन्मूलमादिडोरः स्याद्वितीयेषुक्रेनोतथा जायने डोरंतृती येषुकती तथा १३ तृतीयंबाह्नवर्गतु

१२ दितीयैवाहुवर्गेतु युक्तातस्यपदंतवा दितीयं युक्तातस्यपद्तथा तृतीयंजायतेडोर मेवंडोरान्स १४६

ज्ञकम् एकेनाऽ साब्धिभिवीरे दि ३५१८४३७२०८८८३२ हेचेत् र्षमांदाः स्थान्तन्यागेश्वसमाहतः तद्वहृद्यास जंलेः

तडून्त मुक्तं विचक्षऐोः १६ दन्ताष्टाष्ट्राष्ट्ररवाश्च्यद्रि-त्र्यब्यम् द्वाशासयः ३५१८४३७२०८८८३२ तद्वत्तस्याष्ट्रमेभागेकोरगा न्यत्रभवन्तिहि

ष्टव्यासाहत रत्त तह ह द्यासभाजितम् रजः स्वेष्ट्परिधिर्जायतेकिल १८ प्रस्फुटं भवेन् १९ व्यासात्परिध्यानयनम्.

सनि प्रत द्वेत्त भाजितम् तत्फळ खेष्ट चत्तस्य विस्ता विष्करभंगजनांगा भ्रतानेईत्वाविभाजयेत् तत्वांग वत्तत्वागधस्त्रघ्रमष्टाष्टाभांकसागरैः भक्तंत्रस्कृ

ट विस्तारं दिझे यंप एडि तो न्तमे :

न्प्रथब्हत्कणीदाहरणम्.

च्यात्रस्यासः ३०००००० व्यासाऽर्द्धः १५०००० इनः २२५,०००००००००० द्विगुराः ४५०००

२००००००० त्र्यस्यमूलंशतक जात्यः वयवानि-नंन्द्रवयहत्करीः २१२१२०२ । ४२।५५।८५। ४२ त्र्यस्याऽदीमधमभुजजातंसाऽवयवं १०६०६६

व्हे । ७९ । ७७ । ५८ । २१ प्रत्रमा कोटिख १०६०

६६०१ । ७७ । ८८ । २९ . स्त्रयस्यस्यानयनस्

मानन्वादधोकुञ्जानान्तुयन्नौतसम् भवेत् स्हर्मस्याः स्वयनन्त्रवर्गस्यादपिधनस्यच २२

स्दूरमधर्गमूलानयनस् स्वाऽधोज्ञातिप्रमाऐनवर्गोकपश्मिर्दयेत् तत्रस्वाऽ वयवयुक्तमिस्ववेदादिभिर्मितम् २३ बहुवार्द्वयैः

कलातम् अच समुद्दरेत् तत्त्वाःधोजातिमानेन गु-एानस्यव्योग्मितम् २४ वार्लव्यमतोलाब्यमेव साउवयवपदम् जायतेचाथवामुलाच्येषमेकं सम- १४८

चितम् २५ कलास्वाऽधोकुलस्येवमानेनपरिता डितम् तहर्गाऽवयवंयुक्तं कलात झाज्यमुच्यते २६ - हि द्रेनेवकराखेनेलब्ध मूलेन भाजितम् भाज्यंचाऽ

वयवस्युलं मूलस्यैवहि जायते २७ स्क्षंवर्गमूलोदाहरणम्

यथा मूळं सावयवं ऋंदा ४ घटी २० पढा ३० ऋस्य वर्गीकं जातम् १८।५१।००।१५।०० ऋघोजाति . मानाहतम् १०८० एकावयवान्वितंजातम् ११३१

तद्र धोजातिमानाहतं सावयवंच ६७८६० तसु-नरधोजाति माना ६० हतंजातम् ४०७१६०० साव-

यवं ४०७१६१५ तदपिनस्वाऽधो जातिमाना ६० हतुम् २४४२ १६ ५०० साऽवयवंच २४ ४२ १६९०० त्र्यस्यमूलं द्विवारं षष्ट्या ६० भक्तं लब्धं साऽवयव-म् ४।२०।३० स्त्रथभित्नवर्गमूलानयनम्.

भिनेऽदास्यहरस्याऽपिस्समं मूठं समानयेत् हार मुलोद्धत भागमूलं स्हमपदंभवेत् २८

श्रथ धन मूलानयनम स्वस्वाऽधोजातिमानेन त्रित्रिवारं घनांककम् स्वस्वाऽवयवकं सन्तिवं तत्रिवारकम् २५ षड्वारं

नवेवारं वाक्रत्वात् ज्ञायते धनं तन्मू छं गुणनस्यै व व्यंत्राके नैवसम्मितम् ३० एकवारा दिकं भक्ता स्वाऽधो जात्यु न्मितेनच लब्धं घनपर्दे स्टरमं झेयं साऽवयवंदुधैः ३१ घनमूलोदाहरएाम्.

पयामूलंसाऽवयवं स्प्रदा ४ घटी २० त्यस्य घनांकं जातं ८१।२२।१३।२० ऋयमाऽधोजातिमानाहतं त्रिवारंसाऽवयवंजातं १७५७ ६००० पुनर्हिचार

मधोजातिमानाहतंसाऽवयवंच ६३२७३६०००० तत्पुनरेकवारच ३७ ८६ ४१६ ००००० स्त्रयं घ-

नांकंषड्वारगुए।नजम् युनरयंत्रिवारंस्वा ८धोजाति माना ६०इतंसाऽवयवंचाऽयंजातम्८२००२५८५ ६००००००० स्प्रयंनववारगुएानआतं घनाकम्

८२००२५८५६००००००० स्रस्यमूलम्

परमसिद्धान्ते

९३६००० व्ययगुणनं नवप्रस्तितं गुणनं ५ तृतीया

रा ३ रामप्रामितं ऋधोजातिसानं ६० ऋनेन मूछं

< ३६००० भक्तालब्धं १५६०० श्रायमिपि ६० भक्तं

लब्धं २६० ऋयंचाऽपि ६० भक्तं लब्धं ४ शेषं २० मूलं साऽवयवम् ४।२० १०१० घनांकंचेत् ३७४६ ४१६००००० सूलस्१५६०० त्र्यत्र गुरानं वर्डु नि ६ तम् गुरान ६ तृतीयांदां २ यमोन्मितेम् ऋघो-जातिमाने ६० नमूलं १५६०० भक्त्वालब्धं २६० ऋयमपि ६० भक्तंलब्धं मूलंसाऽवयवं ४।२०।० घनांकचेत् १०५७६००० सूलं २६० त्र्यत्रगुएा-नमृत्र्युनि ३ तं गुएान ३ तृतीयांदीम् १ तदुनि तं १ वारमधोजातिमाने ६० न मूळं २६० भक्ता लब्धंमूळं जातं साऽवयवम् ४।२० श्रय धन मूलावदोषस्यस्थुलफलानयनम् यनमूला ऽवशेषंतुस्वाधोजाति प्रमाहतम् कला-स्वी द्वयवं युक्तातत्रतद्भाज्यमुच्यते ३२ लब्ध

मूलस्यवर्गेएात्रिधेनत्रियुतेनैच भाज्यसमुद्धरेत्स्यू-लं मूलस्या ऽवयवं भवेत् ३३

ऋथभिक्त घन मूला नयनम् भिनेंदास्यहरस्याऽपिस्समं मूळंसमानयेत् छेद मूळोडृतंचांऽशमूलंस्ट्सपपदंस्मृतम् ३४

श्रयज्योपपत्तिः त्र्ययन्ताऽर्धमेभागेस्युःकोष्टान्यष्ट्रभास्कराः द्वे-

योः पृष्टाऽयकोटघोस्तु यद्विस्ठेषदळं भवेत् ३५ तेनाद्यालघुकोटिस्तुकोट्यऽर्द्धमध्यमेभवेत् द्वर्यो

पृषाङ प्रभु जयो यहि के पाइल भवेत् ३६ तेनाह्यो त्मभुजोर्मध्ये दोः स्वएंड जायतेत्रयोः पृष्टाऽ ह्याऽगऽ र्द्धयोयीर्गमध्यमंजायतेतयोः २७ पृष्टाऽय्र भुजयो-

रैक्या युग्मा साद्यसहंभवेत् तहुयो र्जबयो मध्येदोः खंग्ड पूर्वबद्भवेत् ३८ इयोः पृषाऽयको ट्योस्तुसं-

योगाद्यहरू भवेत् तत्त्रयोगिध्यमेकोटि खंड पूर्वस मम्भवेत् ३४ दोः कोटिखएडयोवर्गसंयोगाद्यसैदं परमसिद्धाः

तत्प्रोग्बट्टेकसङ्गःस्याद्दीः खएडव्य धात् ४० युग्मोप्ता हेक भक्ताच्च तद्वा हु व्यासाः इत्किटिखएड घाट्टका सा को

४१ एवं नागार्कको धेषु बाहु कोटिंसमान येत

कोटी न् युग्माहतं कला मीर्व्यः स्युश्चा पराष्ट्रमे त्तस्याऽकारीकेलन्नराशिमेक मुदीरितम् ४३ सा-र्दे के रोशिपर्य्यन्तं विज्ञेयं प्रथमाऽ एमम् ऊर्द्धे एतां ब्रिपर्यन्तं जायते चापराष्ट्रमम् ४१ इष्टज्यामान

येञ्चस्वयत्तव्यासाऽनुपाततः त्र्यतोऽयेमोविकावस्यकोष्टे स्वाष्ट दिवाकरैः ४५

त्रिनाँगौश्विनागानि ४ पञ्चरामाब्धिदिग्भुवः ४६ ५ बौलास्य भाषविश्वानि ६ दन्तपट् प जातिरन्तांङ्कचन्द्राणि ८ वेदखाष्ट्रेखजातयः १७ द नागाँगाँग्य एसिद्धानि १० त्र्यब्धिनन्दासभानित

१९ दौळतानाधिरवत्रीं एी १२ व्योमाबध्य भकुनिः

गाष्ट्रवद्भयः १५ खांकपञ्चामि भूवेदाः १६ शैला · श्वाशाब्धिसागराः ४५. १७ शेळाव्यक्षाष्ट्रपद्वेदाः १८ खाश्राश्रांगनवार्णवाः १८ वेदंत्र्यब्ध्यग्रियुग्मा

साः २० जोब्ध्य शाश्रासमार्गणाः ५०.२१ क्रब्धिह ग्गजरीलाहाः २२ विश्वांगास्तरवष्णिताः २३ द्वरं गगोदन्ततकीष २४ बौस्रपिएडा श्रवडुसाः ५१ २५ दौलाष्ट्रेष्वदिनागांगाः २६ द्वयंगनागेन्द्रपर्व ताः २७ गोदिन्युग्माब्धिसप्तानि २८ नागदनांक षणगाः ५२. २५ गोञ्जपञ्चांगगोदीलाः ३० गोखबदुएहग्नाः ३१ मोभ्राष्टाभ्रास्नागानि ३२ षट्रवांकाश्वागमङ्गलाः ५३. ३३ क्वद्गिताः नाभनन्दानि ३४ भूखा भ्रद्वयप्ति खेचराः ३५ षद्भोकाष्ट्राक्सरवेटानि ३६ पोसाकाक्षाष्ट्रवेचरा ५४ . ३७ रीलाखाषाकी स्वाधानि ३८ कंगांगांकामिदि

र्जराः ४८. १३ इन्द्रयसाष्टासरामानी १४ मा एखाः

परमसिद्धान्ते.

ब्रिताः ३८ षट्रवांगांगांगश्र्त्यान्ता ४० ईशाब्ध्य-स्यंकदिङ्गिताः ५५. ४१ वेदमेघा अयुग्मेबाः ४२ पोंकाष्टां गाब्धिशंकराः ४३ त्र्यश्वासाध्यश्चभूचन्द्राः ४४ सो भ्रष्टबन्वखभास्कराः ५६, ४५ बड्डोम्बांगा

श्चियुग्मान्ताः ४६ जोदेवास्यक्षभास्कराः ४७ वेदाः ग्न्यष्टांकदौलाकीः ४८ भूपिएडांगा श्रविश्वकाः ५७ ४८ गोश्रषड् दन्तविश्वानि ५० सोश्विखांकासवि-

श्वकाः ५१ त्रिद्वयस्यसाष्ट्रविश्वानि ५२ नागांगा हो-द्रावासवाः ५८. ५३ गोसान्धागाग्निराऋाणि ५४

५६ वेदरवा भ्रांगभूदिनाः ५८. ५७ व्यद्भिगो स्ना-ब्धि चलाए। ५८ वेदाष्टाष्टाश्चषड् दिनाः ५५ वर्

षद्गोष्टाभ्यंगवासवाः ५५ नागाश्वांकांकनागेन्द्राः च्ययाध्यंक घरमाणि ६० धिष्णयासांका स्त्रवडुवः६० ६१ जोतलाक्षाब्धिषद्भन्दाः ६२ भांकरवान्यांगकेवः लाः ६३ देवासागांक भूपाणि ६४ पोश्वा श्रास्त्रश्चि सोयदाः ६१. ६५ त्र्यसासागान्धिमेघानि ६६ चो-

षड्गोन्हागतीयदाः ६० गोखाभ्यष्टांकजीसूताः ६८ षण्णागासाभिद्यगदाः ६२. ६५ चोंकाश्वाष्टा-ब्धिनागाच्याः ७० देवांकाञ्यणंक हदाः ७१ भूखखां कांकहरत्यन्ताः ७२ जोकांकाप्यश्विगोभुवः ६३. ७३ जातिगोष्टाब्धिगोचन्द्रा७४ स्त्र्यश्वागाच्यग-' गोभुवः ७५ खासासाष्टांकगोज्जानि ७६ भूत-त्वास्यविखान्तकाः ६४. ७७ षट् सोष्टागाब्यिखाः क्षीएि ७८ सिद्धाब्धंश्च्यगखान्तकाः ७५ चोंकाः ष्टांगांकरवासीिए। ८० पंचाशकिकपारायः ६५ द्रश सोकासासेन्द्रपसाणि द्र ऋसाष्टांकांग भूगमाः ८३ षट्सोकात्रकं स्युग्माः ८४ इथाब्धिखाष्टेचु-जातयः ६६. ८५ तत्वरबाश्यब्धिरम्यमाः ८६ त्रिद्वयंकासांगद्यक्षराः ८७ षट्त्र्ययांकाष्ट्रकृपः साः ८८ व्यंगाब्ध्यग्निकुरोत्तकाः ६७. ८५ इच-भेन्द्रवाभिनोसीशि ८० चोसांगाभागनो नका ५१ सप्तेशान्ध्यष्टवेपसाः ५२ खाकान्ध्य यस्त्रची-

परमसिद्धानी.

न्तकाः ६८. ५३ इयश्वागा भामिसिद्वानि ५४

रोंगांकास्यसचोन्तकाः ८५ कंगाश्रागागसिदाः ानिएइ षट्षट्स्वाभाभ्यपोकराः ६४. ४७ सोखां

राकासाष्टांगतत्वानि १०० सोग्नि भूकं कपोयमाः ७० १०१ त्र्यंगषड्विश्वषट्पक्षाः १०२ कडुः करवाङ्गाः भिषद्कराः १०३ गोकब्ध्यप्टेषुषद्पसाः १०४ सी-ब्ध्यंगा आष्ट्रषट्कराः ७१ . १०५ चोश्वभाश्राश्व-पसाएि १०६ रवा भाषाक्यक्षिसोन्तकाः १०७ ब्रि-ह्यगांगाब्धिऋसाणि १०८ व्यब्ध्यसाष्टांगमानि-च ७२ . १०० जोतत्वा भ्रांक ऋसाणि ११० जोग ष्टेशाष्ट्रपाए।यः १११ द्रयद्रयस्यस्यिपिएडानि ११२ खाद्यागाब्ध्यक्षजोत्तकाः ७३ ११३ खांगखांगा अपिएडानि ११४ हक्सिद्धात्र्यांक जोयमाः ११५ घस्राध्यष्टेन्दुगोक्षीएि। ११६ जो मांकाध्यंकपाणयः ७४. ११७ कमिभूखांगगोपसाः ११८ कद्रबष्टा-

कजातिपोसी ए। ८८ त्र्यंकाश्चेष्य ब्थिपोन्तकाः ८५

घस्त्रस्वाश्च्यक्तिस्वाभयः ७५. १२१ मेघसिद्वाब्धिः स्वत्रीणि १२२ पोश्रभांगाश्रवद्वयः १२३ सोश्वपि-एडाष्ट्रस्वत्रीणि १२४, देवांकाश्विख भूगुणाः ७६.

१२५ इचिट्रिपिएडार्करामाणि १२६ त्र्यंकषड इचिक् भूगुणाः १२७ षड्गोस्यश्यंगभूरामाः १२८ क्र-

| ष्टगोक्कष्टस्युराष्ट्रिक |               |      |            |    |            |
|--------------------------|---------------|------|------------|----|------------|
| 0                        | . 0           | 9    | २७६११      | 2  | ५५२२२      |
| 楓                        | 0 0 0         | খ্যা | ० १४२१११   |    | १।२४।२२    |
| 34                       | <b>८२८३</b> ० | 8    | 190834     | ч  | 930030     |
|                          | २∤६∣३३        |      | राक्ष्टाहर |    | अ३०।५४     |
| ξ                        | 164639        | U    | १८ ३२२२    | 5  | २२,०८०४    |
|                          | शहराष         |      | . ह।५५।१३  |    | ५ । ३७। २२ |
| 2                        | २४८३७८        |      | २७ ५५ ४३   | 99 | 303840     |
|                          | ह १९५ रिर्    |      | 351610     |    | ७। १३ । १२ |
| 92                       | ३३ १०४०       | 13   | ३५८५७१     | 18 |            |
|                          | टा२५।४७       |      |            |    | 4184143    |
| 94                       | ४१३५ %०       | 38   | 88 40010   | 90 | ४६८५ ४७    |

| ર્ષ્ટ | ६६०२८७          | 24       | ६८७५८७       | ₹६     | ७१६८६३ "             |
|-------|-----------------|----------|--------------|--------|----------------------|
|       | 38 18C 140      |          | 96130123     | 1      | 90192/93             |
| ર્હ   | ,७४२१०८)        | 25       | ७६ ९३२८      | 54     | ७८६५ १८.             |
| -     | १८।५३।५१        |          | १८१३५।२६     |        | 20116140             |
| 30    | 643829          | 37       | 540504       | 32     | 2004+8               |
|       | २०।५८।२४        |          | ર૧1રૂઝ જ     | $\top$ | <b>२२।२१ २०</b>      |
| 33    | 4 84 91         | 38       | 43500,3      | 34     | 445448               |
|       | २३।२(४१         | 1.       | वद् । ४३।५८  | Т      | रक्षारका गर्         |
| રૈદ   | ५८ वर् वर्ष     | 30       | १०१२ ८७७     | 3,5    | १०३५७६१              |
|       | . રહાદ્દારહ     |          | २५।४७।३३     |        | रहारटाउँ७            |
| ₹5    | 10 6 6 6 0 6    | 80       | 9043899      | 189    | 1170968 .            |
| _     | २७१८ १३८        |          | २७।५०।३५     |        | उद्धार्वाश्व         |
| ४२    | ११४६८०५         | 8.3      | 9903403      | 88     | 1500 500             |
|       | 56135130        | 1        | रकालकाह      | 1      | ३०।३३ ।४६            |
| 84    | १२२६ ७ % ६      | 38       | 1२५३३३८      | 20     | 1२१% ८३४             |
|       | ३१ । १४ । २३    | T        | ३१।५४।५६     | T      | ३२।३५ । २५           |
| 80    | 130 63 63       | 85       | १३३२६७%      | 30     | 15000 50             |
|       | \$\$134140      |          | 33 1481%     | 1      | ३४।३६।२५             |
| ५१    | ११८५ ३२३        | 43       | 189946 6     | ५३     | 18 30 0 43           |
|       | 3419६134        | 1        | ३५ । ५६। ४२  | 1      | 36136185             |
| 48    | १४६३८५६         | 144      | 1864 406     | 4.8    | 1415008              |
|       | र्भाद् (३८      | $\Gamma$ | ३७।५६ ।२५    | $\Box$ | . इटाइहा १५          |
| ५७    | १५४१८७३         | 45       | 1460008      | 23     | 1445 038             |
|       | ३४।१५।५६        | T        | ३८ १५५ ।३२ - |        | ४०१३५। १             |
| દ્દ   | १६१५ ५२७        | 89       | १६४५ २५८     | ६२     | 1800250              |
|       | क्ष्मार्थः।रप   |          | ह्या ५३ । ६६ |        | 82135140             |
| ६३    | १६४६ ५३३        | ६४       | १७२२ ०७५     | ६५     | 1080243              |
|       | ६३। वर १५       |          | ४३।५१।६      |        | ६६ ।उ० र             |
| ६६    | न्नफ्छर् दृह् ४ | ६७       | 3046 304     | ६८     |                      |
| Ŀ     | 8415141         | 1.       | ४५।४७ ३५     |        | <b>ઇક્</b> !રક્!૧ર્. |
| ξζ.   | 1686 048        | 100      | १८७३४३३ .    | 109    | 10220004-            |
|       | 80 8 163        | 1        | 8018310      | 1.     | ४८२११२५              |
|       |                 |          |              |        |                      |

| ७२     | 325326          | 93   | 3285 255                      | ४८    | १५७३ ७७३        |
|--------|-----------------|------|-------------------------------|-------|-----------------|
| $\neg$ | 8C 146, 150     |      | हैंगाउँ शहर                   |       | 4.114 160       |
| 00,    | 144646          | ७६   | 5053500                       | 90    | ২০ ১০০০         |
|        | ५०।५३।३१        |      | ५११३१।१६                      |       | पराट । ५३       |
| 20     | २०७२४२ ४        | ابى  | 5048 645                      | Co    | २१२१२८५         |
|        | . ५२। ४६। २३    |      | <b>५३।२३ ।</b> ४७             |       | 281310          |
| 59     | 5150,040        | دې   | 3184250                       | व     | 3143 408        |
| •      | <b>५४।३८।११</b> |      | 34114 113                     |       | <b>५५।५३।</b> ६ |
| CS.    | २२१८०४२         | 50.  | <b>३</b> १४२ ०३५              | 25    | २२६५ ८२३        |
|        | ५६।२८।५३        |      | ५७१५ ।३१                      |       | ५०। ४२।२        |
| CU     | २२ ८% ७३६       | cc   | २३१३४६३                       | 64    | २३३७१०२         |
|        | ५८।१८।२५        |      | ५८ ।५४ । ४०                   |       | 44130180        |
| %      | २३६० ६ ५४       | 33   | . ४३८४ ११७                    | 32    | 5800840         |
|        | €• i € i S €    |      | ६०।४२।३७                      |       | ह्या १८ (२०     |
| 53     | 2630,005        | 38   | २४५३ ५६३                      | ~9    | . २१७७० ६१      |
|        | 87163168        |      | हर । रूप १३०                  |       | ह्रवृष्टि । ३०  |
| ςξ.    | 30,000 66       | 30   | रदंग्रे देवत                  | 42    | २५४५ ७०३        |
|        | £313418E        | П    | र्श १८।६०                     |       | E8184 13C       |
| ζţ,    | २५६८ ५१४        | 900  | २५४११३७                       | 309   | २६१३६६३         |
|        | ६५।२४।२१        |      | ६५१५८१५५                      |       | ६६।३३।२०        |
| 802    | २६३६ ०८१        | 303  | . २६५८४१८                     | 108   | २६८० ६४७        |
|        | 'हणाण ।३६       |      | द्वाशाश्र                     |       | ६८११५ १८१       |
| 904    | २७०२७ ७४        | 308  | ₹4 £4€00                      | 300   | र्७१६७२३        |
| -      | <b>€८।६५।५५</b> |      | इदी २३।८                      | ١.    | इक्षाव्याव्य    |
| 900    | २७६८५४३         | 304  | 20000 500                     | 110   | २८११८६८         |
|        | ७०१२८ ।५८       |      | P13130                        |       | ७१।३६।१०        |
| 222    | <b>२८३३३७२</b>  | 995  | २८५४७७०                       | 213   | २८७६०६०         |
|        | <b>७२</b>  ५।१  |      | <b>७२।४१।४३</b>               |       | ७३।१४।१४        |
| 118    | २८९७ २४२        | 174  | - २५१८३१५                     | 998   | २५३० २७८        |
|        | 0 \$   55   36  |      | -814¢ 18S                     | 100.0 | 08100 100       |
| 990    | दर्द हर १३१     | 1996 | २५८०८ <b>७</b> १<br>७५.१९४।२३ | 414   | 300 1400        |

|      |                       |      | and drive          |      |                  |
|------|-----------------------|------|--------------------|------|------------------|
| 17.  | ३०२२०१५               | 133  | १०४२४१७            | 122  | ३०६२७०५          |
| H    | <b>उद्दावकाश्य</b>    | 1    | ७७।२८।२५           | -    | <u>७७।५४।२५</u>  |
| ૧૨ર્ | ३०८२८७७               | 1988 | 3905533            | 924  | ३१२२८७२          |
|      | ७८।३०।१४              | 1    | प्रशाबादर          | _    | 04131150         |
| 128  | ३१४२६४३               | 150  | ३१६२३४६            | 150  | ३१८१९८१          |
|      | C01913E               |      | 20131188           |      | 6313134          |
| १२८  | १२०१४४५               | 330  | 3550000            | 333  | 3580033          |
|      | <b>८१।३१।२३</b>       |      | टरागि५६            |      | ८२ ।३० ।१५       |
| 135  | ३२ ५५ ११२             | 133  | ३२७८०२०            | 138  | ३२५६ ५४४         |
|      | टरायुगे३०             |      | द्रशरह। <b>१</b> ५ |      | <b>८३।५७।१८</b>  |
| 134  | ३३१५ ६७५.             | 138  | ३३३४२८०            | পর্ড | <b>११५२७६</b> ०  |
|      | दश । २५ । ५५          |      | <b>८४।५४।२</b> ०   |      | <b>८५।२२।३५</b>  |
| 13c. | १३७१११४.              | 134  | 3366384            | 180  | <b>র</b> ৪০ ৮৪৪০ |
|      | टप) प्र <b>ा</b> र्थ  |      | टह्री१८।२८         |      | .८६।४६।७         |
| 189  | ३४२५४११               | 982  | ३४४३२५३            | 183  | वंध६० दृह्य      |
| L.   | <b>ट</b> ७।१३।३५      |      | <b>८०।४०।५०</b>    |      | <b>ट्टाणायर</b>  |
| 188  | <b>१</b> ४७८५४७       | 184  | 3844445            | 188  | 34133.16         |
|      | द्द। ब्रेह । हर्ष     |      | <b>८५।१।२५</b>     |      | <i>८५।२७।५३</i>  |
| 180  | ३५३० ५०५              | 386  |                    | 184  | ३५६४४८०          |
| L    | द्रशास्त्र । <b>५</b> |      | 30150115           |      | 30186 110        |
| 140  | ३५८१२६६.              | 949  | ३५५७५१८            | ૧५૨  | <b>३६१४४३४</b>   |
|      | . 41111185            | 1    | 2315013            |      | ५२।२।२३          |
| 143  | इह् ३०८ १४            | 948  | ब्रह्४७ ०५८        | 999  | ३६६३१६४          |
|      | दर रिकारह             |      | ८८।५२।१३.          | Ŀ    | ५३।१६।५०         |
| ૧५६  | ३६७५ १३२              | 140  | 3848483            | 940  | ३७१०६५२          |
| _    | 43183.138             |      | . ५६।४।५५          |      | ५४।२५।२३         |
| 145  | ३७२६२०३               | 180  | ३७४१६.१३           | १६३  | १७५६८८३          |
|      | 4814312               | -    | 22138183           |      | 2018013          |
| १६२  | ३७७२०११               | 963  | ३७८६ ८५७           | 3É8  | ३८०१८४१          |
| 1 :  | . 4. El 31c .         |      | दहारहार .          |      | . दहा हटाहरू     |
| H ·  | 3                     | 1    |                    |      |                  |

. . . .

|      |                | _    |                 | _    |                 |
|------|----------------|------|-----------------|------|-----------------|
| 969  | 3018 482       | १६६  | 3639046         | 150  | ३८४५५११         |
|      | 40199 190      |      | ५७ ।३३।२५       | Ī.,  | <b>९७।५५।२६</b> |
| 950  | 3547407        | 38.5 | 3503 409        | 900  | 300000          |
|      | 36130138       |      | 45135184        |      | 5610 [ do .     |
| 101  | 3409000        | 902  | 3434369         | 103  | ३५२८५२७         |
|      | 36153116       |      | 56 182 192      |      | 90012143        |
| 918  | 3482396        | 104  | 3444444         | 306  | 348588          |
|      | 900 123120     |      | 360 183 138     |      | 909 13 138      |
| ניטף | ३५८१५८७        | 800  | ₹458300         | 900  | 8000099         |
|      | 909123120      |      | 9-9183143       |      | 302/2/32        |
| 160  | 8095405        | 109  | 8039686         | 103  | ४०४५०३५         |
|      | 102 129190     |      | 902 1801        |      | १०२ ।५८ ।४५     |
| १८३  | ४०५६०७०        | JCK  | ४०६७ २५२        | 904  | 8004850         |
|      | 903 1901 16    |      | १०३ दिया वट     |      | 903 143 198     |
| १८६  | ४०८१२५६        | 900  | ४१० २६७७        | १८८  | 89 93 488       |
|      | 308130 128     |      | १०४ ।२८।३१      |      | 308184(38)      |
| 100  | <b>४१२५०५५</b> | 30,0 | <b>४१३६०</b> १२ | 909  | 89 86 693       |
|      | १०५।२।३२       |      | 904194190       |      | २०५।३५।४७       |
| १५२  | २१५७ १५८       | 363  | <b>४१६७</b> ५8६ | 358  | ४१७८२७८         |
|      | वन्यापर्13     |      | १०६ ICI8.       |      | १०६।२३/५१       |
| 954  | 8100 841       | 345  | 8946866         | 350  | ४२०८३२६         |
|      | १०६ । ३८। २४   |      | १०६।५४।४२       |      | 381 91006       |
| 15,0 | 8२१८ ०२६       | 1999 | ४२२७५६६         | 200  | 8338460         |
|      | १०७।२४।३५      |      | १०७ विदे । १०   |      | १०७।५३।३०       |
| 504  | 8288109        | २०२  | ४२ ५५ २३३       | २०३  | <b>४२६४१३५</b>  |
|      | 105 10134      |      | १०८ १२१ १२६     |      | 30613415        |
| રુષ  | <b>४२७२८७७</b> | 500  | ४२८१ ४५७        | २०६  | 8504500         |
|      | १०८।६८।५४      |      | 30613130        |      | 30% 14.8 155    |
| 1-10 | ४२८८१३५        | 200  | 8306533         | 50%  | ४३१४१६६         |
|      | 304138146      |      | 304 134153      |      | १०८/५१/२५       |
| ং1•  | 8334430        | 211  | 6354 48.8.      | 2,15 | 8338443         |
| Ш    | 140 13150      |      | 330138125       |      | 990138199       |
| 313  | ४३५१२७५        | ર૧૪  | ४३५१३८४         | ર૧५  | 83188384        |
| L. 4 | 110130153      |      | 130180153       |      | १९० (५८ (५५     |
| 7.8% | ४३६५ १४०       | ব্যত |                 | 210  | 8306530         |
| 1    | 4441 4155      | 1    | 111111111       | . 1  | 111125123       |

|        |             | ٠,   | CHA GEN            | •      |          |        |
|--------|-------------|------|--------------------|--------|----------|--------|
| 292    | ४३८४५२७     | २२०  | 83%0 680           | 223    | 83588    | ३७     |
|        | १११ ।३८  ५८ |      | . १११ । ४८ । २१    | -      | 999140   |        |
| २२२    | ४४०२४२८     | २२३  | 83020E8            | 228    | 88434.   | 38     |
|        | 11215/120   |      | 112118111६         |        | 112 (23  |        |
| २२५    | 5530630     | રરદ  | १४२३५७५            | ২২৬    | 88505    | 88.    |
|        | 992/39/28   |      | ११२।३४।१५          |        | ११२ । ४६ | 149    |
| રસ્ડ   | 8833640     | 25%  | 8835350            | २३०    | 88850    | ५७     |
|        | ११२।५४।११   |      | 99319196           |        | 193101   | Ę      |
| २३१    | ४४४७ १५%    | र३२  | 8844458            | २३३    | ४४५५     | 267    |
|        | 213 138180  |      | ११३।२०।५८          |        | 33315    | 9/3    |
| સ્ક    | ८८ ५% ०६२   | रब्प | ४४६२ ६८४           | २३६    | ४४६६.१   | 40     |
|        | 993 33 143  |      | ११३ ।३८।२५         |        | 113183   | 183    |
| २३७    | ६६ हर् ६५६  | २३८  | ४४७२ ५८१           | 534    | ४४७५     | 180    |
|        | 33 281 266  |      | 993143139          |        | 993 150  | : १२   |
| 550    | ४४७८३३१     | २४१  | ४४८०५५३            | રકર    | 88038    | र् ५०६ |
|        | 19812 196   |      | ११४१६ ११८.         |        | 118 100  | 13     |
| 583    | 8864 869    | 588  | 8850 500           | રક્ષ્ય | 88221    |        |
| _      | 998193133   |      | 198196180          |        | 33.8134  | 184    |
| रेष्ट६ | 8849433     | 280  | 8843380            | 585    | 58580    |        |
|        | १९४ दिशहर   |      | ११४   २४   ५६      |        | 11815    |        |
| उद्गर  | ४४३५८५०     | 540  | ४४५६ ८५१           | २५१    | 88400    |        |
|        | 11815618    |      | 138130184          |        | 528 BS   |        |
| २५२    | 8846 द 84   | २५३  | 884455             | રવ્    | 58351    |        |
|        | 998133120   | 1    | ११४।३४।१५          |        | 228138   | 143    |
| 255    | 88 43 4 50  | 346  |                    |        |          |        |
| H      | 198134100   | 1    | भाषाउदारशास्त्रहार | 1      | i        |        |

## त्र्यन्त्यकोष्टज्या.

पञ्चवेदाहुतलक्ष मूत्रं विस्तारमी रितम् तद्व्या

त्यासः ४५०००० वर्गः २०२५००००००००

टेभागाश्चभागाः<u>सा</u>यकदास्तवा चक

शरप्रदाशे. क्षदावाश्वद्विद्वाश्वापावाकाः स्मृताः

ऋष्टाकोस्ताडिताः पञ्चवेदासाः कोष्ट्रमुच्यते

चक्रव्यासम्११४।३५।२५ ऋस्यवर्गः १३१३०।५२।५ चक्र व्यासा ईम्५७।१०।४६ चक्रव्यासाईवर्गः ३२८२ ।४३ ।१.

१६४ परमसिद्धानी

कोष्टसमकोष्टस्यमेविपट्टसमाळखेत् ८४ कोष्टारधः स्थ घटीपूर्वकोष्टयोज्यिःन्तराहतम्

षष्ट्यास्तेनसंयुक्तापदृस्थाज्यास्फुटा मवेत् ८५ पदृस्याज्याद्योर्नि झावेद स्थैन्य भँगोगुएौः भाकि

ताराशिचकच्याभागपूर्वास्कृटा भवेत् ८६ त्र्यथचकज्याशेभ्यो सुजांशानयनम्

स्याता गुराहराऽव श्विभक्तावऽल्याविहें वतुः वेद् भूच्यभगोरामे निष्ट्राच्यकच्यकाशकाः ८० खाङ्का सास्तद्रवेत्पट्टभौवीतत्पूर्वकोष्टवाः न्याप्राप्याग वितापदपर्वज्याविवरंभजेत ८८ पर्वाऽधन्यानः

तितापृद्ध्यं विचारियुम्म द्या प्यानियान्ति दितापृद्ध्यं विचारियं भजेत् ८८ पूर्वाऽप्रस्थान्ति रेऐविलब्धकं सार्ट्सिकं फल कोष्टे प्राद्धी विकास क्तु सुक्तातं समहाहतम् ८१ भक्तापुर्वतं -भिवद्धिभागः स्युक्तेल वास्तया कोटिसंहाराकाः

किन्वाविज्ञेयात्र्यसदार्शकाः १० चन्तस्याऽपराष्टमादाज्यापत्राऽभावस्ये-द्धिकज्यायाः भुजादाानयनार्थसुपायः

कोटिभुजाशानयन र्हिमध्या द्रधिजीवाया वर्गति दिस्तृतेः रुती ५१ द्विताशेषपेदंज्यास्यात्तस्या वाँद्वंशवर्जितम् स्ट-

तान्त्रन्यग्रहं प्रोक्ता दोःकोटीषुप्रदोशकाः ८२ स्युक्तेपरस्परंबाहु कोट्यंशाः परिकीर्त्तिनाः ५३ ते षाम्मार्ग्शेदांशानांजीवांशीः परिवृद्धितम् विके म्भंचक्र भागानां रुत्वा उर्द्धस्यु दद्यारांदाकाः ८,४ ं स्त्रय बालांदो भ्यो न्योन्य ज्यार्द्धानयनं कोटि भुजांशानयनंच. श्चन्योन्यं भुज् कोट्यो स्तु स्वस्वज्याशर वर्ज्जित म् व्यासाऽद्वै परजीवाऽद्वै एत्ते सर्वत्र जायते ९५ दिघेषंशोनितास्वक्रव्यासांशा ज्य वादिकाः स्यान्तस्यास्तु भुजाशोनाः स्यः कोटिदोर्छवाः ५६

परमसिद्धान्ते

श्र्यथराद्यीना भुक्त भोग्यांद्राज्याविज्ञा भित्रिभयोनेन्द्रं षड्डेयो ऽरन्तरें ऽ शकाः खांकान्त्रोजपंदस्योक्तास्त्रिभषड्डोन्तरें (दाकाः १७) विकासा इन्तरे भागाः स्वाकास्तत्यपदस्यच स्या-

होन्यी मुक्तभोग्याद्याजीवाविषमतुल्ययोः ५८ पर्योगितगम्यादामीवीतुल्योजयो भवेत् कोटि-ज्याचोर्द्ध्र स्पासाराशिचक्रें (दाकादिका ८९ ऋषप्रकारांतरेण भुजकर्णा भ्यांकोत्था

नयनं तथाबाहुज्यान्यासाभ्यांकोटिजा नयनम् तथान्वकोटिज्याव्यासाभ्यां भ्र

जन्यानयनम् ऋत्रजीवाबाहः को टिर्वा न्यासः कर्णः स्यात

एक स्थानीयतः कर्णवर्गदोई शसम्मिते स्थानेकं विलिखे चिह्नाइधः स्थाना ह्या हु मालिखेत् १०० तस्मात्तेन भुजे नेव भक्ताबाहु समंफलम् त्र्याः निब्लाहितच्छेषसूल कोटिरुदी रिता १०१

उदाहरएाम् .यथाबाहुः १५ कर्णः २५ कर्णवः र्गः ६२५ बाह्रोः स्थान इयत्वात्क एविर्गस्य दितीः

यस्याने चिद्धं कलाजातं ६ई५ चिद्धाधः स्थानाः हाहुं भागदानार्थप्रथमं छिखिलाजातंम् ६ हुँ ५ प्रथमांलिबिमेका १ मानिबिलाजातम् ४०५

्ततः बाह् मुत्था प्यं एकस्यानन्यूनेस्थाप्यजातम् र्प नप तत्रहितीयां लब्धिपंचीन्मिता ५ मानयिबा शेषम्४०० ऋस्यमूलंकोटिः २०

**अयप्रकारान्<u>त्ररे</u>ण** बाहुँस्थानसमात्कर्री वर्गीजाहीस्सँ मेंपर्में स्त्रा-

निवताचतच्छेषमूळकोटिः प्रकीर्तिता १०२ उदाहरएम् यथाबाहुः १५ कर्णः २५ कर्णवर्गः ६२५ त्र्यस्मित्रोजद्यं भुजस्यापिस्थानद्रयम् त-रूमाड्वेतोः ६२५ वामीजात्यश्मितादेकं पद १ मानयिता जातम् ५२५ हि झंपदं २ इस्यसीधी देशेस्याप्यजातम् ५<u>२</u>५ त्रप्रत्रपञ्चोन्मितां ५

परमसिद्धान्ते. १६८

लब्धिमानियत्वाजातम् ४२५ त्र्यत्रलब्धेः ५ पञ्चो न्त्रिताचाः वर्गे २५ हृतस्यादिविषमा-त्त्यक्तारोषंकोटिवर्गजातम् ४०० त्र्यस्यमूर्ह कोटिः २० एवं कोटिकएरियां बाहुः स्यात्

एवं कौटिकर्णाभ्यां मुजानयनम् कोटिम्बाँ-

हरितिज्ञालामोक्तवज्जायते भुजम् श्रय प्रकारान्तरेए। ज्योपपान्तिः

ध्येमध्येचमध्येचमध्येमध्येतयोस्तयोः ११२ समान्येत्सर्वज्याः द्वीनि द्विशुणानिच

श्रय स्यूल गुए।ज्ञानम् याज्याद्वराःत्यकोष्टानां सास्यात्स्यू उपन्ध्रया

परमसिद्धान्ते :

त्र्यय भुजज्यातःकोटिज्यानयनम् तथा-कोटिज्यातः भुजज्यानयनम् पट्टेबाहुज्यकांस्थाप्यसादोः पट्टज्यका भवेत् तत्स-

मीपादिकोष्टच्यापूर्वज्यापरिकीर्त्तिता १९४ पूर्व-ज्युग्रोनिताबाहु पहज्या गुए। सुच्यंते प्राग्ज्योत्या-

न्दोर्छवान्खांके हिलाको टिलवाः स्मृताः ११५ ते-षांस्थाप्यज्यकापहे कोटि ज्यासाऽभिधीयते की-टिज्यायास्तुपूर्वज्यांकोटिज्यायांपरित्यजेत् ११६

सारीषमीर्विकातेनगुगुकेनैवतादिवा बाहुपट्ट · ज्यकायास्तुः पूर्वाऽयज्यान्तरोष्ट्रता ११७ तस्त्रव्ये-:

नोनिताकोटि ज्याकोटिज्या स्फुटा भवेत् रएवं कोटिगुणोत्पनाबाहुँच्याप्रस्फुटाभवेत् ११८ हो

र्ड्याया दोर्छ्यान्स्वांके हित्ताकोटिलवाः स्मृताः तेषामीवीतुकोटिज्यानहाहुगुराजाभवेत् ११८ श्रथ सूर्म ज्यानयनम्

प्राक्कोष्टमेककोष्टस्य भून्यस्थात्तरफलावियंत् पु-

र्वाऽत्रकोष्ट्रयोज्यैक्यं कोटि घ्रपरि भाजितम् व्वेदा श्रां काकगोनन्द गोञ्जीरुचन्यका भवेत् "एवंसम्पूर्ण 

कोष्टानाम् चन्यानिसमानयेत् १२१ स्वस्वकोष्ट ह्योर्मध्येतूचाख्याविन्यसेज्ज्यकाम् ततः कोः ष्टानिजीवायाः स्युर्दिग्नेप्रमितानिच १२२ चाहको ट्यंशजंकोष्टं हि झंतत्कोष्ट मुच्यते ततस्तत्कोष्टं वा जीवास्स्मज्यासमुदीरिता १२३ ययोस्तयोस्त्विन्छेषभागाः कोशांशकाःस्मृताः चक्रांशाः कोए।भागाप्ताः कोए।संख्याप्रकीर्तिता १२४ स्युःकोएासंख्ययाभक्तास्यकादीं स्थापभाग काः चापाः र्ज्ञांशाः सुजांशाः स्युक्तुंषां ज्यास्याह जन्मका १२५ बाहुन्यांशाहतुरसचन तरफलम् इन्तान्तः कोए।बाहूँन भवित् १२६ तह्नानाः समाब्ध्यस्त्रेलेकदो न्महन्त्रक कोटिबाह्य सेंद्रांशानांवाचक्रक्या ऽर्द्र

परमसिद्धान्ते

पत्रकष् १२७ सम्विधायसुखाऽर्थन्तुज्याऽर्द फलंततः त्र्यानयेच्च पुनुर्युत्रलब्धज्यादर्बुयमोहतः

म् १२८ कलासामीविकाज्ञेयातस्या बाह्यशमान चेत् इत्युक्तंनत्रतल्लव्यंजीवारईम्मीविकेतिच १२९

सस्मृताहिततोबुद्यातज्जीवायास्त्रवेद्धनेः तत्या

जीवार ईपत्रीत्याः बाह्मशाः स्युर्शिएगोर ईजाः १३०

तद्वद्वाहुँ ज्यकाखण्डात्कोटिज्या ५ई समानयेत् स-

र्वत्रैवाऽ न्त्यकोषस्यमाक्कोष्टस्यादुपाऽन्तिमम् १३१ कोष्टादुपान्तिमाज्याऽ द्वी श्च कव्यासदछा त्यनेत 'स्युःकमादुरक्रमज्यारर्द्धपिएढा स्त्वेकोदिकोष्टंगाः १३२ तेदेज्यिविच्छरंवाहुँ भागा नामानचेहुधः पू ज्यस्त्रिज्यास्मृताज्याऽर्दन्त्रम्यग्रंयेषुतुज्यका १३३: श्री छस्मी बहु भात्मज भेग बहु भ विरचिते पर-

मसिद्धान्तेजीवानयनाधिकारश्चतुर्यः ४

वुशीओनं समुदीरितम् ४ स्वस्ताँ वस्यानपर्धाः न्नाचकपुर्शिस्थला इवेत् प्रकारसञ्चानार मृद्धां म् प्राकृतसमुखं भवेत् ५ केन्द्रस्थारसञ्चाविके परतः स्वमध्यमतुंगयोः स्वमध्यारखोन्नपर्धनाम इनारं केन्द्रमुख्यते ६ चक्कपुर्शिस्थलामन्दर्शवानाः १० मक्काम्यनेमन्द्रस्थीः स्वमध्यारस्यानान्दर्भवानाः १० मक्काम्यनेमन्द्रस्थीः स्वमध्यानमन्त्रीविकस्यानिकार्यार्थे

शिताः इबेट्याशास्त्रकायासारीतासः स्त्यं गणारिकमन्द्रकृपिहासर्वे या ग्रीप्रकर्मशिणभेषत्र स्थापारमञ्जापत्रे व शीक्षक्तमिणुक्ताः योः समस्त्रे भने परंपायन दर्जनायाः के २, गणुरु स्थापारङ्काः स्थापनकाः सः स्त्रकाहत् के द्रभुजन्यासार्वे सङ्गक्तकारायस्य इन्द्रकत्राहत् के प्रकारमञ्जाले के शिक्षकत्रायस्य १७४ परमसिद्धानी

तीस्रादीधितेः मध्यान्तंसव्यविश्लेषयत्तंच्छी च्चस्चते ७ चऋपूर्णस्थलाङ्ग्नेयत्स्याना हु घर्युक्रयोः

स्वस्वमध्यमपर्य्यन्तंभेदंशीघो चमुच्यते ८ स्वमधाः त्तर्गेपर्थन्तंचकारद्वरित्यन्तुचेद्भवेत् तत्तुगान्मध्यम

यावचकाऽहोर्द्ध भवेत्तरा ५ धनुमेषादिकेदंस्या-त्त इयस्ते इस्वं नुर्छै। दिकम् रादो मीर्गीशका यह त्तह-त्सेचैरदोः फेलम् १० प्राक् पश्चीनमध्यमस्यानादः खेटविम्बत्तदुचरतुरवल्पमेवाऽपकर्षति १२ वीवि

त्तरतन्द्रन्एकिम् व्यस्तकेन्द्रद्येदेयंकेन्द्रवाद्गरा कोत्तमैः ११ तील्येविम्बगुरुखेन खेटवा खबळादऽपि .स्यलेनतदायोर्बिम्बस्या इत्यतयातया तदिम्ब गुद्ध संज्ञस्तुवेगाइह्वऽपक्षिति १३. सुजकमस् रोस्यार्चकाधितोऽत्यस्यदुर्दु चकार्दकेन्तरात् पारीन चकता हू श्रेमके हिली मुजी भवेत १४ कोटिकमम् बाहुँचकाः प्रितीहितात्तकोटिःस मुदीरिता चक्रपद्म् चक्रस्याः घ्रान्मितंलेकंप

भीमादीनांशीम्रयत्ताद्गाः १७५ मुक्तंविचहारौः १५ प्रथमविषम्प्रोक्तदितौर्य मसुच्यते त्र्योजपदंतृतीयस्याचतुर्येतुसम्भवे १६ त्र्यथचन्द्रसूर्ययोगमन्द्रन्ताद्गाः

त् १६ त्र्यथचन्द्रसूर्ययोर्मन्दूर्टनांशाः मन्द्रयतांशका भागीशकां इत्योर्पमाग्रयः १ सम्बद्धाः सम्बद्धाः व्यापान्ते स्वापान्ते

मान्ते ऽथाऽसमान्तेतुःसान्धिक्षेत्रीनितास्तयोः १ ऋथ भीमादीनाम्मन्द् पर ध्यद्गाः पञ्चात्याः ७५ रबाँघयो ३० देवाः ३३ सूर्या १२

पञ्चान्याः ७५ रबीमयो ३० देवीः ३३ स्पी नस्याने म स्मिताः कुजात् युम्माने द्वयुद्धा ७२ पिछः क्रिक्टाः वर्षाः वर्षाः अभिन्याने वर्षाः वर्षाः १८ स्थानिन स्मान्याः विज्ञेषास्यविषस्योगेः

क्ष्मय भीमादीनांदीप्रवृत्तांदााः क्षम्य भीमादीनांदीप्रवृत्तांदााः क्षमानेक्षमणाक्षिणि देवानास्थान्द्रम्बनाट्यः १५८

| सम्बद्धाः<br>यु:म्मान   | 7   | † 2 | રૂપ  | ٠,   | <del>.</del> | 3,13 | 1  | ٥  | Ÿ  | is |    | _  | _  |    |    |
|-------------------------|-----|-----|------|------|--------------|------|----|----|----|----|----|----|----|----|----|
| યુગ્માન                 | तस् | 36  | 1119 | HIII | 4            | स्या | ઝા | 7  | 1+ | 4  | ų. | ₹₹ | 4: | 8  | ۲. |
| समेकीम                  | -   |     | _    |      |              |      | П  |    |    |    |    |    |    |    |    |
| सम्बाध<br><b>रचा</b> शः | मं  | बु  | ₹    | শ্ব  | शं           |      |    | म् | चं | मं | 3  | ą  | 5  | शं |    |
| -                       | 5-  | n   |      | n-   | .5           |      | П  | ò  |    | ₹  | ٦  | ١  | ٦. | ٦  | П  |

|                   | 5<br>27 | g.   | ŝ   | D-   | کر  |  | 50 | 90<br>0 | 9       | ۶, | 0  | ٥.  | 9         |  |
|-------------------|---------|------|-----|------|-----|--|----|---------|---------|----|----|-----|-----------|--|
| अषमपर्<br>शीध्रवत | 335     | 5.50 | .0. | 0.00 | r)° |  | 华年 | 明年      | के<br>क | 专辑 | 田田 | रों | रत<br>नेत |  |
|                   |         |      |     |      |     |  |    |         |         |    |    |     |           |  |

| 표 대 대 명 단 명 대 배 명 단 명 위<br>발당 19 국 10 이 국 12 12 60 후 기 2 2 1 0 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 1 |                           | `  | •              |    |    |    |    |    |   |       |     |    |     |     |
|--|---------------------------|----|----------------|----|----|----|----|----|---|-------|-----|----|-----|-----|
| T 19 21 11 0 0 20 11 11 11   |                           | स् | ₹ <sup>'</sup> | मं | बु | ą  | -9 | शं |   | मं    | बु. | £  | শ্ব | ₹i  |
| म् १३ ३१ ७२ २८ ३२ ११ ४८ . म म भ म ध  | 蛇                         | 18 | ३२             | ७५ | 30 | 33 | 12 | 84 |   | av. e | 1 0 | ٠, | م ه | 100 |
|  | विद्य <u>म</u><br>प्रवेतम | 80 | ۶٥<br>۶۱       | ७२ | રદ | 33 | 11 | яc | ŀ | ऋ     | ऋ   | ध  | 禾   | ų   |

द्ध भी प्रतिस्थाति । अवस्थाति ।

त्र्यंभ्यं गाः खागयुग्माः श्रूत्वाएविष्ठिश्निताः हार्यनात्राः स्पृताः स्पष्टयत्तांशान्यनम्, व्योजयम्मराः स्पृतोक्तरोः वनयोग्नगरताः

दोर्ज्याः द्वीद्यास्तु भाजिताः २१ चक्रव्यासार द्वेर विद्यापर स्तात कुम्बद्देर गैरतु व्यक्ति मागपालं भवेत् स्त्रोज वस्तात्समे स्तर्हा स्वर्वेत्र व्यक्तिस्तरम् २२ दलासमारि रोजस्तरा

नोर्द्वस्वर्णकं चतम् २२ दलासमाभिधेन्वस्वर् नेर्द्वस्वर्णकं चतम् २२ दलासमाभिधेन्वस्वर् चेर्टनाःस्फुटोभवेत् यत्कर्मायज्यकासरहे कला

७१ कल्यासपलाः ४१ १८५१४ कार्युच्यासुम्बाः १० ६१६२ प्रत्यां १५५ १५० ११ मत्ताः मुक्तस्यार्द्धभागः स्वसीयसम्बन्धस्यः न्यार्द्धार्त्ते गुलानः कल्याभगार्द्धकर्तस्य न्याद्धार्त्ते प्रत्यास्य चन्यास्य चन्यास्य अभ्याप्त्रस्य न्याद्धस्य सम्बन्धः स्वस्य स्वयः स्वस्य स्वयः चुन्नस्यस्य अग्रास्य कम्मयदं सम्बन्धः स्वस्य स्वयः भागार्द्धकः स्वयः चुन्नस्यस्य अग्राः व्यव्यविद्याः स्वस्य स्वयः स्य

खबु फलंतर्ञानयिलैनपूज्याप्तज्या दर्दी पॅन्नजन तत्कर्मभोक्तवकृत्यातस्रोक्तफलबद्भवेत्. २४ श्रयसूर्य्यादिशन्यन्तानाम्मन्दफलानयनम् भूजफलान्यनं + कीटिन्यामन्दकेंद्रस्यभकाश्वन्याश्वि पर्वतैः २६ ऋँभ्यस्तामन्दवृत्तस्यस्पष्टांदीःकोटि-जंभवेत् . मन्द्रकोट्यानयनम् स्वर्णतंको टिजंद-त्वाचकांद्राव्यासस्वर्ष्टके २७ नक्षककिदिकेमन्द्र-केन्द्रेतत्कोटिरुच्यते मन्दकर्णानयनम् मान्दः दोः फलवर्गेतु युक्लाकोटिकतिं लिह २८ तन्मूलंग-न्दकर्णःस्या मान्दफलानयनम् चक्रव्योसरुवा हताः मान्दबाहुँ फलस्यां शाः मन्दक् प्रांशिको द्वताः २५ ज्यास्यात्तस्यास्तुदीर्भागाः फलं मान्दं स्फुटं मवेत् त्र्यमेवफलंदानयोग्यंमान्द मुदीरितम् ३० श्रय व्यवहारोचितंमन्द फलानयनम्.

हुनाः २९ मन्दवृत्तस्युत्यांत्राधामान्द्रबाह कोटिफलानयनम्

परमसिद्धान्ते. चर्कदलांशाप्तंलब्धंदोर्ज्यलिवादिका ३१ स्यात्त-स्या दोईवा मान्दं फलंस्याद्यावहारिकुम् सूर्यचुन्द्रयोः स्पष्टानयनम्, सूर्येन्द्रोदौःफ लंमाद मध्ये दत्वा स्फुटो भवेत . ३२ श्रय भोमादीनां शी प्रकर्णा नयनम् भुजफलम् शीघ्रकेन्द्र भुजन्याः ईशीघ्रयत्तः स्फुटांत्राकै: निधंचकैं। शकेराप्तंत्री ध्रवाह फलम्भ-वेत् ३३ कोटिफलानयनम्, दाक्केन्द्राक्केटि जीवाऽ दें द्रीय्वत्तस्यस्फुटांशकैः नि घंचकेलवैरा-मं श्रेष्ट्रं को टिफलं मवेत् ३४ स्फुट बत्तांशतैर्काशन-प्राकेन्द्रस्यरोर्ज्यका कोटिन्या (प्यंशकाद्यासा स्या ह्यासातलगण्डम् ३५ कोट्यानयनम् री प्रंकोटिफलंदेयं धनं केन्द्रे में भी दिके कर्का है भैं र्णमंशादीचक्रव्यासंदले भवेत् ३६ कोटिःकोटिक तीवर्गनीष्ठबाहुफरुस्यच युक्तातस्यपदंशीष्ठंक-

एमिक्कलवादिकम् ३७

भीमादीनां प्रस्कृतीकरणम् १७५ स्त्रथं भीमादीनां द्वीग्रफ्कानवनम् नकन्यासलवा इभ्यस्ताः त्रीग्रक्कानवनम् नकन्यासलवा इभ्यस्ताः त्रीग्रक्कां स्वादिका ६६ तस्या चाहुँ ठवाः त्रीग्रफ्कं स्वस्मप्रकृतिनम् त्रीग्रं दानो विनंचान्यकं स्वस्मप्रकृतिनम् १५ स्त्रुयः भोमादीनां प्रस्कृतिक रणुम्

बौधंदानोचितंचान्यंफलं सूस्मंप्रकीर्सितम् १८ श्चय भीमादीनां प्रस्फुटीक प्रवेदाक्केन्द्रतः रीद्यंव्यस्तंस्वरिद्रं फर्डम् केन्द्रेमः न्दाभिधेदलासंस्कृतंतस्रकीर्त्तितम् ४० संस्कृ न्दके च्रेतदत्वागिएतकोविदेः मन्दारूय स्फु स्यात्तज्जंमान्दाभिधंफलम् ४२ खरीय चक्रांश ३६० भक्ताःस्वस्वस्यष्टमन्दशीप्रक्तांशाः स्वस्वमन्दः बी खुकेंद्र अनुज्यादा। ई प्राः स्वस्व मन्द्के न्द्र जमान्द्र तथा स्वस्व शीघ्रकेंद्रज शैष्ट्र भुजफलंस्यात् तक्त्याई नातिकम् ऋघत्या खांगाग्नि ३६० भाग भक्ताः स्वेस्वस्पष्टमन्द शीव्यक्तांशाःस्व स्वमंद शीघ्र केंद्र ज भू जस्यान जको दिन्या बाँश घाः स्वस्व मन्द्रवे द्रञ्ज मान्द्र तथास्वस्ववाधिकेंद्र शैध्रज्याह जातिक नागादिक

देतत्स्फुटो भवेत् ४३ तद्वाक्केन्द्रस्फुटा-

प्र स्राम्बत्स्यएँ बौद्याभिधंफलं द्वामन्द्स्फुटे होत-

ज्जायते खेचरस्फुट : ४४ वै<u>गि</u>विश्वेषांशकपूर्वकम् स्पर्गेः कोष्टाभेद लिसो द्वतं फलम् नकादि मन्दकेन्द्रेशकादिकम् दलाम वेगस्याद्भावहारिकम् ४७ मन बादीाघंतुंगजवेस्फुटं शींघकेन्द्रजवूंभीम

एगसमुदीरितम् ४८ मन्दरमञ्जवाशीनशीघ्र १कः मूल्यांबाहः ५७ ।१७।४२ पत्नाः ईः ६५ ६५ । पिएतं स्वमन्दर्शः स्वत्रीविकर्णभाषासमिष्दते न् सक्तासम्बाहारिभिः स्वबृह्वफसम् ा प्राप्त प्रश्ना । प्राप्त प्राप्त अल्था स्थाद । मः स्व बाहु फेडम् मन्देवशास्त्र बाहु फुंड श्रीमं गागादिकं हता स्वस्त्र बाहु स्यादी शास्त्रः तथात्र ज्ञां नापाद्व फेड स्पष्टोचितं शुनफेडम् स्वर्षं मेषत्रु हार्दि केंद्रवें स्वान

मन्द्रस्पष्टगतीद्वास्यात्तहेगःस्फुटोयदि वहः त्राक्षांस्त्वातुनतो बुधैः ५३ मिश्रकार्छ र्भेद लिस घ्रतुस्फुट जवम् लिसाद्यतद्दिनोत्पन्नपत्रो-मित्रकालिके भारकरस्य स्फुटे दला खेष्टे मित्रा अधि स्वर्णतत्त्वेष्टकालेतु भास्करेस्यस्कु-५६ चंद्रस्यस्फुटकालेतु भारकरेस्फुटमानयेत्

मेके दिनोद्भवं चन्द्रेमध्यजवंराशिपूर्वकं चक्रेशेषित म् ६१ झेयंमध्यफलंशशिपूर्वपर्एदिनादिभिः ए-काउ हो द्भवयोरिन्दी मध्यवेगी च्वेगयोः ६२ भेदराः

र्वकंत द् स्लोकेन्द्रं पर्रादिनादिषु ६३ तले ऋजं फलं स्वर्णमज्जूकादिजांविधोः दत्वाभागादिकत्वंदराकाः दोमध्यफलस्यच ६४ तत्पर्शिदन पूर्वे पुँपस्फुटंसिद् धोः फलम् राख्याद्यंजायतेतत्तत्कोष्ट जंचाऽनुपावज म् ६५ क्लेन्स् लेकेन्स् लेकेभागाढ्य मत्रकेन्स् मुरीरितम्

स्पष्ट पत्रःनिर्माए।

१८३ १३|३।५३।५३

रेकंदिनस्यच मध्यवगकला स्रोतर व प्राप्त १३३६ च उ. ४८८३१

४८८२ ७३ الاداعاءة الجاعة الممادة إن

पद १४० १५८ उत्यादि राश्याद अर्वे शहादाहर देखाः हर्र केटहर हेर् द्रस्य भगएगः किंवा 4545838 'चड्डाच्च भगरा सिया 'भग्द्रभारत हारोज्ताः फल

वेत् ७४ परोधुवाहत

358 ३६७ व् 138781 188 भवेत चकाशास्त्र-३।३।५३।५३,३त्यादिकैः भक्ताः रांशकैः ७६ . रहाउद्गार्था देशाव्य

चंद्रस्यैकाऽह , ५७२६५१३३

स्रस्मकैः ७५ एकपावस्य भक्ताभाज्यादावद्यान्तपर्वाच-ए।दिनाच स्याद्यवापीठता दिन्ध-प-१५७७०११७ ८२८

चन्त्राचै मीजिताइष्टवासराः लब्धतत्रनिरऽयत् वंवाजायतेतथा ८० तच्छेषं तद्राज्यभागकम् विद्याः कृदिनास्त्तया भेद-3133 ष्वेवपर्शियस्मादिकं भवेत स्यत्त्यकत्समयोद्भवी ८४ विश्वमध्यमचन्द्रीची

स्पष्टपत्रनिर्माण रितिः

१८५ टं भवेत् तत्तत्पर्णाह्न पूर्वेत्यिंगस्या

म् ८६ चुक्लापर्ण दिनारम्भकालिके घस्राद्यैर्ज्ञब्यकोष्टजवस्फटम् ज्ञेयन जवंत दी स्फूटिसास्तुभाजिताः ८८ खाँ आहे: -त्फलंचात् भत्तलं के एकालिक म . घं कोजैवस्यचटर लिमाप्तंवर्त्तमानेंसी ्छि सादिकं भवेत् "इष्टका छेतुलंकाया स्तदि नाउकी-

चरेंबुधैः २० स्वर्गे किंसादिकं स्वर्गे देखादेशांतरंतथा दयाञ्जेयंतिहिनेतिहिष्रस्पृटं तत्त्वे स्य छे जे यं लंका देशे ए जारवसु ९२

स्त प्राके पञ्चाहैश भेदक में दलाक ए। धन सर्वदामतम् ८२ त्र्यत्रोदाहरणाः र्थन्तु तुल्यकेद्द्राग १८६

एांनया तुत्यक्तसमेंथंक्षेषंराशिपूर्वचकथ्यते ५४ र्त्तमानाऽद्धर्यन्देशाखांगनागकैः ५५ सम्मितैः सम-कत्कालं चंद्र मध्येन्दु तुंगयोः एकभन्युतिभागोस्तु

भूबाएगा श्वकलाः पेलाः ५६ वेदवेद मिताः प्रोक्ता त्र्यत्रसेपस्यपण्डितैः पीठंखा अनवांसन्धं जायते

चेत्तदा मुँहुः ४७ साधये तुल्यक<u>ुकालं</u> क्षेपंराक्यादि-कंतथा तुव्यरुदर्तमानाऽह्नर्टरमेवेतेततस्ततः ५८ <sup>मे. द्वा</sup> स्वरुप्त प्रश्यः प्रतः प्रश्यः प्रतः प्रतः

स्त्राद्यात्र्यनतोवेद रामाश्चन्द्र युगोन्मिताः ५५ एवमे-वे के पीठस्य जायन्ते सर्वहारह सु पर्ण धुवाराका द्याः अ शांकार १६८ १५० १६८ १५० १६८ १५० हा स्वरूप्त स्युरऽप्रयः सागरी निताः १०० नागात्र्यष्ठार्णवास्त्र क्षाः षट्पक्षात्र्यष्टरूपकाः "पिएडाः सप्तरारात्र्यब्धि

सागराएवमेवच १०१ भी मादीनांस्पष्ट पत्रनिर्माणयुक्तिः स्पष्टानाम्भोमपूर्विणां साधनायसुखेनच पत्राणा

मार्गवऋषलपत्रनिर्माणयक्तिः रचनाऽर्येतुयन्थोयात्येवविस्तृतिं १०२ या धीरैः कताचस्पष्टपत्रकानः भीमझैंससिताकी णांपत्रेभ्यःसाधयेत्स्फुटान् १०३ मार्गवऋफलपत्रनिर्माणयुक्तिः तन्मीर्गारम्भतोवकारम्भान्तं दिवसादिकम् स्या-दऽ प्रस्यात्ततीमार्गकालान्तं पृष्ठसङ्गकम् १०४ पृष्ठे प्रत्यद्भ जान्स्पष्टान इग्रेपत्यद्भ जोस्तया कलालंके ष्टकालेत्मागीरम्भेष्टजंस्फुटम् १०५ त्र्ययजेप्रस्कु-देहिलातत्तन्मार्गफलं भवेत् वकारम्भेष्टजेहिलाप्र-स्फुटेपृष्ठ जंस्फुटम् १०६ तत्त्व इक्र फलं तत्त्या त्क-सिं श्वित्समयेदरे<sup>षम्</sup> लिखिता १ थनिजे छा ८ ब्दपूर र्वेऽयंदसमीरितम् २०७ पृष्ठंवामंमतं क्रीरम्भे-

ष्ट्रोत्येग्रह स्फुटे तन्मार्गिरम्भकालोत्यं हिला तत्वे चरस्फुटम् १०८ त्र्राधिकस्वाऽभिधंत<u>त्स्या</u>न्मार्ग रम्भेष्ठजंग्रहम् हिलातह्रभवेशेष्ठजेखेटेह्यऽधिक् क्षयम् १०५ जायते स्वेष्टवषदि मार्गरमो छतः परम परमसिद्धान्ते.

966

वकारम्भेष्टतश्चाऽपिरचेषान्तंयहिनादिकम् ११० तद्भवेदुएकं हतातदुरोगाऽश्रसंज्ञकम् भक्ता तहस्यक्राद्येस्तत्पत्राऽह्रादिकं भवेत् १११ तत्य-त्राऽद्वा दिकोष्टोत्थंमागरिज्यंपत्रजंफलम् दक्सका लाउन्तजेनैव हत्वाचारिध धनेनैच ११२ तन्त्वेवार धिधनेनैवत्यः यकालान्तर्जनहि भक्तातत्रफ-लं यक्त्वादक्षारम्भेष्ठजे ग्रहे विश्व तत्सा मीपंतुस्याद्धंकेष्टे यहँ स्फुटम् पृष्ठं गुए।गुएांव विस्मृद्धे भीजितंफलम् ११४ जायतेपत्र घस्त्र तत्पत्रोह्नोदिको एजम् पत्रजतुफलवक सङ्गक जायते ११५ तेनवामाऽन्तकालोत्यं कक्षयम् पृष्ठकाला उन्तजेनैव अक्लाचा द्रधि स-येनतु ११६ लब्धंवायप्रवेशेष्टलेखेटेखलेवर्जि म् रुत्वातत्त द्वहर्रयेवसामा न्यास वकं स्फुटम्

१९७ जायतेचा इथ तहुंकादेशे है लिमिका दिके तः हिना इके चेरंस्वएरिस्वएरिस्ताक सादिकम् ११८

खेतद्भवेत्सेषंस्वस्थानाऽकीव्यात्यरेमे ११५ तथास्पष्टवेगसाधनम्, स्तत्तत्कोष्टा ऽत्रकोष्ट्योः पत्रा ऽह्नादिजयो स्स्वस्व मार्गवऋगयोर्भवेत् १२० श्रुम्तोद्यसाधनम्. ततोऽस्तंचोदयंतस्यं साधयेच्ययोचितम् क्षेरियदिनेयित्यहस्तपश्चिमेबुधः तत तोदन्तैः पश्चिमेचोदयंतथा गोकरसम्मितैः १२४ जीवः क्रुंभिमि व्यातस्थूलमार्गदिनङ्गानम्. वर्कताहि

करैज्ञस्य युक्रस्या युगमार्ग एवः भीमस्या : करैसे

स्सरलाशकाः

भा३ वकम् ५।२७ पश्चिमास्तम्.

राकोद्धताः १२८ स्पर्वः

भी-०।२८ वाश्विकं डो परिप्रवेरियं ६।१६ मार्गे ११।२ पश्चिमारेतं सः ०।१४ प्रवी-द्वं ४। १० वक्रं ७।२० भार्गे ११। १६ पश्चिमास्तं ज्ञां. ०।१७ पूर्वोद्वं ३।२५ वर्क टा५ मार्गे १९११३ पाद्यमास्तं. बुः ६।२५ प्रवेदिवं णाद् मार्गे १०% पुर्वास्त्रहार पश्चिमोद्य ४१२४ वृक्त ५१५ पश्चिमास्त उ६१३ पुनिर्वम् ६११७ मार्थे १९१६ पुनिस्तं ०।२४ पश्चिमोदयम्

च्छसंक्रमानयन्म् . जनंदीराजः सीविज्ञांक

स्रुक्टि उन्हें नास्त्रीसाः स्रोपीयमायकः छ्रुब्धानाः स्रुक्टि उन्हें स्राहिक स्र्र्शियः स्राहिक स्र्राह्म स्रुक्टि उन्हें स्राह्म स्रुक्टि स्राह्म स्रुक्टि स्रुक्टि

त्र्ययं स्वीदि यहाणां नस्यानवनम् जन्द्वनागोहृताः वेटिलमा यातं भग्ज्यते तच्छे-षयातसङ्गरमानद्यतिनेवविद्यतिम् १५५ र्जा-प्राप्तभाग्यसङ्गरमान्द्रवेतनेवविद्यतिम् १५५ र्जा-प्राप्तभाग्यसङ्गरमान्द्रवेतनेवकी हितो यातियी स्तस्तुयाते ष्यो रवेटमस्यदिनादिकी १५३

त्र्ययानयनुम् व्युक्तिन्दोरंशकात्र्यकैर्मका यातानिधिर्मवेत्

परमसिद्धान्ते. डेलास्या द्रोत्यंगनभाग्ययोः १५४ लिमास्येन्द्रकीयोविंगविन्देशे पाँशैविंभाजिताः याते-स्या हो ग्यू संज्ञकः १५६ याते ग्या विन्द क्तीयातै प्यालिप्तिकाः भस्येषात्स्युक्ति जादूनाद्भीग्यंस्यादिहृताविमी

ष्यास्तुकलाःस्वेषाइर्त्तमानतिथेर्मताः १५५ नंसन्नान्यनम्. इन्दोः कलाः खरवाष्टामा ल-ब्यंत इत में भवेत् श्रेषणतंखरवाष्ट्रभ्यस योगानयनम् स्तइत्लेन्द्रकितिकाः श्राष्ट्रीविद्धता यात्रयोगं दोषंगतं भवेत् यातार्रवाः वीगांदीः स्युयति व्यक्ता युतेः स्वेष्ट् मृद्रन्तेचन्द्राऽकेयोःस्फुटी १६० ताभ्यापूर्वीक्तव-त्तेषास्ययतिष्यकलाः स्फ्टाः

त्र्यस्वेष्टाइयक्षेष्टानयनम् तथास्वदेश-पञ्चागा इयक्षपचागानयनम् स्वेष्टेवातियपूर्वाएगा शिप्तकादी धनर किया १६१

व्यस्तं सूर्व्यचरं दत्वास्य व्य सेति भवनि हि खेटम-ध्यादिकंतुल्यंस्यात्स्वव्यक्षसदेशयोः १६२ । ८५३ श्रीलक्ष्मी बृद्धभातम् ज्ञेमवस् भविरिव-नेपरमसिद्धान्ते खेटस्पष्टाधिकारः पंचमः ५

दिकंम् झेयंतुला-दिकं पत्र्यात्मं ज्ञकं तह एां भवेत् ध्यम्पूर्वसेन्मुखम् २ तुंगात्मङ्कोऽन्तितादऽव ध्यंपश्चिमसन्मुखम् त्र्याकर्षत्येव तुङ्गीर स्वार्थिमुखंखलु ३ खेटीनांनी शाः स्वरवसमीरिताः तकीचकुएडलंस्वऽव्यं भू-

तथातद्भित नद्यादिन्छतीयस्य कछो इंबल संयुतम् कद्यिच

कदाचित्रनिर्वछंत्यथाभवेत् ७ तथानत्त्वेटाव-म्बाद्धवायो रुचाह्नयस्यच कञ्जोलजनितंदन्तं बोच्चप्थमध्यगम् ८ विज्ञेयुपृथिवीमभीच्य

भवेत् ८ खेटमध्यस्थले मध्यकुरुडले तत्ख्यस्यत् मन्द्र एत्तस्यके च्रुं तु विक्षयं गुराकोत्त्तमेः चत्ताराकै निशास्त्रत्वष द्विवसोनि क वेताराके क वेदासाः स्वस्वव्यासांशकाः स्मृताः ११ स्वीचषड्

सद्लंदाकैः तुल्यांदीः ऋान्तिमार्गेतुतन्मध्यकुर्द्धल चितंकतानीचरात्र्यादिकं भवेत स्वीचतिश्रीभयको नमूद्भीऽ धाके तुरुच्यते १२ ऊद्भीऽधाके नुतुत्ये ६-त्रमध्येसर्वाऽधिकोनकम् खेटमन्द्रस्पृटं ज्ञेयन्द्रन्ये

स्पष्टोत्पत्तिः १८७ शोद्यंपत्रेयस्य ११ स्वीचनीनोत्मित्रेयस्य

शाव फळखलु १३ स्ताच नाचा मना मध्य मध्य तथा क्लाहा स्फुट मचेत् मध्यनीचीचकसाणास्युबकाशः समा बाकाः १४ स्ताद्रिपदोक्तानुन्यूनन्यून्यविताः

शकाः १४ एताद्रधिपदीक्तातुः चूनं चूनपदीदिताः त् चाऽधिक एतसो भेदस्याञ्चा इद्वेषूस्यसमिते प्राण्णारः १५ पुरुषे एतात्रात्रात्राह्म द्वारा प्रतिकाराः इत् १५ पुरुषे एतात्रात्रात्राह्म प्राण्यात्रात्रात्रात्रात्रा

भागेक स्वर्ण गुरुयादा वा प्रकारक १६ दलातुल पदोक्ते तु हमें स्वर्णिय स्वर्ण हम्माणक हमा मान्य स्वर्ण स्वर्ण

भनेत् अध्यस्यानोर्द्वनोरेनेटेके ज्ञन्त्रेनादिकं अनेत् १९ तत्रस्टेजन स्वड्याक्षेयकीटिफ्छं धनम् केच्य कॅकेंदिकं मध्यस्यात्र्या प्रतेकीटिक्छं स्याद्देशिकं जनम् चनमस्तकोत् उत्तेकीटिक्छं स्याद्देशिकं जनम् चनमस्तकोत् टेकेच्यंभीनान्तकं भनेत् २१ च्याचामाड्युं गेस्स्टे सम्मान्तके न्द्रकं भनेत् चन्तस्याइधो गतेस्स्टेकेच्यं क

न्यान्तकं भवेत् '२२' चन्तद्सीर्द्धेगेरवे र्कार्सकान्नकम् तङ्गकेन्द्रतोधःस्थेखेटेकोटि-

फलं सर्वेम् २३ तह्नतके चतन्त्राह्मिस्येकोटि-फलंधनम् दलापूज्याः मिधेखेटकोटिः पट्टस्थि ताभवेत् २४ मध्यमस्थानतोमुध्यकुएडलेत् भयत्र च खोंकोडीस्सम्मितस्यानेलक्ष्णांचसमाचरेत् २५

भूगर्भस्पर्शकं स्त्रंलक्ष्णाइयसंस्थितम् खेटेमध्य समुद्भतपट्टमत्रसमीरितम् २६ केन्द्रदोर्ज्यादय क्षेयं चऋज्याऽई विचस्रहीः चेत्रके स्याज्यकार्रेड

क्तेबाहुँफलंभवेत् २७ खेटकोटिकतोयुक्तावर्ग बाहुफलस्यच तन्मूलंखेरकर्णःस्यात्तदाहुऽप्रकु गर्भयोः २८ मध्यगस्या स्वर्गस्थाने तद्वाहुँ ऽग्रंप्रजा-यते बाँहु म्छंतुतालाऽश्रेयातमत्रप्रजायते कर्णमूळंतुभूगर्भेकर्णाऽत्रंस्याद्वहस्यते चत्रवेट मध्यदिग्यातं सूत्रं भूगर्भतो भवेत् २० तत्स्त्रे पृथि वीगभीत्स दंशाकार सहदाम् खेटको टिसमताछं

स्पष्टोत्पत्तिः विज्ञेय्पिष्डितोत्तमैः ३१ भूगर्भग्रहेयो मध्यसूत्रंखे-

टयर्वं भवेत् स्गर्भाद्भहादेक् स्त्रः प्रस्पृशत्येवयत्र च ३२ मध्यकुण्डलकत्त्रप्रस्फुटस्थानमुच्यते प्र .स्फुटस्थानभूगर्भमध्यंपूज्योन्मितंभवेत् ३३ ऋय गंप्रस्फुटस्यानान्मध्यंचेत्स्यादृशंफलम् ५ पृष्ठगं वरीवाह फलं पूज्ये न्यका दलम् ज्या उर्दे हिद्दे भवे 'ज्जीवातस्या' वाहुरुवाः फलम् ३५' मध्यस्यान स टस्यानं भेदंस्यात्तत्स्फुटोचितम् तंत्रत्के च्रवशात्त्व-एमियोदत्वाभवेत्स्फुटम् ३६ केवलतत्सरुनमान्द फलंचन्द्रार्के योः स्वकं स्वर्शिययोचितं मध्येदला .तत्त्यान्मृदुस्पुटः ३७ मध्यः स्वमन्द्रहोकेतु श्रमः

त्येवयथातथा अमत्यद्रत्र मृदुस्पष्टोनिज सलर्गणुः हे ३८. यथास्वमध्यमस्थानात्कछोलः खळु खेचरम् मदोचाभिधवायोस्तु मन्दकर्एस्य गस्तके ३५ प्रक्षि पत्येवशीषोच्चवायुकञ्जोलकस्तया रवेचरतन्मृदु

परमसिद्धा

स्पष्टस्थानस्त्रेपृथस्थितात् ४० मन्दकर्णु शिरो देशाच्छी बश्रवएँमस्तके प्रेरयत्यवनीगर्भाद्वौक्कर्णी मध्यकुएडसम् ४१ प्रस्पृशस्येवयत्रैवस्यात्तनप्र-स्फुटस्थलम् प्राप्यतेमन्दकर्गा ऽ ग्राद्यद्भावीमध्यम-. <sup>त्रापत</sup> स्थले ४२ तद्भावः प्राप्यतेचा शुकर्णाऽयात्तत्स्फृट

.संबहंम् उत्पंतिस्तु यथाप्रोक्तामध्यमन्द्रंस्फुटाइनः रे ४३ विज्ञेयाहितया धीरेर्मृदु स्पष्टस्फुटा इन्तरे तत्रशीयस्फुटं झेयमुत्रस्यर्थीयहस्फुटम् ४४ न स्मरेद्भमतस्तत्रशीयकेष्यसुरं स्फुटम् तच्छीव फलसंस्कारहीनान्मध्यग्रहाचयत् ४५ साध्य-तेहिफलंगान्दंतत्स्त्रसम्बन्दनायते त्र्यतः शी प्र फलाऽईस्यसंस्कारनिजमध्यमे ४६ स्वर्णयेथी चितंदत्वासंस्कृतं मध्यमं मवेत् संस्कृतं मध्यमंहि त्वानिजमन्दोच्चसङ्गके ४७ संस्कृतंमन्दकेन्द्राखं .जायतेहिततः फलम् मान्दं समान्यिता र ई दला

स्वर्णियोचितम् ४८ मध्यमेसस्कतेत्वमै

स्पष्ट वेगोतपत्तिः

चेपरिवार्जीतम् कत्वातनमन्दकेन्द्रस्तु ज्यायत धिसंस्कतः ४५ तज्जंमन्द्फलं पूर्वमध्यमेनुधनए। कंदलाय योचिनं झेयं भोमादीना म्मृदुस्फुटम् ५० • मन्दरफुटोनशीघोचंशीघकेन्द्ररफुटं भवेत् शोध्य मुचत्विज्ञेयंशोधकंचाऽत्रमध्यमंम् ५१ शुद्धंके

च्चारिभधं ज्ञेयंशोधके तर्ज्यं नर्शकेंम् दत्तंनिदिपरीतं त्रशुद्रे क्षेयंविचसारीः ५२ जी घकेन्स्सुटो सन

फल सैंए यथोचितम् दत्वामन्दस्फुटेनतस्या द्री ऋथं स्पष्ट वेगोत्पत्तिः

मादीनां निजस्फुटम् ५३ एक भागीन युक्ता चके जा इत्तरफलाइन्तरम् छ-भ्यतेचेन्तदास्त्रोच्चचेगमध्यमवेगयोः ५४ विस्केषा ्रुभ्यतेस्वस्वृतत्तदेगीपलस्फुटम् स्वर्णियेथी दलातद्वेगस्याञ्चकस्पुटः ५५ यतस्तन्मन्द्वता धःसस्थितः से यरो भवेतः चक्रे कॅकि दिके मन्द केन्द्रे

नकादिकेतंथा ५६ खेचरोमन्द चत्तोर्द्ध भागसंस्थः

परमसिद्धानी

मन्दोत्थमध्यवेशेनुकेद्रेककी ५७ देयं भुक्तिफलंमध्यवेगेनऋदिकेऋएाम् तंद

त्वामन्द्वेगः स्यान्मन्द्वेगविवर्जितम् ५८ तच्छी ष्ट्रांच्जवंशीघ्रकेन्द्रवेगसुदीरितम् तद्भवेन्मन

गार्त्रेतुगवेगाऽन्तरान्मितम् ५२ मेषादिचलक् द्र तुः क्षेपांशाद्याच्चयत्फलम् तत्केन्द्रफलतोऽध्यसं

स्वरस्थितत्कला इत्तरम् ६० एवज्रकादिकेशी

न्दजवेतुनम् ६१ स्वरंप्यिथोर्।

श्र्न्यवेगज्ञानम्, मौर्गप्रारम्भकारेतुक्कारम्भ 'क्षरोतथा श्रून्यंस्पष्टजवं भीमपूर्वार्गांसम्दीरित ऋ्रथुरुवेट बाएगोपपत्तिः धिष्यगोकीगस्यकितुल्या दिग्गुणिताः कलाः वि-

स्फ्टजनम् तद्भवेद्भ १ द्युभेदीत्थ न्मितम् ६२ मन्दवेगा<u>ऽधिकंवेगुफल</u> तदा हिला भुक्तिफले मदवेगवक जब भवेत ६३

र्गणयोः पूर्वजायते बुध युक्रयोः ६८ टस्पष्टात्र्यक्रेस्युः पूर्वसम्पुरवाः हुन्दु स्युःपाताः परसन्मुखाः ६५ भेददोर्ज्यानुदोर्ज्य स्यादेकदि क्सन्प्रवारव्ययोः भेदाहोत्तिकोटिज्या बोएां श्रून्यं मितं भवेत् त्र्यतस्त त्यातही नाचतन्म-चस्पष्टरवेचरात् ७१ दोनीवाऽई गुणास्वोक्त वी

भिन्नदि वसन्मुखारव्ययोः ७० मन्द्स्पष्टसमेपातेः एाछिप्तास्तुभाजिताः प्रस्फुटेनाशुकए सादिकं मनेत् ७२ मन्दस्पष्टरवर्गात्पात व इसिएँगोत्तरम् जुकमेषादिकालनुषष्ट्याप्तस्या

परमासिद्धा छुवादिकम् ७३ तत्पातीनान

टिज्यका भवेत् साचकव्यासरूपास्याद देतस्याः स्प्रहाभवेत ७४ पाती मृदुस्फुटात्पर्दसंयत खेचरप्रेरयत्य इत्य श्रीत्यातीद

म ७५ चालयत्यत्तरेयाम्ये उइत्ताकारकः

इाक्कारणः स्थानम् द्रश्र क्तेषुकुला३ भ्यस एक्ला ज्ञेयाः षष्ट्याप्ताः

श्रारः वाः ७८ स्वो क्तेषुकलिका लभ्यन्तेहिस्यहासङ्गतिहाराकोलेका ्स्वस्पृहागुणिताइन्दोः प्रोक्तमार्गेणॅकिप्तिकः पुज्यामाः शरारे मास्तुहीन्दोः स्युव्यविहारिकाः ८१ चंद्रस्यसर्वाधीषु हुरानुष्यम् २०५ ठन्थवारामञ्जूषे वार्षापुरे स्वानुष्या स्वा

सिद्धान्ते रवेटस्पष्टोत्पन्त्रधिकारः षष्ठः ६ तत्त्वस्वकेन्द्रीत्थदोः फलेनश्रवं त्र्यथ सूर्योन्दु भीमादीनासर्वकर्णाधिका-ल्यमन्दकर्णज्ञानम् तथाभीमादीनांसर्व कर्णाधिकात्पदी प्रकर्णज्ञानम्. हर्वापूज्यांशकै स्रवस्व युग्मै एत्तांशकान्भजेत् च रीस्तत्फलं भागपूर्वकंतुधनाः धनम् २ दलातसू ज्यभागादीसर्वाऽध्यात्मश्रवीरमृती चन्द्रस्यसर्वा धीषुहरानयनम्. ऋोषधीशस्य रन्तेनमन्दाख्ये नसमेनच १ हतातयू ज्यकं भक्ता चेकारी स्तरफ २०६

लोनित्म पूज्यतच्छीतंगोः कलासर्वाऽ धीष रोच्यते ४ सर्वाऽत्यंमन्दकएन्तितिईधोः समुदी-भीमज्ञादिकानासर्वा भीमविद्वरुश्काकिखेटानामाश्रुवेत्तकम्

हिला तत्पूज्य केनेषां पूर्णाःध्यःशुहरोच्यते डीमजेज्यपूर्वारामित्रोहत्या सुश्रवीच्यते . चंद्र भीमादीनामध्येषुकुरानामकानि

भानिरवेटाश्चुस्तुयद्भितकोः स्त्यश्चि भारकराः ७ दिग्नाश्चन्द्रकुजादीनाम्म सर्वाधिबाएंगनयनम्. स्वस्वमध<u>्येष</u>ुहिप्तघ्रा

ज्याशास्तु विभाजिताः ८ सर्वोऽध्यः शहरांशेस्तु हि-प्ताद्यंतत्फलं भवेत् षष्ट्यापातत्फलं चक्र भागज्या-व्यासजातिकम् । भागाद्यंचन्द्रपूर्वेशिंगस्यात्तत्स

र्वाऽधिमार्गुराम् चन्द्राके कर्णुज्ञानम् होयाविन्द्रकें यो मन्दक्राीचन्द्राक्यी: श्रवी

न्यवहार योग्येन्द्र शरानचन तयोःस्यूलकर्णञ्जानम्, चन्द्रभास्करयाःक-एगेस्यूलीपूज्योन्मितोस्मृतो व्यगुचन्द्रगोलदिगुस-त्तिः राहुः पूर्वाऽर्ज्जनऋस्योयाम्यायामऽपकवित

११ चन्द्रात्पड्डोर्ड्सस्यस्तुत्धुत्तरस्यान्तुत्तिःधुम् श्रमतत्त्रद्यः गुचन्द्रस्यषड्डाभ्यन्तर गस्यच् १२ गो-लमुन्तरंदिकंतुतत्षेड्जोर्द्भगतस्यच व्यगुचन्द्रस्यगोलं नुज्ञेयंदक्षिणदिग्यतम् १३ भी**मादीनादारदि**ज्ञाः न्दरफुट स्वस्वपातस्य ष्टविवर्जितम् पूर्वाणातत्पड्डाभ्यन्तरयदा १४ नदा ए।सूनर्तहिजायतेगभैतोऽधिक चऋनितंच दित्तनहिं त्र डाएं दक्षिएं भवेत् १५ चन्द्र द्वारा नयनम् व्यडगुर्शीतां शुदो र्भागज्या ध्यरा। ध्याक ताडिनाः चन्द्रमन्द्रश्रवादाासात्रश्रासमंशादिकं शरम् १६ तः हिपातेन्द्र दिकंस्याचकाराज्यासगोत्रगम् व्यवहारयीग्येन्दुशरानयनम्. व्यव्दिशेर्बाहु मीर्व्येऽर्द्धमंके झंत्रिज्ययो द्वृतम् १७ लब्धमं शाः

२०८ पर्मिसहानी दिकंडोयतिह्रपातेन्द्रगोलगम् से

बाएँति इयावहारिकम् १८ न्य्रातानामगुरुकार्णं भागाः श्रृत्यकराभ्यस्ताः स्वःसर्वत्रागुरुतानिहि स्वा भिद्यास्त्रज्ञम्पाराशाङ्ग्रीरिष्यराजाः स्वृताः १५ न्य्रगुरुकार्योहः स्वादंशभागरुवं भूतेत् रुप्रकियोः वारङ्गानम्, राशीनां भास्करस्या

त्रप्रीकियोः द्वारक्षानम्, राशीनां भारकरस्याः पिनित्यं स्वारं भनेत् २० भोभादीनां पात्रहोः नमन्द्रस्यष्ट्वानम्, द्राक्षेत्रस्य स्वारं भनेत् २० भोभादीनां पात्रहोः नमन्द्रस्यष्ट्वानम्, द्राक्षेत्रस्य स्वारं क्ष्याः क्षयः स्वारं क्ष्याः स्वारं क्ष्याः स्वारं क्ष्याः स्वारं क्ष्याः स्वारं क्षयः स्वारं क्ष्याः स्वारं क्ष्याः स्वारं क्ष्याः स्वारं क्ष्याः स्वारं क्षयः स्वारं क्षयः स्वारं क्षयः स्वारं क्षयः स्वरं स्

मंबसु व इ बहुतमान्दम् द्वस्पष्टकेन्द्रीत्यशीक्ष्यो, फ्रज्यम् २२ स्वर्णियातेन्द्रभुदेवतावीक्षयोजनिव क्षित्रभ्यत्व स्वर्णियातेन्द्रभुदेवतावीक्षय्यत्व स्वर्णियतेन्द्रभुद्धिः व स्वर्णे स्वर्णे

**कस्याऽर्द्धं**भागपूर्वंमुदीरितम् २७

ताकीएगस्वादक्षभोगमुखम्भवेत् २६ स्वाद्य्यून त्फलं भीमबाएामंद्रशादिकं भवेत् जीवाः संस्वफ बाएगंदााः खान्तके निधा बाणागुलानयनम् ऋंगुला<u>च</u> रारंभवेत् बाएांगुलास्त्रिभिनि घा विज्ञे-या वार्गोलेसिकाः २८ ऋगन्तिज्यांगुळानयनं

खायि द्वास्तोटकांशास्तुतोटकस्यां ऽगुराः स्पृत शास्त्रुळ झानम् , भी मादि बाएँ। दाः स्युव्यसिज्या कुलो द्वाः ते हिहाः स्वेषुमीव्येशास्स्युस्तेषांतु अजांशकाः ३० स्युर्रनः भुजवंशोर्श्यास्तेषामेवहिसंस्कृतिम् दलामध्याऽ

पमें स्वस्वाऽपर्क्षमं प्रस्फृटं भवेत् ३१

208

'परमसिद्धान्ते

२१०

सर्वाडध्यऽक्षांशका हिद्यो ज्यास्यात्तस्यास्तुदै वाः सर्वोद्ध्यः क्षलवा ज्ञेयाः प्रस्फुटाः परिहेतो

मैः ३२ पूर्णाऽपैक्रमयु क्सर्वाऽधीषुःस्वाऽध्यऽपै

म्भवेत् **अयुक्रान्तिकएपित मानज्ञानम्** कान्तेः कएपितायेथिगोष्टास्यष्टोनिताः स्पृताः २२ गो<mark>लज्ञानम्</mark> सोम्यगोलंतुमेषादीयाम्यगो-

लंतुस्रादिके सीम्यदक्षिएादिग्ज्ञाने सर्वत्रैवसमीरि

मार्गीशैस्संस्छतंखेटं छलागोलंसमालिखेत् त र्ज्याऽर्द्धपलाः कस्मनागनागविभाजिताः ३५ भागादिकंतत्स्यात्किं वाकर्णाःनु पातजम्

शाः द्विगुरां रुला चक्र ज्यांशाः प्रकीर्त्तिताः ३६ तेभ्योत्या भुजभागास्तुज्ञेया मध्याऽपमांराकाः

.स्पष्टकान्तिसाधनम् स्वस्फुटेष्वंशकैश्वस्वम

ध्यमाइपक्रमाशकाः ३० सस्कताःस्यात्स्कृटकानिः चेटस्याखिलकर्म्मणि ऋथाश्वित्यादीनानिताः शक्तानम्, ब अष्टी न भूस्तनका लक्सर्षरामाणे अर्कोव्धयस्तया ३८ चरामानीः व्यक्ताः वर्रामेखे

ा प्रश्नित्वादिताः स्रम्भण्या साम्राम्पद्धाः इ. १५० व्यः १५० इ. १५० विद्याः समञ्जाद्वार वासरा १५ साम्बुदान्य न तशु हास् गोकासा भारकरानकाः ति धु युग्मकरात्रकं का

गाठाह्ना भारकरात्मकाः । स्य पुज्यमकराञ्चकः। स्व पुज्यमकराञ्चकः। स्व प्रकारकः । स्व प्रकारकः। स्व प्

शोदिताः साभि निह्स्यू शीएगानियानाम् मन्द्रु नेताः कार्यः साभि निह्स्यू शीएगानियानाम मन्द्रु नेताः कार्यः भी निया दस्यादयः सर्वे सारणस्य व्याधियः वेकाः स्यु त्रीया स्थाद्यः सर्वे सारणस्य व्याधियः समुदीरिताः स्थु न्याधीयः सामुदीरिताः स्थु न्याधीयः सामि निह्निया सामि निर्माणियाः समुदीरिताः स्थु न्याधीयः सामि निर्माणियाः सामि निर्

3009 ब्ध्यगाः कुखपर्वताः Ь To F-२०६८ ь מן h h उ २६८ X, 1811 उ ५ १४५१ ्र्या स्त्रादी नांय

श्चापारुवस्यनित्यांज्ञाः २१२ स्व प्रमुख्योः ४८ विवतीय नेवस्याः स्व स्व स्वाह्म-वास्त्रवाः ४८ विवतीय नेवस्याह्म-वास्त्रवाः स्वाहण्यक्षिण्म उत्तरदारम् चित्रवाः स्वाहण्यक्षिण्म उत्तरदारम् चित्रवः स्वाहण्यक्षिण्म

योक्तया स्याद्वीरादिक्षिणम् उत्तरदारम् अव ५ ६५% म १० इक ला अभि क ५ ६५% म १० रोषभानासीस्यरार भवेत् ४० स्त्रयाऽ मस्यादीनाताराणानिसादााः द्वार

कुम्भोत्यस्यमुनेस्तया ५० ज्ञष्यकस्य निर्दाशा षड्जा यास्या संसर्पाणाः श्रावाकाः ज्ञष्यकस्याहि तास्यादय उनवक निर्दाशास्यकरात्रनाः ५० वर्षाः राज्यद्वयः सीम्या अर्थेकृतीस्य पिछतेः व्रह्माद्व द्वास्यद्वयः सीम्या अर्थेकृतीस्य पिछतेः व्रह्माद्वः दयस्य, निर्दाशा द्विशेशः सीम्यवाण्याशास्य

बास्त्रद्रयः सीन्यात्र्यर्भक्तिभ्यपिष्ठतः व्रह्मद्वः द्रयस्यः नित्यांवा द्विवारः सीन्यवार्शात्रात्रिकः पारायः ५२ स्त्रवह्मद्वद्यस्याः थ नित्यावाः सम मार्गाः प्रोक्ताः प्रजापतेः सीन्यवाराः प्रच

मागणाः प्राक्ताः अनापतः साम्य बाणाशाः पदव ह्मः ५३ अपावत्यस्यः अपावत्यसम्बन्धिः स्वत्यद्वे अतः १५० भारत्यसम्बन्धाः अवस्य पद्व भारत्यसम्बन्धाः सम्बन्धः ५४ अप्रापारस्यस्य भारतम्बन्धाः सम्बन्धः ५४ अप्रापारस्यस्य

परमसिद्धान्ते. ર૧૪ नित्यांशाश्र्यापसंज्ञस्यत्र्यष्टा भट्द गरस्याहं क्लाः १५० सम्बद्धानलाइषाः श्रुन्यवारगाऽ एवाः सोम्या सङ्गेयाः पाएड तो त्तमैः ५५ स्वेष्वदााद्यज्यकाऽ ho ь याः स्वदारांदाकाः ५६ स्वस्व-2 Ь स्पष्टशरज्या उर्द्ध स्वस्व पूँर्वश-रंभवेत् निजपूर्ववारं याद्यं बुद्धा Ь bo त्रगस्यस्य कुम्भोत्यस

**भद्रवाद्रवदितः** 

मुनेर्यार्ग्याः प्रस्फुटाख्यशस्य च ५८ जायन्तेविकला स्त्रब्धि वद्वयद्वयस्य

श्रश्चिन्यादि ऋक्षाशांताससंख्या त्र्यथदस्मादिरे वत्यन्तानां साभि बिह्नाः

म्यद्वयधिपदस्त्राणां योगतारोत्तरीभवेत् हस्ते संस्थाः

क्षित्रयुग्मञ्जवद्भयोवद्भयोब्धयः खाञ्चचद्भार

२१६ प्रमसिद्धाने ६२ उट हे शु रामस्य युग्पस्थाऽसिगुणाः कमात् ६६ कसाणां अध

दर्शयूर्वाणांतारकाण्यु दितानिहि नद्मश्राणायगरत्यादीनां चश्रूत्या युक्तिस्तर्ज्ञान येषानेवी दिता युक्तिस्तेषां स्त्यागतिर्यवेत् ६०

यपानैवादितास्राक्तस्त्रेषास्त्रस्यागिववेत् ६० ताराए।सण्डकसास्त्रेक्कपरिवियोजनानयनम् स्रोः प्रस्कृटविष्यप्राः कष्टागष्टस्य हृद्यः नर्कीमा स्त्रास्काणानु होयाः कसाण्डयाजनाः ६८ । १०६ श्रीस्द्रमीवस्त्रभारमञ्जयसम्बद्धस्यस्य स्तरम्यस्य

भूशास व्यक्तिस्तस्य दिनाः इतिनयनम् भूशास व्यक्तिस्तर्य प्रभाशी व्यक्तिस्य स्थापनिताः स्वे देशोकार्द्ध विस्तार योजनैः स्याज्यकार्द्ध में १ त हिम्रसिश्चिनीक्षेया तस्याः कोट्यंश्रपट्ठेलयम् स्या

१क ताराओकाएडपरिधिकसाबीजनाः १८५२६८६० नह्यासयो

क्ताः ५८४% २०८८ अर्द्धे १५४८ ६०४४

২৭৩

११४ ।३५ ।२४

1184 148 लोक व्यासाई योजनैः

🌯 चक्रव्यासांशा ११४।३५।२४ च व्यासपि प्रभाषण । ४२ मू म्कापिंहं २०६२ ६२. ६ १४० पल भादेशे - १३ ।४३ ।३५ ।१ सोटकम् ११।४८ ।५० अनेन हता केदारे एा बस्यात् वालंबन्ययाभक्तं चक्राव्यासंफः शेट।३८।१५ कें हवा केरारे ए। भक्ता बारक स्यात् सवादाश्व पलभादेशे वाश्शकात् टकं हत्वाफलंस्यात् नत्युच्य प्रकेशसंचारकंस्यात्. ६।४० पतः न्या रेक्शान्। १११२ वेर्वन्योत्ते पत्ना १८० २०५ । ३१ ऋसामा ९२ ।३१० न्या ५५। १११० न्यान्ते २७ १४२ (३० २१८

दिकम् ८ हिलापञ्चेन्दु लिमास्तुस्वव्यक्षाऽ

% १ स्डियातीस्व्यक्षदिनार्स् १४।५८ ११५ स् मध्यगतीस्-

षध्यस्यकलाहोमानरानिमानदेशे म्बादाानयनम्. स्वाद्याद्यान्स्वाकतो

उम्माशास्त्रपुर्विताः १६ मुक्क व्यक्ति स्वाहर्ति व्यक्ति स्वाहर्ति व्यक्ति स्वाहर्ति स्वाहर्ति

रितम् १७ देवानायानशामानतद्युमानसुराह्-षाम् व्यथषष्टथस्यकलाहोस्मानरित्रमानदेशे चरानयनम् . प्रस्कृटापकमाशामाचकज्याऽ

कः न्यानाश्चित् पान अवनागित १३० कालः व्यानिवार् कालः कः) तब पृत्त प्राच्यां वेशिक्तात्रीत हुरूल प्रमुक्तानिवार न्याना स्थाना विकास कालान हुरूल आन्यानाभिवारा अवनि त् काल्यानाभिक्तान्यान्य व्यानाभिवारा क्षान्य व्यानाभिवारा अवनिवारा क्षान्य क्षान परमसिद्धानी

. २२० ऽर्द्धल

ः देखवादिकम् १८ प्रस्फुटक्राँनिदिक्कन्तुर स्याद्धवादिकम् कान्त्यंशनाममात्रेतुङ्गेयाः

रसाह्य सार्वे प्रभावना सामान्य स्वाह स प्रस्कृता प्रकृत साहा सिन्स स्वाह स्वा

त्तं चकंदारकरकचाशकादिकम् २० कुन्दे धार-कङ्गानम्, उम्बाशज्यादउकुन्दं कृथ्यते तच्चा रकम् चर् कुलानयनम्, व्यसादुत्त्रूरसंस्था-

नात्यगोउदेशिएम्भवेत् नार्ककद्वानः ज्यसभूगुपुण्तपूज्यशकामतोदकाहतम् २२ के सार्कानिदिकतुचारकप्रसुद्धं भवेत् ज्यसायाः

५७७ (४) ३० मि-का मा या मानेगा वरेर ।५५ ।३० मानवसारिक व

<del>परपदानयनम</del>

कानिदिक्कभागमुखबुधैः तोटकंपलभानि घंदाको पंत्रानिदिंगतं २४ ज्ञेयंकर्दकसाक्षीकमंकमंत्रा-

दिकंतथा चक्रव्यासदलांशा मंकर्हकं भागपूर्वकम् २५ केराप्तंकान्तिदिक्कंस्थाचारकं तल्लवादिकम् बाह्नं शांगांशकं चरम् २६ ति है प्रस्याज्यकातस्या तित्स्वाऽन्यगोळ*जम्* 

रचन्यक्षा इहहे छे दत्वातच्चरे घुदलं भवेत् २७ स्व-हु ग्वन्तोद्या (स्त्रोत्य खेवरोत्य चरो द्वे चे चे स्तः स्वेद्य दर्जावैक्यतयोः स्वद्य<u>मितिर्</u>भवेत् २८ स्वद्यमानघटी

हीनखागस्या त्स्वेक्षपामितिः श्रय<u>न</u>तो जतकला नयनम

कालमहंदेलाद्यातपश्चात्तं चत 345 खंत्रितस्त्यक्तातस्त्र्यादु जतं भवेतः

द्वित्वानस्रोङ्गतं भवेत् श्रयचर खएडानयनम्. खायीनां मुजभागानां कान्त्युत्यं यचरं भवेत् ३१

द्यातिकाळं पूर्वीत्वतं भवेत् ३० पूर्वीत्वतं वियदामा-

३२२ प्र

भजङ्गेय तद्दत्खांक भुजां शकेः ३२ डोय मधनेत्रं भजेचरे

हिलानत्प्रथमखण्ड मध्य-द्वितीयस्वंड

> ऋन्त्याख्यश्चरखएडः <del>त्र्रायव्यक्षादया</del>

> > नहार विभाजिता

वाः रवाञ्जैनि घाः स्युःस्वभजाः पत्नाः मेषात्ये घटक-

एक मञ्चाहि भज्याया

१९४।३५।२४

राशीनामानमुच्यते ३८ त्रिभननेत्र

एकभज्यादिभ

223

इ.इ.कच्छपनकाऽश्वि तिरुच्यते ४० षर्धेयामा विकलालिमाश्चज्ञेयाःपः कनेत्रेत्रिरोशीनांऋमशोत्क्रमसंस्थिताः ४१ मित-एडैस्तुऋमशोल्क्रमतः स्थितैः हीनादयाः

एिडनोत्तमैः ऋथस्वदेशलग्नोदयकलानयनम् ऋम्यामेषा ज्जूकतश्चीलमस्थिताः ४२ निजदे-बोदयोः त्रोक्ता लिसाद्याः पण्डितोन्तमैः देशेव्यक्षेतथैक्च खंलु वाष्यींगाः स्याचरोत्यद्युमानकम् रात्रिमानंचवाष्यीगंचाद्रत्रतच्चरम् घर्नरवेएडाइ त्स्फ्टं भवेत् ४६ गुप्त घरने

ज्कयोर्मानंतुल्यं द्श्विकसिंहयोः ४३ चापकँकद-योर्नऋं इंदेयो र्रष कुम्भयोः स्यान्मेषीत्य भयो अस्य व्यक्त देशोदया श्रीव स्वोदया श्रारखंडकाः जायनी क्तंत्रस्फुटाइह्न समंभवेत् व्यक्तं गुप्त दिनाङ्गीत्यं स्यात्स्युद्धाः द्वाऽद्धं सम्मितम् ४५ स्मेवयद्वेषद्धः इ. १४ स्कृतस्य विश्वनम् तिमायोः स्युवेश्वनद्धाः देशते। इ. १४४५७ १-६ १२७५१७ विस्तित्वाः है १०८१५ १००

२२४ परमासिद्धानो

रुप्रानामैक्यवेनन् सुर्वेवनं परिस्मरेत नक्षन्त्र। नादिक्षानम्, धिष्यानाम् न्यवेगबास हिर्कि महर्भिद्याम् ४८ स्थानेत्रां सुनिवामानोनारः त्रीसमुदीरिती चरंचैवाऽपगोस्मिनं वार्ष्यीनंसर

त्रीसमृद्दीरिती चरंचेवाऽपनीस्त्रां वार्धाः संस् वित्तम् ४९ विष्णाः द्वारतम् ४९ विष्णाः द्वारतम् १९ विष्णाः द्वारतम् विकासम् द्वारतम् विकासम् द्वारतम् विकासम् स्वतास्त्रास्त्रास्त्रास्त्राम् विकासम् स्वतास्त्रास्त्रास्त्रास्त्राम्

कर्माण सदेहनहिक्तियतसर्वेदस्यनते बुधैः ५१ स्त्रवत्यास्तर्पाता वरंगानां सुद्धान्वरः विवि निक्यास्तर्पाता प्रतासा वरंगानां सुद्धान्वरः विवि निक्यास्तरम्बातिनातं फळत्या ५२ स्यासा

में के के तिर्देश निकित्र या स्वीति के तिर्देश के ति के तिर्देश के ति पे प्रतिकृतिक के ति के ति

क्ष) ६१० मानभादेशे। भक्ता र्रक १८ १८८ १८५ दिभक्त रेक्च २०११ १८८ मिनुक १९१८ १९५१ । ६१० रेरो २० मुन्योगानामीन १९४८ १८ के र्रक ६९८ १९४ वर्गाए खन्यामानामीन १९१०५ १ विक्र कर्ति १९६१ वर्गाए खन्यानामानामानी स्थिति १९४० १० वर्ग कर्ति १९५१ ६९८ स्मितिस आरक्ते १४ १० १९ वर्ग मुन्य

लमानयनेतात्कालिकाके ग्रहण० चौरुदेयान्तरम् अष्टि छिप्तोरि होरात्रमीरितम् ५५ प्रस्फुटाऽहिन्नेशंखांगि प्तंचेदःनुपातजम् तदःर्थेखांगालेमाऽत्यंनाक्षत्राऽ हर्निशंसरेत् ५६ रवेर्नक्लागुप्ताऽहोरात्रलिपकैः रोगीरेण्यज्ञानम्. चातसङ्गकम् भोग्यंभोग्योदयंसर्वे छिप्तिकापूर्वकन वेत ५८ लगानयनेतात्कालिकाक ग्रहणञ्

सूर्यस्फुटे श्रून्यव्यसदेशास्थितां नृएगि ६० गनोद्वितीयोदयकालजम् पूर्वस्थेरविद्वेक टं भुक्तितुल्यमात्रं भवेदवे ६१ र्यात्त्रत्राऽ भ्रांगकलोनि

नाशाः स्वोदयाभ्यस्ताः खाःग्यासा इष्ट्रज्ञानम् . रूयातमाकीद्या मीरितम् भोग्यिल हो निताः स्वेषाले सान्ध निताः ७१ स्वित्रे द्वास्तद् इन्द्रामात्र्यासभागाद कं भवेत्। तद्भुक्त भाऽन्वित कृत्वानद्वयस्त कै: ७३ संस्कृतस्यात्स्फृटलगृहुग्वत्तेतकला तम् भीग्यात्पष्टलभानयनम्, इष्टर्याङ नीऽत्यः स्यान्मागीदीस्संस्कृतस्यच ७३ स्त्येस्य दयमानस्यतिमासाःस्वेष्टतिसकाः तब्धराशिसर्व

'यस्यात्तदावत्रतुस्फुटम् प्रकारान्तरेगालगुसा इष्टेवाभीग्यतः स्वडत्येवाडाधेकेयात

રવ૮

दशमाद्वागभान्वितात्

**अस्याद्रजन्यन्ततद्रास्वत्सज्ञकस्यच** 

थ-१ झीर बावपि निहि

भागसंस्कृतयोस्तयोः ८५ भुक्तसङ्गकयोरेवजा-यतेऽन्तरश्चिम्रकाः तत्रच त्तिष्टीनोदयैक्यकम् ८६

**न्यः** न्तेलिप्तिकादिकम् र्गम्यकडान्भुक्तसङ्गकानांकडादिषु संस्कृतानां तु राशीनां पूर्ववहू थेः युक्तारार्र्यः

समानकलादिषु ८८ युक्लास्यस्ट

यास्तत्रस्वस्वेष्टि हिप्तिकाः स्वस्वेपात्राशि नेष्टोनानित्यंस्वस्वेष्टितिकाः ५० स्वस्वमानक-

भिधाः ऋणमागादाकाः

८३ सर्वेषामेषपूर्वाएगहीनाः स्वस्वफलैञ्चताः र <sub>स्वर्ग</sub> सन्द स्वप्रमितिलिमास्तु विज्ञेयास्त सथाराजाः ८४

श्रधानेनाकदियकालिक लगस्य भं ग्यकलानयनम् इष्टलग्रङ्गानय मार्गलवीताचा लगानामितयस्ततः एका

<sup>बन्नकारा</sup> स् किञ्जान्तलयस्यमानमेकरवेद्विधा ८५ भुक्तभो-माराके ही लारू पराश्या गर्के भीनेत् तह व्यीगत-

233

कभारतः त्र्याकान्तकाः व्यवस्थितः

तैष्ययोः ५८ षष्टिष्ठिमोन्मितंज्ञेयं तस्य-

ख्यातमहर्विशम्. व्यावहारिकल्यानयनम्, मान्तॅिक्षोचाः स्वेष्टलिसास्तु भाजिताः ९५ . स्वेष्टल्यमितेलिं सैः फलरात्यादि भिर्युतम् स्फुटचाऽत्रजायते ज्यावहारिकलमञ्जानम्

्र क प्रान्त्रमराशीतुस्वेष्टेनद्रयावहारिकम् १०२ वर्ष भप्रमिति हुँ इमान भूत्वगुरीः पढेः सुस्य-रेरऽस्थिरैस्साऽर्द्धद्वयन्धिपसोन्नितैः पठैः १०३ मेक स्यैवमितिः सार्द्धपंचगोश्विमितैः पक्षैः च्षभप्रमितिः

विद्व भस्यमिति स्तथा लग्नमदस्थिरज . नासिन सितिजेनहि लगत्येवार्कहें य सूर्यस्यव्यक्षाह त्र्यययुन्याः यनारोतुमेषस्याः

रेशेवतुत्यकालान्तरेरविः १०८ त्रागच्छ

द्वाईततो भवेत ११० तस्मान्मार्गजवलाचि त्यूर्वन्तुगन्छति तद्भावंगुप्तेषस्था ख्येभास्करेस्याः भिगच्छति १११ नसंत्रोद्येप्रहोद्येन्स्यज्ञानम् ह्रमकेवलतयी:११२ स्याह्रक्सस्कृतयोस्त हेर्याः श्रास्तकालेलग्रजानम् स्तकालेत्यसू गंचा ६ कीं भवेत् १९३

दयकांलोखंलयं तत्स उम्मितं भवेत् ११६ त्रतत्त्रस्माद्यथायोग्येष्टालेसकाः गुप्तादहारात्रा साप्ता भानोः षष्ट्याहताः फलम् ११७ तस्तिमाद्यः भवेत्स्वेष्टं तस्र्यानयनायचं तहाष्यीगंतु विङ्

त्तुपंचांगजाविकम् ११८ श्रीद्विकाकीलुधानयना (भावम

२३४ परमसिद्धानी त्र्यतत्त्र्योदयिकादःकेद्विमनेवानयेत्सदा सावनीयनाक्षत्रयोः परस्परसंस्कारो पपत्तिः सावनीयकलानातु संस्कारयदिदीयते ११५ चात्रय संज्ञकिमादीतहितत्मावनीयकम् संविधायैव

नासत्रदातव्यं तस्यसंस्कृतिम् १२० नासत्राह्वयः

लिंमानांदीयतेयदिसांस्कृतिम् लिमादीसावनीयस्य तनासत्राह्वयंतया १२१ रुलातत्सावनीयंतृतदा तस्यतुसंस्कृतिम् रातव्यंतंततो दत्वास्या रूफुटंत-च वातयोः १२२ संस्कारिकयतेनाम्यसावनीयास्य

योर्यदा ताई सासंस्कृति स्थूला विज्ञेयाव्यावहारि-

राशयः सदा

१२७ स्म

गानां के सास्स्योदिवासराः

:कलाः ज्ञाक्दारभागा धनत्यशाः गंशकाः स्यश्चा स्तेंयथायोग्या नाक्ष्त्रास्स मुदीरिताः

साचनाशदिनादि ध्रमके गुप्त

यात्रयनास्त्रन्याऽपितद्भवेत्

नाक्षत्रात्सावःनीयानयनम् वाक्यंखार्गाहतंभानोर्गुप्ताहोरात्रभाजितम् तः

त्फलंसावनीयन्तुसावनं चापि जायते १३४

सावनीयवेगाचाश्यवेगानयनम्.

षष्टिद्यंत्रहवेगतु नाक्षत्रंतंज्ज्जवं भवेत् १३५. त्र्यथकेवल ग्रहलगोत्पत्तिरश्रहियस्त-

खेटी लग्नाश्चनक्षत्र ं सन्ति संसारे निर्णीताः फलक म्मंणि

<u> इयनभागकैः</u> स्कतः पुनः १३८ तद्भवत्येवस्यु

कम्मेशि पश्लवसंस्कृतलग्रड

इष्टकालो द्रवस्यैव मार्गी शैस्संस्कृतस्यैच १३८ भी-

स्स्मलगस्पष्टानय•

नीरे व्यक्तिम् शहर इन्हर्यक्रमेन विता विश्वयम् । प्रकृतिक्षाम् विद्युक्त प्रकृतिविद्युक्ति । प्रकृतिक्षम् विद्युक्त प्रकृति । प्रकृतिक्षम् विद्युक्त । प्रकृतिक्षम् विद्युक्ति । प्रकृतिक्षम् विद्युक्ति । प्रकृतिक्षम् । स्वत्रक्षम् । स्वत्रक्षम् । स्वत्रक्षम् । १४९ प्रचा सुद्धीद्यक्तिमामा स्वत्रवा । प्रकृतिक्षम् । १४९ प्रचा सुद्धीद्यक्तिमामा स्वत्रवा ।

भिर्जुतम् रुवातन्त्रुश्चेन्द्रश्चेमयसस्कृतवद्भवे १४२ त्र्ययोत्पत्तिसूक्काद्माद्भथिकारभयक्षानम्, उत्पत्तिस्कृतक्षेत्रकारम् प्रयोगतिद्विवस्तृतिम् तदी-त्यानमयोत्पत्तिस्तंपूर्णाकिषितास्यकु १४३

यानमयोत्विस्सप्णोजित्वताख्व १४३ न्य्र**यस्**सम्बद्धसप्यानयनार्थे यथोवितः व्यस्तदेशोद्यखण्डयथोवितस्वस्वदेशोदः यखण्डयथायोग्यचरसण्डानयनम्,

यस्य उपाया यत्रस्य इति च नम् . ज्यस्याद्याश्चाद्रपायाम् इति । इति हिमा-चात्रमुख्याद्रपायाम् विकारम्य विकारम्य । अध्य वार्ष्या गान्द्यादकेपुताः होरात्रक्षितास्यस्य पष्ट्यासा

गान्याऽकेगुसाऽहोरात्रक्षिसाहतास्सदा षष्ट्यासा-स्त्रेययायोग्याः स्युः सस्योक्तस्यलस्थिताः १४५ स्तरस्यदेशोदयास्याऽत्रव्यक्षदेशोदयास्तया क्रिसा- परम सिद्धानी

द्याश्चरखण्डाश्चयाह्याण्वययोचिताः १४६ न्त्र्रथ सूक्ष्मलग्नस्प

त्र्यथतलालजातस्यसूर्यस्याऽयनभागकैः संस्कृत

जायतेऽथगताह्वयं १४८ हिलालिसादिकंमाने

दयस्यक्ळादिकम् जायते भोग्यकं चाऽथ भारकरेशी द्याद्गनम् १४८ स्वेष्ट्ययोचितनाडी पूर्वियात

विषु यु क्वानसस्कतस्यैव भास्करस्याऽयनांशकैः १५० यातभो नितराशीनाम्मानयोग घटीषुच तं

क्रमाच्छेषकतत्राऽ शुद्ध यातकलादिकम् १५२

ततोऽखिललमानाम्मान्योगुकलैस्सदा १५१ त-ष्ट्यतच्छेषकेशोध्याऽजादिमानकलादिकान् त तञ्ज्ञेयंत्रेकुराश्यंत्रीहलात्च्छेषकस्यच छिपाद्यं लडिसलाड शैंड लिपाभिविभने तफलम् १५३ भागा-

द्यंतद्रः शुद्धस्य जायते चाऽय शुद्धभम् युक्लाऽ

स्य तत्स्फुटेत् धनोऽधनान् दत्वाऽयना-मध्यस्सम्पूर्वीकातस्यात्तनुस्फुटात् इ स्रम्लग्नस्फटाद रस्मातत्पूर्वी कवदाने येत इष्ट्रय योचितनाडीपूर्वक तेभ्यएवच तद्ययोनि

खएडेभ्यस्तत्स्वेष्टव्यक्षेदेशयोः १५७ **यद्योचि**-तन्वरानयनम् कम् १५८ षष्ट्यासरिवग्रेसाऽहोरात्रनाड्याहत तुतत् ज्ञेयय्योनितचाय सावनव्यक्षदिनार्ह्य न्यन्य, स्वव्यसाऽहार्ड्लिसकाः १५० स्वागी-प्रास्सूर्यगुप्ताऽद्वरात्रियोगकलाहताः स्यः स्वेन्यस-दिनाऽर्द्धस्यसावनाह्वकलाश्वताः १६० नास्त्राच

निजव्यसम्बद्धारदीयराधिकास्फुटाः स्वव्यसारह

गुप्त बुर्निं इंस्या त्रवेटाऽह्वाऽर्द्ध यथोचित म् रात्र्यन्तकालेखेषञ्जानम्, वर्तमानदिनस्येव

रात्र्यदन्तसमयेतया १६३ तद्वितीयदिनारम्भेव र्त्तमानदिनस्यच इष्टंयथोचितंस्र्वेगुप्ताऽहोरात्र सम्मितम् १६४ स्यान्तत्रेष्टंचवार्ष्यागंज्ञेयंषष्टि कलोनितम् स्त्रथयथोचितस्वस्वदेशोद्यः दिताः १६५ व्यसदेशसरवएडास

खएडकलान्यनम्, यथायोग्यचराद्वीस्तुसरंक-पूर्वप्रोक्तक्रमेएाच स्वस्वदेशोद्याएव विझेयास्तु यथोचिताः १६६ । १२६८. श्रीलक्षीवलु भात्मजप्रेमवलु भविरविते परमसिद्धांतेलमानयनाधिकारोष्टमः ८.

भीमादीनामुद्यास्तवऋगागीजाः

कांद्रौर्वार्जनाश्चऋभागीरत्वंऽद्याः परस्परम्

भवेत्रहिमन्दानापूर्वास्तपश्चिमोदयम् ६ १२८ बीक्रकेन्द्रोपरि ।२८ सक्यंशी पूर्वेदियं ५।१४ वक्रं ६।१६ मार्ग १९१२ पश्चिमास्तं वा ०११८ प्रवेदिवं ४११० वकं ०१२० मार्न १९१६ पश्चिमास्तं हा ०१९७ प्रवेदिवं ३१२५ वकं ८१९ मार्न १११ १२पश्चिमास्तं ह्य ६।२५ पूर्वीदयं णह मार्ग १०।१० पूर्वीस्तं ११२० ६ १७ मार्ग १९१६ पूर्वास्त ।२४ पश्चिमोदयम् ५।१३ ककं ५।२७ पश्चिमान्तम्

अवस्ताति अधिवयादिकम्

द्राक्षेन्द्राद्रश्स्कार्यश्यास्त्रीस्त्रोनाधिकास्त्रिह तद्रागविवरद्विद्रम्भोमस्यतिहत्विदः ७ शुरोस्य

नेस्सेव सक्ते ब्याउस्तादिको इस्कृटः ट

रामिकंद्रगतिः कलादि, मः २७।४२ सु १८६। इ. ५४।४ सु २०।० इ १८।८ इर्नान्तास उद्यंतु हिनै १२ सु ९० पश्चिमोदपादकं इ. १० सु २२५ वकालाधि

क्षः पेशाह सु २०१० श एकाट श्र्या साधा उदयु । दाः २२ सु ४० मिलोदेसाहक हु १२ सु २२५ कालास्त्रि-माल हु १ सु २२ पश्चिमालाहुर्याद सु १० शु १० श्रुली रपामार्गे हु १ सु २३ मार्गासुर्याक सु १२ शु १२४ अलाहु-दर्यादी: में १९१ हु १) शु १३ उदयादक मेन्ट्रेस्ट्र

रपानागं हुँ १ सु २३ नगापेतुपास हुँ १० सु २२५ करताहुँ दसदिन संभूत १, त्रा ३, दरवाहूक सन्भूत्रक स्त्राहुँ कहानागं संदुर्हणश्रा १२० मागदित्तम् संरुप्त हुँ १३० सं

त्रप्रेथप्रकारान्तरेणार्तादीनादिनाद स्थूलकालज्ञानम्. अस्तमःभुद्यवैक्रमानिःसामयमुहः मन्दाना

अस्त मृहस्युद्वयंक्रमागमहस्तमयसुहः मन्दाना नहयपूर्वस्ति पश्चादित्रयुद्यंतथा ८ वकत्वंपश्चि माऽस्तान्यपूर्वस्यासुद्रयंतथा मार्गततस्तु पूर्वस्यायह

माऽस्तंचपूर्वस्योमुद्यंतथा मार्गततस्तु पूर्वस्योगः हुर्य स्तमेवज्ञश्रुक्रयोः १० स्थानकमोच्यतेतच्याक्स्था

स्यदिनाम्मन्दस्पष्टगतानयनम्. नसत्वरकेंद्रयोः विश्लेषस्यलवाः शीघ्रकेन्द्रवेगाग्र-जायने भेदं द्राकेन्द्र वेगः स्यान्मध्यशी घोः रूपोशस्यान्तरेमन्दकेन्द्रयोयेत्फलान्तरम् १३जात भागमुखतेननिझं मन्दोचमध्ययोः विन्धेषवेगयो र्भागपूर्वद्रव्यएकिकैमात् १४ केन्द्रेकिम्गात्वहु दलामध्यगताविह मन्द्रपष्ट जवांशास्तेविङ श्चारनुपांतजाः १५ मन्दोन्चमध्यवेग

स्यचेद्रवेः गुम्रधुरा<u>त्रियो</u>गंतुरुभ्यते।सिकादिक म् १६ रूपकेन्द्रांशकेतहिलभ्यते भाजकंफलम् भाजकेफलविश्लेषंत्रभ्यतेचेल्लवादिकम् १७ रस्यतु गुप्ताह्मरात्रियोगकलादिके प्रहवेगफ हिलभ्यतेभागपूर्वकम् १८ प्रविद्वज्ञस्फुटन्यूनय-न-मार्गजनं मवेन् उर्द्व पूर्वाह्न जनेत्स्यात्स्यष्टनक मन्दस्पष्टनवादोानाः दीधिचस्यजवादाकाः द्रा-क्केन्द्रस्फुटगत्यंशाःस्युस्तेचात्रुजवांशकाः २० श्रथभीमादीनास्पष्ट गत्या नयनम्.

स्याद्युजवचारथवच्युऽप्रेचस्फुटजवम् २१ए-कार्रास्यान्तरेशीयकेन्द्रयोर्यत्फलान्तरम् भागा-ष्ट्रगतीदत्वा भागादिःस्या ज्ववः स्फूटः भीमार्द

१% कोनासुरितिशब्दितइत्येकासरकोषः

दैर्द्रागुचाहुरगः खगः यत्रतव

त्यो मध्ये भेदराशित्रयो धिकस् २५ तद्भवले व

भीमादीना यून्यवेगज्ञानम् २४% व्यक्तिस्यामान् स्वाप्ति स्वाकर्पतेवशी प्रीबेरवेटवक्तमाविर्णवेत् २६ स्वायकिन्तुभीमादीनां प्रकारान्ते रेशास्त्रप्तान्यनम् ,
वेरवेदवक्तमावर्णवेत् रह्मास्त्रप्तान्यनम् ,
वेरवेदवक्तमावर्णवेत् स्वाप्तिस्य भीमाक्सादिभिन्नेत् यूनाक्कः
स्वाप्तिस्य भीमाक्सादिभिन्नेत् यूनाक्कः
स्वाप्तिस्य भीमाक्सादिभिन्नेत् रूनाक्षः
स्वाप्तिस्य स्वाप्तिस्य

खेटानांतुगतिर्भवेत् २८ . टे उन्तरात् भागाद्याः द्रोंक्स्फुटनवे भागैराप्ता दि-स्वस्वमानेऽधिके स्वस्यान्मानेऽब्येचे हुएं। भवेत् श्रथ भीमादीनां शून्य वेगज्ञानम्.

यनारम्भकालान्तं कुटिलस्एगत् ३४ यनेतत्रतद्वक स्थिति रुच्यने

रवेटस्पष्टकलाः स्वाभ्रनागासा गत्भंभवेत् ३५ ताः

दसदीरतम् खेचरोयनितेपादे छल

निजदेशेष्टात्परदेशेष्टकालङ्गानम् रम् ३५ दोषांदााः स्फूटवेगांदीराप्तात्र्या स्फुटस्यैवकालाऽह्नादी धनएकिम् दलातः न्याचकाञ्जीच खेताउद्रिः पर्यकी तथा प्र-

स्थिता उक्ताः श्रूत्यदेशान्तर पश्चिमोत्तुल्येदिक्कोदेशान्तरीयदा कर्द्ध मृत्तं. देशाउ न्तराउन्तरम् **भिजदिक्की**खाऽन्ययोदेशयोस्तद तत्समदीरितम् ४५ तिथ्यनाजन

🎮 मध्यरेखास्थानात्स्वस्थानं पूर्वचेत्यूर्वदेशान्तरं पा मं बेत्याश्चिमदेशांतरं स्यात्

परमसिद्धाः चरण स्पर्शकालं गमक्षणम् ४६ पक्रमोद्भवम् अन्यदेशपढारीश्रयच्राहितिकादिक म् ४७ त्र्यन्यदेशचरज्ञेयमन्यदेशपठाशकाः याम्या-षज्ञकारिगोलेस्वरंचिरंभवेत् ४८ सीम्याखे चुनुलाइजादिगोलेखएचिर भवेत स्वादन्यदेशोत्य-योस्साम्येस्वर्शयोश्वरयोस्तयोः ४८ विश्ववतेजसः ज्ञः स्यात्स्वाऽन्ययोर्देशयोस्तथा भिन्नेयोश्चरयोर्यो-

गंकलाननेजमुन्यते ५० स्वस्थानादः चदेशंचेतः श्चिमांबोतुसांस्थितम् ऊर्द्धितिम्। ष्टेमध्येष्टमुच्यते ५१ व्यस्तेचीद्वी ष्टेमध्येष्टमुच्यते भिनगोलेऽक् न्यदेशयोः ५२. स्वस्थानस्य म्ये इक्ष भागाना परदेशस्वदेशय सस्कारकत्वाताः शेषांक्षीमकाः जायन्तीनजदेशहः यदेशेष्ट्रिप्तिकाः ५५

\$ 13 डेशाश्रकाश्चवासराः का-कालां शाः १२ शु-का-८

लाशाश्चन्द्रतोवकेरूपोनाश्चर्जनुकर्याः ५६

मृगव्योषं. १३ स्वा १३ सि १३ ष्ट्राना लुब्धकस्यच वायूरी ऽदितीनांचकुम्भोत्पन्नमुनेस्तथा <sub>चैश्र</sub>्वपूर्ण

लवा ब्राह्मकरोयोवोसवाकेयोः दस्त्रयोन्ययेमर्सा-म्बर मिन्ह

पापिनृद्वधिपयोस्तथा ५८ कालांशा मनवः प्रो-बुर्क्ष्यं अनुभव्याभू मूर्विक १५

उन्माभ् चुविमः १५ जलस्यच ५१ पञ्चेन्द्रप्रमिताः कालभागास्त्वः स्तो-

शाध प्रभी १७ उ.भाः १७ रे १७ प्रसाय १७ ऋप्रिक

न्मिताः ६० बोषाएगकालमा

12 190 13 19 1 2 194 198 196 199

रो मृत्र्यापुति श्रामें पूर्वह वि ગયા વર્ષા વધા પરાવર દાવધા વેશા વેશા વેશાવરા વર્ષો વેશા વર્

क्ये स्पूर्ण अभिश्वाध राष्ट्र वरे अन्तर १६ १९ १९ १९ १९ १९ १७ १० १० १० १०

श्रास्तोदयदि ग्झानम्

तिव्यस्तेस्यांत्तहिपर्चयम् भास्केरान्यूनभाग पूर्वस्याद्वयतेयहः ६३ यत्सूर्योद्धिकांशस्य पश्चि-मेदद्यतेनरैः प्राक् पश्चादुदयास्तत्ताराणामुच्य-तेसदा ६४ येथेषा श्रून्यवेगः स्थानेतेस्युस्तारकाणि च खेटयोर्योगवित्यग्रहयोरानये द्युतिम् को निर्लो भोग्यानत्र युति भवेत स्वे-चराकारधिकोनित्यो यातातत्रयुति भवित् इस्वेट जबस्वल नित्यवक्रगय येगिस्याद्यातैष्य विपर्ययम् ६७

श्रस्त स्थानोत्पत्तिः

वेट भारकरेयोः क्रान्ति भेदस्यानों s कउच्यते स्वा

लुख्य बह्म्हद मजाप हुत अपातत भाप

चरः ६८ स्या-षस्याऽ ३१-रेवद्वरेंऽकात्प्रांकु परस्थले

२५२

कॉन्मितमे ७६ खेट-केरस्थटत्तस्यभागाः खांगगुणाः स्मृताः

दिक्कं इन्तरतयोः भिन्न प्रोक्तकालांशकारधिकाः ८०

तर्हितनित्यनुत्येऽकैऽप्य नित्योनयानिहि श्रथऋएासङ्गाञा

पश्चिम दण्कते खेटास्तस्यात् खर्याद्विशिषेखेटे खर्यास्तात्मयः • मंपश्चिमदृष्य ते खेदास्तरयात दैत्य भूमीपश्चिमदृष्य ते स्तं खेटास्त काळंस्यात्

विपर्य्यस्ताः समीरिताः ८८ ११८- गतोदयंचेदस्तं गम्यंस्यात्, भोग्योद्यंचेदस्तं गतं स्थात् प्रवी परमसिद्धान्ते

વંદ્રષ્ટ

कालांदाकाः स्पष्टाः स्युः सर्वोऽस्तोदयेवियो ८० प्रवीऽ स्तोदयेक सर्पक्षत्र क्ष्याः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः स्वयः सर्पक्षत्र क्ष्यः स्वयः स्ययः स्वयः स्ययः स्वयः स

प्रोक्त क्षणांशकाक्ष्रस्य स्थापामणेश्यः स्वेट स्त ह-क्ष्म्ययः स्वेत तहा पाति ह्यस्य भोग्याऽस्तः स्याद् क्ष्मक्षणाभा-स्वकाः ४२ पदिस्य ह्याणानेश्य अद्धाः स्याद्मकार्विः तः इत्यतेनहितत्त्वेटः स्याद्माणानेश्य अद्धाः स्याद्मकार्वि

तु द्रश्यतेनहितत्वेदः स्याद्यानाः स्तो रुगति द्रशः ५ णानाशः क्षाता मानागः स्यादः स्तो द्रया वेदस्त याने व्यत् नवद्ये स्व एक कांक्षका कांनासः कांक्षक काळांशान्तरमाच रेत् ५४ दोषांशा

लांशकेषुक्तकालानास्य लांशकेषुक्तकालांशान्तरमाचरेत् ५४ शेषांशा <sup>मत</sup>्रकतः भवतः प्र अक्तिविद्येषभागेरासाःखगाःकयोः वक्रेसेटाः

भुक्ति विश्वेष भागरासाः स्वगाः क्रेयोः वक्रस्व टाइके स्वा पाप्यमालं स्वरं क्रास्त्र नेकम् स्वाहः क्षास्त्र परम्ये देशासं स्वाहः त्वाश्वाहें त्वाधिक्षः स्वाहः स्वाधेद्व मेक् त्वा क्ष्योत्तरम पर्तालव हेशोद्वस्यातः नं अपिनो अह्वतः सार्वित्र स्वाहः भाग्यानी स्वाहत्वाहित्याहित्याहित्या स्वावी स्वाहत्याहित्याहित्याहित्याहित्याहित्याहित्याहित्या स्वाहता स्वाहत्याहित्याहित्या स्वाहत्याहित्या स्वाहत्याहित स्थ्लद्दम्भहानयनम्.

योर्वनयोगादीः परिभाजिताः ४५ लब्ध घरनादि-विस्तान्त्र अस्त न्यूप्तं केस्तत्रभुक्तयोहदयारस्तयोः प्रतिमृष्टसारादेवभी व्यास्त्र विस्तान्त्र स्वास्त्र विस्तान्त्र स्वास्त्र स्वा

त्तामा पर दृश्यालमा विश्व पार्य स्तामा पर पर प्राप्त मान्य भवेत् हिष्टिकमा संस्कृत यह झान्य प्रवेटस्योदयकाले जुड मंग्री प्रवेटस्योदयकाले जुड मान्य स्वामा प्रवेटस्योदयकाले जुड मान्य प्रवेटस्य पर्वेटस्य परिचारम्

नंदिनंद्वार्यस्थात् । तां इताह्वयो भेद्रानंद्वी वस्तुत्वात् म् १०१ नहिभा कृष्ण नाता । स्कारत्यानाविसीपरवु वर्तते स्थूलहम्भ्रहान्य-अथवत्त्युलहक्तेरिवझानंद्वाग्रहम् १०२ स्वास्त्रक्ष १९५ स्टब्ह्याः स्वास्त्रक्ष १९६४ साम्यालस्यपुर्वा स्वक्यालेषुर्वपृथिमे रवेट्सो

ताच्य क्रास्यपूर्वा उन्यकपाले पूर्वे पश्चिमे रवेट भी-यहान्नेव क्रमनीहानंस्करकमा वन्ने परिका न्मित्व प्रस्यापक्रमी स्थन्ती ३०३ साध्यरादि २५६ प्रस्मितिहाने ज्या ११ प्रकारतिक स्थानित स

लधारपमाशकः व्यान्यस्तास्यम् हेच्याः पृथ्याः मास्तिष्ठ्वादिकम् १०७ कान्तिविसपयोभिनातुः त्यगोलेधनएकिम् अर्द्वगृंबायतेदत्वास्वेटे तीतिवर्षः मूर्द्वगो १०८ स्यानहरूत्येवरस्युकंस्त्रमम् स्रोत्वास्यान्यः स्तुतस्मृतम् तत्रदिकृष्णवर्षादेवीदेवादीकोडिकस्य

स्तुत्तस्मृतम् तत्रिदिक् पुरुषादेशे द्वारा प्रकारिक स्वाराज्यस्य स्वा

• ऋषक्षितिजयन्तेदृग्दन्ते दर्श स्वरोदिय ११४ तद्दल्ब-चर व्यस्तदलात्रत्र बद्धघंटीषुच ११७ उस्तेखड्वर्जितम् रुखातावुदया ११८ प्रस्फुटी

एकोत्तमैः

स्था स्स्मितिशास्तान्यनम्, देभारस्तेचोत्येकालेकुलार्कम् तस्यादस्तेचोत्येतद्वानयेचप्रनः पुनः यस्मा विक्रितियातित्तृतुत्तस्य स्फुटोच्यते १२० चेदास्त यादुर्ज्वतीक्षापातिहेनुत्तरा दश्यनेतद्वरूस्त्रम् तत्त्व हिद्दस्ते १२१ पश्चिमोत्यवेतपारं स्वति

त्तन् हिहस्यतं १२१ पश्चिमाद्यपुर्वाधायाद्यस्यतं १२ पश्चिमाद्यपुर्वाध्याप्यस्य स्वतं प्रश्निक्षास्य स्वतं स्वतं

चाइत्तेष्टस्यादिनेद्वात् १२८६ भान्यः मस्याद्व इ. म. इत्वत्रक् व्यवत्त्तः आपः श्वापिमन्दाः मोक्तान्थपाएउतेः १२५ सदेह्मवदेत्य

व्यापि सन्दाः भाकाश्वरपाद्धतः १२५ सद्हः भवदत्तः १ कः कामानोदयकालाद्दश्रिण्यात्तकानेनेद्रया रण्यादेशहः है कामानात्तिकारात्त्रकालाद्वरते चेत्रामानार्वादयकाः काद्रया रण्यात्तकालम्बया रण्यादेशस्य कामानार्वाद्वरा गर्यवराण्डहास्मानीहरूषात्

२ इंग्ट्नाइधिक कालादा जामियाता कालादाजास्ताद्रस दृश्यस्तासम्

धोपरै: पंचोदधिकोनकै: विस्पष्टनिश्रया एगाःपन्नमनिश्चयात् १२६ निश्चयात्मयादानांककः व्यंतद्ययोचितम् नस्यूलेनिश्चयंचाऽस्तेचो

त्तरेषुच, १२७। १३१४. श्रीलक्ष्मीवल्लभात्मजप्रमवल्लभविरिवतेप-रमसिद्धान्तेयदयास्ताधिकारोनवमः ८

म्याऽ पक्रम्भागास्तु यन्त्रांशान्त्रस्रालये । १

व्यक्षेमध्याद्वयंत्रांश ज्ञानम्. क्रान्यशाः स्वांकतः शुद्धा व्यक्षेनित्यं दिना

द्भूमिमएडलम् २ लंकारोमपुरादीना

संस्थितम् प्रोक्तंनाऽस्त्यःक्षभातंत्रत सच्यते ३ व्ययचरोत्पत्तिः

विज्ञेयमुत्तरायणम् स्वाऽयनंदक्षिए।।यनम् ५

दयात्परम् ७ खेटीदयचर जब्बसाऽस्ततः पश्चांत्तस १० संस्कारेतुत्यगोलचेत्त दोलस्यांचयास्थितम्

संस्कारेभिन्नगोलंचे दोलंखाद धिकस्यच ११ सं स्कारेगोलसाम्येतु संस्कारः स्यात्तयोर्धु

श्र्यक्षभापरु भाविष्वद्धा॰ त्तयोईयोः १२ एवंधिया खंटव्याक्षाऽन्तरस्याः त्रवेटाउपमांशकाः भवेत तत्स्वेटस्योधेयाक

वद्धानयनम्.

६।४० परुभादेशे ऋसाश २५।३।१८ स्याद् बर्गे ७७४ ।१३ ।५० ।१५ लंबांश ६०।५६ ।४२ क्याई कुम्पादा पता १८०३० ५।३) छंबांशक्याभागाः १०० ।१०।११।३ अप्रसांश ं क्या है पिंडपसाः १०० १७० तत्र । ३३। २०११ त्रानेन तो त्कं हत्या भादेशेलवंज्यार्डे ५०।१२।४६ तत्रपतकराः ११।३८।५०

ल्पेकाले मध्य भुजाउभिधम्

चक्रव्यासलवाः स्वष्टदाकु ब्रा

भवेत २२

<sup>💖</sup> ६६ श्राक्तांशदेबो पल भांगुलाः २६ ४५७ । ८ । ४० . तन्न ६६ त्र्यक्षांशानांज्यान्हींम् ५२ ।३० ।२४ ।३० 🖍 अर्थेदं १२७५ । ४१५३ अर्थेद पिएड पताः ४८५० २८३।२१ चक्र न्यासपिएड पलास्त्र स्माः ४१२५२४ ।२६।४५ चक्रव्यास लवाः स्ह्माः ११४।३५ं।२४ ।२६।४५ चऋव्यासार्ड् पताः सहमाः २०६२६२ ।१३ ।२२ ।३० ६ ।४० पलभादे रीपलक-

एहि १३।४२।३८।१।२८ न्यस्कर्णपलापिंडम् ४८४१८।१।२८

सक्ष्णासस्यकारुम् ज्ञायतन्त्रमं प्रक्यास्यात्त् स्या प्रज्ञभूमकाः १४ त्र्यसाद्याः कथिताः कुन्दृहिः मेतन्मीर्विकाभवेत् तस्या बाहुखुद्धाः प्रोक्ता क्ष्माः भूष्णाश्चयतिकतेः १५ त्र्यस्यभातस्यो वृग्योगम्हरु विभाजितम् त्र्यस्यभावनेत्तस्या वोभागाः स्व कतोतिकाः २६ त्र्यसात्राः सुरदेखादोक्षेणाः स्व कतोतिकाः प्रकृपान्तेषुणासाद्यान्यस्य स्व कतोतिकाः प्रकृपान्तेषुणासाद्यान्यस्य स्व स्वाः द्वाः द्वार्त्तर्त्वस्य व्याप्यास्य सत्तादाकाः १७ स्वाह्याङ्कित्स्य व्याप्यास्य सत्तादाकाः स्वाः द्वाः द्वार्त्तरस्य व्याप्यास्य सत्तादाकाः स्वाः द्वार्ट्जनस्य व्याप्यास्य स्व

तुराय पत्री एगा सावगानयनम् भिंबाद्वितानरे ऐवत हुवै: भकट अवस् र स्थानकृ इये इत्तराहसागो इवस्यच ३० भागोरिव पुत्रस् परमसिद्धान्ते

तत्काल इयेयोर्यत्रादीव

स्युःपढांशकाः ३१ ध्रुवनिश्चयम् . रिस्थन्त ध्रवसीम्याभिधं भवेत् ध्रुवयाम्याभिधंत-

त्स्यात्कुमेरोरुपरिस्थितम् १२ पदंयन्तिस्थानयो

न्द्रंव्यक्षस्थाः स्थिरयो ईयोः ध्रवमेवकदाचित्तुव्य-क्षदेशास्त्रिता नराः ३३ त्र्यवपश्यन्तिपूर्णवाकदा-चित्समयेदलम् रात्रीतमऽवपश्यन्तिकदाचित्रहि

तुल्लवम् ३४ त्र्<u>रालोकस्यन्तितचाऽयंतन्द्रवोय</u>दिर नवैः रात्र्यद्भारम्भयोर्मध्ये ह्येकस्थानेवह्द्यते ३५

स्थिरस्ततस्यानदाः थोक्तभिनेतनस्थिरोंभवेत् लम्बादाङ्गानस्, जेयाः <u>श्रुत्यार्य</u>माद्वारर्श्वलंबांशा यंत्रभागकाः ३६ वाऽक्षभागोनिताः खांकभागा

लम्बलवाः स्मृताः

त्राथप्रसंगात्कृन्द धारानयनम्. ऋक्षांत्राज्यादलाद म्यस्तकीलेपल भयोज्जतम् ३७ तलुदं धारकं धारं लम्बादाज्यादलं भवेत्

तोत्तरे ३८ व्योमेयास्य स्थिरस्थानानिजहक्पतनंभ स्यात्कु ज्ञीध्ययदृश्वनंतत्कु जाउद्देश्यंविस्तृते : ४० तुः ल्यंच्योममुखेयातिहक् स्त्रस्वस्व भूस्थलात् श्रथ यंत्रांशानयनादाविष्टज्ञानम्. त्राह्मिष्टोत्यखेटार्कजंखेटस्योदयंबुधैः ४१ भायंत्रां दादिगदाानामादायेसर्वदाखलु सावनीयमिहाच्या-तचक्रभ्रमणुजरेवः ४२ गुप्ताहोरात्रलिप्तोत्यमथच-ं ऋाटनोद्भवम् चात्रयं भाहोरात्र घटीतुल्यषष्टेयनुसार जम् ४३ यथायोग्येष्टकंरवेष्टरयात्त्वेष्टरचोदयान्तरम् ्युप्ताहोरात्रानयनंस्थूलम् . भुन्त्येंग्शांगांशयु क्तंत्रवागमार्श्ववेतया ४४ वेगभागां श्रून्यागवक्रवेगके स्थ्रुंस्योदिगुप्ताहोरात्रिके-

प्तादिकं भवेत् ४५ यथायो ग्येष्टाद्वयक्तानयनं

परमासिद्धानी

२६६

द्यास्तरफललिपाद्यस्पष्टदिनजातिकम् ४६ व्य कं स्वस्वस्फृटंस्र्येपूर्वांशासमुदीरितम् व्यक्ताद्य-

थोचितेष्टान्यनम् स्रम्मन्यक्तकलाः गुप्तारहोरात्रिलिसकाः ४७ शून्येनकींह्रुना कुनुध्-हिंसाद्यंतुयथोचितम् इष्टंनिजोद्याद्यस्येपूर्वाला

चाङ्मय<u>वशक</u>ुम् ४८ व्यक्तारत्यवऋवेगेस्या द्वय-

न्केष्टानयनम्, गुप्तयस्त्रोद्धनात्स्पष्टयस्त्रधात्तः द्ययोचितात् ४९ इष्टात्तज्जायतेव्यक्तांशिपिका पूर्वकस्फटम् स्पष्ट्व्यक्तात्सुहमययोचितेश

नंचनम् व्यक्तं गुप्तदिनाऽभ्यस्तं प्रस्फ्टाह्नविभा-जितम् ५० तत्सू स्मालिसिका पूर्व यथायो स्वेष्टजादपम्बनस्पष्ट घरमा ५ ई व्यक्त

देवांबीपूज्यमुत्तर दैत्यांबीदक्षिणुं द्एडप्रदानयनम् , इष्टेस्पष्टनतस् स्यसर्वदा ५२ तर्क घाः स्युर्छवास्तेषां भभुजोदएडदः स्मृतः द्रएडानयनम्, दंएडप्रदोद्भवज्याः गमुखंभवेत्. नतः द्एडप्रदाशानयनम् वधकेर भक्तं ज्यादे सुदीरितम् ५४ दएड पूज्य गुणंज्य र्ज्वभक्तकेरमिहोदितम् तज्ज्याःईद्विगुएंकिलास्याः क्यातस्यास्नुदोर्ह्यनाः ५५ दएडना दएड*द*ा वंशनाइतिवंशदाः वंशानयनम् भाशानाजीबाऽद्वे घ्रत्केरकम् ५६ चऋव्यास **शाप्तवंशमंशमुखंमतम्** बाद्यादिकाः कलाः ५७ नद्दशस्या

त्र्यथचराचारकानयनम्. किसादिकंचरं तर्किनि घमंशादिकं भवेत् ६० तज्याः. र्द्वचरदिकतु भागाद्यचार्कमतम्

न्त्यानयनम् . कीलाप्ततोटकाभ्युस्त् तंभवेत् ६१ एकतुल्याः क्षभादेशेचारकंक्रान्तिदिर्ग

तम् तहत्वानिबदेशाऽक्षच्छाययाचारकं भवेत् ६२ ·स्वस्थानेऽथैकतुर्ल्याऽक्षभादेशोद्भवचारकान् सर्व-स्रह्माऽपमानात् लिखिलापत्र के बुधैः ६३ चार-

कंलानियलैवस्वस्फुटाऽपमकोष्टजम् तत्पत्राचत-तोहलास्वस्यलादशभयाभवेत् ६४ स्वस्फुटचारकं

'चाऽथत्रिजस्फुटचारकम् लब्धचारकप्रमितस्यचं ६५ पत्रेयज्ञायतेको

चुल्याऽपक्रमभवेत् चारकात्पुलभानयनम्.

चारकंकेरका उभ्यरतं पूज्या प्रतीटको दृतम् ६६ के १२ कीलमत्तं पूज्यं भागादिकं ४।४६।२८।३०

प्ताराभस्यच कोट्यराज्या

सीम्य सीम्य ध्रुवेयातंज्ञेयंनित्यं विचक्तरीः ७१ व्यक्तरनोपरिष्टाच नित्यंतत्यूर्वे उक्तर्णः परिश्रमतिसं टस्यस्वोद्यात्स्वोद्यान्तके ७२ एवं अमिततस्य चिद्वमःस्तान्तरेसदा खेष्टोत्यापऋगोत्यसुप्राकृ

परमसिद्धान्त. बुएंडेलड्रहस्थलः ७३ यत्रस्पृशतिदृग्दन्तेत

र्योदयस्थलम् विज्ञेयनत्सरोपूर्वलक्षरारमद्भिचक्ष

दिस्मरएगयच

पश्चिमसंस्थेचस्चेष्टकालाऽपमोद्भवः तत्त्वेटस्थान भागस्तुयत्रस्पृशतिनत्रच ७६ तद्ग्रहस्याऽस्तदेशं स्यात्प्रोगंकस्तीत्सारोत्तया संखगत्येवत इयह तंत्राऽपिकथ्यते ७७ तत्त्वगाउस्त मयस्थानं शुण्डा नास्क न्यप्रशासम्

पितज्ञानम्, चक्रव्यासदलंब्यसवत्तेकेरंभवे-त्सदा ७६ चेत्युज्योन्भितकरेत्व्यप्रवाशोन्भिता तदा कोटि स्यालैरकेकोटिर्जायते छेद सङ्गकः ७९ चेद्राहुकएियोर्यत्राऽस्त्यायतत्रतहित् बा-ह त्वयानि कर्णानिकोटयोयानिकर्णताम्दर्भोते हीत्यं भुजा यानिकर्णतांचारायोः तिचेत् कर्ण चकेहि भूगमित्युज्यतुल्यंसदाभवेत् ८१ छेदमः

एोः ७४ यत्रस्पृदातितद्वयस्चिकेतत्राव्यक्रिक्यते

तत्वेटस्योदयस्थानमेवतदृष्टिकुएडछे ७५ खएडे

भाकपृध्विययोगानयनायः १७९ त्रयानसम्दानभाषितयि स्मात्कोटिधीर व्यानुकर्षेष्ठिनित्तिवर्गानितयि स्मात्कोटिधीर वृद्यानुकर्षेष्ठिनित्तिवर्गानित्ते प्रकारम् टिक्सप्रस्वययं मवत् हक्कोटिकपृथीर्वनिक्तान्तिक एकास्य एक्त्रस्वयं स्वत् हक्कोटिकपृथीर्वनिक्तान्तिक अस्य

स्थकः इक्षावायाद्दं प्रख्याहाः स्यात्ताह्मानरं स्विदिनाद्वे स्वयंत्रादा युएइ झानम् स्वाद्वाहाः द्वे निवयंत्राद्वाहः स्वो स्वादासमाः स्वताः स्वयं प्रहार द्वे निवयंत्राहः स्वो स्वादासमाः स्वताः स्वयं प्रहार द्वे निवयंत्राहः स्वाद्वाहाः स्वादाहः स्वयं प्रहार स्वयं प्या स्वयं प्रहार स्वयं प्रहार स्वयं प्रहार स्वयं प्रहार स्वयं प्रह

वास

यभ्रमार्गेए।कक्रा

३२८२ १४३) हक्कोटिवगीनात्प्रज्यवर्गाच्च यत्पदम्

·इष्टं २०११ - चरं र- ११४८ नर्त ७१० दारं १४१४३ १० नात्य शरंच १४। ४३।० न्यमसर्च ३१।४४।३५ पुरं ८६२४ ३।८।३६ चारकंद १०।५० 1२ इष्टे भाकपृरिद्धाः २६।१०1१३ कर्णवर्गः ६८४।५३।० **छावां**गुः लानि २३।१५।२४ लंद पलापिएंडं १८०३०५।३१ प्रज्यपिंडपलाः २०६२ ६२ पूल्यवर्ग ३२८२ ।४३।१ पतापिउं ११८१७७८१ प्रत्येघनम् १८८०८३ ।१६।२ पूल्यधनप्रतापिंड ६७७०८८७६२ पुल्यधनकीलभ म २२५६ ९८९ ।१२ । २४ पतापितंत्र ८१२५ १८ ७ १४४ ,

दन्द्र एडला थ हन्द्र एड ८५६क्रोटिर्जायतें. छदानयनम् हर्तके<u>र भ</u>क्तं व्ययश्चीर भवेत् नात्य व्यप्रवाएगोनितंत्रुएडं रुखास्यान्नात्यमार्गएाः इ त्र्प्रयव्यक्षचके शुएडाग्रस्थान चार-काग्रस्थान ज्ञानम्

व्यसचकेतुनुएडाऽग्रस्थानकबुधैः ९८ शुएडाऽ यस्यलके तत्रचारकाऽ यस्यलं भवेत स्थानज्ञानम् । तन्धुएडाऽप्रस्थकेव्यप्र

परमसिद्धांनी.

न्यं व्ययमार्गे एम्

तथात इयक्षचक्रस्य मस्तके व्योम सन्मुखे शुएड मूलस्थलं नित्यं विङ्गेयं गए। को त्तमैः १०३ **ऋ्रय भाक्**णानयनाय हिलानाका क्षिकाच्छु एडात्स्वे ष्टजंनात्म मार्गेए। म् तच्छेषकेरकुन्दाभ्याहलास्वेष्टेपुरः स्मृतः १०४ वंशिद्र वर्ष दोनाभ्रेखेटांद्राज्याः ईसंस्कृतम् सीम्य दक्षिणकंचस्वचारकंबंबाकादिकम् १०५ खेष्टसः शोद्भवंतत्स्याद्भागाद्यंव्यत्रमार्गशम् केरकुन्दांश

नित्यस्वाऽस्तोदयेकाले

न्ततयोः संधिस्थानयो रस्वकपाळयोः मध्यज्यारहः-

पुरसुएडाभ्यानतकळानयनम् घात घ्रव्यश्राऽक्षपुरमुच्यते १०६ याः कर्गानयनम् कीलपूज्यधने मं भोकर्णः

त्पुरभाजितुम् भाकणीत्तत्पुरानयनम् पूज्यसै वयनच्छ्रभाकर्णाप्तपुरीभवेत् १०७ प्रकारान्तरे-

ए।पुरानयनम् . ऋकमानस्यशंकोस्तुभाकएसि पलोड्नाः वेदेन्त्राश्चाकभूतत्वभूनागास्तद्रवृत्युः १०८ व्यञ्जबारगानयनम् कीलपुरुवधनकुण्णा कुन्दासंकेरकोद्भुतम् भाकरीनोद्भुतंन्यप्रवाएांस्या-. त्युज्यज्ञातिकम् .१०५ प्रकारान्तरेए।व्ययवाणा-नयनम्, कुन्दकेर वधेनासंपुरव्यथादक्षमीरितम्

तत्पुराद्यंत्रांशानयनम्, तत्पुरपूज्यकाप्तयत्राञ्ज ज्यादर्वसुच्यते ११० तद्विभेज्याभवेत्तस्या बाह्र-या यंत्रभागकाः स्युः ऋष्युयुंत्रांदोभ्यः पुरानयनं, यंत्रांशस्यकारर्द्रे प्रांपूज्यवर्गेपुरंभवेत् १९१

पुरशुण्डाभ्यानतकलानयनम्.

तत्पुरंकुन्द्केराभ्यांभकालब्धोन-शुएडकः स्यान्त-

यात्तस्याः कोटच राषड्छेवम् स्यात्तस्या दोर्ह्ववान्विताः श्रून्याकास्तर्कमि चचन्द्रकलाऽधिकम्. श्राथप्रकारान्त क्ष-बारकाभ्यान तकलानयनस् न्तिकालेतुचारकव्यग्रवाएायोः ११६ भेदहिगु

लब्धंतिमादिकं फलम् ११५ स्यान्ततस्वेष्टकालं तुप-चु बाएगं झाउत्यंननं भवेत् व्ययाऽशंनत्।अप्तिकान् हिलाखाग्नियमा कोर्द्धस्यात्तथानतम् ११८ परिद्वनारकेयुव प्रार्द्धन्याद्व भवेत् तिहू घ्रज्याभवेत्तस्या बाह्व-बारिश्वनंबार नेत्सम् ११८ षङ्क्षेत्रं जायते नित्यं लिसाः

कईकतीटकानयनम् २०००
वंतनतननम् अध्यप्रकारतन्त्रे एवित्राचनम् अध्यप्रकारतन्त्रे एवित्राचनम् अध्यप्रकारत्त्रे एवित्राचनम् अस्य प्रकारत्त्रे प्रचित्रकृत्त् भक्तित्व्राचित्रकृत्त् भक्तित्व्राचित्रम् १२० वेत्रस्यादेत्रम् मृष्ट्रकृत्त्र भवेत् १२१ स्त्राचन व्यव्याप्ति स्त्रम् लब्धंभगमुस्तवेत्रवित्राचतित्वस्य स्त्राच्या स्त्राच स्त्राच्या स्त्राच स्त्राच स्त्राच स्त्राच स्त्राच स्त्राच स्त्राच स्त्राच स्त्राच स्त

कर्णयोः वर्गनेस्पर्यात्रस्याहरूचक कुळो द्भवस् १२३ तम् कर्द् कतो टकानचनम्, केरमंचारकं ५०००११ स्वर्मनेकात्कद्दिकं भवेत् तेन मंधारकं व्यव्याः इसित्तुद्रकं भवेत् १२४ पळचातोटकारा मुन्नाह्नाः साक्रातिदिग्गतम् कर्दकं वायतेवातत् सितिस्याः ह्या स्वर्मनेक्ष्यात् ११७ प्रकारीते व्यवस्थितिस्याः ह्या स्वर्मनेक्ष्यात् ११७ प्रकारीते वर्गनेक्ष्यां स्वर्णनेक्ष्याः

साक्रांतिदिग्गंतम् कर्दकं जामतेवात् (क्षातिस्याः

है ११० मज्यारेते १८९२ १८५ स्मेननेशेकः इतामांतिरक्षे
पंत्रयाद् ११० मज्यारेते १८९२ १८९१ स्त्रोने कर्दकं साध्यः
सांश्रीदक्षेपवरिक फर्टनयाप्, तथान् पर्याप्तिके कर्दकं साध्यः
सांश्रीदक्षेपवरिक फर्टनयाप्, तथान् भ्राप्तादेते कर्दकं
हच्च असांश्रीदक्षेपवरिक फर्टनयाप्, ६१० स्त्राप्तिके स्त्रोने वार्वेद्र स्त्राप्तिके स्त्रोने वार्वेद्र स्त्राप्तिके स्त्रोने वार्वेद्र स्त्राप्तिके स्त्रोने वार्वेद्र स्त्राप्तिके स्त्राप्तिके स्त्राप्तिके स्त्राप्तिके स्त्राप्तिके स्त्रमुख्या १३ स्त्राप्तिके स्त्राप्तिके स्त्रमुख्या १३ स्त्रप्तिके स्त्राप्तिके स्त्रप्तिके स्त्रपतिके स्तिके स्त्रपतिके स्तिके स्त्रपतिके स्त्रपतिके स्त्रपतिके स्त्रपतिके स्त्रपतिके स्त्र

परमासिद्वानी,

ईलवादिकम् १२५ कटकानयनम् ईक्योः रुत्वासंस्कारंकएटकोच्यते देवादोदक्षिः

लोंशन्यार्द्ध

पञ्चेरक्षात्राज्यकार्त्सम् १२६

भागघ्रकटकं

गोद्धतंवास्यादंऽशाद्यंपलदिक्फलम् १२८ वासाऽ

राज्याः ई तुत्यस्यकएस्यि अभुजाहतम् कएटक तोटक पळकऐष्टि कर्णानां योधिक स्त्युज्याप्तः स्वस्थाने योव्याधिकस्तत्कीलामः स्वस्थाने हिरवेत व्यत्यव्यस्त झेवः तेषां वाते काति दिक्का अमास्यात् र्द्धनामं भास्यात् । शंकु घ्राश्च पुज्यं ६८७ ।१२।२४ फ्लापिड्स । २४७५,१४४ ।६।४० पलभादेशे पुज्यांशे घ कीलासं पलकर्णकलम् •।१।११।५२ तत्राक्षकएि १२।१३।३५ पिड पसाः ४५४१ ८।१ तत्राक्षांशाः २८।३।१८ तन्न्यार्वं २७।४८।३० पिंडपला१००१७० लम्बाद्याः ६०।५६।४२ सज्ज्यार्ज्य ५०।५।५।३१ पिंडपला १८०-६।४० पलभाव्यमुलो ४०० पलमा ६।४० वर्गस् 304 139 वध । २६ । ४०

स्यात्पलांऽदाज्याखएडाप्तं पलदि चक्रभू भुजानयनम्, संस्कारचक्रभूदौरस्यात्म ल दिचफलवेत्रयोः यहत्तकहर्व लम् संस्कृतं वेत्रभागे भवेत् १३३ युग्माभ्यातदिधिह्लाचऋज्याह्यऽभि धीयते तस्या बाहुछवाः खांक शुद्धा यंत्रखवाः स्मृताः

वावत तत्या बहुकवाः त्याक तदा व्यक्ताः त्याः १३४ य ब्रांडोभयइष्टयुत्पानयुन्म् त्याक्वयादाविन्छेष भागव्याऽद्वृहितं तस्य यन्त्रा राज्यादकेनासं तच्छकोरिष्ट भागवेत् १३५ प्रकारत्तरे होष्टकारी द्यायामुनानुस्यनम् प्रवृह्मित्रे २८० प्रसासिहाने किर्णयोर्व निस्तु प्रसासिहाने किर्णयोर्व निस्तु प्रसासिहाने । १२६ भाशकुम्या भाकणिनयनम्, अन्तु भावनं योर्था प्रमासिहान अपित्र प्रमासिहान । १५६ भावन्य स्त्र प्रमासिहान । १५५ स्त्र स्त्र स्त्र प्रमासिहान । १५५ तिस्त्र वाह्न स्त्र स्त्र स्त्र स्त्र सहस्त्र स्त्र स्त्र

स्या बाहुन्ववाश्वस्ययुत्राद्वाः परिकीर्तिनाः पुरुप्तानम् असामान्य असामान्य स्थानिक विद्यानिक स्थानिक स्थानिक

प्रकारान्तरेणिदिगशानयुनम् २८१ स्मामीनिवधस्त्राऽद्वैतिहोपादिष्णिगित्तरा स्पष्टिदग्धुनस्पष्टचक्रभूसुनयोरानयनम् स्कृत्युन्ते कृत्युन्ते स्वत्युन्ति स्यानेब्यनत्तात्वचक्रभूसुन्यागित्वा । १८२ स्यानेब्यनत्तात्वचक्रभूसुन्यम् १४४ स्याद्ध-प्रमाभक्ताविध्येशिदिसुनस्फुटम् १४४ स्याद्ध-स्विदृन्त्वोमन्दस्तत्त्याद्याऽत्यरीतिना मामक्त

वाविध्यशाश्चदिग्बाहाने घाःस्वेष्टभय

तस्याः कोट्यंशकाः प्रोक्ता दिग्दोदिकारत दिग्लेवाः त्र्यथैक के रजदण्ड वंदा ज्ञानम् पूज्यासदेएडद ज्याङ्केस्याहएडचैक केरजम् १५२ वदादज्याद्रुं पूज्य भक्तं स्थादे के के रजम् वं बात है-केकेरोत्थंकेरें घं प्रस्फुटं भवेत् १५३. श्रयेष्टयंत्रांदादिगंद्याभ्या मक्षप्रभानयन सीम्यादृक्षिणतः सीम्ययाम्याः स्यःस्वस्वदिग्लैव प्रोकेपश्चात्सन्मुरवाः स्वरवपूर्वपश्चानतो द्वा दएडानयनम् विधिन्ना दिग्लवज्यांशास्त्रिज्य

प्ता दएडमुच्यते चक्रभूभुजानयनम्.

वैवदक्षिणचाऽसुरोऽवनी १५५ **ङ्कतंपंचिन्द्र**लिसाउधिकभवेत् राच्छेषभागकाः षड्भक्ताः नतनाड्यं गं घातादार नेत्रामोनतदि क

केरासंतोटक कील गेह झपेड्डक भवेत्। बाए। वाक मितं भूपेतुत्यंवाकत्पये दुजम् १६४ पहकं तु भुजे नैवहलातल्यानिदिग्गतम् ज्याकुळजायते

स्द्वहारानयनम्. युक्लाकल्पितस्य भुजस्येव

१६५ वर्गेशंकु कतितस्यम् लस्य हरोच्यते-सद्य-व्यम्भदारानयनम्, न्याकुलोद्धीःक संस्कारसङ्ग-व्यप्रशरमतम् १६६ सद्यधारानयनम् ,सद्य-

राहोद्धतंन् घेपूर्वयस्यात्सीय धारकम्प्राक्षन्दाः सद्यमेषुणाभक्ता लोलमाक्कुन्दको

भाज्यानयनम्, सद्यधाराहतसद्ययप्रार्देसं

भाज्यसुच्यते पलभानयनम्, भाज्यलोलसः मंयेनलिधकाउत्पभुजेनच १६८ कत्यितात्तदुजाः हाँहं कत्मयेन्तुततस्ततः बाह्वासंन भुजासनमः सँकेंबेवमेवहि १६८ तत्प्राक्कन्दसमंसद्य

चेन अजेनच कत्पिते नैव त द्वाहु स्तद्देश प्रसाभवेत् १००

विधिचक्रभूभुजदंडाशानावासना ५८५ यवळीळसम भाज्यं जायते तत्रच स्फुटम् आकुन्देनीः नितंसद्यधारस्याद्दोस्समाक्ष्मा १७१

दुर्खवंदाांदानतकलानांदिग्ज्ञानम्. दुण्डवंशनतास्तुल्यदिकाः स्पुर्दे किएगे त्तराः विधिज्ञा-

नम् विधिरत्रोच्यतेयंत्रभागगम्यज्यकादलम् १७२ त्र्यविधिचक्रभू भुजद्एडाद्यानावास नाः बीर्षीपरिगतार्काशंमध्यारकल्वज्वकीर्त्तितम् मध्याः <u>कान्नतुर्यत्रांशस्था</u>नेखेस्याद्गहस्यलम् १७३ ता द्मविधिजीवाया बाएगांशप्रमितस्थले जुन्मध्यां क ते निज प्रवेडिन्य कपांछे-

न्तिचक्रकुबाहीस्तुत्वपूछस्थछंभवेत् सीम्बदिस्ए।

परमसिद्धान्ते

३८६

कितेयत्रस्वमूलस्थानती विधेः

बासम्मुखाश्चन्नजनिहि १७५ जीवास्त्रदलांद्या-स्तुचऋभूभुजसम्मिताः दंडमूलस्यलनञ

रम्भक्रभवेत् १८० यात्रशेषेष्ठि भागजम् अन्योक्तवानतभुक्त भाग्यध्र

तम् १८१ प्राक्षपरेवाकपाछेतुभोग्यारुभोन्य ए। कत्वानतकला ह्वीनंप्रस्फुटाइद्वबंधिनवेत् प्रस्फुटाइह्राऽर्द्धस्वव्यक्षाइह्राईयोदरन्तरंचरम्

स्यानेषांगुए।भागद्विचारकऋगन्तिदिग्गतम् ऋथेष्टभादिःभागाभ्यापत्रभान्यनम्.

चतुः पूर्वोकत्य यित्वापलप्रभाग्१८४ क-<u> चिता</u>रक्षप्रभावर्गदांकुवर्गयतेः पदम् स्या वर्णस्वेष्टभावभीनस्वर्णयोः १८५ ऐक्यमूळतुविज्ञेषं

ग्रग्रावासना.

एडेतोत्तमेः तोटकांडशकभाकए ज्यांशकोद्धतम् १८६ कीलमानाशकेराप्तप समीरितम् नित्यकर्णाहतंप वेत् १८७ तहाहुसंस्कृता

सभा मध्यदोजीयते दिग्दौरिंगते १८८ स्यान्तन्मध्यभुजंयत्रतत्रसारविताऽक्षभा त-

देशपल माझेयाभिनामध्यभु नयदा १८४ दिग्यु-न स्वात् जालाऽसभातत्रक्षितासाऽसभाभवत् एवपुनः पुनः कबार्चानयेटास्फुटाऽंसभाम् १५० कलि-

तारक्षप्रभास्यूलास्क्मासन्प्रवर्तिनी बुद्धारन-राञ्जुपातेनस्हरूमास्यात्कत्यिताः सभा १८१ हा-दशोन्मितकीलाइक्षछायामः धकरोन्मिताम्कल्पयिः त्वातुत्तकोष्ठेर्युग्मैभूपतिसम्मितैः १९२ प्रतिदिन्यं

राही: पत्रमद्भाकणीविनिर्मितम् तत्कोष्ठैः रवभतुः त्यैर्वासंढिखेत्त्वसुखायच १८३ ऋग्रावासना

क प्रत्यप्रता पिंडम् २०६२६२

२८८ परमसिद्धान

इच्छापलकानिशाज्य प्राक्ष्मलताटक भवेत् ज्यापालकानितकार्ग्वच्यामिर परपलम् १९४ इच्छा क क्ष्म

त्र्यन्यवाद्धातुभाकर्णमूपरादिस्तुतन्तरः त्र्याप्तिः त्राभिधात्रानिदिगतोदक्षिरोत्तरा १८५

पलभा सूलाग्रस्थान ज्ञानम्. मूलाग्रेपलभायास्तु स्तः खब्यक्षनिजस्यली

श्रामायात्रप्रमुक्तस्थान्त्रानम् श्रमोद्भेत्तेच्याऽप्रायाः स्वादिष्टेरवेचरस्थल म् ५६ श्रीकृतिहर्णे श्रीकृतिऽधाउवेनीगोलेक्यश्कुएडलभूस्थले दक् पृथ्वीचकपट्टस्यादऽप्रामुलस्थलितौ १९७

ग्रस्मादिन्द्रान्म्, स्वाऽक्षाभनस्वाऽमतोब्द्र-स्वात्स्य क्ष्णिः स्वस्यस्यस्यस्यपुरीरिता स्मृश्लादिन्द्रानम्

कानिदिक्संसुंबाव्यक्षात्वेदाऽप्राही छनास्यता १९८ चक्रभूभुनानवनम् विधिदिरसुंजयो <u>पानिम</u>िष्टाभाभाजितफलम् तचदिरबाहुगोलेतु

चक्रभ्रवाहुरुच्यते १५५ नतकलानयनम् चक्र-

नघ्नित्रवार्द्धकेरकोद्धतम् २०० तल्लब्बब्यादर्रज्ञे-यंतिहूँ घ्रमोर्विकाभवेत् तस्या बाहुळवास्तर्क भ-न्ताः स्युर्नतिक्षप्तिकाः २०१ याम्योन्तराक्षां श्रादि-क्पलदिक्फलानयन्म, चेहेन्चकभ्वाहुँगे-हरू वैक्यस्यात्तदान्तरम् दिंभैदंचेद्युतिकृतानायते प्तंधारभागममः शहिक्फल्संज्ञकम् कंटकंसा-दनेनैव धननतङ्गानम् ज्ल्यमिष्ठोत्यकंटकम्

ं पर<u>ुदि</u>क्फरुम् २<u>०२, कंटकानयनम्</u>, पाता-२•३ स्यात्तत्रस्वनतम् ऋगानतज्ञानम् . चेत्स्या-द्विनंनतमृएम्भवेत् पार्श्वानयनम् त्र्यसभाग-ज्यकाऽई घंकर्ष्कंतु संगुद्धरेत् २०४ प्रज्यांदी जि यतेपार्श्वपलदिक्षेलिदिंगातम् बोधकानयनम्, वेत्रपार्खीशस्ंस्कारंसंविधायचतत्स्तेतो २०५के-दारस्यकतिंयुक्त्वात्नसूलं बोधकं भवेत् प्रकारान्-रेण् धनर्णनतज्ञानम्, नतिलेसा धनर्णाः स्युक्तः ष्ट्रकलानयनम्, तान्धनाख्यान्यतकलान्स्वाऽ ह्राउन्हीत्परिवर्जिनम् कलाहीष्टंभवेखिमान्तानृणा

-नवामितोनितम् २०७ कलास्वादहारईतस्त्यक्ला तत्त्वेष्टंव्यक्तमीरितम् स्यात्स्वाऽद्वस्यस्फुटाऽद्वं स्यात्त्वव्यक्तंस्वेष्टकंस्फुटम् २०८ इष्टंपूर्वाऽक्ववं

यति घस्रं लिसादिकं भवेत् स्वाउद्गाउद्गीद्धीऽहा स्वेष्टं शेषाद्भोत्थेष्टमुच्यते २०५ धनएनितकाल स्वव्युसाऽहाऽधिके घस्त्रेचाँ इसाराकाँ-भेदस्त्रणा नत्कलाः स्युः कान्यशाऽ १ व माजनार्वे १९० दिस्साम्येता नत्कलाः स्युसदा ऋथेष्टाद्यथोचितेष्टानयनम्.

त्फलं लिप्तिका पूर्वियथा योग्येष्टमी रितम् त्र्ययदेशदिवसाधन विधिः पश्चिमदेशनतम् त्र्यन्यस्थानाभिजस्थानं

गुसघस्मा हतंस्वेष्टे प्रस्फुराइह्नविभाजितम् २११ त-

स्तद्वरवेटों प्र<u>मांश</u>काः २१४ देशतोटक ज्ञानम् त्र्यन्यस्थानपर्वाशानांज्याङर्द्धस्यात्त्रयतोटकम्

देशकेरम्. व्यवाऽन्यस्थानलम्बांऽशजीवाऽर्द्धकेर-कं भवेत् २१५ कुर्दुस्थानान्तरानयनम्, दशाइनः रावेकदिक्कीरतः पूर्वीचाऽपरीयदा देशाउन्तरा उत्तरं कुलास्वाद्भयोर्देशयोस्तदा २१६ ऊर्ज्यस्थानाऽनः रंज्ञेयंदेशदिक्साधनेबुधैः देशौनरोुभुकदिक्षीसः ं स्तयोर्देशयोर्येदा २१७ देशाइन्तरयुतिकत्वाचोर्द्वस्था-नाउन्तरोच्यते. देशनतानयनम् उर्ह्स्थानाऽ-न्तरनाडीपूर्वप्राक्पश्चिमनतम् २१८ विश्चेयुत्तसः

तकलास्तर्किनिद्याश्वभागकाः स्युस्तेषां सुभदीर्भी गपूर्वेदएडप्रदंभवेत् २१८ देशदएडानयनम्.

परमसिद्धान्ते

सभागासदण्डम्भागमुखमतम् २२० देशवंशा-

नयनम् . दएडदांशकश्रून्यांकविश्लेषांन्यादलांश-काः केरकस्यांऽ दाकेनि झास्त्रिज्याखएड छवोद्धताः

२२१ लब्धंवंद्यां दर्शकाः प्रोक्ता देशदिकसाधनेख-लु नत्राक्षप्रभादिग्ज्ञानम् . स्वदेशपलभाऽक्षां

शलम्बांशाश्चयथोचिताः २२२ देशदिक्साधनाः र्थेतु विज्ञेयास्थाऽत्रपि्डतैः त्र्यतःपूर्वेक्तिमार्गेएाये-स्युस्तत्रदिगंद्राकाः २२३ तेद्रन्यदेशदिगंद्रशाःस्य त्स्ययंत्रादिभिर्वधीः २२४ तर्ड्नेसीम्ययाम्याच्यह

श्वाः अंदेराजवैं भवेत् भूमोदिकुसा ऽन्यदेशादिगंद्रशकै : तुल्यस्थलेलिखेदंदकं तत्केन्द्रादं ऽकृ दिग्गेतम् २२५ स्याभित्यमः न्यदेशंतुचाः यः भमहद्युसारो व्यक्तरत्त्वभू रत्त्रचोगदेशतुजायते 🌳 देनांशे दक्षिणाक्षांशासत् उत्तर ऋांत्यं शाः शेयाः दैत्यांशे उत्तर् पलांशास्तु दक्षिए। आंतिलवाः झेयाः पूज्यपल पिंडम् २०६२६२ २२६ - प्राक्षे पश्चात्सितिगीलस्यप्राक्षे पश्चा द्वागके ख्तु. इतिदेशदिक्साधनविधिः **ऋथस्वेष्ट्छाययादिक्**स

टिः कोटि ज्यकोद्रुम् २२९ द्विष्ट्रांतद्विः भुजन्तवा दिग्वाहुँ ज्याध्राभवेत दिकोटिं द्विगुर्णं कत्वादि क्कोटिज्याधरौभवेत् २३० हिघेलेखुँभा सुरू क्रपालेखेसीम्येतद्रोग्यक्रएडले कपालेपश्चिमेयाँ

परमसिद्धाः

परकपालके त्र्यशोत्तद्याम्यदिग्व

म्यदि भुजे दिग्वाहुज्या ग्दोज्य[धरोऽम्रान्तुकाष्ठाका।टज

याम्योत्तरङ्गेयं चत्ते बधा बुवत्समे २३८

चक्रविस्तारदिक्कोटबोघोत्रमिष्टभयोद्धतम् ज्यास्या-

सीम्यदक्षिर्णतःसीम्यदक्षिणीःस्वस्वद्भिन्छवः श्रून्याः कैः प्राक्रैपरस्थानंस्यात्स्वस्वप्राक्परेनते २४०

धनम्.

रकिततथा त्र्याशांत-स्ययथायोग्यां पूर्वियाम्यापरोत्तराम् २४१ तत्केन्द्रस्थ

विज्ञेयास्वस्वसम्पर्की २४२ एकांगुलाल्पप्रभा-परिश्रमम् तत्रातस्तदिगंदीश्वतद्वयादिग्भुनं

कालेदिगँशाभापरिज्ञानम् , तत्वेचरस्यभायत्र द्वादेशोन्मितरांकुजा एकाउल्पाजायतेतत्रदिग्भागान श्रंथतत्त्रप्त एत्ताख्यपंत्रे तद्वय**क्षक्र**एडल २४५ सर्वोच्चस्थानतः पूर्वपश्चिमेत्राकृपरेकते नताः मांगेघातां इशानुल्यंस्थानेहित हुढम् २४६ दलाः निजस्थलात् याम्योदकार चस्वव्यक्षदेशान्त्रिजस्थलम् २४८ स्वाऽक्षांश्र नस्थानेसीम्यस्यादुत्तरिसतीं याम्येयाम्यक्षितीं झे-न्यंयाम्योद्कुएडलस्यच २४८ सर्वोच्चस्थानकंतुसः

गरमसिद्धान्ते. २५६

खाँषाञ्जांशोन्भितस्थानेस्बब्य-क्षाइधःस्थलं भवेत् २५० स्वव्यक्षार क्षभागक प्रामितस्थले चिजभूसेरु द त्युत्तरदक्षिणे २५१ चाम्योदक्कुएड चनोपरिस्थले युक्लायंत्रांदाचनस्य सर्वोऽधो-

भागकंतथा २५२ सर्वोच्चांशस्थलं युक्लास्वस्था-नाउधींऽशकस्थेले योग्योदं क्कुएडले तस्मात्तद्मनाः राक कुंडलम् २५३ प्राक्षेपश्चात्स्वकपालेतुदृग्द-न्ताऽभ्यऽन्तरस्थलेयद्भागेयातितद्भागयाव हेर्कु जस्यत् २५४ सीभ्याद्वादिशागाद्येदशाः स्युस्तेस्यु र्नित्यदिग्लेवाः भूमिदिक् साधुनंचाऽन्यदेशदिक्सा-धनंबुधैः २५५ कर्त्तव्यंनित्यदिग्भागैः खेटीनामुक्त विधिकीलवधंयंत्रांडशच्याः द्वीप्तंतुतत्फ-

लम् २५६ स्यात्स्पष्टभा भवेद्यंत्रां उदीरं ज्यादेलं विधिः सर्वत्री नत्यंत्रां ह्याः यंत्राद्याः स-'मुदीरिताः २५७ 'तद्यक्षकुएडलस्याऽपिसंर्वोच

शारु द्वीयाः स्पृत्तेशापास्त्रातं भवेत् पत्राप्तकः मर्चतुक्कालंगाः स्पृत्तेशापास्त्रकं भवेत् पत्राप्तकः मर्चतुक्कालंगाः स्पृत्तेशापास्त्रकं मर्चतुक्कालंगाः स्पृत्तेशापास्त्रकं मर्चतिक्वालंगाः स्वातं स्वतं स्वतं पत्राप्तकः मर्चालं स्वतं स्वतं पत्राप्तकः मर्चालं स्वतं स्वतं पत्राप्तकः स्वतं स्व

स्थानंसर्वत्रसमुदीरितम् २६५

ऋं उत्ते व्यसस्थानां वाकात् उत्तरऋंती उत्तरे दक्षिणकांती दक्षिणे ऋत्यं वापूर्णस्थाने ऋत्यं तकः स्थानं स्थात्

दिकोटिकेंद्रतः पूर्वेस्त्रे पूर्वात्परा ब्ह्रजे इष्टे प्रवी ८ परे दलादिकोट्यभें इकगालिखेत् २६६ चिद्वाचाम्योत्त-

रेदलादिग्बाहंचयथोचितम् दिग्बाहोऽरग्रदेशेतृत-दृढंस्थापयेनरें में २६७ केन्द्रकीलाँ द्रियोर्मधंस्त्रत्रं

स्याद्राअवोन्मितम् पूर्वेषश्चिमयोर्मध्यप् रितम् २६८ केन्द्रकीर्रीऽप्रयोमध्यस्त्रेणार्जीकर्येद्र हम् , त्र्याकाशेवधा व्यवा- जले

दिम्बाह्न ऽग्रस्थलेतीय स्थाप्यतच्छे श्रम्ब कीलाभ योमध्य

रो कीलामादर्शयोर्मध्यस्त्रेरों। लोक येत्तथा २०१

वाकपालेयथायोग्येतद्यंत्रांशोन्तर्तेऽवरे त्र्याशायां ग्लवोक्तायाद्रष्टव्यचैवरवेचरम् २७२ दृश्यन्तेनिमल

कारोनिस्तेजाः खेचरा निश्चि नित्यतेजोर न्वितः सर्थः

स्वर्गविदिवाकरः २०३

ऋथाकृदिनां गुप्ताहोरात्रान्यनं व्यावहारिकम्,
सावनीयपूर्वाः मानवनाः आर्गाः ग्राह्मस्य स्वर्गवहारिकम्,
चर्चार्विकायोदेवातह्यावहारिकम् २०४ गुप्ताः
स्वर्गविकायोदेवातह्यावहारिकम् २०४ गुप्ताः
स्वर्गवृद्धाः

त्ता का राज स्वार्गानाकलाल पूर्ण द्वाराक्ष्या पाना वर्ण का निवार के प्राप्त का प्राप्त

दुःस्तुं प्रिमंद्युनिद्योग्यसिः यदिद्यद्वयाभिस्तुत्या वेर्ताभागा विधोस्तदा व्यक्षरेरवांगतेर्वज्ञेव्यक्षदेवासि-तान्तरः २०७ चन्द्रोदयभारोजन्द्रंयवास्यानितस्य-

तत्रैवहीनचन्द्रस्तुतत्कालेतत्रवीस्थते तत्स्थानात्यूर्वे देशेतुभागैर्द्धादशाभिमितैः २७<u>५.</u> तत्कालेसंस्थित-

स्तत्रकालयुग्मेकलोन्मितम् यातंभवनितत्स्थानस्त्रा नहि पर्श्यंतितत्रापि व्यक्तस्था श्चनरा विधुम्किन्तु तत्स्थानतः पूर्वदेवीचन्द्रे स्तुलानितः

२८१ तत्रेन्द्रोर्भक्तिभागानां लिप्ताः सिद्धोन्मिता गताः तत्रकलाइन्तरं ज्ञेयं विघेटी भिर्यगी नितैः २८२ तत्काः लेखोदयस्यानेलागच्छत्येवचंद्रमाः त्रप्रत्राताञ्चिष

लायुक्तयुग्मलिसाइन्वितंतथा २८३ तंज्ञेयंगुप्ताउहोरात्रकंविधोः भारकरस्योदयात्काढा

हितीयाऽकेदियक्षएाम् २८४ यन्मितंजायतेङ्गेयंतह थैः सावनं दिनम् तत्सावनं दिनं भानो र्री साऽ हो रात्रकं भवेत् ३८५ भारेकरादिजवसर्वे झेयं सावन घरनजम् तिथिनश्तत्रपूर्वीणांपंचांग घटिकाहताः २०६ स्ताव-नार द्वकडाः खागेभाजिता स्तुयथोचिताः विज्ञेषा

ान्यस्थानपलाशानयनम्.

चक्रभागांकितेशुभे संविधायनि

भक्ता भूरत्तपादाऽशयोजनैः स्यालवादिकम् २८० त्रहित्वारवाकतस्त्वद्रन्यस्थानयत्रलवाः स्मृताः

भवेत्. २८२ कोटिबॉहु अवाए। तुयुत्रैक नियम नहितत्राऽनुपातेनद्वयोऽरपरमानयेत् २९३ एकाऽ धिक्यलुष्ट्रेलेनतत्रचीधिकताऽल्पता भवलेवत्रयौ-एगनुकोटबाँदीनाचनिश्चयात् २५४ दिग्भुजानयनं.

दूरदशंकयंत्राद्ये हे शुकेन्द्रात्परस्थेलेम् उ ग्रयांगुलाहताः पूज्य वानातकोटिज्या विधि धात्रिज्ययोद्धता विदेश्वंस्योद्धागार्धचऋभूभुजम् २८८ स्त्रय्रोन-यनम् असाभाद्रिणतोयत्रदिग्मुजः परुभाउधिः कः तत्रतद्विग्युजेहित्वाद्यदक्षाभामध्यका भवेत् २५५ परुभादिग्गताचाडथपरुभादिग्गतोयदाः दिग्भुजस्वऽक्षभादसः स्याददक्षभादिग्भुजां दत्स् २०० कलातभिजभूमेरुदिकाउग्रास्ममुदीरिता नि-

जभूमेरा दक्षचेदि ग्भुजंयत्रतत्रतु ३०१ दिग्भुजेड क्षप्रभांयुक्तास्याद् रश्रामे रु दिग्गता

ऋय तोटका नयनुम्

कुन्दारीस्ताडितास्वाडमास्वाडमार्कणीयुक्तेवृत्त २० जायनेतीटकंस्वाडमादिग्यतंभागपूर्वकम् भाकृणीः नयनम्, त्यातोटकोद्धृताकुन्दिनम्राडमाभाद्युकिम् भवेत् २०२ कुन्दानयनम्, त्र्यप्तमार्थ्यक्षु ण्यतोटकं धारकंमतम् क्रान्यानयनम्, तोटकं द्विगुण्कलान्यास्यानस्यास्युद्धिवाः ३०४ होयास्त्रोटकदिक्कास्यास्यानस्यास्युदेधिवाः ३०४ होयास्त्रोटकदिक्कास्यास्यानस्यास्युदेधिवाः ३०४ होयास्त्रोटकदिक्कास्यास्यानस्यास्युदेधिवाः ३०४ होयास्त्रोटकदिक्कास्यास्यानस्यास्यास्योदिक्षाः

्रश्रथाहोरात्रज्ञानम्.
पष्टिकिसोन्भितं झेयंक्काहोरात्रसं झकम् ३०५ ग्रप्रचिकिसोन्भितं झेयंक्काहोरात्रसं झकम् २०५ ग्रप्रचेत्रसं स्वात्रसं स्वात्रसं स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वतः स्वातः स्वतः स्वातः स्वतः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वतः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वातः स्वतः स्वातः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वतः स्वातः स्वतः स्वतः

त्र्यथ वंशानयनम्.

नतिसास्तुर्के प्राभागः प्रोक्ताः श्वपिष्ठतैः तेषां स्वयुद्धतेवा बहुँ पैस्तद् एडप्रदोभवेत् ३०९ तत्कोटि स्योद्धकेरि प्रप्रचोद्तम्प्रदेशे प्रपादकिर्वेकः अधिक्षेत्रक्षेत्

श्रंथचक्र भूबाहुपुरुदि क्फलाभ्यांव्यस्त. संस्कारा देत्राचयनम्

दिक् साम्याचन भूबाहू प्रतिवस्मत्वयोषि ११५स त्त्रयोर्डन्तर्कवाविभेदं नेत्तयोषुति तहेन मुच्यते त्त्रोर्डन्तर्कवाविभेदं नेत्तयोषुति तहेन मुच्यते त्रोहकान्यनम्, वेत्रकृत्यमध्यमाजितम् ११६

तोटकानयनम्, वनकुत्त्रम् महुज्य गाजनम् २१६

त्र्यथान्यस्थानयंत्रांद्रादिगंद्रााद्युद्भवतोत्क दन्यस्थानस्याक्षांत्राानयनम्

क्तार्यास्थान स्वास्थान क्रिकार्यात्रा क्रिकार्यात्र विकास क्रिकार्यात्र प्राप्त विकास क्रिकार्यात्र प्राप्त विकास क्रिकार्यात्र प्राप्त क्रिकार्या क्रिकार क

स्विकास्तु इत्यस्थान प्रताशकाः व्यक्षिते स्विकास्तु इत्यस्थान प्रताशकाः व्यक्षिते स्विकास्त्र स्थानस्य स्विकास्त्र स्थानस्य स्विकास्त्र स्थानस्य स्वामार्थः स्थानस्य स्वामार्थः स्वामार्थः स्थानस्य स्वामार्थः स्वामार्यः स्वामार्यः स्वामार्थः स्वामार्यः स्वामार्यः स्वामार्यः स्वामार्यः स्वामार्यः स्वामार्यः स्वामार्यः स्वामार्यः स्वामार्यः स

न्तः दशन्तरकशयन्तुङ्गयसायन्यातकम् स्वेटानां सावनीयतुद्शाऽन्तरफलम्भवेत् परमसिद्धाने.

सुत्रानयनम् लिप्तिकाद्यनतेल्डन्यस्थानयत्राह शको द्वम ३२१ प्राकेपश्चादेशजंतत्त्रप्रा क्याश्चा त्सत्रमच्यते स्वदेशेदेशांतरज्ञानम् स्वदेशाः त्पश्चिमें मध्यरेखास्याद्यत्रतत्रतु ३२२ प्रोक्तंदेशाऽ-

न्तरं पूर्वस्वस्थानां सूर्वभातयाः मध्यरेखा भवेत्तत्र पश्चाहेशान्तरंमतम् ३२३ स्वव्यक्षान्मध्यरेखाया म्लानां योजनास्तुये स्युव्यंसकुएडले भूमो ते विषे

द्यास्वभाजिताः ३२४ भूपिएडयोजनैर्नाडीपूर्व शान्तरंभवेत् श्रान्यस्थानदेशान्तरानयनम्.

पूर्विदेशाऽन्तरादुः ह्वीपश्चात्स्त्रत्रं यदा भवेत् ३२५ स्त्रः वेदेशाउन्तरहित्वाशेषिक्षिमेन्मितंतदा पचादेशाः न्तरंतियमार्ग्यस्थाने विचक्षाणीः ३२६ प्राप्टेशाना रं तोऽत्यंचेत्यश्चाल्यत्रं यदातदा हिलादेशाउन्तरेस्त्रं. तत्यांग्देशाइन्तरं भवेतं १२७ पश्चाहेशाइन्तरेपश्चा-त्स्त्रयंत्रहि नायते स्त्रं देशाः नारेयुक्तास्यात्तदेशाः 'उन्तरपरे ३२८ तत्पूर्विद्धयसूत्रेतुस्यात्मा <del>दे</del>शाऽनर

पश्चाहेशाऽन्तरंयत्रस्त्रत्रंप्रवीऽभिधंभवेत तहेशाउनाः रतोत्पश्चेत्स्यात्स्त्रत्रंस्त्रसंज्ञकम् ३३० तर्हि

न्तरहिलापश्चाहेशाङ्चर भवेत् अर्हु देशान्तराचैवः यदिपश्चिमसंज्ञकात् ३३१ स्त्रप्रसत्युवसङ्ख्यस्-श्रेदेशाङ्चरतदा हित्वाशेषीन्मिततश्रपूर्व देशान्तरं

त्र्यदि क्साधनवन्त्रिमन्दर्वन मस्थाने नाच्छायाऽग्रस

र्वाऽक्रेतंत्रथेवचं ३३४ संस्थाप्यसतत्पस्यत पश्चिमारभिधे यस्मिन्नेवस्रएोर्जाकोराभाग्रयत्रकुरुढले ३३५ संलग्लेबत्जाःकंकलालक्षणयोस्तयोः मध्ये मीव्यक्तिरेखां दलारेखां दलस्यलान केद्राद्भिगारेखांत्याम्योत्तर

स्वस्थानाऽदन्यदेशस्त्यहिग्भागगतोभवेत् ३३८ तहि भागसमुत्पना प्रमाज भाकर्ण भाजितम् अपर

दंज्याभवेत्तस्या बाह्यशा यंत्रभागकाः ३३८ स्यर् षाकोटिभागघाः कुपरिध्यधियोजनाः खाकासा योजनाः स्वाज्यस्यानमध्यगताः स्मृताः ३४०। ३६

श्रीलक्ष्मीवल्लभात्मज्ञप्रेमवल्लभ विरचिते

परमासिद्धान्तेत्रिप्रशाधिकारोद्शमः १०

श्रय यंत्रांत्रापरिकेरवर निजभूमेरुखब्यक्षमध्येक्षांशब्यकादलम् दे प्रोच्यतेकुन्दं कोटिसंज्ञक्मीरितम् १ झेयतेव्यस्ते भुजकोटिके स्वपृथ्वी मेरुस्वव्यक्षाः

स्थानव्यस्का इन्तरे २ विज्ञे येल इयस्वव्यसा इधी के अर्थेद पिंडमताः ४५.५० २५ ३

व्यक्ष स्थानतस्त्रथा ऋन्य भूमेरु पर्याः लीमके ३ स्वन्यसादपरभूमेरुमध्येतेविपरीतके कोटिसंज्ञके जेये बसे तन्यासतः सद

अस्यलेन्यते कारवपीगंभेदेशेतुस्वाऽध्यऽअस्यान मुच्यते ६ ऋषिमस्तकयोर्मध्येकोटिः पूज्यमित

त्तानांसर्वेषा केन्द्र मुच्यते काउयर्प वारकसम्मितम् 😽 स्यादः धौर्द्व रुप्रवसम्मुखम् मूलतज्ञारकस्यैव

मतम् १० भूगभित्वस्वनाकोटिः पुज्यभागमिता भवेत् ऋत्रतद्भयस्नाकोटिः कीत्तिताह्यः तुपात-

स्वन्यसाधो वेदाव्यक्षस्यानस्य मेरुस्थानयोरन्तस्याने

परमासि द्वाने ५७।१७।धुर

दत्तदशचतथामतम्

कुलाऽभिनत यदा तदातह इद ज्यायाः साय

मार्गए। सहित्वाशुएडकेडोषव्यप्रेषुस्तर्भेतद्भवे तर्क में नतकलांशानाराशिकोटबंशज्यार्द्ध प्रूच्ये ५७।१७।४२

क्रित्वानतदोर्ज्या श्र**र्**यात्.

द्रवेच्छेदोहक्कोटिधरिकेभवेत २० ऋत्रत्रैवोन्नतयंत्रां-नस्यास्तदोक्षेवाः २

२२ तिहिधिनीतयंत्रांदाक र्गणः २५ नात्यवाएगोत्थदोभीगादगादशकतत्व **धिक नात्यबो** ए। यत्र भवेत्तदा २७ वस्यासुकासुकम् ३८ यद्भवेत्तहुं छात्रााना

जस्बद्रन्यकुएडलाः ईदलेस्थिताः ३१ स्वर्थेदशास दे द्वत्तरवएड भजस्य

- तत्रपुज्यानन टिज्याद्धं सदीरितम् ३३ तत्सा

ऽर्द्धेचकी त्तितम् ज्ञेयश्रहर काः तकांसास्तेदन्नविज्ञेयास्तरखेटनव कथयाम्युरञ्गदेवाद्याभू संस्थानायुन्तरात्

'ऽशके भूस्याना विज्ञेय खल दक्षिणांत ३७ त्तपद्रस्ययन्द्रवेद त्तरस्थलम् तद्वय

यंत्राशपरि छेरवम्

मुदीरितम् ३९ तद्योगस्थाननो मेरुदएडान्तको

कम् भेदमसांशमीव्यर्जेनुत्यनत्समुदीरितम् गभूगर्भयोर्मध्येकरवित्रकुळभवेत् नत्रुज्यप्रमितं चारथ झड्सां राज्यादली निते ४१ भूमिगर्भादरधी:

देशेव्ययः स्यालुम्बरूपकः याम्योद्गर्गस्त्रत्रेतुमेरुद्गुड मुद्दीरितम् ४२ यययोगान्तरमेरुद्राधोदेशगंभु-जम् तल्लागाज्यकारपण्डतुल्यं धारक मुच्यते ४३ तोटके क ईकं भवेतु. क ईकं कुज्यका खण्ड स्याद्युज्याः ्रद्वेचकेरकम् ४५ धारेचेत्यूज्यवेत्रः स्थात्तदेत्रस्तोटके भवेत् कुन्देद्भावात्यकारवर्डं कर्द्कंयदिनभ्यतेष्टर्

थारतीटकयोरः त्रङ्गेयतुल्यकुल्वुधैः धारके इक्षांशकः ज्यार चे चंद्र की पर भाभवेत् ४५ चे द्वे चे च ने साभा-तीरके कहुँ के न हिं कीटि रूप चल भ्यते सी म्यांड र्डे वत्तपद्दांस्ये में सद्दर्शाद्द्रधः स्थले ४७ चद्भवेद ज्

s श्रा sपत्रीमके प्रविदेशोस्या ४८ तत्खेटारपक्र मस्थाने संलगत्येवतत्स्यस्य त

'टस्योदसस्थानं विज्ञेयं पिष्ट्रतोत्त्तमैः ५० एवमरस स्थलङ्गेयंतस्यतस्थिमकुजे प्रस्फुटाऽप्ऋमय

म्यत्यक्तायात्यत्तरापमे ५१ यहिने यत्सारो खेट ष्तद्दिनेतत्सएोरवर्गः देवानादर्शनयातिहर्ग्टने प्रस टेंड्सके ५२ इंग्ट्लेप्रसुटे भागेलीप्याति षाम् त्यक्तासीम्यारपमयातिचेद्योम्यारपत्र

था ५३ दर्शनंयातिरैत्यानांतद्वग्व तेंदर्शके स्फुट तहोपंचातिदेवानास्फटें तोदृष्टिकुएडले ५४ ऋष् न्तिभागोनखांकांशाच्याऽईकेरकमुच्यते श्रूचांऽप

कमजकरपुज्यादीयमितंभवेत् ५५ तत्क्रीर्न नतः केरयाम्योदग्गर्भसूत्रगम् व्यक्षकुण्डल रखण्डजातिसमंमतम् ५६ ऋान्तिस्थानोर्द्ध पत्रादापरि छेख प्राकपश्चात्सा

व्यामाधः सन्मरव तत्सस्कार निर्मि

ज्यारवएडक यदिलभ्य करकलं त्तया तद्रधःस्थानगकोटिरूपतद्वरारूपकम् ६४

**टिज्याखएडकयदा** .दक्षिएंाम्, ६३ उत्तराऽपऋमेसीम्य संस्काराऽर्थमद्धा मुख्य

ईकंर्याम्यंतत्तंस्कार निमित्तकम् ६६ देवांदो थूदछे गाउपदेत्यां शेकार्रिय पीदले. सीम्पदक्षिए। कार्न्त्यत्य

म श्राधीभिमुखंभवेत् ६० तद्वराप्रस्फट्टेंचयंवंश कर्ड्कसंस्कृतम् निजमध्याद्वकालेतुरनाः औन उपक्र मवासरे ६८ स्वब्यक्षोपरिगः खेटी विज्ञेयःप-खितोत्तमैः तत्रस्वाऽह्माऽईकालेतुकानिः श्रूचाऽ धिकायदि ६८ तद्यक्षासन्देशोर्द्धदेशगः खेर्चे रो मवेत् व्यक्तोर्डस्थळ भूगर्भ भेदः स्याद्दशस्त्रभः ७० करकः पुज्यतुल्योऽथचस्वजीषिद्धिदेशकात् झ्व-क्षदेशोपरिस्थानयावत्तज्ञापरूपकम् ७१ ङ्गोयमः क्षांत्राकेरत्त्यंत्र नतां वाकजातिकम् स्प्रक्षां दा-ज्योद्भवबारां पूज्यालये पश्विजितम् ७२ इत्वा लम्ब भुजन्याद्वे धारकततु दीरितम् हक् चर्त्रा कर्णे रूपतुर्वे स्योमेवहिदृश्यते ७३ व्यक्षदेशनिवासीनां

समाबुधैः ७४ व्यक्षाऽन्यस्थानसंस्थानां कर्रालं यातिसाखळ कंटकंचाऽपिविझेयंभागार्वंकर्णजाति-

कम् ७५ त्र्यसाराज्याद्रुयातिबाह् तंचिन स्य लात् तत्रलम्बाद्यादोज्यीद्दिकोटिसंज्ञकमीरितम

७६ निजदम्बूत्तचऋतुपातवेशकुलमतम् प्रत्यक्षे स्वस्थलं भू मेर् परिस्थाचमन्यते ७७ त्र्यतस्तल्लानुजी-वार्ड्ड कुर्रात्वेपरिमच्छिति पानंतत्रभुजलंच याति पानच पारके ७८ लभ्यते यदिवी संज्ञकंटकेपल-

दिन्द्रम् हो। सङ्ग्रुभ्यतेपात नक्र भू भुजेजातिकः ७० पर भादिगातंचाऽ थपलादि वकलवेत्रयोः सं-

स्कारचन्न भूवाहुँ संझकतदुदीरितम् ८० नन्नत्स स्यते स्वेष्ट्कुएडले तद्भीहरूयतुं प्राप्त्रियारसस्थिता-त्युनान्त्रद्यान्योन्तरपक्षके ८१ तिर्ध्यन्याः ई.समा कारस्त्रकुएडं ल मध्यगम् चक्रभूदोही वैस्तुत्यं वि इयक्त प्रजम् ४२ तत्रवंत्रक्रेरीर्टत्तसयीग

स्थानतोऽन्तरम् यद्भवेचककेन्द्रान्तनदिधिःसः

396 परमसिद्धा

ईविस्तृतिः नतयंत्रांशदोज्यीः ८४ सेटयंत्रांऽशकोटिज्याखएडेस्तद्विधिरुच्य बोधकोत्पत्तिः पनभूनति सोत्यवि पार्थवासना चत्यु ज्ये सा वामी व्यन्दे कही के पार्शक भवेत तत्या

र्श्वपलभादिकां वेत्रपातक लंभवेत् ८६ दएडर <del>ज्जायतेकोटिः स्याद्वाहुँ श्वऋ मू भुजः च</del>ऋ

प्रा<del>वि</del>पञ्चात्स्त्रसंयोगकस्थलात् विवरंदएड विवरंदएडं विज्ञेयंगुणकोत्तमेः दिघ्नविध्यंशकाः स्ताः सप्पष्टि। आकस्तागराः ८८ तत्वषद्ग्रहाः ्षचकांद्याः समुदीरिताः नली<u>लांद्रवा</u>क भ्यांस्वेष्ट्यत्वम् ८९ छायावाकवा बातिःस्यादः

कुलस्था ८० स्वस्थानव्यक्षसंस्थानामेक भारमभ

र्विका स्वस्वचैक दित्रिम लायदि रे स्वस्वेष्ट न्याप्रजायते ५३ तस्या बाह्यदाव स्वस्वांत घटिकाः स्मृताः शून्यमदन्तंकठारव्यंस्या क्भस्यादिराशिजम् ५४ स्व रचा उन्त घटिकाऋमात् एकद्वि त्रिभसरव्याना मान न्तया ८६ स्वस्वदेशचरेएीवस्वस्वराद्युद्भवेनन न्तुत्येनैवकालेन भेदेनोन युत्तेनच १७ तत्त्रच्चव्यक्तदे होन्तराशिमानाइन्त भागकः स्वस्वदेशजदृग्यन्तेप्रौ-

व्यक्तस्यहे भवेत् ८५ वेदपंचीभराशीनांत रक्रमाद्भवेत् स्यान्ततश्चोत्क्रमान्मानंतद्वयक्षेनगंभा व्यक्षा स्तितिजस्यले ५८ व्यक्षाःन्यस्थान क्षदेशोदयाऽभिधाः ८५ एकद्वि

३२० परमसिद्धाने, ज्योक्शः स्य स्थलोदयाः १०० विशुवन्मएडलस्तुंस्ट

त्रकारवाः न्वः विश्वनारुड्ठःसुत्व मण्डळानिङ् ळोच्यते मेष्यपूर्वक्राशीनातस्यानोन्मणुडळीदितः ५०१ शूर्यराशिजवयस्माद्राहायः स्वस्येळेस्यताः स्युस्तत्व्यान्तितित्यं स्यानस्त्रपकाः सूर्योद्याः स्वेचरा हिन्बस्तपार्थेक्ववानिताः १०३ यतस्त्रक्षः स्वेचरा हिन्बस्तपार्थेक्ववानिताः १०३ यतस्त्रक्षः स्वानेतेत्वत्वाणानिनिश्चयात् १०४ स्युस्तेपदह्वाये स्यानेतेत्वत्वाणानिनिश्चयात् १०४ स्युस्तेपदह्वाये स्युक्तन्तयश्चववानाः त्यार्थेनस्यस्य स्यानेत्वत्वा

ान्तवाशासु गत्यभववशाणाः स्वः स्वस्ति प्रकास स्याने तेतृतो यान्तिनिश्चयात् १०४ स्युक्तेत्रवहवाये स्तू कान्त्वश्चवशानाः तेपश्चात्सास्यस्य यान्ति सः महास्यत्तोऽयमाः १०५ व्यक्तदेशोदशास्त्रस्यात्वस्यः देशोदयास्त्रस्याः १०७५जीवनेः पूर्वेन्तरकार्धमक् स्यिताः १०६ ययात्मस्य भारम्भस्यानंतन् स्यम्पद्धः ते स्वाहाऽह्यै अन्तेयातिमध्याऽह्वस्यानकस्याः एक भ स्याउन्तरप्रविधिमेतृत्वम् एउठे १०८ यात्येवं यान्तिसर्विधायोऽद्विद्यम् स्वस्वध्यत्वेत् र्शगोन्यतानपनाधिकारः १२१ स्मान्यतित्रस्वनसाधे १५९ विमित्तम्थमाविद्येवनाताः शफलायन नैवतित्रपमाधे देशिएगोन्तरसङ्गे ११० स्वस्याशिससुरावेतातारा गण्ड पञ्चरे यताःस्वस्याः पर्मोद्ध्यवद्यानाम्यान्त्रस्याः १११ ततस्तराश्योग्येवस्य अने व्यानास्यरे १११ ततस्तराश्योग्येवस्य अने नैवयान्तिततस्त्रस्य स्वर्धस्य स्वर्यस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्धस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य स्वर्धस्य स्वर्धस्य स्वर्यस्य स्वर्यस्य

सिंद्रान्ते यन्त्रां शापिरकेखाधिकार एकादशः १

ब ने कि विकास स्वाद्रिक प्रतिकार एकादशः १

ब ने कि विकास स्वाद्रिक प्रतिकार कर्णनावर्गकार्या स्वाद्रिक स्वा

शक् १२ झन्यासाहीताः प्रचाता ६८७।३२।२६।३० च्यर्यस-हिता ६८७।३२।२६।३० तसले पिंडम् २४७५,१४४

परमसिद्धान्ते ताः ५ सोम्याः श्रन्यभतोनास्तस्यु सेतेयाता ग्राद्या ह्यद्रत्रति

मिन्दुव्यासागुलोद्भवम् कमाहि खेत् श्रेतांद्रकव्यस्तकाष्ट्रायां वने कष्णाद कमाद्धिखेत् १० श्वेतारकादुभयत्रैव वसे श्वन्यनवाः इाकै: अप्रहरिज्यला छन कला खेतां दका इचा सस्त्रगम्

शृगोनंत्यानयनाधिकाः ११ सूत्ररेखोन्यतेश्वेतलक्षणानसिनारगुरै व्यासस्त्रेंद्रकं कलासंधिस्थतीन्यर्ते १२ ८ गुरुाङर्जे तुहित्वाचेतांऽगुरुानिह<sup>्</sup> शेषं संगोन्तताऽवर्ष <u>विज्ञेयं गणुकोत्त्तमेः १३ गुल</u>ेव्यासाहद्वारगुलानांतु वर्ग बार्गोर्ड तंफेळम् वार्गोर्ड्यंतहर्केंतत्रपरिकारमिनिर्भ-वेत १४ संधितःकेन्यपर्यन्तरेखांकलाऽत्रपंडितैः तांकेन्द्राहर्द्विवादमेरेखांततस्त्रमुच्यते १५ दबाः ग्रंपरिकारस्यसंधीमूळंतुविन्यसेत् तत्स्त्रेपरिकारे-

ए।ततस्त इत्तमा छिखेत् १६ ततः शृंगद्दयोकारतन्त्रे तां कस्पते भवेत् यस्यांदिक्य गिर्कश्यं गर्दे नहा पाँ मात्तथा\_१७\_तस्यादिश्युत्तरेकिम्बायाम्येश्वंगोत्र वदेत् पूर्वी पराईयोर्मध्येपसयोः सुकू कष्णयोः श्वेतश्रगद्वयोकारमिन्दोः शृंगो नितर्भवेत् चंद्रव्या-सांऽगुलाःद्वीदियेतंयत्रहिजायते १८ कण्।श्रंग हेयंतत्रविक्रोयं क्<u>ष्यु</u>गलक्ष्यणात् चन्द्रव्यासाः गुरु र्द्वीर्द्धश्वेतंच्यासा ऽगुछेषुच २० हिलाछणा ऽगुरा

ति भास्करः पीर्णमास्यः त्तेचन्द्रा २७ तस्मात्तत्रविधुंपूरीपश्यतिधरएगि 'प्राष्ट्रस्य उर्द्ध काळे तु खु क्काष्ट्रस्य उर्द्ध कस्परो म्बार हीर धोलवेत्यातिहिष्टिवलेखेः

चार्द्धचेतुकस्याः सिताराकम् २४ झेयरमर्कमयू-

वयते स्वत्यत्वाच्छी प्रयोरेव शृंगांकारमः हवयते ३२ त्र्यय चन्द्रस्यश्वेत्रुष्णभागयोरुपपत्तिः सका चपट्टरूपंतुपानीयप्रस्तरंभवेत् त्र्यत्यन्तशीन-लस्यानेनम्नमंदजलंतुयत् ३३ वायु प्रचारसंस्पर्धाः त्यस्तरंतञ्जलम्भवेत् तत्तोयप्रस्तरं श्रेयं शुद्धारृशुद्धां बुवन्तया ३४ व्यंगक्रकागभीरांक युक्तगोलस्वर्श गोः सलिलप्रस्तरंमध्यपुष्टमेवहिनिाश्चितम् ३ रकरस्यां असंयुक्तपानीयप्रस्तरसितम् दृश्यते हा न्यथा रुष्णवर्णतह्रुयतेयतः ३६ ततीयच्चन्द्रविम्बा-द्रांभा<u>स्कर</u>स्यां : संसंस्तिम् ह्र्यतेतस्तित्वृत्यः भाग येतेतरं भवेत् १७ प्राजन्साद्यांचन्द्र त्स्वल्योजस्यकारणात् स्र्योऽश्वरहिनांदशस्य मानवै

यरमसिद्धान्ते.

र्निहिद्दयते ३८ तस्मात्तच्छ्वेतभागुस्यकुएडठाकाः रतोठ्युः कष्गांऽशकुएडठाकारंच द्रविम्ब

स्पते ३४। १८८८.

श्रीलक्ष्मीवलु भारमजाप्रेमवलु भविरचितेपर-मसिन्हान्ते शृंगोन्तत्यानयनाधिकरोद्वादशः ६

यातित हासयोजनी नित्म पश्यत्याधीं इशकं न्द्रविम्बस्यभास्करः २ येषामःधोऽवाकं भानेःखे-टानामेवपश्यति दश्यन्तेतेर्वगास्तुक्ष्मीपृष्ठस्ये नगर्भः मानवादिभिः ३ भानोस्तीस्ए।करीधेराभानोस्सानिः

ध्यगः खर्गः कार्देयपीपृष्ठसंस्थेस्त प्राणिभिनीह दः दयते ४ स्र्येलोकोर्द्धसंस्थस्यखेर स्याधोः <u>श</u>क्ति पूर्णपर्यतितच्छुंगरूपनेवभवत्यातः ५ स्पीः

धोलोक संस्थस्यस्वर

तारका। नेचेन्महन्द्रान्तमाकाशीमलव पुष्टाः स्वल्पाः स्वल्पतयोप

र्भभायांनान्तरं भवेत विचक्षणाः सप्ताश्यद्मब्धयोऽकर

जनाः १३ स्युन्न जनाः ऋषाशाशीनषट्शऋरूपाः कुब्यासयो-

क्रकेयाः पिएडव्यासयोः स्वएडयोभवेत् २० तन्हरिः

<sup>े</sup>जदाहरणम् यथास्यः गृतिकलाः ६१।१२ भूगर्भात्सूर्यलोकं यावदन्तरंकसाव्यासार्द्धयोतनाः ४८२५४१।११ स्त्र्योडकः क्षा बन्तेक योजनाः १०३४ ४४८। ६ च-म-कताः ७५८।० वधासूचीमुरवद्भायां १५४५ ५१ ।५८ यथाभूभारविः स्तारयोजनाः ८७२ यथामहाभुजम् ६३७४ ८३ ।८

ध्ययोजनैः परिवर्जितम् २३ संपि-जनास्तमियोजनाः २४ यामिनी र्मुनुभाः-तरवर्जितैः श्र्यभ्यस्ताः कास्यपीव्यासयोजना स्त्रमियोजनैः २५ भक्तारतच्चेन्द्रकक्षायास्य ख्रएडोत्पत्तिः भूगोळालरितस्रके सयोजनाः लोकमद्रएडसमंभवेत् २६ बाह्याद्वाह्यगतंचांद्रंचा ऽधिकंलऽधिकंभवेत् स्वस्वाएडस्यच्युनांऽद्या झेया श्चकांख्रकै समाः २० त्र्यशंस्चीसमस्या स्र मरएड गर्ततया न्त्रग्रं भूगर्भकेन्द्रस्यंस्वस्वा रएडे समुदी-रितम् ३८ कान्तिस्थलेखाएडपरिध्यानयन्म् चकार्र्ड्रव्यासभागामाः कसापरिधियोजनाः केदारार

<u>तः सू</u>र्यतेजोत्थादूरेस्चीसमाकुभा पूर्वचेदिष्ट गोलाऽधिकंतदा तदोलाऽभिमुरबद्धागी-लॅंभॉस्चिकासमा ३२ जायतेभॉप्रदंगो ३३ विस्तारंयातिगोलस्यसांनिध्ये<u>कान्ति</u>दंत्या त-होलादर्रधिकंदलागोलाभायातिकार्र्यताम् ३४ भा-<sup>कातरभ</sup> देगोलाऽधिकंदूरेदबाभाविस्तृतिंतथा गोळाऽर्ल्य कान्तिदंदलादूरे भायातिकार्स्यताम्३५ । १८२३ श्रीलक्ष्मीवल्लभात्मजप्रेमवल्लभ विर-वितेपरम सिद्धान्तेछायारात्र्यधिकार-स्त्रयोददाः १३

न्यनभ्, गरिस्तरस्थः परिभाजितः ६ एकार

सुघोमध्यजवींशादिस्तद्रधः परिभाजितः ६ एकाऽ

 युगेराहुआब्दाः १३२२१८ स् भाव्दा ४२०००० भ्वासतः १५७७ ९१७८ २८ ऋई ७८८९ ५८ १९४ राहु स्पर्यमाः राजिर्य योगोभगग्रयोगः ४५ ५२ २६९ योगकत्कात्मीदिनादिः १७३।१८१ ४४।२० १३४। २४ १२९ ५७ १०५२४८

स्यश्चादयाश्चेत्तदा

ग्रहसम्भवेम् 'कष्णान्तेकुकरेभ्यस्तव्येग्वैकीः त्र्यत्याश्चेद्गास्करेस्यैव स्य हसंभवम् खेचरां स्थालनैश्वाल्यपक्षाद्येः स्वी

धैः १० तत्कर्मचाचरेत्तत्रचेछ्रब्धग्रहे सम्भवम् खेटाः नांसकलंकर्मप्रस्फुटेनैवसिन्द्रयति ११

स्याद्याते व्यविपर्य्ययम् दाऋाउत्पाः पीएमास्यउन्ते-. स्वर्वकभुनांशकाः १३ चेचन्द्रस्यहिविज्ञेयधीः

रैप्रीहरासम्भवम् दर्शानौ<u>नतालि प्रार्ड्</u>शनिप्राः पंचीन शाकराः १४ स्युर्हवाः प्राक्नेपरेही नयुक्ताः कार्य्यास्त ्यद्रदारानयनम् अवनां संस्कृत्यः अवनां संस्कृतसाताः जाताः रु ततरस्तद्रास्करकाल्तिभागाक्षादाकसस्कृतिम् वास्यकृतिभागास्तिवामागाद्रीसस्कृताः व्या

तहर। तत्तरसङ्गिकरकालनाभागाश्चीस्विक्सरकोत्तर्भः १५ कुलास्त्रकत्तनभागस्तितेषामगाश्चीसंस्कृताः व्य-प्रकृत्यः श्रीचाराः व्य-प्यकृतस्वारः श्रीचार्ऽत्याःस्युश्चेत्तरावृधैः १६ विक्वी-पंतिहत्तेस्यूलं भूत्रेत्रहृणसम्भवस्य दर्शानीऽहिन्स्येयोः स्याःस्यव्यव्यकितस्योदिनः १७ चेतवासस्करस्यै

श्रम्भिताः स्त्रीतितद्भगाद्भागानयोक्तसः १५ स्र्यस्यव्रहणस्याः षाः हिनागोक्तीत्वभूमः । स्र्यस्यव्रहणस्याः षाः हिनागोक्तीत्वभूमः । स्र्यस्यव्रहणस्याः षाः हिनागोक्तीत्वभूमः । स्र्यस्यव्रहणस्याः प्राप्ति । स्र्यस्यव्यक्तियाः स्राप्ति । स्राप्ति

प्रविश्वित्र में द्वेष पश्च प्रकार पुर्व पश्च र वृत्व पश्च प्रवित्ति है स्व र वृत्व प्रमु । वृत्व प्रवित्ति है स्व र वृत्व प्रमु । वृत्व प्रमु स्व प्रभाव स्व प्रमु स्व प्रभाव स्व प्रमु स्व प्य प्रमु स्व प्रमु स्व प्य प्य प्रमु स्व प्य प्य प्य प्य प्य प्य प्य प्य प्

ऽशाःस्युर्द्धिघ्नोस्तेज्यकांऽशकाः २३ स्यस्ते

पत्रिभागाश्चकांऽदागोत्रगाः श्रथ प्रहाणायोग प्रहाणका श्रीद्रान्मन्देऽधिके गम्यामन्दा

योमिर्गिन्यूनेगम्यास्तिर्भवेत् २५ द्वयोमिर्गगयोश्चाः पिद्रयोर्वक्रगयोस्तथा गुलन्संशके अत

राकास्तयोः २६ लब्धं घरत्रादिकं स्वेष्टे युक्खा भोग्यं यु-तेर्भवेत् हिलायातयुतेः कालंजायतेवासरादिक २७ द्वयोरेकस्यवंत्रंचेत्स्याद्वयोऽर

त्तयोजीवयोगांद्रशैरासाः प्राग्वद्दिनादिकम् बुकीखे रिवेचरयोस्तथा मार्गवक्रगयोश्चाऽपिः

भागाउभिमद्दिताः २५ स्वस्त्रगत्यं दशकाश्चाऽयभक्ता ऽशकैः\_लब्धपुर्स्नोदिवत्तत्तत्त्वेदेदैत्वासति-क्षणे ३० पूर्वक्त्वे चरीतुत्योतीस्यातांतृततस्तथा

सूर्येदु भूभाविम्वविस्ताराः भूतः प्रभाविम्वविस्ताराः नोतुल्योत्रवेषस्यातांत्तस्तोतुमुद्धः समी ३

तीतुत्यीरवेचरीस्याताततस्तीतुमुद्धः सभी ११
ग्रायुम्द्रपेन्द्रभूशाबिन्वविस्तारानयनं सद्भमम्
स्वयेनतुभ्रवेनस्योभ्रवेभगिरितम् दश्चीन्तुमुखतिय्यत्ते
स्रवेभतिभ्रवेनस्यात् २२ सर्पभ्रवेननिष्ट्राङ्कुलेकोः
कव्यासार्द्रभावितृत्त् स्थानचन्द्रम्बनतिभ्रोवृभ्यत्ते
वदाभवेत् ३२ म्लेवेनगोत्तस्यात्तर्द्रसर्पः

षाः अक्रोतक्षकि भूमाणीन प्राह्माणीविद्यत्तिस्यः ३४ स्ट्रः वि. न्याः अपिष्टेनाहता भाषसागरास्त्रसम् इताः खोत्रषड् हिमिभोनोस्स्युविन्वसासयोदनाः ३५ - वे वि न्याः नागर्वेदाधिभिहेलाभूपिएडं वसस् स्ट्रात् खात्रनकीभिभिन्नेनोस्स्युविन्वसासयोकनाः

हरेतं स्वाभतकिभिनिश्चेन्तोस्सुर्तिम्बव्यासयो वनाः १६ एकांद्रायोजनाश्चादिलोकव्यासाद्वे योजनाः स्वकसायोजना माह्याद्रशित्यनवजाःसर् ३७

स्. यध्यलेकच्यासार्ज्जवायमाः ४८५७ ५५। ४४ तथा च में लोकच्यासार्ज्ज ३०३८५। ५
 श्रव ३६००। ८२०० श्रानयोवीच १८५५ ६००० पश्चिम् १०००

ऋष ३६००।८२१० ग्रानयोवीर्थ १५५५ ६००० पष्टिम् १७७०-३३६०००० ऋथ ८०६०२४५६ ।३६०० ग्रानयोघीतान-

स्फटयोजनाः सत्यवेगघटीभक्ताः कक्षाव्यासद्ही

ते ३८ स्रो-व्याः स्रोकव्यासदसं द्विष्टांस्रोकाएडव्या-

स्यादारः स्थलभेद घाश्चन्द्रेकाः प्रास्तर्रेयेले होयास्तस्यैकांगुलयोजनाः ४२ तैराप्ताः लोककक्षादियोजनाः स्युस्तद्वंगुलाः यत्रलोकाद्न

मि ३१२५ भक्तात्मलंहिघंजातं १८५७०८१५०।४७ सत्यवेग भक्तं रुत्तंस्थात् तथा पला १११४२४८८० ४७ सत्यंबेगपताभिर्मकार स्र दिम्बव्यास योजनाः ४७२७ चं विः व्यासयोजनाः

३४८ इन्हें व्यासान्तरं ३५८१।६१० भूव्यासंयोजनाः ११४५।५४१० भूव्यासार्द्वयोजनाः ५७२ १५७१०

पातात्वभागात्वात्र्यपुर्वात्ति ४३ तत्रत्वक्षेक् भेष्युः भिन्नाःसुर्काहितिद्वादः स्थ्यमध्यादिवेगोत्वक्षेकु स्थान्यः सर्वे नाम्युः विकलापुर्वाः ४४ स्पुर्वे स्थान्यः सर्वे नाम्युः प्रकाः सर्वे नाम्युः प्रकाः सर्वे नाम्युः स्थान्यः स्थानः स्थान्यः स्थानः स्थानः स्थान्यः स्यान्यः स्थान्यः स्थान

हरनः ४६ भक्ताक्षाकाएडकसाए।। द्यातासार प्रवत् प्रकारान्तः कसाळीकाएडच प्रकारमेल पट्लाष्टेनिमा भूगिएडपोजनाः ४७ तलेन्द्र पिहताहुकूववेषिकसो द्वार फलम् हि प्रकल्ला एडजेकानाचन्त्रयाधीजनात्मकम् ४८

काम्बर्धाः कर्षस्य पक्तमेकाशयोजनाः स्युक्काशे इताः स्वलंकार्डस्य योजनाः स्र तस्केलेके भाग स्यास्यस्यार्डस्येव योजनाः स्वस्त्रस्यार्गम् अपन्यस्य एकाशयोजने सार्वारिकार्यकार्यस्य

ऋथैकांश यो जन

330

ाव्यासाऽगुलाः स्मृताः ए**कति** चक्रव्यासकला रद्धामाः कक्षार्र्डव्यासंयोजनाः

व्यासयोजनाः ५६ स्युक्शकाकपथेहीन्दोन्नीक शयोजनैः भक्तास्तेविंशतानिद्या सूर्याव्यासाङ्गुद्धाः

श्रूब्यवर्ग ३२८२ ।४३।१ पलापिंडं ११८१७७८१ युगेकुलभाव्द-कुलाः ४,५६११५७१२०० स्त् घातः ५४१६६७।३०।५५।१७॥५ स् यानन्त्वप्रजातम् १०८३ ३१५० ११८ १२५ म च यान १५८०७ २१ थिं। इन्यातनस्य प्राप्तिका १५।१५।४३

स्रताः ५७ प्रकारान्तुरेशस्त्र्येन्दुव्यासागुरु।नयनम्

क्कविस्तारभागघाः पिएड विस्तारयोजनाः रवाश्वि श्चोद्धताः स्वस्वजीकाऽडव्यासयोजनैः ५८ नह्न

भाउब्दक्षिप्ता

क्रोत्याः स्युर्वेविस्तारयोजनाः रवाक्षि भागनाः परिभाजिताः ६५ विष्कम्भे

भाव्यासां ऽगुलाः स्मृताः

<del>श्रायसुगमप्रकारए।सूयन्दुभू</del> भ

व्यासागुला नयनम्

स्र रिववेगांशभू चन्द्रधातंतद्रास्करस्यचं ६६ स्य व्यासारगुराः प्रोक्ताः चं श्वन्द्रवेगस्यतिप्तिकाः वे-

देश्चिविह्नतास्युलाश्चन्त्रव्यासांऽगुलाः स्मृताः ६७ तल्यादर्कजवांशीनात्र्यष्ट्रभेन्दुजवांशकाःस्यु-

ास्त्रिभिभक्ताश्चन्द्र ठाकेंऽ गुलादिकम् ६८ विस्तारं भूपभोयाः स्यात्स्थ्रुलं तद्वयावहारिकम् सू

क्तेकलानांतुरवाः श्रांप्यहां शकोनितम् ६८

तत्त्व्यू असूरे विस्तार स्फुटस्याद इगुलादिकम् चं रवांगागागि भिभक्ताश्चन्द्र मुक्तिकलाः फलम् ७० हिलास्यूर्लेन्दुविस्तारेस्युग्लीव्यासांद्रगुलाः स्फुटाः ब्धेगोसाप्तात्र्यगुरादिकम् 'सूर्यवेगकलाः स्वा

७१ हित्वास्थ्रुलकुभाव्यासेभूभाव्यासंस्फुटं भवेतः

भोमादीनांबिम्बब्यासानयनम्

् भोमादीनालोकव्यासार्द्ध्य

प्रश्निमानिकाति बु तस्याबाह्मिता स् १२ इ तीवस्याबनगाश्राकी सु श्रमस्याष्ट्रीता स् १२ इ तीवस्याबनगाश्राकी सु श्रमस्याष्ट्रीता स् १३ चीर्स्याबन्धिकवेदेनुसुम्माःस्वृत्यीसयोजाः

योजनाः ७८ मध्यवेगकछाऽद्धीसाःस्याड्यासमध्य-कृ नी निवन्नामधेकाः १६८ इति जासयो २५ कति जाः वो १८५७ कृतिना नो ००५ वृति जासयोजनाः २१६४ कारागोक्तमाः

ध्रोचभाव्यकाः खाञ्जद्वयशहत

३६२ परमूसिदानोः लोकजम् काउँपपीस्फुटबिम्बुद्धा

लोकनम् कार्यपरिष्ट्रियम् प्रासेन्यप्रसार्थ्याः नाः ५ भावस्थिते द्वाः प्रधीनस्रित्ताति ताः त्काः ५ भावस्थिते द्वाः प्रधीनसरे परितादिताः त्कलं मध्येजीकाः द्वितसारे गेजनादिकम् ८० त्यानादि प्रास्त्रम् प्रधानिकक्ष

ध्यक्षेत्राहर्षेत्रसारयोजनादिकम् ८० स्यानिहे न्मध्यक्षेत्रस्यस्फुटविस्तरम् मध्युकृत्तिकका मध्यक्षेत्रहर्गुःईविस्तरम् ८१ भूपिएहे नोहृतृतः ।यद्यसमीरितम् सस्येवपक्षेत्रासंगुणाद्यनुङ्

ब्यंगुए। पात्रसमीरितम् सत्यवेगकलेशासंगुए। प्रानुङ् ङुएडढम् ८२ लोकव्यासदलल्याकानि युरुत्तातीत कम् एकलोकार्ड विस्तारमेकस्यानमहितम्८३ ऋत्यवेगीदातलाज्यलोकव्यासदलम्मेवत

श्रम्यवेगीद्दतंलहन्यकोक व्यासदकम्पर्वेत् स्ट्येन्दुश्रभाभोमादीनांस्पष्टविम्बव्यासां गळा नथनम

स्यन्तुभूमा मानादानास्यष्टाबस्वव्यासाः गुला नयनम् विम्वव्यासाऽगुलाः विशिवका ज्याऽर्द्वलवार्देकम्

 भीः मध्यक्रेकव्यासाई योजनाः १४००४१।३४ तुः श्रीप्रोच्चभाव्यक्रमा ३८०४४०४५ ६००० वु शीः लोकन्यः साई योजनाः १२०३४०।५२ तुः मः भाव्यक्रकाः भृद्वसः । १६०० खान्तकप्रस्फुटझेयव्यासम्बन्धुरु पूर्वकम् ८५ न्त्र्यं सत्यवंगानयनम् लोकव्यासदलेनाप्ताः स्पष्टे भूपिएडयोजनाः श्र्यश्र गं घाः संत्यभुक्तिकलाः स्मृताः ८६ सत्या-

गद्रज्यस्यस्याद्रीमादीनांतु भास्करात् न इ.च. श्रु ग ध्येभीमङ्गपूर्वांशीम् इोऽधःस्थस्यतस्यच खेटानामऽस्तमुच्यते युद्धेभीमङ्गपूर्वीएग्यस्तरतीह जितोभवेत् ८८ तद्युद्धेरधःस्थितः खेटःस्याब्जयीशासः वीडपिमार्गेशावानयेन्तयोः ८१ संस्कृतेछाद्यन त्यास्याद्भाहकाऽक्षरपुटतुत्तत् कान्त्यंऽशाऽन्तरवत्त्व स्वद्धाद्याद्वादकयोस्तयोः ४२ कत्वावाणाऽनारतन्

ध्यमाऽपऋमाऽन्तरम्

त्वातु संयु तिं

मध्यग्रहणकालेत्यतोऽकेयहरी

भी मध्यकसायी २९५३ रहे % क .६१६१२४० इ म लो व्यासाईयो ३०७४६

शसंस्छतात् %२ पूर्वव द्याभवेत्का निस्त

वेष्टसाराजशीतगोः १०५ ऋहन्यहन्तराहबाहरयुक्योनमूळ अस्रेलेतः परभूमेर

388

बाणादानःस्युस्तनाऽक्ष्याराऽसलाः

मारोदाजातिकम् ११२ तन्मार्गोदाक

भागपूर्वधनएकिम् ज्ञेयमू द्वीरन्तररा टेस्थलात् ११३ चन्द्रस्यस्फुटदेशाङ्नम्मागाश

११४ चन्द्रादिष्टसणोत्पनात्वर्णमार्गीशसंस्क-

तन्मध्याऽपंकमतुल्यपूर्वोऽपूर्व

भास्केरग्रहणोंभवेत्

चस्यात्स्फ्रटविधोः ११८ प्रक

अगुलादे बाएाभागमुखंखा श्विनि इस्यादं गु-

३६८ च स्थानः व आहेतः सं महत्ते. स्र्येसपाकरोद्धा बद्धादकीस्तहन्त्रप्रहे १२२

चन्द्रभहरो छा छा छादक झानस् क्वानिक निल्स्च्योऽचित्रेषेडुभूभायाः भस्फुट मनेत् स्याता स्रोतिक चेणकः भूगणकः स्थान

त्र्ययामान्यनम्.

न्याः द्वीच्यत्रपष्टवाएमः गुळपूर्वकम् १२५ तत्तमानाः वृद्धतो हिलाआसस्याद् गुळादिकम् श्वासानायनं, वृद्धताहिलाआसस्याद् गुळादिकम् स्वासानायनं, वृद्धनामस्य श्वासानाः श्वासानायनं स्वासानायनं, त्रमञ्जूष्टिलासानाः श्वासानायन्त्रम्

त्राचकाद्मकासुकादगुरू जातिकम्

क्रया स्थित्य द्वे कलानयनम् अस्य स्थानस्य द्वे कलानयनम् अस्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्य स्थानस्य स्

इंद्रवर्गाचेतम् १२८ छाद्यस्याङ्घादकस्याऽ

ट्युट्सः स्थित्यद्रहस्या हिनादिकम्

वा भाजितम् १३५ त्रिधं फलं घटी पूर्वे स्थित्यङ माग्निगुए। भनेत् भुक्तिविक्षेणभागे बों: फलम् १३७ महाई लिप्तिकापूर्व विज्ञेय खबहे परमसिद्धानी.

· 34

मुख्य ग्रह ए।कालङ्कानम् , पर्शिमापूर्णकालेतुसा-दिन्दोर्ग्रह्णाऽद्धकम् १३८ प्रशिक्षनमू क्षिमाभि स्तंस्ट-तेगुर्श्वतानते दर्शन्ति प्रहर्णाऽद्धतु भारकरस्यहिज्ञाको १३४: स्वस्त्र प्रहर्णास्त्रुद्धप्रदिमोक्षाकालानम्

१३१: स्वस्वग्रहणिस्थूलस्पर्वमिक्षिकालानसम्म् त्राह्मित्यर्ग्द्रमेदेवस्थ्युहीर्ग्वस्थानीः स्वत्मर्ग्वमा भनेचेचनात्यित्यर्ह्हस्वग्रहीर्ग्वस्थाने भनेचेचनात्यित्यर्ह्हस्यहे भनेत् १४० स्वमध्यग्रहेन कालोत्येक्तात्स्यत्यर्ग्वस्थायायनम्हार्ग्वस्थाने स्वस्य स्वाद्धस्याद्धस्य

भर्गा रुलास्वमहार्श्वस्ताकमात् स्यूठोप्रमहमोसा स्वातं महार्थ्यः काठोस्तःस्वमहस्यतु १४२

श्रय खग्रासेस्थूल खग्रासस्पर्वामो-क्षकालानयनम्

स्तकालान्यनम्, महर्षिनीन सञ्जनस्यमहोऽर्द्धस्एातया मीलनोन्स महर्षिनीन सञ्जनस्यमहोऽर्द्धस्एातया मीलनोन्स स्वार्ट्सले स्यातास्त्रभाससम्भवे १४३ स्त्र**क्ष्मस्य**म्

लनस्यूलस्यातारवग्राससम्भव १४३ स्यूह्मण्यज्ञ कालाद्यानयनम् छाद्याद्यदक्तिस्तारस्य माणा सङ्काः ताल्यत्यदद्धीनदाश्योकतारत्तद्वहेग्रहणात्रदाः

स्तन्धेवंस्वस्वमद्द १४८ तत्स्य हमपरिलेखोत्यं यत् अतिष्टकालः यात

द्ध नंप्रस्फुटं तत्र हो यमेव विचक्तरोः स्पर्शस्थितिङ्गानम् त्यः ईप्रस्फुटंत्र्यस्थार्शिकंतदुदीरितम् मोः त्तन्मध्यमोक्षयोर्मध्यास्थित्यदर्द्धम्मीक्षिकम्मतम् १५ **त्र्ययस्**येत्रह्एोइष्टज्ञानम् स्वोदयात्स्वेष्टपर्य्य

मध्यप्रग्रह्योमध्येयत्काललिप्तिकादिकम् १५१ स्थि-

परमसिद्धान्ते.

राशिचकाऽटनोद्भवम् चत्कालत् द्वेत्त्वेष्टंचात्र्यमा यथोचितम् १५३ तन्बाद्यस्फटरात्र्यदर्द्वमत्ररात्र्यदर्द मीरितंत्र छाद्यस्परिनाउद्विच्यार्द्धचात्रकीर्तितम् १५४ गणितागतदर्शन्ति अख्यातं सावनं तथा पंचागजातिकं

चेहवाष्यीगसमुदीरितम् १५५ तह्वान्तिदिनेस्वेष्टपर्यः न्तंगतितिकान् स्वेष्टं छाचोदेयाञ्ज्ञेयंयथायोग्येष्टसं ज्ञम् १५६ न्य्रयेष्टाह्यकेष्टकालानयनम् यथायों ग्रेष्टित प्रस्वस्फुटा द्वंकलादिकम् निजश-

प्राइद्ध विसासन हथक्तं प्रस्फुट भवेत् १५७ चात्र्यमाः र्गाउपुथज्वसुगाश्चद्रांभि २१ताडिताः श्रन्याह्यसोद् तात्र्यामं स्वर्णदत्वाविग्रदेशे १५८ खेटानां स्वस्वगुप्ता इ होरात्रंति सादिकं भवेत् व्यक्तस्त द्वह गुप्ताः होरात्रिः मादिताडितः १५८ षष्ट<u>्याभक्तकलायं</u>तुजाय<u>तेन्</u>दुः

होदयात् इष्टं यथो चितंयातं व्यक्तान्मार्गजवे दिशकम् १६० तह्यकाइऋवेगेल्पसूरमंचात्र्यकुलंबलु प्रस्फु-राइद्वनतस्वत्रलम्बनव्यक्तिसंकाः १६१ लिसास्ति-

## स्पष्टदिनमानोत्पत्तिः

विभयोगानांविज्ञेयास्तुल्यजातयः **श्रेष्ठज्ञा**सम् खाँगरामोन्मितं ज्ञेयं श्रेषमं उशात्मकं बुधैः १६२ तच्छे नानयनम्, गुप्ताऽहोरात्रगुप्ताऽह्मभेदगुप्तनिद्या

चंद्र विम्बगर्भ केंद्रारम्

भू विम्बात्स् ये विम्बाति दूरस्यत्वात्तर हद्देगंप्रकीर्त्तितम् सेर्टस्योच्छारुनुपातेनसत्याख्यंखभ्यते जवम् १६६ सत्यवेगारतुपातेन्छभ्यतेखेटमण्डलम्-ः एडलाउप्र्य नुपातेन तद्रथस्ता उहर्दर्शंभवेत् १६७ चेन्त-न्मएड उसंस्थानावस्तूनाजवमम्बरम् येथेषाव तीतेतव

## परमसिद्धानी.

नेतेषाम्मएडलो द्रवम् १६८ घस्त्रारुई दिनमानंचवा-

र्ष्यागाहुनरोद्भवम् वार्ष्यागंसावनंतत्स्या ताराणांसु-र्यस्यापि नाराणांकानिज्ञचरं १६<u>८ किप्त</u>िकापूर्वकं यत्तुतद्वाध्यंशिचरंभवेत् वावाष्यंशिचराद्वेत्यंयचरंहि-१७० तदार्ध्वीगचरं मानामदर्कस्याः पिभ-

त्त्रया श्रुन्युवेगपदार्थानापंचचंद्रकलोन्मितम् १७१ स्वयसाऽह्नद्रेज्ञयचात्रयारव्यतुययोचितम् तत्वेदः गपदार्थानांसर्<u>वात्र्यात्र्यास्तु नाडय</u>ः १७२ खाँगद्रा-श्चारकेगुप्ताद्वरात्रियोगकलो द्वताः वार्घ्योगाः सावना रव्याश्वसर्वपंचांगजातयः १७३ नाड्यश्वरसुरवानी

तुत्ताराणास्युः सदाख् खेटानांस्वस्फुट दिना ई दिनमानात्स

गुसाह्नाद्वेस्यस्वगुप्तदिनमानस्यन्यन

मएडलस्यपदार्थस्यवक्रमार्गजवयदा १७४ व दार्थस्य घरना हो ह्यु प्रमाएतः स्वस्फुटा हुं म घरना है

चरजातिज्ञानम् विनमानं व े ना अ नहुप्ताइद्वप्रमाएकम् १७५ न्यूनोद्वतस्यखेटस्यजायु तितकरादिकम् **रात्रिझानम्**, स्वाउस्तोद्धेस्यात्तमी रात्रीजेयमऽह्रसमंत्रायम १७६ स्प्रादिलभान्यनम् न्वेचरस्योदयादिष्टकालेतद्यक्तलिप्तिकाः तर्कप्राःसु म्, स्यगुप्ताऽह्रुरात्र्येक्यां । प्राप्ताः

गुप्तारहर्निशैक्यस्यानयनाययथोचितम् चात्रयाख्यं स्वनवप्राह्मनप्राह्मलान्यकर्माणा १८० यथोचितेष्टा-न्यनम्. सावनाख्येष्टलिप्तघंसूर्यगुप्तचुरात्रकम् योग्येष्टजातिः स्यादु साऽह्रस्वस्फुटाऽह्नजम् स्वस्फुट-ऽह्राऽर्ड्जंगुस्घस्राऽर्द्धस्याद्ययोनितम् १८२ चरजातिज्ञानम्, सर्वत्राऽपक्रमोद्भुतंत्रसंन्यातमः

न्यतेचरम् तसंचांगकुलारव्यंतुसावनं आयतेचरम्१६ यथोचितेष्टग्रहणस्थान ज्ञानम् स्वव्यक्तांनयनेश्राद्यांनित्यस्वेष्ट्ययोचितम् यथोचितः

छाद्येभुमजदर्शाने छिप्ताः श्रून्य-दर्शान्तानयनम्. रसोद्ताः १८४ ऋर्केगुसद्युरात्रस्यविप्तघाःस्याद्य-थो चितम् दर्शेन्तंतद्ययायोग्यद्देशिन्तेयद्भवे भवेत् १८५ व्यक्तंतद्वकतुल्यंस्याद् शैन्तंगिशतागतम्

यथोचितेष्टात्सावनेष्टानयनम्. प्त झर्लागत्झाजितरवेः १८६ ग्रमाङहोराभू छित्तेस्त सावने इमुदीरितम् मध्यभानयनम्, छाद्येखेटो-

द्यादिष्टुनेष्टाद्येव्यक्तंसंज्ञके १८७ छाद्यस्येष्टोद्भद स्पष्ट घरमस्वएडकडादिकम् हिलाशेषकठारत्तेकिन-

घात्र्यं यादिकं भवेत् १८८ तच्छावस्थादेशवर यादिष्का-प्रकारि होले प्रकार युक्ताभागादिकं वाद्रगप्रस्पृटंम-स्था ध्यमं मवेत् १८८ स्वाद्धाऽर्द्धस्थानगंलग्रं विज्ञे यंम-ध्यमबुधैः निजदेशीद्योद्भतेनइद्भयक्षीद्योद्भवे १८०

स्पष्टदर्शान्तकारए।ज्ञानम्. उन्नेराशित्रयंहिलातत्स्थूलंमध्यभंभवेत् मध्यभ-ऋान्तिदेशस्थःखेटैं स्यान्मध्यभीन्मितः १८१ ्रुग्रथ लम्बनाभावकारए। ज्ञानम्. चेद्गाद्यस्पष्टचस्त्राङर्जुत्त्यंतद्गाणितागतम् दर्शान स्यात्तदातत्रसम्बनाऽभावकंभवेत् १८२ मज दर्शान्तुन्ते चुदिष्टंस्याद्यथोचितम् खाद्येस्येष्ट्रज

साइद्वरवण्डातुंल्यंभवेत्तदा १८३ तत्रभूगृर्भभूपेष्ठदि क्स्त्रैक्यंत्रजायते तर्हिचुाँग्रेस्पयुप्तादृह्वस्वएडे स हिलम्बनम् १५४ छाद्येगुप्तनिशाखँएडेस्याच्छुन्यं विविलम्बनम् स्पष्टदशोन्तकारए।ज्ञानम्. छाँचे भ्रमजदशन्तिकाले भूगे भृतः सदा १८५ तुल्यां ५ ग्रेसंस्थितीस्यातामःकं शीतों शुलेचरी तस्मिन्न् र्हु ते। की: स्याच्छीतांशुस्तदर धुःस्थितः १५६ भूगेभू त्यृथिनी पृष्ठमुच्चमद्रस्तिकृपृष्ठीतः दर्वेन्ध्वरत्ति धुं परयन्सुरेर्याऽएडेयनगन्छति १९० तस्माद्याम्योत्तरः

स्त्र:सर्वस्थानेऽ वगच्छित यास्मिन्कालेहितलाल

परमसिद्धान्ते.

मजदशान्तात्पूर्णलम्बनिसके

नोःस्यात्सारवेनीतिः २०० व्योम इवृद्योगुलानांतुस-वित्रोदरामुखं भवेत् श्रयंस्थूललम्बनानयनम् श्रुधुनाप्रयमवस्ये इंस्यूलतिहलम्बनम् २०१ स्या-

मध्यक्षेजनिम्नाशज्याऽद्ग<u>ीद</u>कक्षे<u>पको</u>ऽस्फुटः मध्य कत्मागानाज्याऽद्वः स्याह्यजवोऽस्फृटः

वर्ग भेद्रपद्रश

त्क्रान्तिसम्बन्धीवत्तेतेचतनस्त्विह चक्रां में ३ रंशान्यास २८।३८।५१ वर्ग ८२० १४०।४५ पताः - दर्शान्तेचन्द्रोदयज्ञानम् भात्याप्तहरोच्यते गणितागतदेशी

ष्टिनार्र्डयोः २०६ विश्वेषस्यकलास्तेकनिद्याःस्यूला श्रेतः अ ८त्तराञ्चकाःस्यूलभेदाञ्चरोज्यिर्द्धतुरागमंघटिकादिकं

स्वयमध्यसलम्बनानयन्म् स्वयमध्यसलम्बनानयन्म् स्वतिद्वारिके हं प्रवस्तामिलस्वनमध्यमातमिष्यम् २०० धारकमङ्करुष्टी सुरमालहारस्वयाः चर्मयानेषु

कृता डार्चेमुंजकृतिंदुधैः २०८ तन्मूळं छार्<u>चेहक्सूत्रं</u> विज्ञेयंयोजनादिकम् एकादायोजनानयनम्

्यासेपृथिनीयत्तं दिखुमोरगताडितम् २१० सत्त्वे घटीयक्तंस्युरत्तवैकाशयोजनाः **दश**न्तिचन्द्रोद स्थानम्

१झानम् , गाराताशातद्वास्तात्ववरात्र्यस्त सावस् क्षत्रवः च म्बारं स्थान् केलिदिलं क्लिकेट ११ तत्कुजेडकीद्यात्प्वीनत्यस्याद्यं भवेत् तहिनेड असंतरं च स्थानिबल्वेद्धवक्तिद्वि

२८ । ५४४४५ महातर्वी २२०२ ।४३११ पता भटावकटा मुत्यपताः २०६२६२ त्रिज्योगभ ।३५१२४ मकाः ४१२५२४ ६।४४ पकमादेशोट्र-ज्यकृत्यधं रेटह् ११५११३ मकाः भ२३१४४१, २८।३८।५१ वर्षी मक्

परमसिद्धान्ते.

३६०

\_ छाद्यदंडवंशान्य खाद्यव्यक्तजन्तम् जायतेतन्नताच्छोद्यद

बुधैः २१८ प्रोक्तं चस्तैष्य रात्रीतृतक्किसापूर्वकं द्वान्तिचन्द्रार्कनतोत्पत्तिः गरातोत्पनदर्शी

देशन्ति उपंविधीः प्रोक्तवत्स

तां मागप्रवीतुप्रस्फुटी २२७ याम्यंबद्धोगुख्सवैसीः प्रस्कुलक माँशीनस्वाक भागव्यकादंत्रम् केरस्या त्रञ्चकेदार केर-क याश कादिक म् दरहदादुनकोटिल्याई पूज्यासेकेर प्रेदर्ड वंशीभवे नाम्

३६२

नादिकम् कनिष्ठाः संस्कृतंपल

६।४० पलभादेशे भूवेधयोजनाः इ. ५०० ।५० ।५५ तलं उच्यो ५००।५०।५५ ऋसांशाः दः ३४।३।१८ श्रक्षांशक्यार्द्ध रश्यक्ष ।३० लम्बोझन्याईकुन्दं धारम् ५०।५।५।३१ त्रिक्या ११४ । ३५। २४ पर्छाः ४१ २५२४

संस्कृतंत्रीखरो अवेत् २३५. तत्किनिषाहतस्त्र्वतीराप्तं शालस्

न्यते तच्छालंतकनिषस्यदिग्गतयोजनादिकम् २३६ चेन्तीराज्यभुजेकोटिश्चकनिष्ठस्तुरुभ्यते तत्स्त्र्त्राख्यः भुजेकोटिरज्यशास्त्रिधस्तदा २३७ कनिष्ठा.

वालंतीर एएांस्त्रभक्तं झेयंकनिष्ठकम् शिखरानयः स्थात्तथापर भूवेधे संस्कारंचक निष्ठकम् अपन्यशा-**लानयनम्** तच्छालशिखरैक्याऽईमऽन्यशालसुः

रक्त भूवेधसंस्कारंजायते शिखरंयया २३८ **कनि** दीरितम् २३९ नतात्तयनम् भूवेधांऽकमित् क्रिकेनसंस्कतम् अन्यंशालाभिधंहलापूल्यांशैर तंभनेत् २४० छाद्यलोकाऽई विस्तारयोजनैज्योऽ मुच्यते तिहु घ्रज्याभवेत्तस्याः कोटचंद्रवास्त्रसो

तयत्तत्स्यान्नत्तद्यथास्थितम् तचाऽन्यभूमि

कापूर्वकत्त्रया एवं पुनः पुनर्दएडे दाँही

त्त्वेष्टसमानयेत् नतेपश्चात्कपालीत्ये छ। द्येखेटस्यत-स्यच २४५ स्वेष्टजस्फुटघस्त्राद्ध द्भवेत् इष्टोत्यस्फुटघस्त्राऽद्वेपूर्वाऽह्वोत्यनतस्यच २६६ संविधायाउन्तरंब्यक्तं छोद्यस्येवहिजायते

र्वानयेदिष्टं छाद्यस्यैनययोचितम् २४७ गुएगा वा द्येश्रमजदंशीतंब्य केष्टविवरंबुधैः रुखाशेषकलादांत गुणकारव्यमिहोदितम् २४८ मध्यलंबनाः छाद्येश्रमजदेशन्तिकाले तन्छिस्वरस्यत ग्युक्तातस्यपदंतुयत् २४५ छेदःस्याच्छाद्यंद

स्प्त्रंगुएकेनैवताडितम् छेदासंघटिकापूर्वेमध्यम मध्यभस्यनतांज्ञानां ज्यान्द्रंशिाः पंच घ्राः चंद्राकि वेणांशांतर गु-शिताः ४२७६ भक्ताः नख्याः व्यावहारिकामध्यभनतांशिहका त्रांगुखाद्यानतिः स्यात

स्पष्ट्नत्यानयनम्. लंबनंभवेत २५० नत्यानयमम् मध्यभक्रांतिभा-

गैस्तु संस्कृताः पढेभागकाः मध्यभस्यनतांशास्त्रे विज्ञे-या गए।कोत्तमैः २५१ स्युस्सर्वत्रनतांशोनर्वांकांशा उन्नतांदशकाः दूरानयनम् मध्यभस्यनतांदशानां क्याऽ-इंडिशाः रवर साह<u>ताः</u> २५२ तकनसत्रवेदाप्ता भागपूर्वेत्ततंतरुलम् छाद्योछाद्केयोस्सत्यवेगभेदांद्या-ताडितम् २५३ सूर्यीप्ततसन्तर्भागपूर्वमुत्तरदक्षिएम् मध्यभस्यनतांशानांदिकंदूराभिधंभवेत् २५४ दूरांशाः स्वाबिभिनिद्या मध्या नत्यगुलाः स्मृताः दूरांशा म ध्यनत्यंशा दूरदिक्काःसमीरिताः २५५ दूरांशा द्विगु ः एां रुखाच्यास्यात्तस्यास्तुदोर्छवाः दूरदिक्कान्त्र्यभाग चानितःस्याद्यावहारिका २५६ यत्रचौद्योष्टकालो त्यमध्यभीत्यनतांऽशजाः सानतिस्तुततन्छा द्येखेन रस्यैवकीर्त्तिता २५७ सातथाऽभ्रयेमसुण्णानितः स्यादंदगुढादिका ऋष्यस्पष्टनत्यान्यन पूर्वो याहकाएडान्ड्रिनिस्तारंखित्र प्रयुज्य भाजितम्

परमसिद्धान्ते.

३६६ भिधंज्ञेयमञ्जेतद्योजनादिकम्**भाग**से.

भागक्षेपपळान्येष्ट्रेषट्रतकाग्निशिवाः स्यृताः २५८ पलाः ११३६६८ भागा ३१।३४।२८ उद्भाशान्व

छाद्याछादकयोर्भुक्तिविन्धेषभागपूर्वकम् स्वासः ब्धिभाजितम् २६० छब्धंभाग

मुख्युत्त्काभागक्षेपलवेषुच उद्धर्जाशा भवेयु-

उल्कोटिर्जायतेतस्या जीवाद्धे मूसलभवेत् वाद्धाः छ। द्यारएड व्यासरवएड घ्रमु-बुजारशज्यका दलम् २६२ 40190183

प्रज्यासत्तरमञ्ज्ञां वाद्याविज्ञेयायोजना दिका उन्तर्गाः मूसर्छनाहतप्राद्यलोकेच्यासदलतुयत् २६३ पूज्यभः क्तंफलज्ञेयमुक्तुगयोजनादिकम् प्राचीनाः उत्तरा क ऽर्द्ध विस्तार हीनं प्राचीन मुच्यते २६४ **नू तना** •

श्रुव्यपताः २०६२६२. 😵 ६।४० पळमादेशेपळांशाः २८।३।१८ ज्यार्द्धे २७/४८ ।३० भूवेः

धदः ५००।५०।५५ तलेलः ५००।५०।५५ लंबाजाः ६०।५ ११२ च्या १००।१०।११।२ ५६ मुख्य ५०।५।५।३१

४८।४८।४६ नद्राहकाण्डाई विष्कम्भनिहतं भजेत्

२६५ प्रज्यांशैस्तरफलेहिलाभूव्यासारईफलं भवेत वांछाऽभ्यस्तंफलंपूर्वभक्तंनूतनमुख्यते

द्रुम् स्यात्तिह्रेगुणितंज्यास्यात्तस्याःकोटिलवाःपुनः २६८ उद्भुजांशा भवेशुस्ता हिलाखांकेछवेषुच उत्हे चीनतुल्यंस्यान्तूतनंतावदानयेत् प्राचीनंनूतनंचाऽ

संसमन्वितम् कलातेनाहतांश्चित्याखएडमङ्गविभा-जितम् २६७ छाद्येलोकाएड विस्तारखएडेनैवज्यका-टिर्जायतेतस्या जीवाऽर्द्वे सूस्<u>रहंभ</u>वेत् २६८ यावत्प्रा-पिह्रविमेवपुनः पुनः २७० गुएगाः ततोनिर्विकते हिला . ह्यु दु जांत्रामुखे बुधैः भाग सेपाभिषंत्रोषं भागपूर्वे गुएां भवेत् २७१ नत्याः मध्यभस्यनतांऽज्ञानांज्याऽर्द्धी शा गुएाताडिताः खुत्र्याप्तास्तरकलं भागपूर्वास्याज्या-कुढानतिः २७२ सादि घीसिंजिनीज्ञेयातस्या बा

श्रजा १०२ एवस्त्रस्वेष्टकाळोत्थमध्यभोत्यनताशजा चानितस्सानितर्शेयास्त्रस्वेष्टसाराजातया २७४ ऋष्यभ्रवेधयोजनानयनम्

त्रयभूवेधयोजना न्यूनम्.
लम्बाद्धान्याद्धाद्धाद्धाः भावपीपिएढयोजनाः
श्रेष्ठभक्ताः पर्वाद्धानातिकः प्रेष्ठभृतितम् २७५
त्तुलयोजनान्यनम्, व्यहदेशोक्तरेवृत्वपूर्भरूषोतरंभवेत् यास्यस्याभिन्भभूमेर् हृद्दिष्ठिपेव्यसतः सदा २७६ निजयुमेर्विकं स्याद्वेधप्रमितं तलम्
स्वाद्वेषदेभूव्यास्युगनार्द्वस्तुल्यस्ते २०७

त्तरभवेत् यायस्याभिनभूमेरुई सिर्ग्ययस्तः सः
दा २०६ निजभूमेरुदिकं स्याद्वेषभमितंतस्य
भावन्यस्यानिकं स्याद्वेषभमितंतस्य
भावन्यस्यानिकं स्याद्वेषभमितंतस्य
भावन्यस्यानिकं स्याद्वेषभमितंतस्य
भ्यादेश्वरिकं स्याद्वेसभमितंतस्य
भ्यादेश्वरिकं स्याद्वेसभिन्दिकं स्यु
भ्यादेश्वरिकं स्यादेशस्य
भावन्यस्य
भावनस्य
भावन

३६८

य छायरत्तमुदीरितम् २०० छादकरात्तझानम्. स्वक्षायोजनैस्कल्परतस्यादाहकस्यत्व नाठानयः तुर्वाछादकरत्ताप्राद्रश्रामधादकस्यत्व २०१ च

त्रम् छादंके यत्तामा दएडामान्धार्यके स्थाय २८९ न्यः स्थापा इताहं स्यामालयो जनादिकम् दएडामान्धार्यकस्यो वस्यान्धार्यकस्य स्थापा अध्यक्षित्रस्य स्थापा स्यापा स्थापा स्यापा स्थापा स्थापा

न्छादकस्व वस्त काश्व पाजनाहिताः २० र नाजक कलुस्तंत्वाभने घोननादिकम् लोकव्यास्त हे दून्ये लग्ने घोत्कस्य २०३ चेह्एडे तहित लाखक भ्यते योजनादिकम् नरानपनम्, वृश्वाद्र यात्र यह क्ष्ये पातं महकस्येवतस्य १०५ श्रे श्रेष्ठासंद्र विक्र तुन्संस्य घोजनादिकम् छादकस्येकभागस्य योज्ञ नान्ध्यत्कस्यवा २०५ निम्ना वंशाव्ये वैदादिकाः स्पृत्रस्योजनाः व्यवस्थित्य स्वर्णने कहात्वासा इत्यानस्य स्वर्णने वहात्वास्य स्वर्णने वहात्वासा इत्यानस्य स्वर्णने वहात्वासा स्वर्णने स्वर्णने वहात्वासा स्वर्णने वहात्वासा स्वर्णने स्वर्णने वहात्वासा स्वर्णने स्वर्णने वहात्वासा स्वर्णने स्वर्णने स्वर्णने वहात्वासा स्वर्णने स्वर्यस्य स्वर्णने स्वर्णने स्वर्णने स्वर्यस्य स्वर्णने स्वर्णने स्वर्णने स्वर्णने स्

इत्यपकाः २०६२६२ त्रिज्यापकाः ४९२५२४ ६।४०पकः
 मादेशेत्र्यस्यादान्याप्रिः १९।५४।४५ त्र्यसयोजनाः दः २०८।५७

**१७० परमसिद्धान्ते** 

सुनुसुच्यते २८७ कान्युत्कातिस्चकम् छाद्यस्वेशुद्यादिष्टकाठीत्थाद्वाह्कग्रहात् स्त्रानये

छाचसेरोवयादिष्टकार्जेत्याद्वाहकग्रहात् त्र्यानये स्त्रस्फुटकातिमुल्कान्तिचसमानयेत् २०० उत्केरा-

न्यन्म्, उल्कान्संशविहीनाभगोंशानाम्मीविका व्यक्तं उल्कोरंभागपूर्वेतुविक्षेयंचाऽत्रपाएँडतैः २८५ मन्दानयनम्, छोयखेटनतोत्पनादंशदान्याद काशकाः उक्करस्याऽशकेरिपाः

त् २५० तन्मन्दं भागूपूर्वतुसीम्यदक्षिणसंज्ञकम् छोने इस्टेटनतोत्पन्नवंशिदकं सुदीरितम् २५१ स्युनेत्किकं

ध्यव दनतात्म अवशाद क्षेत्र चुनारता स् १६० त्युना त्यक्ष चान् ५१५८५६ (११)५४ कं नेगवदीशिर्मक सं दंबंबाग्ने स् महरोनासंस्थात फर्जचं संबोधनंत्रादिक संस्थात तब चावत १९५८९६ (११)५४ च्युन्यहरी स्वेत्र नेगवदी भक्त कर्क स्व भागा-हृतन्त्र दिक्कु दुनस्थात् इस्त्रीमकत्तवस्य क्रियाः उत्तरस्य स्वा

प्रकुणेनाळंस्यार् फर्कचं नेशा प्रवेशी हो झरेरचा व नव पातप्र ५१५८५६। १३५५ च. प्रकुणे दे चेन्नदी भक्त के मच्यापा-इनाइ (व के दे) प्रचात् इरे शोक्त मार्चक कियाः चेटला प्रदेश किया प्रचारा किया हो आहे हो इंटर स्थात दे इस्प्रेश्च व्यवस्था गा क्षेत्रण बहुताः क्षेत्रणील इंट्रिक्टी इंटर भाग पूर्व भन्देन व इंटर्स गा किया नात्रणील इंट्रिक्टी हो इंटर्स भाग प्रचार स्थात्र मार्चित्र नार्वित्र महात्रा नात्रणील इंट्रिक्टी हो इंटर्स भाग प्रचार स्थात्र स्थात्र

क्ता बुधः वष्य व्यव्यन्तिकाः क्रियो द्वीद्याऽन्यभूमेरुदिग्यतम्

कान्तिदिक् फलानुयनम् शकाऽभ्यस्ताछाँद्यवंशदमीविका भागाद्यात्रिञ्यक्षं शाप्ता मन्दांत्र्वा वंशिदर्गताः २८२ तुंगानयनम् न्दभागाहतं छाद्यं एतं चकांत्राको द्वृतम् तुंगंतन्मन्दः दिकंतुं जायते यो जनादिकम् २८३ योजनैस्लेक्ग-गस्यछाचेखेटस्यताडिताः मुन्दुांद्वाः स्यानुंगंयोजनादिकम् २५४ तत्यूज्येखाद्यसेटस्यळी-कव्यासाङ्क्रयोजनाः लभ्यन्तेयदितदंशरूपेमन्दाङ्गिः

धेतदा २८५ लभ्यन्ते प्रस्फृटा मन्ददिगातोस्तुंगयो-जनाः स्वाडन्यभूदिगताउद्गीर्धागताः १९६ स्तम्भानयनम्, तुगभूवधयोः कृतास् रस्तम्भमुच्यते स्प्रक्षयोजनानयनम् पुन्ये भून्यो सरवएडचेत्पल ज्यार्डे ६ सरोजनाः २ ५७ त्रासीर याज्यां प्रिएगानि मं भूज्यासं पूज्य भाजितम् परुभादि-ग्गतास्वः सयोजनाः परिकीर्त्तिताः २४८ ऋगन्तिः

दिव्-फलानयनम्, चेत्प्ज्येखेटकसुग्या व्यासा-उर्दे बोजनादिकम् तोटकेतद्वहस्यैवक्रानिदिक्कंफ-

३७२

कव्यासाऽन्द्रे घ्रतुत-

म् २०० एकाश्चरोजुनसुण्णास्तीटकाशास्तुनायते तद्रपर्क्रमदिक्कतुकान्तिदिक्फलसङ्गकः

हारानयनम् अक्षयोजनसंस्कारदलातच्छादक-स्यच ऋन्तिदिव-फलसङ्गीतुस्याद्वारयोजनादि

३०२ गुणानयनम् तत्तुजनारुयविगयो गुएां भवेत् अल्क्रान्तितोटकानयन

राभुजन्याद्धं मुल्कान्तं स्तोटक भवत् १०३ उल्का-तिदिक्कलानयनम्, चेत्र्चे ग्राह्मलोका ऽ संस्यात्तर्हितोटके उत्कान्तेस्स्यादिहोत्क्रान्ति सुल्काति[देकुफुउम् ३०४ छाद्यरवेटस्यकक्षाउद्देव्या

संपूज्यांशकोद्धृतम् त्क्रानिदिक् फलम् २०५ अभ्यस्तान्छा चरू ऋातिभागानां ज्यादि पुज्यामळीकव्यासखंड योजन प्र ऋाति

दिक्कं पतं स्थात् पूज्यंपताः २०६९६२

नाला द्युपपत्तिः

योजनास्तोटकांदाकैः ह्युत्कान्तेस्स्यान्तयोत्क्रानि कंचोल्कांतिद्विक्फलम् २०६ गुएयानयनम् अद कस्यस्फुटकानिदिक्फलेनैवसंस्कृताः ऋसयोज-नका हारंयोजनाद्यंययाभवेत् २०७ उल्क्रांतिदिक्

फलेनैवसंस्कृताब्वादसयोजनाः स्यात्तया सजस्तर्प तुगुएयंतद्योजनादिकम् ३०८ उल्क्रान्तिदिक्पलंचाः

क्षयोजनैस्संस्कृतं भवेत् यदुएयंत उद्गुएगानयनम् दुएं हारभक्तं गुएयाहतं भवेत् २०५ उद्गुएं लड्य **भी**-मानुयनम्, संनद्ममुद्धुएांतुगुएगोद्भृतम् भीमंत-

न्युजिदिकं तुजायते योजनादिकम् ३१० रीत्यन्तरे-ए।भीमानयनम्. मुंजंहारोद्धृतंगुएयनिघ्नंवा भीम मीरितम् चेद्धारेजायतेमुंजगुएयेभीमंतदाभवेत्शा मुञ्जानयन्म्. वर्गभेदपदें झेयं मुंजंत हुए। नालयोः

भीमसंज्ञक दिकंतु नालानयनम्, तथातदुणमुज मोः ३१२ वर्गविश्वेषमूळतुं जायने नालयोजनाः नालाद्युपपत्तिः यास्योदकस्थिरभूगर्भस्त्रतंगर्भः

नेगर्भगस्यँलात् उद्भदिशोतु भ्वेधतुत्येनालाउन्तमुः न्यते ३१४ खेटेदएडांदाकाः स्वैकं भागयोजनताडि-ताः तनालयोजनां ज्ञेयाः प्राकृपश्चाननदिश्यताः

३१५ नालान्तस्थानस्वस्थानमध्यंहारमिहोच्यते छं-दक्यहनालान्त मुन्जमूलाऽन्तरंतिह ३१६ नालंत-

नतिकातुमाके पत्रात्संज्ञकं मतम् हाउनहारस्त भूबाहु कॅंबिः कोटिस्तुजायते ३१७ नालस्तदार्हु रू पः स्यान्सुञ्जस्तत्कोटि रुच्यते इष्टेस्वस्यान तश्चीर्द्ध संस्थेतच्छाँदकेयदि ३१८ निजभूमेरु दिक्कस्या

न्ज मूई मुखंतदा छादके खस्थलाइधः स्थेपुर भूमेरु दिग्गतम् ३१८ तन्सुन्जकोटिक्सपस्यानिम्नरूपमऽ धोमुखम् ह्यत्रोदेपैकमोत्पन्नंयनालान्तस्थढंभ-वेत ३२० तनिजस्यानयोर्मध्यंबाहुँ: स्याद्गुएयसं-

ज्ञकः चेद्वारे मुञ्जवेधः स्याद्गीमवेधस्त गुण्यकेशः

६।४० पलदेशेभुवैधं ह- ५०० ।५० ।५५।१०

हक्स्त्रवाद्युपपत्तिः ३७५ हारेचेदुएाकःकर्णीगुरयुद्धुं दुर्एाकोभवेत् कोटिःस्का

चेंदुऐ।मुंजञ्बोदुऐ।भीमकस्तदा ३२२ ग्रहवेधान-यनस्. नद्रशंनिजल्लघंश्रेषीप्तंवशदिणतम् भूवे-धसंस्कतं झेयं खेटवेधं तुतन्नच ३२३ तद्यथानर भूवेधं संस्कारमु<u>ंजयुच्यते</u> संस्कारंचीच्यतेस्तम्भ भवनी वेधतुंगयोः ३२४ तथाश्रेषोद्धताइत्तादंशाहादंगहि-र्मातम् फलंतद्भद्दवेधंस्यात्तत्रभ्वेधसंस्कतम् ३९५ मार्गकर्णस्वेटहक् सूत्रयोरानयनम्, खेर्चरं छाँद्कंस्मृत्वामुक्जनालहराऽभिधान् त्र्यानयेद्दर्ग-योगस्यम् लंनालहरारंव्ययोः ३२६ जायतेमार्गकर्णतु तन्मुब्बाब्यनकर्रीयोः वर्गैक्यस्यपदेंखेट दृक् सूत्रस-सुवीरितम् ३२७ सूर्यग्रहणवत्कक्षांतरग्रहणेः हक्स्त्रानयनम्, भीमाङ्गाद्कह्कुस्त्रनिघा-न्मुञ्जविभाजितात् त्रप्रएड भेद्रप्रहेज्ञेयहक् स्त्रत्रं योज-

नादिकम् १२८ क्ष्म्यदृक्स्त्राद्युपपनिः उल्कानिकुएडकेछाचेखेटाऽएडेचनग्रहाति दकसः

परमसिद्धानी. त्र<sup>व्</sup>छादकंपरयं स्तत्रनिन्दुस्थलोच्यते ३२८ स्तम्भा-ऽश्रोचत्रलगतिह्युत्कानिकुएडलेतथा तत्रमन्दस्यः . . . . दक्पानस्यानमन्दस्यानारे रक्पानस्यानमन्द्रस्यानातरः लङ्गोयविन्द् मन्द्रस्यठान्तरे ३३० उत्स्रान्तेः कुएडठाः बांतु चापुरूपमुदीरितम् यत्रसपृत्रातिभीमाऽयस्तत्र विन्दु स्थलं भवेत् ३३१ इरायाचा भ्योन्तरं चापं मन्द स्थानेवगद्धति मन्द्द्धाद्योदन्तरेवाशसरकतातना तिभवित् ३३२. त्र्यथा प्रानयनम् . तद्भीमतलयोः कलासंस्कारंशीष्ट्रमीरितम् नालान्त-स्थानतो यस्मा इ. इि. धोयानि भीमक ३३३ संस्कारं

तुततः शीघं घोच्यतेनलभीमयोः कामानयनस् स्तम्भूभीमकुलंतुल्यंशीघ्रतुंगकुलंसमम् ३२४ ज्ञे-यंद्याद्यरवगस्येकं भागयोजनभाजितम् चीद्यंलब्धः फलंभागपूर्व मन्द्कुलंभवेत् ३३५ उत्केरस्यांऽदाके रामंपूज्यं मन्दकुलाहतम् स्याच्याऽ ईतिद्यमे प्रज्या स्यात्तस्याः कोटिभागकाः ३३६ तर्कीपा घटिका पूर्वकामतत्समुदीरितम् **छत्रानयनम्** पञ्चाऽ साऽ

भीमस्तम्भाः

त्यनेतोत्यनंकामछत्रमुदीरितम् ३३७ चेच्छाचेस्याऽ 'क्षचेंन्द्रोर्द्धनतिक्षोन्द्रवंचयत् कामतंखा ग्रितोहिला

तच्छेषंछत्रमुच्यते ३३८

त्र्ययभीमस्तम्भाभ्यां हुग्युतेः भोग्या-

भोज्यकालज्ञानुम् ह स्राकाशामिमुखचाऽत्रनिजभूमेरुदिग्गतम् परभूमे क्तिंग्यातं विज्ञेयंतद्र धो मुखम् ३३८ स्तुम्भदिक्के स्त-म्भसमेभीमे दृग्योगकं भवेत् निजभू मेस्ति होत्भी मस्तम्भीयदातदा ३४० भीमात्स्तम्भेऽधिके स्तम्भान्दीमेऽधिकेगतम् जायतेदृष्टियोगंतुपरुभादि म्मतीयदा ३४१ स्तम्भभीमाविमीस्यातांस्तम्भेभीमा धिके गतम् स्तम्भाद्गीमेऽधिके भोग्यं दृष्टियोगंतृ तद्भ-वेत् ३४२ चेत्स्व भूमेरु दिग्यातस्तम्भेन्यूने उधिके उप वा त्र्यसभादिग्गतेभीमेन्यूनेवाऽप्य र्धिके र्पिवाअश्व भोग्यंस्याद्यदितीस्तम्भभीमीदिग्व्यत्ययोपगी स्वा तांनदातुं हन्योगं यानमेवहि जायते ३४४ यथोक्तमन

भोग्यत्कपाठेपश्चिमेभवेत् इष्टेपूर्वकपोठोत्थेस्याद्यः स्तंगतभोग्ययोः ३४५

श्च्यच छत्राहुम्युतेः भोम्यगतकालज्ञानम्. इष्टे छाद्यनतं छत्र तुल्यं यत्रहि जायते तत्र भीमसमं स्तम्भंस्यात्तदृग्योगमीरितम् ३४६ छाँदीष्टनत

ऽत्यंचे छत्रं तह म्युतिकाराम् प्राक्षे पाले तु भोम्यंस्याः <sub>यात</sub>ं प्रचातं प्रक्रपालके ३४७ चेदानेवाऽधिकं छत्रं छोदे-ष्ट्रनुततो भवेत् कपाले पश्चिमे भोग्यं प्राक्षेत्र पालेग योगान्तरकरणङ्गानम्. एकदिके युतीयोग मुर्निरेल इन्तरं भवेत् भिकदिके इ न्तरं योगे विकेषेतु सुति भवेत् ३४८ छत्रयोयीगर्लाई न्तुपूर्विदिन्येषोत्वयोस्तयोः छत्रंमध्येष्टनंमध्यछ

. त्रंतत्समुदीरितम् ३५०. श्रय छत्राद्वयक्तेष्ट काला नयनम्.

हिलापूर्वेकपालेतु युक्ता पश्चीत्कपालके छत्रमि-खोद्भवंद्याँदी होत्यस्पष्टदिना उर्द्धके ३५१ जायतेतः

.कलादिस्तुव्यक्तश्छाद्येनतोद्रवः त्र्ययं व्यक्ते छाह्योग कालज्ञानम्. त्ति विकारस्योत्संस्यात्त<u>न्छोरा</u>स्यस्ययत् ३५२ नत किसो द्भवंच्यक्तं यातं छाद्येखगोदयात् निर्ह्हे सापृ

स्वेष्टजायते सावनंतुतत् ३५३ स्वेष्टं हम्युनिकार्अस्या-द्युद्धाऽह्नेस्वेटयोः स्वलु हम्योगकालतश्चैनंहम्योगेष्टं मुहुर्स्तुहः ३५४ न्य्रानयेश्विविकारं तह म्योगेष्टं धुवंमतं

**अवह**न्योगकाळं तुस्फुंटदशन्तिमीरितम् ३५५ स्त्रय स्यूलहम्योगानयनम्.

पूर्वेसद्यकस्रामीरितम् तत्त्तम्भभीमयो

गिरानान देशीन्तं प्रीमिष्टचाः अकीन्तिनम् तरस्यू छ-**अम्बनेनैबसंस्कतंग**शितागतम् ३५६ दर्शान्तं केंबोन्तरंतयोः ३५७ भिन्नदिक्केतुसंयोगंस्तम्भर्भी माऽनरंभवेत् स्तम्भभीमाउन्तरंकलाप्रीगिष्टेसद्य-कसरो ज्येष्ठाः ज्येषारन्तरीस्थातां ज्येषार ज्येषार ना-

रांउतरम् कलाहारोच्यतेस्यू छलंबनस्य कलादिभिः

परमसिद्धान्ते.

300

२५ हत्वातत्वेष्ठजंभीमृस्तम्भयोरज्नरंभजेत् तद्वरेणकुतुपूर्वस्थातंभोग्यगतंभवम् २६० टच्यो. गेष्टेष्टयोर्मध्येस्वर्णिसष्टेधनर्णकम् दलातहृष्टियोग

ष्टेस्यात्स्यूलं लिपिकादिकम् १६१.

स्वाप्यूप्एिलस्वनं कला नयनम्
छाद्यभमजदर्शान्तिस्पुटदर्शान्त्योस्स्यूहः सं्विधाया
उत्तरं भीति द्विस्यायुप्रिलस्वनम् १६२ प्रवीदपूर्वनतो
द्वातदृशीद्रक्षर्णक्षमतम् छाद्यभमजदेशीन्त्वाताः
हणकारिसेनते १६२ स्वेष्ठनस्सुद्धालाद्धमद्भारद्धमद्भाभन्
तितन्नतु स्याद्वल्यलस्वनं व्यस्तेनदृश्लस्वनं भवेत् १६४

भागता स्याह्मव्यक्षस्य ध्यस्त ६ एकिन्य भगत् इहा ग्रीह्मा १९ ग्राह्मा १९ श्राह्मा १९ स्वार्थ १९ स्वार्य १९ स्वार १९

न्ता दुर्द्ध प्रविक्यालको ३६६ प्रवित्तरण्यकपालको स्राह्म प्रविद्यालको अन्य स्थानकार्यक्यालकार्यस्य १९६८ प्रवित्तरण्यस्य स्थानकार्यक्यालकार्यस्य टव्हान्तितस्यया प्राक्कपालकार्यस्य

के ३६७ जायतेलम्बनंसाऽप्ररवेचराऽएँडोऽन्तरप्रेहि इष्टेंछाद्या छादकयो मध्यमा द्यानुय छाँद्याद्यंदर्केयोरिष्टेमध्यमी प्रसुद्धे जवी ३६८ मध्य

का औ का शर शर निसंहर नीरफुटकार्ती साध्येच्चरारीतथा याम्योत्तरान्त क्ष्मंविम्बन्यासांगुलान्स्फ्यन् १६५ **छाद्याछादको**-त्पानः उद्स्यद्याद्यसङ्गस्याचाऽधःस्यद्यादकभवेत् बीतानुं भूप्रेभाभानुं बीतां शुञ्छादयत्यतः ३७० भारके

रप्रहरोऽकेस्तुछोद्यःस्या<u>न्छार</u>्कः शक्षी स्याद्भभाषा-- दकः खेटण्डाद्यश्चेन्दुविधुग्रहे ३७१ ग्रहणंचग्रहंयु-

न्द्रं योगंखंचरयोमं तम्.

लम्बनसंस्कृतम् ३७२ द

<u>चे गद्माः पूर्णलम्बन्</u>कुिप्तिका

न्तजाततात्कालिक ग्रहे लिसादीतिथिक लाग्रहस्फुट:

परमसिद्धान्ते,

राह्वेगोनशीतां शुवेगांदश घंचल

न्यम्ब न्यः न्यम्बिन्सुजयितेस्पष्टदेशीपूर्णक्षणुःस्फुः

स्योत्तरंभेदं धाद्याछोद्कूयोर्नतिः साद्याएडे बाद्कंप-

पातदेशंझेयं विचक्षरीः छादकस्थानतोरेखायाम्यो-दक्चापरूपका ३८० विषुवन्मएडलेवनीयातियत्र छादकाऽसाऽशकस्थानज्ञेयस्यान्तद

लम् ३८१ निजहक्पातदेशाञ्चयास्योदक्स्वत्रसंज्ञः कः तुल्यमएडलएत्तेत्यत्रयातिचतत्त्यसम् ३८२हक् .

कुक्षिस्थानकं होयं दक्कुक्षिस्थानसङ्गकात् तहु एस्थानपच्यन्तयेभागास्तुत्यमएडहे ३८३ तेतत्का

तिषुवत्कृएउउसानिनसम् २०१ छमवा झेमाः प्राकृपमाछुम्बन्धाः स्वाद्यक्षमः छोत्याः प्रकृपमाछुम्बनाद्यकाः स्वाद्यक्षमः छोत्याः पद्धक्तं छिप्तिकादिकम् २०४ छम्बनतत्वणाः द्वतं स्वाद शास्त्रपासंद्रकम् निवृद्धक्पातदृङ्कृष्ति-देशयोदन्तराशकाः २०५ सोन्यापाद्यानाः सोन्य-देशयोदनत्वराशकाः २०५ सोन्यापाद्यानाः सोन्य-दिश्लाः स्वाद्यक्षम् स्वाद्यम् स्वाद्यम् स्वाद्यम् स्वाद्यम् प्राव्यक्षम् स्वाद्यम् स्वाद्यम् प्रव्यक्षम् स्वाद्यम् स्वाद्यम्यम् स्वाद्यम् स्वाद्यम् स्वाद्यम् स्वाद्यम् स्वाद्यम् स्वाद्यम्यम् स्वाद्यम् स्वाद्यम्यम् स्वाद्यम्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यम्यस्यस्यम्

प्रवर्गा स्वाप्त स्वर्ग स्वर्ण स्वर्य स्वर्

याम्यान्तरंभवेत् ३८१ तत्यूवीप्ररेखाया

'परमसिद्धान्ते

म्बरेभवेत् ऋषिप्रीक्षाद्याद्माद्यन्मभिष्ठविधु इहारे हे १९२ जेयहेऽकोदयाद्माद्यं छत्रजंब्यक्तमिष्ठके

चविधोरसदा ३८४ मुध्याऽपमस्थला-्रातिसीम्ययाम्यस्यलेविधः दूरंयहोद्धवैस्तत्स्याङ्गाः

गंप्रयमंविधीः ३८८ स्यातस्माद्धीप्रहेसीई

कीस्वाबिप निर्दृष्ट इत्येकाक्षर केशः

२८८ पश्चिमाऽदाः कुभायुक्तोभव त्येव ततः प्ररम् पश्चिमां शस्तुतह द्ज्झतिशीतगीः पत्र्योदिग्भागे प्रच्युतिर्भवेत् नाइस्तिभूच्यतिर्श शुलोक्<u>यो</u>विवरंयतः ४०१ शीतां सुग्रहणतस्मात्सर्वत्र मादिन्द्रभेईनोक्तंलम्बनंननतिर्मता ४०२ सर्वग्रहणेस्पर्शमोक्षदिग्भागदेशोपपत्तिः

पूर्वोऽभिवदनं भानुः पूर्वभिवदनं शर्री लहि भवत्येवार्केचन्त्रयोः शीव्रवात्तत्योश्रीचः स र्यस्यागत्यपंश्चिमात् ४०४ पूर्वस्यांमेद्यवत्सूर्यी

लोकेचैवगच्छति पूर्वपरां संकं भानोः शीतां सुन्छाद यत्यद्रतः ४०५ भारकरश्रह रे तुत्रेन्द्रोखुलना होनोः पृष्ठांशुंप्रथमंतिधः ४०६ प-श्राऽत्त्यजितपूर्वीशंतस्मात्पूर्वेन्युतिमीता श्रीध्रम- ३८६ फरमसिद्धा<u>ने</u>,

श्रेच्छादकोपत्रेप्राक्तेस्पर्वे पश्चिमच्चातः १०० बीह् श्रेच्छादकोपत्रप्रतस्य व्यक्तास्पर्णिकस्य न्यस्तार्गार स्वेच्छादकोपत्रप्रतस्य व्यक्तास्तार्गार्यः वस्तार्गार्थः स्वे व्यक्तिस्तार्गितन्त्रस्य १००८ सन्दस्यकोच्यतेनाः स्वर्णे

बुद्धका हो गां प्राप्त ने हुं १९०० मन्द्र सहा व्याप्त स्वर्ध स्वर्धा अपिता स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्य स्वर्य स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्वर्ध स्वर्ध स्वर्य स्व

४१० मस्त्रीप्रविचारम् ग्राह्यस्यष्टजवंतुर्थेः इष्टर्ति क्रोज्यिदिक्षत् यातियोगम् पूर्वकः ४११ क्राह्यस्य प्रकारम् वर्णमानम्बद्धाः वक्रगम्सन्त्रिक्षेयस्तद्भस्त्रयानीयम्बद्धाः तुपूर्वस्यादः स्यदिक्षतुपश्चिमम् ४१२ सर्वत्रप्रद्वहेः

्कृतिस्तात्वात्रभयसम्बद्धाः सागागमत् इह्यह्य त्यूर्वस्तादः न्यदिकतुपश्चिमम् ४१२ सर्वत्रप्रद्वहः सर्वे धेतत्तरपदार्थयोः सर्वत्रत्रित्रवस्तामध्याग्यः दकोभवेत ४१३ छाद्यः सम्पुखदिक् सस्यः स्यादे व स्त्रित्तर्थयाः विस्वेतत्कालदिक्सस्यः स्यादे व चाहुताययाः विस्वेतत्कालदिक्सानम्

यकानेयः खगोयहिक्प्राप्तःस्यात् द्वस्यन् ४१४ द् दिन्बस्याद्धः स्यवेज्ञेयासाकाष्ट्रापारिहतोत्तमेः चेत् र्वस्याद्धः प्राप्तोतस्याः धः पूर्वसुच्यते ४१५ तस्यो

ग्रह्णज्ञानम्. र्ड्रु पश्चिमस्थानमेवंसर्वेत्रतन्मतम् **नतिलम्बनसंस्का**-रोपपत्तिः छाद्योऽर्कश्चोर्ज्जुलोकस्योऽ धोलोकेछादकः शशी ४१६ यस्माद्यस्तिततोऽर्कस्यसर्वत्रग्रहणस-मंग्वीस्यतेन द्वाउतो उर्के स्यग्रह ऐनित्लम्बनी ४१७ · संस्कारीकथितावेवं भीमङ्गादिय श्रयचन्द्राकेश्रहणयोवए ज्ञानम्. इन्दोः स्वत्यप्रहे धूम्रं रू द्धीर्द्धे रुष्णरक्तः स्थात्यी<u>तं पूर्</u>णग्रहसंरो ग्रासवर्गभवे नित्यं कष्गंत्र झास्केर ग्रहे हैं ४१८ भीमादिग्रहण व-एज्ञिनम्. ग्रहणुङ्गानम् . नाऽबर्यदृश्यते संधिसांनिध्येसंशयंबर्देत् ४२१ यस्मान्यूनंस्वयहें तुं दृश्यते मानवैनिहि तद्गेहें संधि-देशः स्यात्संधिस्थाना चदाऽधिकम् ४२२ वान्युनमं गुलाउर्कोशसंधेः सांनिध्यमीरितम् भीमादिग्रहणस्ब

स्वन्यासाः व्यवत्यनदृश्यते ४२३ सूर्यग्रहणेग्रास दर्शनयुक्तिः क्तस्थिरेवंधपानीयेशु

पहेन क्ष्णाद्यादेवनवावर ४२५

भारकर अहरा-पर्श्येद्द्रयतेतद्यथोचितम्

शतस्यव्यस्त पूर्वोडपरें लिखेत् यांस्योत्तरं कलानहिंदिशंतया ४२८ सध्येके इं लिखेलें दादि-समालिखेत् ४२५ तचिद्वात्परितश्चेन्दोव्यसिर्

कुएडडं बिखेत् नत्रेन्द्रैं:कुएडडस्यैवमध्यांऽ मुच्यते ४३० रुखाचतु हिंशांतस्यव्यस्त पूर्वाऽपर

म्यक्तलात दिदिशतया ४३१ पत्रोत्यंशीतगोर्वत्ततुल्यंस्तंविचस्रऐोः चन्नंस्तोपः रिस्थानेपूर्वीत्पश्चिमसम्मुखम् ४३२ नि

तत्काले दृष्ट्वाभू द्युतिकुएडलम् स्त्रादिमध्यान्तदेशा-दी न्वक्तव्यंग्रहणेविधोः ४३३

ब्रेड्सच्यासीत्यं कुएडलं लिखेव् त्पृत्रोद्भव वनुंस्यंकु एड समितम् स्ये कु एड स विहिम्भिऋाँऽकितंपात्रसच्यते ४३७ सूर्येटचो प्र स्यानेपात्रंनिः सारयेदेवेः तथाके प्रह 'मोक्समुखस्थलान् ४३८ पएडितैस्तत्क्षरोद्दष्ट्वावक्तव्यं

तद्वहस्यव ऋनेनैवप्रकारेणास्फुटंमध्यग्रेहेस्वलंध्दर

३५० परमसिद्धाः स्पर्ध मो

स्यादाद्यन्तस्यह्येस्यातास्युह्येतीव्यावहारिकी भोमादिग्रह्गेस्युह्मपुरहेरवविधिः

स्पैनद्री मैपूर्वीणा स्वयहे पैत्रिमां चरेत ४४० तच्छा-चकुरहरूयो ईपात्र निष्कासये हुधः पर्रीहा पूर्वती-

बुद्धापात्रनिष्कास्यतत्क्षरो ४४१ भीमादिग्रहण स्थानान्यक्तव्यव्यावहारिकान्

न्यानान्यक्रम्थान्। त्र्यय्य प्रहरोषु स्तर्म परिलेख विधिः

पळः पळाविनाडीच्वियरीविकळाच्या ४४२ विकि भारत्रीविकिप्तिश्चप्राएीः पर्झिः प्रजायने नाडीघरी-

चित्रमाचित्रिकस्यूक्तः कला ४४३ लिप्तकोलि-प्रिकालिप्तोजायतेषधिभिः पर्लः

गर्वताजायतवारामः पर्छः त्र्ययः पूर्वीपरान्तरोचितन्छाद्यान्छादः कः यह स्पष्टरीतिः

मध्यप्रहणाकारे ए विशेषालिपिकाहतम् ४४४ वे संप्रहणे वं स्य स्व प्रकास वंद्री भागमुख्यस्य स्वाधी छाद्व स्वास्त्रयत् द्वालिप्त

नाना सुरवस्तर छ। छ। छ। ६० वास्तु वत् दलाला । रङ्गहरो सहस्रहे सर्वमहरोस्ययर दिक तस्र मध्यमहराकाल ४४५ छाद्यसेटस्फुटेशी इष्ट्रशासानयनम् ३८९ भ भः गण्यसायकास्त्रित्वक्ष्यनंत्रकाः वृह्यन् कोनके इष्टेस्ट्येन्द्रप्ति।सम्बग्धनाः स्थाप्ति-

चेर्द्रमधिमधिकोन्द्रे हुष्टस्यमध्यास्त्रिक्षिणामध्यप्रदर्शकी स्वतः ४४६ प्राक्ष्यद्राद्रस्याभीतमध्यक्षणणाहरू इत्तः ४४६ प्राक्ष्यद्रस्याभीतमध्यकणणाहरू इत्तः स्वतः स्वतः

द्रानियनम्, छाद्याद्भादकभीरिष्ठे प्राकृपस्य द्वितः स्वयोः ४४८ सब्बभूदाह्यकान्यूवीऽपूर्वभेदाह्यहान्यः स्वयोः ४४८ सब्बभूदाह्यकान्यूवीऽपूर्वभेदाह्यहान्यः स्वयोः स्वर्तेः द्वाः स्वयोन्याः प्रविध्यविद्याः स्वयोन्याः प्रविध्यविद्याः स्वयोन्याः प्रविध्यविद्याः स्वयोन्याः प्रविध्यविद्याः स्वयोन्याः स्वर्तेः प्रविध्याः स्वर्तेः स्वर्ते ।

४४९ स्थ नाग्य ह्(१८६०)रत्तानान्यावयुम्ह स्वयम्ह(ऐस्पष्ट प्रविधानात्तराग्रकान चनम् संदेशनोम्द्रनाच्य नाजानामिष्ट वर्द्वेत् ४५० तदी-ग्रेमच्योत्स्व हूरीपयोभेदिलिपिका स्वक्ति मा ह्या द्या दिस्त्रु पूर्वी इविकास स्वेत ४५० सामान्य भारकीरमा

कार ने महत्व ने प्रमुख कार्या स्वाधिकार विकास क्षेत्रकार होत्र होता हुन्या हुन्य होता हुन्या हुन्य होता हुन्य हुन्य होता हुन्य हुन्य

र्दिलाविस्तारैक्यदर्केतयोः ४५४ छाद्याछादकयोः रोषंत झासंस्वेष्टजंभवेत् इष्ट्रग्रासात्पूर्वापूर्वान्तरा-४५५ विस्ताराङ्ड यतोशेषवर्गेष्ठोत्येषवर्गयोः स्यपद्भेयं प्राक्षेपश्चीद उत्तरंग्रहे ४५६ पूर्व न्तरंयस्मिन्काले छादकछाद्ययोः विम्वव्यासागुलैक्या-

ऽद्वि<u>रिःधिकं</u>यदिजायते ४५७ तत्त्वेट ग्रहऐातस्मिन्काः लेनैवग्रहोभवेतः चन्द्रग्रहणेपरिलेखविधिः रच-र्रव्यस्तंयाम्यंयाम्यंसमाछिखेत् सीम्यं सीम्यं स्पर्धास ने ते पश्चिमें ४६० लक्ष्णाविलिले चांकसूच्यते मेदकेचांडकतोयाम्यसीम्येस्पष्टशरोां ते ४६१ स्थानेकेन्द्र लिखेत्तरमात्केद्रास्थाद्विमदीधितेः

न्द्रस्यव्यासीत्यं भास्करेत्रहे केन्द्रात्युवीऽपरेस्ट्रवे ४६६ देशेकेचंविधायात्त्रेषात्र्र्केचेत्तंसमाहिखेत् से बन्द्रं वत्तं चयनितम् ४६७ तन्मितंत्र-त्तरंयथायोग्बंब्वेस्तं प्रविधिरंतया

कुएडळं प्राप्तंयन्मितंतन्मितं प्रहें में तत्काले चीषंधी शस्य विज्ञेयंप्रस्फुटंबुधैः ४६३ सूर्यप्रहरोप पश्चाद्भेदसमिते ४६५ पश्चिमेमोह रेंद्र इसिमीपके कुलांडकमंडकतीन्यस्तिदिक्स्पष्टशरसमिते स्योपविष्टस्यपूर्वमासनिद्गतम् ४६९ पश्चिमंसन्सु-खंड़ीयंवामदक्षिण हस्तयोः पसयोञ्चद्रुखस्यानीसी म्यदिसिर्णसंज्ञको ४७० विज्ञेयी छे चके दुने खे चरेत्र- ३८४

हणादिषु स्थित्यरङ्गीगतयोः स्पर्शमोसयोः स्वस्मसङ्ग योः ४७१ स्वेद्धयात्त्रह्मद्रधोर्द्वेतप्रवृशाद्माद्र राकस्य च दर्शनायिक्षेत्रत्रस्र्स्मंतसरिलेखकम् ४७२ ह-

ष्ट्रातचभवत्वेवश्रासांद्रशाद्माकनिश्चयम् एवं मुहुर्मुहु-स्तरमाद्यावनिर्विकृतिवनेत् ४७३ ग्रहणाद्यादया

स्तावत्ति हिरवेच्छेद्यक खुलु मयाऽत्रपिर तुनाशाजानं. निजालयात् ४७४ उक्ततच्छाद्यखेरस्यदिग्ज्ञानकेंद्र-

ग्रहणेदार व्यासयोजानिज्ञानम् व्यासन्दर्गत्संत्राद्वानश्राह्यं कुएडलारुतिम् .

त्र्यथिबदिग्ज्ञानम् सूर्यादिप्रहाएगम्. इषकालेतुत्तरात्रेछाद्यश्चस्वदिगराकैः

्रे माशांतु संयातः साकातातुं समीचरेत् च्हर्यग्रहरो स्पर्शकाले बंद्र एत्तस्यपूर्वस्या रविरुत्तस्य पश्चिमं भ-वति सूर्यग्रहणे मोक्षकाले चंद्र एत्तस्यपश्चिमेस्द्र्यस्य तिचन्द्रप्रहरोस्परी सूभाषाः पश्चिमाशेचंद्रचत्तस्यपू

स्याहाणदक्षिणोत्तर ४८१ छाबाछादकयोविस्वकेन्द्र योरःन्तरंशरम् च्यते ४८२ छादकादुत्तरे छार न्छाद्यं छादं काद्या-द्मव्यासद्खस्यच

चेषमऽ शहणम-वेत् अग्रहं ग्राहकव्यासे हिलातत्स्या द्वहोचितम् ४८६

३८६ - परमसिद्धानी जर्म अहणात्रीचे बाएांग्रहीचितहिलातच्छेषश्रासमुच्यते.

श्रथग्रासयोजनानयनम् स्वास्त्र स्वत्र विकासः स्वत्र विकासः स्वर्णकाः स्वत्र विकासः स्वर्णकाः स्वर्याः स्वर्णकाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्णकाः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्णकाः स्

त्र्यथ महापातान युन्सः गणितागतचोगस्यतुल्ययोगाः धैवासरे इष्टकालेढ् स्टब्स्यान्यस्त्रेत्वे वस्यान्यस्य स्टब्स्यान्यस्य स्टब्स्यान्यस्य स्टब्स्यान्यस्य स्टब्स्यान्यस्य स्टब्स्यान्यस्य

कालोत्ययोस्तेयोः ८

:रितम्

१०.सीम्यापांगड य यस्तद्विचक्षरोः पातनामङ्गानम् .

गर्ती यदिशीतां युँ भारकरी

इन्दोर्श्वेग्मपदस्थस्यप्रस्फृटा

मे ष्यपातस्यानन

क्षाऽधिकस्फुटम् यत्रचेत्तत्रतत्पाताः भावगोलेसमे स्मृतम् १८ चिह्नपसाउपममन्देवेगीत्यभिनागीलके न्यूनंबाइप्य इधिकंशी प्रवेगीत्य-

यत्रचैवतयारहिपसाऽपत्रमकंतया तत्रतत्पिरहतेः

च्छी प्रजनसं भूतं रुद्धि पसा उप द्युरधिक यत्रतत्राऽपिपाताऽ भाव सुदीरितं

त्यमाञ्जवेगोत्यप्हासपसाऽपगरफुटम् तत्पानाऽ ध्यपूर्वेष्टोद्भवयान्

तत्रगोल इर्यतयोः २४ तत्सर्गान्द्रवय तेसदाऋँएं २५ मध्यप्रांगिष्टवारादी लु दलापातारर्द्धसमयपातमध्येचतद्भवेत् २६ मध्यप्रो-

गिष्टकालान्त् पातमध्यययाभवेत्- तथातत्पातम पातमध्यं मुहुर्मुहुः

स्याचेन्तर्यास्तदा २८ तत्रनै

800

तमध्योभयेत्रेच स्थोद्यावत्कालपय्येनातावत्पातुस्थि-

पतिस्पद्रोपातमोक्षानयनम्

३३ बिम्बव्यासांशकैक्याउर्हे दिग्धं भाज कभाजितम् स्यात्फंलंलिपिकापूर्वज्ञेयं तद्गुएकबुधैः ३४ तंतयापातमध्येनुक्लायुक्तोनितंपुनः तत्स्एोा-श्रद्भस्येयोरऽपमांडतरम् ३५ भाजकं जाय-

तेब्यासरवएड्योगाहततया भाजकेनीद्भृतंत्रब्धंहि-मोंचंगुएकम्भवेत् ३६ एवंतनिर्विकारंतुलिसाद गुए।कबुधैः पूर्वकालो द्वंपातमध्यतः पातमध्यके ३७ हिलानगतस्पर्देशः स्याद्रयकालो द्रवस्सदा युक्तातस

तमध्येतुपानमोक्षक्षणंभवेत् ३८.

वेगाँत्रीभोजितास्स्वाङ्द्रेयुक्तव्यासारगुढाःस्मृताः पु-ण्यस्थित्यन्द्री छिप्ताः प्राकृपश्चात्स्र्यादिसंक्रमात् ३८। २४५२ . श्रीस्रह्मीवस्त्रभात्मजप्रेमवस्त्रभ-विरचितेपरमसिद्धान्तेपातयोगाधिकारः

· पंचददाः १५

ऋय यंत्राधिकारः गो यं स्वस्थाना ६ सांश्क्रैस्तुत्यस्थाने इकंब्यक्ष तोत्त-रे कलातर्भिजभूस्थानंपिएँडयेत्रेतुकथ्यते १ निजभू-सन्तुखंब्यक्षंतुख्व्युक्षंतदुच्यते स्ववंक्षाद्यदुर संतस्मानिजपळाँऽशकैः २ तुल्यांशे व्यक्तमानारः गोला ई चिह्नमां असेत् नं चिह्न भूते छे झेयं सत्यो लेयथोचिते ३ स्वस्थानात्कुएडलंगोलेसुर्वतः सर् राके: द्ररेतत्सितिजं र नतन्नी लपरिधेः समग्र जा चतुर्दिशंचस्वस्थानकेन्द्रात्समालिखेत्

गोलेमेरुकुमेरुभावतान अनवानिगतान् पएडितेरूईकुएडलान् ८ स्वस्यानाता-

तिः <u>खांको</u>न् यंत्रांदराकुएडठान् लिखेन् नित्यमेरु-द्वरोजन्य विज्यविद्यतंतया ५ व्यक्तीएगंक्षितिज्वतं

कलानकलगकितम् तद्वोलपरिधेस्त्ल्ययङ्कताऽथ-न्तरंभवेत् १० मेरुभ्यांसंयुतंनित्यंचक्रकृतंविधायच <sup>३६</sup> चेकांशेरंकितंतस्यैकत्रा<u>र</u>ुद्धेव्यक्षमाठिखेत् क्षान्त्रभयतोभागान्कात्यंत्रान्तान्परिस्मरेत् सर्वेन्य-क्षणतं क्तं विषुवत्कुएडलंभवेत् १२ तच्चेक्राशाकित

कुलाचिह्नंब्यक्षस्थछे छिखेत् तर्क मेनति छांड शैस्त त्यस्थानेंद्रकृतोभयात् १३ चत्तंचक्रकरन्द्रवातत्स्वकी न्तिस्थले यहम् झाला तस्सि तिजा द्वन्तात्खेट यावद्यद्

स्वस्थानपृथिवीगभद्यित्रांद्रशास्ते भवन्तिह स्वस्थानाङ्गहदिक्सूत्रदृश्वतेयत्रगद्भति १५ तस्माद्या म्योत्तरासन्धभागाःस्युःस्वदिगंद्राकाः नदोछस्याद्रव छंतुल्यभूमीतन्द्रतलस्थलम् १६ दलागोलाङ्गदिशंतु विज्ञेयंस्वस्थलंबुधैः तस्मानिर्जोदायंविद्वानानयेत्स्व धियासदा १७ सप्तर्चियम्, चक्रधातुम्युक्ता तइत्तानदिसम्मितान् क्लासर्वाऽधिकं एतंत्र्यांतिर-्तसदीरितम् १८ क्रांन्तियत्त्रोनयत्तंतुप्रोकु

इत्तमुच्यते नतोऽत्यंक्षितिजयत्तंततोऽत्यं तम् १५ ततो ब्लांन्यसदृश्यनं नतो ब्लां यार्न्य सर्वाद्रसंयंत्रभागानां च्त्तमद्रत्रसुदीरितम्. २० शैरं कितानेतान्संयुक्तांस्तुययोचितान् कलागोळां-श्यविद्वानानयेत्रज्ञयासदा २१

ाधियंत्रेणखेचरंचा खलोकयेत येमामा स्तत्रयंत्रांद्रशास्त्रीस्तत्त्वेटोदयाद्वताः २२ जायन्ते याः

परमसिद्धान्ते यः महास्यकालस्य मस्तकालयोगार

४०४

केटि शीर्षेतु हृष्ट्रात्रवेनतंहदम् कलातदाव्यमेनियकः एचिकस्य शक्तम् २५ कायितस्यापितलातु शक्काः इति वेनेष्ट्रा श्रुमिकिसेचिह्नस्यानातक्विह्नयेः इति वेनेष्ट्रा श्रुमिकिसेचिह्नस्यानातकविह्नयेः १६ हाए स्याद्धस्पराः इतिहारोह्नतंत्रव्यं तकोटेसिनभीरितम् २७ शुक्राःश्री-

मिपवेनमापकाले नार्तेल चिह्नयोः मध्यतल्ल सारा। इज्ञात कोटिस्लाऽन्तरतथा २८ तस्त्रिहंग्रतिविन्नः स्वान्तस्यः कुर्लेन्नसुच्यते तल्लाम्बत्हगोच्यास्यात्स्यये भागवनेस्यः छु२४ शङ्गम्लाकधो मध्यवस्या मस्त्रिशीरता नस्र र्जन्योच्यतेनस्तोराभास्ययमस्या १० वस्तुदै घ्योहृता

जन्मतत्रभासमुदीरिता गम्यागम्यफ्ले. युत्स्या नस्यादायंतत्तु पूर्वकिवावनमतम् ३१ याम्यदस्करेश्चे

मापक यंत्रम् यंसीम्यवासकरेभवेत् पृष्टंपत्र्यान्मतं केन्द्रात्स्वस्थानं केंद्रमुच्यते ३२ मापूक्यंत्रम् वंशयष्टीसमग्रह वीतिहोत्रकरोनितम् सुक्तिधातुम्सो दूतं कलातस् ्रव्य दर्जस्यलात् ३३ त्र्यप्राऽन्तंनलिकाव्यासत्त्रत्यं रिक्तं समा-चरेत् रिकारग्रेलरमतोर भस्तादःगुरु इयेसम्मिते ३४ · छिदंस्चीप्यंकलात्भयत्रविनिर्गतम् धात्त्यांनिहः कांसाइई हस्तांरिक्तसमां सभाम् ३५ कुलातस्यास्त चैकाद्यादद्य अहंयेसमिते देशेरं अभक्तानिर्गतं चोभयव्यचं ३६ नलिकारिक्तयो श्छिद्रयोगंसूच्यायया तथा कुलाइडंचरंरिक्ते नलिका भामकंश्वभम् 'डाकेन्द्राद्धोदेशे चो ई्वत्कर्णयोर्धितिम् कलाकेंद्रह जातमेवं धातुलमुद्भवम् ३८ कलाकेन्द्रइये छिद्रेशं <u>विर्</u>ततासमी तत्रकेन्द्रस्थलेयंत्रंतंस्थाप्यैवाऽवलो **४**०६ परमसिद्धान्ते.

र्यासक्राम्य प्रविष्यम्तिकायास्तु चित्रे रोविवन्यस्योः, दृष्ट्यानिवनं क्ष्क्रीसुरुढंनिकसमुखम् ४० समन्ताङ्ग्रामयन्यद्येन्त इ न्तराञ्जावते नव्यस्यानेर्योगियोवियाहुर्मविकस्थि। तस्याद्वन्तुयकोटिक्सानद्वारमीरितम् निक्कारिक्तयोः

तस्याद्वर्यस्यकोटिक्संतदारमीरितम् निक्रंशिक्स्योः स्थिदयोगस्यानिहरंभवेत् ४२ तद्भृषिहिर्योर्भध्येको-टिरिक्क्समीरिता बच्छाहतात्मकाद्वरिंग्यक्तस्यस्य

भवेत् ४३ तद्भुजतस्य स्तरयव्यासाः ह्र्यं समुदीरितम् भ तद्भुजदिति तास् स्वादेतस्यानसमे सिती ४४ चेदेतच्यं कृम्बलस्य स्वानं कर्णसम्मातः विति । अर्थो कर्णत् त्याक्षे याविचसारीः पूष् चेदेतच्यं कृम्बलस्यस्यानको टिसमत् दा दिविताकार्यभीको टिसद्योसपुदीरिता ४६ यन्ते-तृक्क्ष्णिकाृयुक्तम् साम्बल्धिस्य स्वाद्धिस्य स्

तुम्भिकायुक्तं युंबुत्नापकं भवेत् स्थादः स्थाद्धार्पस्य एडोऽत्रवाहोः स्वएडफूकं भवेत् ४७ इच्छापूर्णस्यविक वाफलतकोटिस्वएडकम् इ छाह्तारकलेवादिभक्ता स्यूर्णके भवेत् ४८ फलस्वात्क्रप्रेस्वर्णकं स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्धः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्यः स्वर्धः स्वर्यः स ्रमापक यंत्रम् इक्कुट ५ इक्कुट इक्किटिस्सरहरू स्टिट्स्सरहो स्वरह फल्स्

स्यादादिः कोटिसँपुँहस्तुरोः सार्वै फेन्नमुखते पूर्णकेटि स्तुवांछावाकर्एसिए फेन्नभित्र ५० वेशंक्योच्यतेलयं कोटिस्प्रमसमिरिताः कोटिस्क्टूसुजस्सत्वन्य हुन्तियी स्काभवेत ५३ वार्द्धस्मर्थोः किंवाकेट्सस्यकर्ण

रवजो भवेत ५१ व ब्रह्मिं अक्षणियोः किं वाकोट्य (प्रकर्ण योस्तया योगस्यानंतु विद्वायं कर्णायं अस्यलं द्वारीः ५२ <u>प्रकर्णकं स्वतः कर</u> क्या वोह क्षणियं स्वतंत्रं स्वतंत्रं क्या केह

यंत्रंतन्माप्कंस्थाप्यतन्तत्यर्त्रेणलोकयेत् प्रा जस्बद्धातक्एंपूर्णमुच्यते ५७ स्वस्थानात्तकः स्थानंया<u>वद्य</u>दंऽतरम् तत्पूर्णकर्णजेव जीन्यतं ५८

यूर्णकर्षोद्भवाकोटिः कोटिः स्यात्तन्त्रगस्येचै तत्कर्ण रीलस्यदोः कोटिवर्गयोर्धतेः ५८ मूलंतच्छुवर्गाकार्शेल

कर्एमितिभवित् शैलारम्भस्थलाचे त्स्यात्स्वस्थानंतुन-. तोन्ननम् ६० शैलीरम्भस्यलं हृष्ट्वायस्परित्रवैणं भवेत तत्पूर्णकर्णजंबाहुं झेयमत्रभुजांऽतरम् ६१ तत्पूर्णकर्णः

जांकीटिं झेयंकीटिफलां उत्तरम् बाङ्कें उन्तरं तुतत्पूर्वपूर्ण

कर्णीद्भवे भुने ६२ हिलाशैल भुनं प्राम्बद्धि श्रेयंगए। की-· त्तमैः चेच्छैलाऽग्राभिजस्थानमुचंकोटिफलाऽन्तरेहः प्राक् पूर्णकर्णजांकोटिहिलाँ इदेः कोटिरुच्यते स्वस्थानाः त्त नगाः प्रचेदु चंकोटि फलाः तारे ६४ कोटि प्राके पूर्री क्एोरियां सुक्ता द्वेः केटिरुच्यते स्त्रस्थानात्पर्वतारम्भ

देशचेदुन्ततंतदा ६५पूर्वपूर्णम्यवोद्भूतेलस्देकोटिफलाऽनः रम् हिलातसर्वतस्यैवतत्रकोटिःसमीरिता ६६

पूनित्यपूर्विनीत्यानादात्यानस्य प्रयोजनम् हृशातत्या-नकंकेन्द्रात्पार्येचनगापकस्यन् ६७ नस्य द्रेणोद्धयते या प्रस्तापुर्यकर्णसुर्वेच प्राकृषयोत्सास्य वार्त्याक्रीय जुल्यपर्योत्स्यैः ६८ पुर्णकर्णीद्धनां कोटिक्षयप्रस्थान्तरं

भुजम् पूर्णकरोद्भिवोबाङ्गपूर्वाङ्क्ष्दीकोटिदः स्मृतः ६८

पूर्वास्यपृथिवीकेंद्र मध्येतद्र सुधाराज्ञः स्यात्तत्कोटिद योर्भेद रुलातज्ञायते भुजम् ७० दोर्वगित्यू एकि एरिय-कोटिवर्गारान्वतांत्पदम् कर्णतत्पृथिवीक्नेयानत्र पूर्विह

ऽन्तरे ७१ याम्बीनरगुतात्स्त्रात्युष्टेषरवनयदा प्राकृष्ट्रे र्विहंदयोर्भेदेतत्यूएश्चिवंजंभुजम् ७२ युक्तातज्जायते बाह स्तद्राहोर्वर्गसंयुतात् अपन्यपूर्णअवीद्भूतकोटिवः

. गश्चियत्यस्म् ७३ तक्लंरीतुधरोज्ञेयातत्मागदन्यका इन्तरे प्रकारान्तरेए। प्रयोजनिकदेशस्थपर्वतं यदिजा-

लातत्रस्थिते नैवयंत्रेणार्द्धः शिरंतथा ७५ दृष्ट्यासारुभ्य-

यते ७४ तच्छेलस्यशिरहष्ट्रातह्क्स्त्त्रसमस्यलम् छ-तेभूमिस्तकएंप्रिएमिच्यते एवंखातजलादीनांवेधात्यू-एश्रिवीत भवत ७६ पूर्ण अवर्णसम्भूताको टिकोटिसमी रिता गाँक्पूर्वीच्छैरु मूलाइन्तं भेदंकएरि भुजीच्यते ७७ दोः को ट्वर्गयोयीगान्म्लयत्तच्युंतिभवित् तत्वराप्रिमन नाः द्वारं यमध्ये सुमिरुदाह्दता ७८ तत्रीववे धप्रविज्यम- ध्येभूमिकदीरिता वेधस्लब्जगभीरलंबेधःकोटिअजाय कएकारभूमीकोटिभुजानयनम्. स्याप्यमापकरं यंत्रं केंद्रे तुत्यं यथोचितं तद्गाएडा ऽग्रा-भूमीसूत्रंतुलम्बितम् ८० दंवातत्सूत्रभूयोः गस्थानं कें द्राद्यदन्मितम् तत्कर्गीऽशी--च्यते गंकोर्गर्भ भाएडा ऽग्रयोस्तया ८१ मध्यंबाहुँ लचं प्रोक्तंबर्गयोरः न्तरान्तयो: मूलंकोट्यंडशकं झेयंकोटबंदर्शचभुजांदर्श-हितं रुलाक्एीं। वीन समुद्धरेत् पूरोकिटि भुवीस्य-तांतत्पूर्णश्रवणोद्भवीद्य म्यमानानयनम्. वस्त्रस्थलेलिखेत् केंद्रात्पूर्वाऽ भिगारेखांदला भूमीयदिद्धयां ८४ केंद्राह्रामकरे विद्धंह

ताभूमीयस्थिया तनुल्यकेन्द्रतोर्देशेद्दरेनिद्वसमाचरे-

तं ८५ प्रोप्रेखावदनानुस्येरेखेचोभयतोगनेकएाकारे

तयोरः प्रेरवस्वदिग्लां छना इनिते ८६ स्यातां यथा तथा झ-र्वस्थात्त्रत्यंत्रिभुजद्वेयं याम्युद्धिन्तरतोद्दृष्ट्वापूर्वरिव्यंत त्रहांछनम् ८७ कलातहां छनेलग्नंतुस्यकएचितु र्शजम् तत्सेत्रस्यययाकेदाद्भृभिः पूर्वेगताभवेत् ८८ केदाची-भयतःसीम्ययाम्यं कोटिद्रयं भवेत् तच्चतुर्भुजकोष्टस्य चोडाँह् प्रमितोन्तरे ८५ तुलेन्द्राई क्षिऐकि वाचिह्नं वर्ने-थमुच्यते कोष्टरमैवचनुर्वोहोर्म्स्मानुष्यसंज्ञकः **४०** 

ग्रंथाःनारेरीनपूर्वकेन्द्राज्नारं भवेत् ५१ यार्म्यकेन्द्राज्नाः रेएाघ्रगुएयंचाज्यस्त्रभाजितम् याम्यप्रथाः न्तरेरीन केन्द्रपूर्वाःनारंभवेत् ४२ पर्वतमानानयनम् शैलाः प्रकेंद्रतोद्दृशपूर्वसङ्गंतदुच्यते प्राकृस्त्रगाउधःस्यटेकिं-चिद्दरेचिद्धंसमालिखेत् ८३ चिद्वेकोट्यां रुतिंशंकुं आर्के स्त्रस्पृशकंन्यसेत् चिह्नकेन्द्राइन्तरेवाहुःस्याच्छं कुःक्रो-टिसंज्ञकः ८४ दोः केटि वर्गयो योगस्लंकएमिदीरितम् त्तकएकिएस्विएडःस्याहीःस्वडंतञ्दुजंभवेत् ९५ तच्छे-कुः केटिखंड स्थान्तत्सी म्याद्वापिदक्षिणात् रृष्ट्वाप्राक् संहाकं प्रौंग्वत्तहुकुस्त्रतछेयुतम् ५६ कीष्टंचतुर्श्वप्रौं-

मकार्यस्यानात्ताद्या कृतात्वासुनचोई संज्ञंगं थंप्रकी तितम् २७ कर्णालएडा हत्तं सीम्यके द्वयोर उन्तरंत-' था अंथसीर्म्यान्तरेशाप्तंभूमिः कर्णाकृतिर्मवेत ५८ स °चैवपूर्णकर्णः स्यासूर्णकर्णाहतं नरम् भक्ता अवर्णसं हेनस्याच्छी लाऽश्रतलाऽन्तरम् ८५ दोः खाइंपूर्णकर्णः घंकप्रित्एडविभाजितम् लब्धंत्रीलतलात्कंदं यावस्प्रिनु- जंभवेत् १०० एकप्रस्वलादान्यप्रविस्वैर्वादाययदि व द्यानननदापूर्वरीत्याप्रवीत्तरवदेत् १०१ एकप्रवीदन्यः पूर्वनीचोच्चतुचदातदा ज्ञालालम्बपदस्यानंबुद्धयाचाऽ माऽन्तरवदेत् १०२

स्त्रथ प्रकारान्तरेण गस्यागस्य माना न.यनम् . केंद्रंतुस्तरथलक्षेययस्याः र्थसाइनोच्यते केंद्रासिजे-

कं हुन कि विद्वार विद्वार कि स्वार कि

मकारान्तरेणः पृथ्यः द्वितीयेभुनोन्यते १०० केन्द्रदयोऽन्तरेणाघोवाहुँ वाहुँ-ऽन्तरोङ्कः स्वस्वपूर्णभुजंद्देशकोटिस्तेनीवमद्विता १०५ स्वस्वाद्ध्येन भुजेनासापूर्णकोटिः समादिका पूर्णहोको टिक्पेवियाम्युकंकेन्द्रकगाऽन्तरम् १०२ विद्येयवाऽप्यने-नीवम्बद्धाः प्राप्तके

नैरसद्गित्मध्यक्रवेशेत् उदाहरएाम् अस्य क्रमा इस्र क्रमा पूर्णभुजं प्रथमकेन्द्रवनातरम्द्रूणकराः ०० प्रथम पूर्णभुजं ६४ पूर्णकोटः ४८ द्विवेश्केन्द्रवनान-राद्वैताव्यक्षकाः द्वितीयपूर्णभुजः ४० पूर्ण

कारिः १८ केंद्रगोरतार २४ केन्द्रात्तर वाह् प्राक्तिटिः १८ केंद्रात्तर गुजोत्यकर्षाः २० म् प्रमुख्य सम्बाहुः १६ प्रथमाकोटिः १२ प्रथमकर्पत्रक् प्रमुख्य सम्बाहुः १६ प्रथमाकोटिः १२ प्रथमकर्पत्रक् प्रमुख्य सम्बद्धाः १५ द्वितीयकाहुः १० द्वितीयाकोटिः १२ द्वितीयकर्णवर्गः १४४ द्वितीयभुजाद्व-द्विप्रयमप्रश्निकर्णात्व कोटिः २५ प्रथमकेंद्राद्वितीय

हूं अवस्थि।केशान्तं काटः रे रेड् अश्मकद्राह् ता ये अज्ञान्तं बाहुजं कर्शः ४२ ३ उदाहरशम् यवाग्वेशाह्तरेरंजापे २ विनेशिवःगवेशात्वस्थि ५० त्वेष्टमितेसः चिक्र कार्यकेशेनरे सत् १५ मिनिश्याः कार्यकेशेनप्रधानां स्वाधि ७५ मिनिश्यो शिक्षा कुमिन्न व्यवस्था सामिन्न विकास स्वाधि ७५ मिनिश्यो शिक्षा कुमिन्न व्यवस्था सामिन्न विकास विकास स्वत्य कार्यकार प्रधान कि स्वत्य कर्मा कुमिन्न कुमिन्न कुमिन्न कि स्वत्य कार्यकार प्रधान कि स्वत्य क्षा कुमिन्न कुमिन्न कुमिन्न कुमिन्न कि स्वत्य कार्यकार क्षेत्र क्षा कुमिन्न कुमिन्

स्वादायस्थानस्वस्थानभेदे वेषशोजना दिक्सू ११० तत्था-नविवरं क्षेथतायत्यस्वसिधीरवर्जु बीजुाद्रावी मध्यक्षेकस्य व्यासाद्भ्यासर्वितात् ११५ सत्वस्य तद्दर्शस्य स्वेश गृहस्यासर्वितात् ११५ सत्वस्यास्य स्वाद्यास्य स्वाद्यस्य स्व

शयस्यानजातमानस्ययोजनाः ११३ तेऽगुळाःस्वाशय



न्यय स्र्स्माशक झानम्, केवाविस्तारवेदाशयाव तस्स्माश्यकाः सुभाः ११८ स्युः स्सम्बक्तगुलेदास्यालस्त्रिक्ष छं अभ्यः चेनवंत्रे-एक्तिस्यविस्तारं श्रिवाद् गुण्यः ११५ दृश्यतेतन्यः त्रेष्णु जायंते स्स्म भागकाः स्रयसम्भूकरण्गितिः ग्रंकीरद्वयादः धोदेशे किंचिद्दूरेमितेसुभम् १५० बाहुँ वयोजयेत्कील मूर्ब्कील जुनस्वेत् तह च्छंकृतासम् नेशकील प्रयोजयेत् १२१ कीलत्सारिध प्रस्था

परमसिद्धान्ते 895 त्सूत्रभाराऽन्वितंशुभम् सरलंचोर्द्वकीुलाऽश्रात्तला

ब्दंबलं अप्रस्पृतोद्यदि १२२ तन्द्धंकुंस्तुयथायोः झेयोकीलीचदोः समी १२३.

ग्यमूर्जीभूत मुदीरितम् शंकुकोटि समझेयं प्रकारानुतरेशसमभूकरएगरीतिः कि वारांक शिरे भाएडं निर्य्यश्वं शार्र्ड सहस

१२४ काचेनाःन्तरितकलात

भारतं भाएतगंसमम् स्याचेत्तनाययायो-न्यमूह्यीभूतसुदीरितम् १२५. गं 🤋 त्र्यन्यप्रकारेणसमभूकरणरीतिः

खड्डाकेन्द्रगतुर्थानेशंकीछिद्रंसमाचरे-

त् तदं भान्तर्गतंस्त्रंतूलीत्यवाऽन्यवस्तुजम् १२६ तत्स्त्रारग्रह्यं न सूपूर्वारपूर्वे हढं नुधेः एषा खङ्गाप्रसि द्भास्याद ऽत्र<u>ना मूल संयु</u>तम्. १२७ गोल रूप्<u>महा</u>भार कत्वास्थान्तर्भरःसमः एषतु द्देशकः प्रोक्तस्तुत्ये भू-

र्थ्वीयत्रकेन्द्रयोः विश्लेषप्रमितचोच्चदेशङ्गेयं विचक्षरोः मार्गस्यकिचित्रीचंसमृचिरेत् १३१ समभाग ऋगेजभागविहीनस्तुतो येश्वादेशी कः यंयंपस्यतितंतंतुद्द्यिखेवनिश्वयात् १३२ कस्य चिच्चेकेखेटस्यविम्बंनेत्राहकवत्समम् नाइस्तीतिनिद्यः याञ्ज्ञेयंयतोऽहरूयो नहरूयते १३३ रात्रीस्वयादिको इस्मोऽप्यः त्राऽदृश्य उ वीरितः सर्वतोऽन्तरितोयन्तुतः द्वान्तिनाऽत्रकीतिता १३४ श्रथमत्स्ययंत्रेण्दिक्सा-धनम् ग्वाल्यूरेखभ्यतेः न्यत्रचुम्बकः कुत्रचित्तया दिः क्साधनंभवेद्यंत्रंश्रेषंतञ्जुम्बकोद्भवम् १३५ त्मस्तरोहोहं तंत्रत्काले ऽवकषीते यः प्रतार प्रस्तरं र धार्यतंत्र जाउवकषीति १३६.

परमसिद्धान्ते

४२०

तंङ्गेयंचुम्बकंतस्यमत्स्यवद्यन्त्रमीचरेत् तुल्यभूमिस्य चेसूचीमूर्द्वीकृत्वाततोबुधैः १३७ सूच्यदग्रेस्थापये त्स्यमध्यंतिर्घ्यक्तयातथा

मत्स्यमुखः सदा १३८ उन्तरेदक्षिणेतस्यपुच्छोगञ्जति नित्यशः भवेत्नाकषेणद्राष्ट्रोहन्तुम्बकयोर्मियः १३८ पुष्टमाकर्षएां झेयमेव चुम्बकयो मिथाः चुम्बकादिपदा-

र्थस्तुद्धुन्तरादऽन्यदिङ्मुखः १४० कदार् ह्मोम्बन्मत्स्यमीचरेत् तर्हितन्मत्स्ययंत्रेशतर्हिन

येदिशाम् १४१ चुम्बको द्रवयोर्मत्स्ययंत्रय जायतेसंयुतिः पुच्छ मुख्योनंकयोस्तय

यंत्रसानिध्येयहिश्वाचुम्बकः स्थितः तहिक स्यलांयूलीयातिवामुखः १४३ तत्रयोम्योंन्ररेमतः

उच्छस्तुवामुखः नहियात्यः यत्तदृश्याऽदश्यनु

योर्भवेत् १४४ ज्ञाक्तिःसमान्द्रहरू श्वयात् पुच्छपुच्छोमुखंबऋःस

र्घवाहादेशारगुरुम् शकुःस्याहृत्तयंत्रस्यव्यासारहे

नोन्नितःसमः १४६ वर्त्तुलोऽग्रेउघुस्तील्येधातु<u>नोम</u>ूल-जोथवा तन्छंकोभारग्रमध्यादाकारकस्य<u>लब्र</u>स्यन १४७ मूळांड्यांस्थापयेत्केन्द्रेडग्रस्येष्टेनोर्द्धिनस्यैन्

स्वदेहर्शकुज्ञानम्, स्यानिनेर्चारयुर्वेरं प्रिसी स्वानायुर्वे भवेत् १४८. श्रयपथदएडयंत्रात्समार्द्धसमस्थानात्त्वे-

द्रशंकोरेजम् द्राडकाष्ठमयकलादीधेवेदकरानिमतम् ढंतुत्यंकोमअंचसुवर्त्तुलंम् १४९ पश्यदएडोच्यनेतत्तुप-. थद्एडस्यमस्तकात् द्वयंशुलाऽधःस्थलेमार्गुद्र्एडेक्र्नु-लक्षपकम् १५० रंघातिर्<u>यागतंकत्वात्</u>देधेस्त्रमेख

लाम्योजयेन्मेखलासूत्रं वितास्ति प्रमितं भवेत् १५१ च्त्रमूढाऽप्रयोगीगकलास्यात्स्त्रमेखला पूर्णवर्य-थदएड तुस्त्र्योदीः परिलक्षितम् १५२ स्वस्वांदशाख यवैः स्ह्मेत्र्यां ऽकितं संविधायच तद्वतमेदएड भाया

४२२ परमसिद्धानी. कम्प्रकरेण सनुद्याद्वायेष्टसरोबुधैः १५३ यथानपथदएडस्यमूळं त स्थितिपूर्वकम् तत्रभाग्रहणस्थानं प्रस्पृत्रात्येवतुत् था १५४ गृहीलामेरबुठाऽयांदामुत्कुएशिकारपाणिना

अम्बबन्मार्गदएडन्तुदेला भाकर सन्मुखे १ ५५ मार्गद-एडाऽग्रवत्तस्यप्रांडलभागो द्रवाप्रभा तुरंयभूमिसुष लेकि वापट्टपूर्वसमस्थले १५६ वारर्द्वतुल्याउविनिस्था-नेपट्टादीवाऽर्द्धतुल्यके यत्रस्पृशतितन्मध्यं छायाऽय स्थानमीरितम् १५७ तन्मार्गदण्डमूलस्यपरिधिप्रांऽ त्यजाप्रभा यत्स्यानं प्रस्पृ शत्येवतन्मध्यं <u>केन्द्र</u> मुच्यते १५८ तड्डींग्यस्यानतः केन्द्रदिक्शीर्षश्रवेश्वेपकम् चेत्स्यानसुन्ततंत्रत्रयावदेककुलंभवेत् १५८ तावत्त-त्स्यानकं तुंगके एश्चियं विचक्त एीः छायाऽ अस्थानकं चाउत्रप्रांद्रबांद्रकंपुरिगीयते १६० यत्रभाद्रप्रस्थला लेन्द्रदिक्पादऋतिंस्तपकम् स्थानकंजायतेनीचुंया वलेवलजातिकम् १६१ तावत्तहेशकङ्गेयंनीचश्रव-ए। कंबुधेः तत्रभाऽश्रस्थलं चौद्यलक्षिए। समुदीरितं १६२

पणद्रपुर्धम्त्राः

पणद्रपुर्धम्त्राः

प्रतेन्द्राः निमुखकर्णनिवकर्णतिद्वन्यते केन्द्रदिषिमुखकरिमुन्यते तुगकरिक्तम् १६३ एकंनातिस्यन्यः

त्रमूर्शित्रवर्णमिरितम् न्यत्रकर्णिशिस्यानमीद्याः

समुदीरितम् १६४ प्रांडत्यां इकंप्रोन्यतेकर्णप्रारम्भु
स्यानकत्त्रवा दोर्मुलकोटिमुलेस्यात्कोट्याऽप्रेकर्णमिलः

कम् १६५ स्याडाह्निः प्रस्थलकर्णप्रारम्भस्यानमुच्य

ते न्यां द्वां काडव स्याचिह्नाः न्यं पणद्रपुडाऽत्यकं वद्य।

१६६ तिहित्तयर्थेद्यर्थं न प्रांडत्यार्थाः को परिस्यके द

१६६ तर्हितत्पेयदण्डंतुं प्रांदत्याद्यां इकोपरिस्यके द लाचाँचांडकतः प्रांडलचिह्नं तत्त्रयद्रिष्डके १६७ यद्भा गंत्रस्पृश्रत्येवतद्दएडांक मुदीरितम् स्त्रंगुरूपदार्था द्यंक्तातसम्बदोच्यते १६८ त्र्यादिस्हाए।दिम्भिन दिक्कंगम्यंस्थलंभवेत् त्र्याकाशाऽभिमुखं प्रांदृत्याचिः स्रादुत्यापयेच्छनैः १६५ पयदएडाऽभिधंदएडलक्ष-एगाछम्बदंशनैः दद्याद्मस्यस्यतेयाव्छम्बदोऽयेवगचः ति १७० तावद्त्थापये नार्गदण्डमेवततो यदा यस्मा दुत्यापनान्मार्थदएडाद्ऽन्त्यांतकतस्तदा १७१ स्त्राद्यंऽ

परमसिद्धान्ते. काभिमुखंयातिलम्बद्स्तुततः स्थिरम् तच्चाऽ धेद-

एडकं कलाञांद्रयांद्रकोपरिसंस्थितम् १७२ यद्भागंपय दएडेस्यार्त्तद्भागाञ्चम्बदंतया तत्प्रांत्र्यांत्रकस्यलेद-

त्वायसुम्बंतत्रलभ्यते १७३ तस्नुम्बस्सद्यलम्बः स्याद्द्रांडां ऽकस्थाननस्तथा त्र्याद्यंऽकस्थानपर्स्यन्तंमार्गृदएडंअु-

दरखाँ इकारबंडक यो मध्येपयदएड: स्यात्ता हे धेरिच्ये सम्मितम् त्र्याद्यं देकेरतम्भर्मारोप्यर्चादः ऽकंस्तम्भमस्तके १७७ कत्वास्तम्भतरात्सूत्रं वेधा-न्तं योजयेहृढम् तत्स्त्रंतच्छ्याकारिविझेयंप्रस्डिती-

समैः १७८ पूर्णअवराकं यत्रपथदएडाऽधिकं भवेत् पूर्णकर्णशिरस्थानात्पैयदएडोन्नितस्थले १७५ तत्रझे-के अवीरम्भस्थानकं जायतेतथा तच्छेषस्थानकं चाऽ

भिपूर्णिश्रवराकंमनम् १८० तत्पूर्णश्रवरायत्राऽयनदर्डाः

द्वाद्शांगुलशंकोश्छायानूयनम्

धिकंतवा जायतेतत्रतत्यूएिकएिमस्तुकंतस्तवा १८१ पर्यदेएडोन्मितस्थानेदितीयीख्यश्रवस्यच श्रारम्भस्याः नमेवस्यादेवंबुद्धचाबुधोत्त्रमैः १८२ केन्द्र भाग्राजन्तर-स्थानात्स्वसुगम्यस्थलात्त्रथा कोरीन्समानयेत्सर्वान्सः र्वकर्णान्समानयेत् १८३ स्वश्रवस्थकरीचज्ञेयमदश्रय-नंसदा कर्णानांसंयुतिंकत्वास्थानस्त्रंतदुच्यते १८ संयोगंलव्यवाहुँ नांकालवाहुस्तदुच्यते कोरीनां स्वर्णु संज्ञानांसुंस्कारस्याउनशेषकम् १८५ सक्ताधनम् हिलास्त्रेपेतज्जायतेहरः कालबाह्वाहतंस्रेच्येहारामस्रे ष्ट्रभाभवेत् १८६ मापयोग्यधरीऽन्त्याद्मामेवंभाऽग्रस्य लंभवेत् स्यान्मापोचितभू मूलदेशांतत्कें इकं तथा १८७ तत्रमापकदएडेनमापियलैवपएडितैः भूमिनापीचितां तत्रकरोवियंदै ध्यमच्यते १०८ संस्कृति स्त्वर्णकोटी-नांस्वर्गा नैच्योच्यक मतम् तत्के दाद्वाह्योगंतु तत्रके न्दान्द्रजस्मृतम् १८९ श्रथद्वाद्वांगुलशंकोश्हाया-नयनम्- अंगुलैर्किभिस्तुत्यदीर्घसद्गुरुकाष्ठजम्

. परमासिद्धान्ते.

वाहित्तिद्त्त्त्त्त्त्रभ्यत्वाधातूत्यूचकोमलम् १५० रुता सुवर्त्तुंवकीलतन्त्रूलपिरेषेः समम् कीलाऽप्रपरिधिरुता कीलाऽप्रादं रहाकोन्मितम् १५९१ स्यान्तराधः स्यवंयत्तः इत्त्वर्णसम्मितम् तच्छकु परिधेः रुतातात्रस्त्रच

कितंतरम् १५२ रुलातच्छेकु मृत्याच्छामुळीच्ये स्वातंत्रसम् १५२ रुलातच्छेकु मृत्याच्छामुळीच्ये स्व जानवा क्लेष्ट्रभाषातपर्ध्यनसमभूमध्येमस्यके १५२ स्वेष्टेतकीळकंस्याप्यतङ्गीऽप्रयम्भच्छात तत्स्यानाले-न्द्रपर्ध्यनाडादेशांऽगांऽकितेनच १५४ श्लेष्ट्रदेणीनि-

च्रपर्यन्तं हार्वश्राह्माहिकतेनच १९४ शृंख्वे प्योति तेनैवकीकेनाहन्येनमापयेत् त्वुध्यात्वेष्टभाक्षे याहार् पर्याप्य स्वान धा सार्वाप्य स्वान धार्मिक स्वान धार्मिक स्वान धार्मिक स्वान धार्मिक स्वान धार्मिक स्वान स

अद्यानिवसारीः १५५ तत्रनामुङ्कात्वदेशभास्पर्धिः तभनेत् के म्रस्ट्स्मतः स्थूजकम् नातुः मध्यमम् १६६ घटीर्यत्रज्ञानम् घटिकायुर्शतीयस्यतीत्येषध्य-राकपळम् स्यातासम्बद्धानस्याः वीभागसद्दार्श्वम

शकंपलम् स्वाताधम्यकुम्भस्याः बोभागसद्धां तुर्व १५७ तील्येज्यके द्रष्ट्रादेव दलाबन्धे उमलेजले तत्यू-र्णपतनंखामेनारंषष्टि घटीषुच १५८ चेत्त्यात्तवा घटीयंत्रं प्रस्फुटं तद्यकीर्तितम् त्र्यद्र्यत्रेणनाभाभागान्यनम् रांकु-ज्याईलवानयनम् यंत्रांशकोट्यंशानाम-थिन्ततयंत्रांशानांज्याद्वनियनम् यंत्रांशा-

नामर्थादु नतयंत्रांशानांज्याद्वीनयनम्. ५०११११६ स्वेष्टेतद्गहच्छायान्यनम् . क्र्यां पुज्यारीरकितंचैवसुदृढदुरुदुमाचरेत् १९५५ स्त्रव्यं तस्यद्रुडस्यमूळंद्वासमिसती द्रुडंभाकर्रावद्द्वा तस्याऽशंखेरैंसन्म्से २०० दएडाऽश्रास्त्रस्वकंदलात-स्र स्वपतनस्थलम् स्थात्केन्द्रंकेन्द्र पर्च्यन्तं दएड मूलस्थ चा दुजम् २०१ मापयित्वैवदएडेनलभ्यन्ते तत्रये छवाः स्युस्तेकीलप्रभाभागास्तेषामऽद्वेऽङ्कम् माचरेत् २०२ त्मध्यांडको च्यतेकेन्द्र पर्यन्तं मध्यलस्ए।त् त्र्यनः रंजायते<u>चा</u>ऽर्द्धबाँहर्मध्यांऽकतो भयात् २०३ तुल्यको- • ट्यों रुती देएड मध्यतुल्यी तुक एकी दला तक एचिमा-र्गेदएडमूलस्थलात्तया २०४ तद्दएडकोन्मितीस्थानी

केन्द्रानुल्यस्थलंगती स्यातांतीतुस्मृतीकोटिऋपी नृ-

परमसिद्धान ४२८

ज्याऽर्डकोन्धिती २०५ दएड मूलात्तद्दश्राद्वश्राह छा अंकी 👡 व्रदर । १३ तु र्शकम् २०६ राकुभाजववगीनात्यून्यवगाञ्चयत्यद्म्

तुद्भवे भृज्यकारव एडे भागाद्यकारि रहपकम् २०७ नाः शंकु धा भांऽज्ञा यंत्रकोटयंऽज्ञाज्याऽद्वींज्ञाः समुदीरिताः शंकु ज्याऽन्हेरिदाकाश्चोक्ता यंत्रांडदांज्यादलांऽदाकाः २०८

धिकां इशकं छित्तास्याह् एउं प्रज्यलक्षितम् २०० नाभौभागाहतकील नृज्याखुडा-शकोद्धतम् जायतेनद्गहन्छायातच्छकोरस्वेष्टजा

स्फुटा २१० श्रय तुरीययंत्रेण यंत्रादाज्ञान राकुज्यादी-शकुछाया भागज्ञान

· श्कज्ञानम्. चक्रपादांशजयत्रलोकुंचत्र मुदीरितम् त्र्यशास्भ-न्द्रारन्तुं गुगनं भूवत् २११ ख नतः केन्द्रयावद्यत्रेकुजभवेत् त्र्यकतुत्योवनी कृत्वा

शंकुछायाभागज्ञानम्

तद्भूगर्भमुदीरितम् २१२ यंत्रंप्रसार्व्यंतद्भूमीभूगर्मेयं . त्रंकेन्द्रकम् दत्वाभूगर्भतः खेटादिक्सूत्रेव्योगसङ्गकम् २१३ दलातत्रहितदांत्रमांकाशाउभिमुखंददम् ऊद्दी

. कबैनतकालेप्रतियंत्रांऽराकादिषु २१४ कलान्वांरम कंस्स्मस्च्यद्येणयदं दाकात् स्च्यद्यजाप्रभावं

त्रके चे तत्त्वेचरेस्यच २१५ यातितद्भागकं ज्ञेयंतत्क हेत द्रहस्यलम् वालम्बाकार स्वत्रस्य युत्तयात ह्योम सन्मुखम् २१६ उद्घीकताकरहीतुषंत्रंन्यस्यग्रहस्यतु दिकस्त्रेच हितत्कालेप्रतियंत्रलवादिषु २१७ तथान्वार म्भकं स्ट्रस्म सूच्य ऽश्रेए विधायच छाया स्च्य ऽश्र जाया-

तियंत्रकेन्द्रेयदंशकात् २१८ तस्रवंताद्ग्रहस्थानंतत्स-एोज्ञेयमेक्च तद्भीगस्यानपर्यन्तयेस्युरुक्तनभाग-काः २१८ तत्रतेयंत्रभागाः स्पुरिष्टेयत्रादशकस्यलात् यत्यु अयंत्रकेन्द्रा इन्तं तत्कर्रिपू ज्यसम्मितम् २२० स्वा त्त्रज्ञामार्गसंज्ञ्चतृहृष्टिश्रवणं भवेत् तत्रयंत्रांऽशकस्याः नाद्यत्रांदराज्यादेखोन्मितम् २२१ यद्धधोःभिमुखं

प्रसिद्धाने जाऽत्रोःईतस्तिर्यक्शय्यारोर्देडंस्पकम् दलास्त्र्यादिः २२५ ऋधिकांऽगाङई कि स्तारोद्धिकंत ह्रक्षऐादृढम् तस्याद्यंस्विकाद्यंस्याः त्तद्दरडाकारकस्यच २२६ कत्नाद्धोदेशके के चाहुरे

<u>तद्</u>दएडकोन्मिते चिह्नमद्रत्रसमस्थानेद्रन्यत्राद्येवंधि-चिरेत् २२७ इष्टेतह्रहदिकसूत्रेतुत्यभूमएड७स्य-काऽग्रस्पशन्दलातलेन्द्रासन्तरुस्हो द्यथायोभ्ययंत्रमांकाशसन्मुखम् २२८ कोएाप्रद्यंत्रः विधानुम् तिर्यागर्दे भुजीयस्य भवेतांवसु सम्मिती एकस्यैवतयोर्मेध्येषाएमतस्यानके बुधैः २३० छत्नांतकं

दएटस्द्रत्रेणताराखेदुप्रभान• रुस्णादुःन्यबाह्वरप्रांतद्शोन्मितम्, स्याद्यदाश्रवणी कारंस्त्रस्तोतर्हि भुजीस्फुटी २३१ तत्कोए। प्रदयंत्रः स्या काष्ठजोधातुजोऽयवा भृत्ययंत्रविधिः पंचेंहस्तो निर्ती दए<u>डीवा</u>वंशीतु शिती वे थेः २३२ संप्र-सार्यतयोश्स्वस्व मस्तकान्मु ष्टिकानिते कला उधः स्थानके योगंक्त दृढं सञ्जमंस्थिरम् २३३ तद्भृत्यः प्रो-च्यतेतं हुन्वज्न्य भृत्यंसमाचरेत् भृत्यपादीस्मृतीवंशभा-गीयोगादऽधोगती २३४ तद्योगस्यानतः कएऋएानव्री-परस्परम् वंदायोरुपरिष्ठात्स्तः स्वेष्टेतत्स्वादायो चिती २३५

योगाऽ धः पृथिवीदेशाहुरेस्थाप्योभयत्रच तद्भृत्यचर-एोोतेनत्रद्भवश्चोर्द्धितोभवेत् २३६. द्रांडसूत्रेगताराखेटप्रभानयनम्. त्रप्राकाशाउभिमुखी भृत्या व द्विकलासमाउवनी तत्स्वे ष्टेर<u>वेटीय</u>स्यानां छाँया ज्ञाना<u> अर्थ</u>ीय येचे २३७ दएडमूखाः भिवर्क्केतुदएडाऽग्रान्मुष्टिकोन्मिते दूरेदएडाह्वप्रेस्यू-लंगभीरांऽकंसमांचरेत् २३८योनयेदेकं भृत्यस्ययोगाः

.परमसिद्धांन्ते ४३२

ऽधोपक्षकेहढम् ग्भीरांउकस्थलेदएडंचैवंदएडाऽश्रसम्-खे २३८ दएडे मुष्युनिमतेद्वरेदएड मूर **लास्यूलंगभीरां**डकंदएडंगम्भीरलक्ष्मेणे त्यं युतिस्थानां दधः पक्षेयोजये हृ दम् स्युस्ताराँ एयके पृ श्चरवेटीस्तत्खेटीसन्मुखे २४१ दत्वादएडाइग्रभागंत स्वस्थान। ऽभिमुखंबुधैः द्राह्म ललवंद् लायंत्रभामार्ग क्त्फुटम् २४२ तह्रएडस्थापयेहृष्ट्यादएडाउग्राह्मस् त्रकम् दत्वातत्कोटिक्दपंतुभाराढयंतत्त्रयादृढम् २४३

क्लान्ह्एडस्टान्तुस्त्रंन्छम्बपार्श्वके दत्वातज्जा यतेबाहुँ बी हुलम्बयुतिस्थले २४४ दलाकोए। प्रदं यंत्रं तद्यंत्रस्यैके बाहुँगम् दोः स्त्रंजायते चारन्यबाहु गंकीटि स्त्रकम् २४५ स्या द्वा<u>द्यंदण</u>्डदेध्यस्याः धोः शकंतन्न नत्सारो चेंद्रवेत्तिमिरंद्योतं के त्वात ईडि भिपूर्वकै: १४६ दएडा ज्याह्यस्त्र्यं तुदलातत्को टिस्हपकम् इत्यंसमा नयेड्राहुँस्त्रतत्कोटिस्त्रकम् २४७ स्याद्द्रहंत्त्रह क्रएतित्रवेटीलोकेनसाँदो हक्कएकिन्द्रकीलाऽग्रमध्य

स्वभावं भवेत् २४८ वा भागाः राज्ये हृत है स्थ्यिनायाः नः राह्यभाम् स्यातहं कृष्यर्गास्त्रभः भागाभिक्षकम् १४: राह्यभाम् स्यातहं कृष्यर्गास्त्रभः स्यानभ्रमाभाभिक्षकम् १४: व्याप्तात् स्थानम् स्थानस्य स्थानभ्रमाभाभिक्षकम् स्थानस्य स्वाद्यम् स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्यानस्य स्थानस्य स्थानस

त्वा निषक्ष नाष्ट्रवर्षकार पर विष्टु नागाउगक हुता हो संवत्ततो प्रवेत के विष्युत्रप्रमारीन संदेशितस्वर में मेनेत रूपना अध्योज्ञ्यविधार्ने व्हायान यन म् किल्यु साधिकार के स्मानुष्ट्रियो के अध्याज्ञ्यकार के स्मानुष्ट्रियो के अध्याज्ञ्यकार के स्मानुष्ट्रियो विश्वे के किल्यु साधिकार के स्मानुष्ट्रियो विश्वे के स्मानुष्ट्रियो विश्वे के स्मानुष्ट्रियो विश्वे के स्मानुष्ट्रियो के स्मानुष्ट्रिय के स्मानुष्ट्रियो के स्मानुष्ट्रिय के स्मानुष्ट्रियो के स्मानुष्ट्रिय के स्मानुष्ट्रिय के स्मानुष्ट्रिय के स्मानुष्ट्रियो के स्मानुष्ट्रिय के स्मानुष्ट्रिय के स्म

इक्क्एंप्रियन्त्रमं चेत्साहोः स्वाविधिर्मनेत् यंत्रांशस्यादतं ।
 वन कोटि स्वयं अवेन्तदा १५३ नामगेनोक्ता स्लेनं निर्वाहंय-प्रजायते प्रत्यस्याताद्भारताद्भारताक्ष्रम्ययेत्१५६ः

परमसिद्धान्ते 838

छाया खाँका आकस्थले

श्रांका, स्थानभागारभाऽन्तरेंद्राकाः २५८ स्युर्धेनेयंत्रभागाः स्युरु ज़तास्त द्वहरयच

त्रपूर्वस्यासितिजभवेत् २६३ याम्येयत्रकुजप्राच्यात-

स्वेष्टाद्यासंस्थपदार्थः भुत् भारयुक्स्त्रनिर्माणम्

दीर्घाणां सर्गपूर्वीणां सरकानां लगुद्भवः २६४ स्थाननः केवलस्तुल्यःसूत्रस्तनाव्यगुण्ठितः स्पष्टस्त्राङ्क्रेतुल्यं वासूत्रं हिंद्रां विधायच २६५ तासिश्चरवबहु यंथी न्छता-स्यादिष्टस्त्रकम् पंचहस्तोन्नितंदीर्घस्मसंत्रेज्ञ सहराम् २६६ वर्जुलं प्रस्फुट्यु ए यत्स्त्रीसवदासमिमे सूचीरूपसमं भारमतिसूदर्गाननं वुधैः २६७ तत्स्त्रस्य मुत्तेयुक्ता भारयुक्सूत्रमुच्यने स्वेष्टाशासंस्थप-दार्थस्यमध्यभागद्दर्शनयुक्तिः भ्लाद्याधारसं-स्थेतुकें दो दुव्योमसास्थिते १६८ तिर्ध्यन्दएडादिकेके न्द्रदेशोर्द्वे चिह्नमाचरेत् तचिह्ना द्वारयुक् स्त्रंदलाः धःसम्मुखंतथा १६५ ऋषीद्भूसम्मुखंतत्रकेन्द्रभा-राननाऽन्तरम् राजिकावीजविस्तार्समितंसंविधा-. यच २७० वेदहस्तो नितंकोटिस्टपंकीलस्वस्तपंकम्

दएडकेन्द्रावन्तरगतंस्त्रं भारयुतं भवेत् २०१ स्वैष्ट दिग्भागतः पृष्ठदिक्-स्त्रेस्वस्थेलं भवेत् तत्रतत्त्वस्थ- ४३६

भवेत् २७२ कृत्यातत्स्चेष्टवि-क्षेद्रमध्येऽतीसुस्मलक्षणम् तत्रकेन्द्रस्थलात्क रेतुत्यस्थलेस्फुटेम् २७३ तद्दारुकेन्द्रयोगीध्य

यञ्जनम् २७४ साउकनान्नोक्यतेतहिक

२७५ दएडयंत्रादशयंचादपि भृत्ययंत्रप्रयोजनम् वारनचेत्को<u>रापपदयं</u>त्रावायतया २७६ चक्रपा<u>दां</u> वायंत्रेण

चक्रयंत्राऽर्थमानयेत् कोटिस्बरूपमात्रेणकीलयंत्राऽर्थ मानयेत् २०० स्वाभाहानिप्राक्कपालस्वच्छाया-

चिद्धप्रकृपालकालङ्गानम्, निन्युप्तदिनाङ्ग्रीन स्वाभाष्ट्रोसनिजोदयात् स्यात्तत्रनिजयंत्राद्रवाद्धिरेव हिजायते २७८ तत्काल प्राक्षेपालत् पूर्वो इह्नचैवतद्भवे-

त् स्युः स्यगुम्नित्नाद्धत्यंत्रयंत्रादशाः स्योनन्तादशकाः २०५ भिजगुप्ताद्भरबेएडान्तुरबुद्धायावर्द्धन भवेत् निजगुप्ताद ह्ममानान्तंतद्यं त्रांद्राक्षयंभवेत् २८० तत्रतन्त्रायते का- दएडहाचया•

ह्रारुईसज्ञकम् २८१ ऋत्रगुप्ताःह्रस्वएडेन्तुज्ञेयं बुधैः दएडद्धायया c विनामएडलं c विनानुरीय यंत्रेण ७ विनाचक्रयंत्रेण ६ दिक् साधनम् .

लंकपालपश्चिमाह्यम् स्वपश्चादऽह्नसः

उत्तराहं क्षिर्शान्तिं वायेस्युः स्वस्वदिगंशकाः २०२ स्या-त्तेषामऽर्द्धभागानां ज्यादिकृपूर्णाऽयमीर्विका पयदरहे

उन्यदएडेवाकीलेवाँचन्तंमध्यमे नंऽशान्कलातद्दएडकोच्यते दएडम्खांशभापातजातके द्राह्वयंस्पूजात् २८४ उर्द्धदएडोत्यभास्त्रेदएडदै

तस्यहे त्र्यंकंतुल्याऽवेनीकृतात्यक्तं यत्प्रभयास्यलम्

म्यसन्सरवेळाँछनस्यलात् २८७ दिक्पूर्गाऽयज्यकातुत्य-स्त्रेदलायथातथा दएडाऽ ग्रमेऽवनी दएड मूठंके च्रस्थे तथा २८८ द्वाद्एडाऽग्रसस्पर्शस्यानमुत्तरमुच्यते प

830 देगंशका: २८५ उत्तराः केन्द्रस्वर्धतया दएडाऽग्रेप्रोच्यतेसीम्य

ऽभिमुर्खेद्यायायातदेशेहिलक्षणात् तद्वद्रएडाऽश्रकद-त्वादिक् पूर्णारयज्यको निनते २५० सूत्रेतद्दर्ड मूळंतुदला <u> गंदाकाः २८१ तत्रतत्प्राक्षेपालेतुदक्षि एगभिमुखेतया</u> पूरारियमीव्येखातुल्यस्त्रेरंकतर्सीयो दलानइएउ र सोम्याश्चिविन्छवाः भाभोग्यस्थानके भूमी माह्नये २८४ दक्षिएगाऽभिमुखेकाष्ठीपूर्णाऽग्रज्योन्सिते तथा सूत्रकेलस्एगाइलादएडार्य्यकेंद्रसंज्ञके २५५ लपूज्योज्जत्फुलम् २५६ दिकृपूर्णो स्याद्येत्राऽवास्यलाऽनरम् २८७ यत्राज्वास्यानविश्लेषस्ट्र-त्रेसीम्याञ्चदक्षिए।ात् दएडाऽप्रंपूर्ववद्भूभीदत्वाकेन्द्रस्यः

नापज्या शक्तियंत्रम ईकतो सक्तावारावर्गनुतलदम् पूर्णाऽयज्या तद्वौद्धऽप्रकुजाप्रयोः ३०० कश्चित्पदार्धमत्स्यादयोचा-तियत्वेदसम्मुखम् चेनदातेनमत्त्येनछः युक्तासेटैं ष्टिसादीजायते भारकेरोदयात् ३०४ स्वेष्टंक-लादिकं तन्त्रतन्मत्स्याऽसम्भवेभवेत् त्र्यचापज्यादाक्तियंत्रम्.

नापंसकीषये बाबनात्कम्मिनियते सदा २०५ बेळनाळार प्र<sup>पेषद</sup> प्रण्य

880 कस्यार्ड्डतुल्यसूगरमुच्यते तामादिधातुनंकि वावंश जंकार्मुकंश्रभम् ३०६ कलाचापन्यकास्थानेज्यावत्प-इत्रयोद्भवम् यत्रदीर्धचनुष्कोएांचापेलेकाऽप्रतोह्दस् ३०७ युक्ताऽन्यात्योद्भवंमीवीदाक्तिदंसद्गुणंत्रधायं त्रेदीर्घचतुष्कोएोसूगरेप्रथमेवुधैः २०८ युक्लास्त्रस्म-

लवतस्यस्यूलं भागो इवंगुए। यु द्वितीये मूगरे युक्तं कत्वा स्द्रस्मां इदाकेतथा ३०८ तस्या उपिस्थुं ल भागोत्यं तृतीये स्गरेतया एवंदीर्घचतुष्कोए।यंत्रेवेदादिस्गरैः ३१०

कलायुक्तंततोऽभेचदीर्घतन्यूगरोनितम् लेखनीवर्ति काकारंशकुं युक्लान्त्यम्गरात् ३११ स्यूछांदशाद् इवं सूत्रज्ञंकोरेकंदले युतम् कुलालडन्यद्छेशंकोयिवग्रंथि गुरास्यच ३१२ युक्ताचैकात्र्यकंतस्यनाऽन्याश्रंचततोत्तरे . युक्लाउन्येक्त्र्जिकारेशंकीतंबेष्टयेन्मुहः ३१३ खड्ढा

पादाऽनुमानेन चतुँबिन्दून्समालिखेत् रुलैक् पूचम केन्द्रे विन्द्रं पुच्छं मुखान्वितम् ३१४ क.बाऽहिनायश पूर्वपाद्योः परपाद्योः कोष्ठद्वयं भवेत्कंद्रकोष्ठमरत्यंय

थाभवेत् ३१५ झेयंतह्यस्कन्यासमेककीलाःन्यकीलः ्योः मध्येतद्वंधनेनैवस्त्र्त्रेएीवतुवंधयेत् २१६ ततःसंकुनिः तंचापंमोचयेचलनकमंम् स्यायूर्णाचेकलायाताचापं

संकोचयेन्सुहुः ३१७ द्वितीयंवेष्टयेच्छंकुंयावयंथिगुरी · नहि<u>त</u>तः संकुचितंचापं मोचये<u>दित</u>्यमेक्च ३१८ यावश्रं श्रिपुरोकि वासुगरेचाऽथवानरे घटवादीनांपरिज्ञानंक-

र्त्तव्यंस्वधियाबुधे ३१५ **ऋय नापज्या शक्ति दां शक यंत्रम्**. वेत्रजंबराजंकि वाधातूत्थंयोगजंतया वाःन्यवस्तुम-

यंकीलमज्यान्स्लं तुतहृढम् ३२० रुखातंसुहढं पहे कोटिरूपंतुनिश्चलम् युक्तातस्याद्यतः सूत्रं न्यारूपं सृद्दं शुभम् ३२१ बुद्ध्याहिम्गरेप्राम्बत्य्विस्वेयोः

जयेत्ततः सर्वतत्यूर्ववल्ललाचापज्या शक्तिदांशकम् ३३ यंत्रस्यात्त्रयदायत्रन्यासेतद्वंधनाभिधे त्र्यतिशैथिल्यतां यातिशक्तिस्तत्रविचसएीः ३२३ बुद्ध्यापाङ्गगर्गसन्ने .बंधरुक्यासमाचरेत् रक्षायेगोपयेद्यंत्रंचापज्याशक्तिद

परमसिद्धान्ते

लिदम् ३२४ चापज्यादाक्तिदंयंत्रंनास्मत्तोऽन्यैः रुतंशवि क्रमप्रवाहयंत्रम् कमरुद्यंत्रबोधार्यसुदाहरणस ह्याम् ३२५ वस्ये इंशकट स्येवचक्रस्याऽतिनवस्यच

सहशंसहढंकलातच्यक्रचलनक्षरो ३२६ यद्गागःपरि चेर्म्मिप्रयमन्तुपरिस्पृशेत् तज्ज्ञेवंपरिधेर्मध्यभागंतस्य

समेषुच ३२७ भागेषुकोमलाञ्चकून्संरोप्यवेत्रवदृढा न् द्विभागान्तरमिता न्दीर्घा श्रीवाडग्रतः रुयान् ३२८ व्लेपूर्वाभिगान् किं विक्रुए हिपेए। धीमता चक-पश्चिमदिक्पार्श्ववेत्रवद्गोप्यनिर्वेजम् ३२५ ऋग्रेतिर्य

क् वापवचततः संकोचयेहढम् त्र्यप्रसूत्रंतुतन्मध्यदेशं-सनेहियोजयेत् ३३० तहोरज्याभवेत्तस्या मध्येचक

भ्रमहारो वत्तरोपितशंकुनांमध्यंलगतितत्रच ३३१ कः मुप्रवाहकर्मार्थयोजये दुरतिचंचले यंत्रेशक्तिस्यर्शसः नेदचादनेनम्गरैविना १३२ चापज्याशाक्तिदांशाख्यं · स्याद्यंत्रं स्गमंधिया पश्चिमाभि मुखंचक श्रमणंचात्र कीर्त्तितम् ३३३ वायंत्रपश्चिमस्यानवामपार्यस्यवेत्रीः पहांशाकार पंत्रविधिः ४४३ स्वानस्याप्यततः सव्यपार्थदेशेचतस्याम् १३४ स्तम्मस्या प्यतुक्तसम्भम् छ्योरः नरोगिनतम् शृकुस्या ध्यूनितृतस्त्रीः नर्वकः चर्त्ताचस्य १३५ कतातस्येन मुक्तम् श्रेकृतमभस्यम् स्त्रके सुस्तातस्य श्राकुंचाः न्यसा मनस्य मस्त्रके १३६ सुन्नताश्रकु इत्योः अतु स्वस्वशत्त्रास्याहिसस्यितम् कत्यपि-त्वाचनवैवश्रकृयोगोपिरस्यके १३७ कमकारक यं नस्यक एक्टिस्तवाः कमात् प्रस्थानियमाञ्च इयाक्तियन्तायानु

गाञ्चैवंदिगंशकाः ३४३ पहाउशयंत्रजास्स्क्ष्मा जाय-त्ते बुद्धिकर्माएग ऋथयंत्रनलेस्रत्राटिवे स्यविस्तारमध्येकेन्द्रोंडकमालिखे कुपुनलवर्त्तुलतासमम् ३४५ कलासत्सुविरंरोप्यसुवि-

रेसुचलनलम् तचलेतुनलेतरमानिश्वलंचऋष्यम्

३४६ स्थ्रुलंहढं, स्थिरंयुक्तातत्स्थ्रुलंचकामुच्यते ऽस्ति भमएगाऽर्थन्तुं द्यात्रत इह दुन्यते ३४७ तत्स चक्रवत्तांदशान्कलाःत्यानःधिकांस्तया खेळव रोभ्यंस्तुस्वधिूयाकेञ्चवत्त्तयीः ३४८ मध्यांध्रीसर्व नांकलांत्रं कीए।मुच्यते पृषांदशादग्रस्यलादध्य

कोएगह्वयस्थलम् ३६९ यावत्समाचरेद्रिकतद्भवेत इस्ररूपकः तद्द्याद्याद्यतस्याद्यं भागस्यैवादकदेश-कम् ३५० यावन्द्रजोच्यते पृषा त्रश्रां दशमध्ये श्रुति भवित् नकर्वीचाऽपरंकोरापृष्ठांऽशाऽभान्तरेभवेत् ३५१ एव-मर्थक मेरीवतञ्चकांद्रशमितानिहि व्यवस्वस्त्रपाणिरि-

यंत्रनलेस्त्रादिवेष्टनयुक्तिः क्तानिकलातद्रहदाह्वये ३५२ कस्मि श्रि लेकदेशेतुप-

रिध्यान्यात्नरे चलं रेखारू पहुंद युक्ता त्र्यस्तरूपाउग्र भा-गकम् ३५३ विस्तरित्र्यहस्त्ररिक्ताहुसुदैध्येत्र्यहस्त्राहिष डघुम् रेखारूपमुखेयुक्लात<sup>न्त्व</sup>रग्रनिवियोगकम् ३५४ स्थिरंतत्तंतुमूरुंतुत्तरस्थाना बृह् बाह्वये त्र्यति दूरस्थलेपृष्टे युक्लापृष्टास्थरंधिया ३५५ ऋईकुछ लख्पंतुतत्तन्तुस्तर्यज्ञायते तन्तु मूलस्यलाकिं विद्देर भवेत् तदेरवास्तपकोरिक्तेत्र्यरस्रस्तपेययातया ३५७

तब्हदाह्वये ३५६ तंतुपुनर्हढं युक्लावत्तन्तु बीखरी लगत्वेवधियाधीरैरांचरे किंत्रसर्वदा स्यूलचकोपरि-स्थाने तिर्ध्यक छिद्रेनलस्य ३५८ युक्ता होकारंग कंस्त्रं पूर्वीएए सहढं स्थिरम् त्र्याकष्ट्रीवयो भागों यस्य तस्<u>यच्यत</u>्वे ३५८ श्रन्याः प्रस्त्रपूर्वाणां युक्ता

मुक्तेस्त्रादिकेसन्यरीत्यातद्भामये नलम् स्त्रादीनां तु शैथिल्य भागान्तंस्त्रपूर्वकाः ३६१ वेष्ट्यन्तेहिततसः

थोचितम् तेद्रहत्संज्ञकस्यैव भ्रमणाऽर्थकारोतया ३६०

परमसिद्धान्ते. BRE .

त्रसन्यमः य सुदीरितम् इतियंत्रनलेस्ह्त्रादिवेष्टनगुः

ऋश्यस्वतो वहनबंधनशांतिः

बहुप्रकारयंत्रस्यच्यास्तह्रशनाभिधः ३६२ जायतेबन्धः कल्पानकाएवयथातथा यत्त्वयंवहयंत्राएगांबंधरुक्षः य्नसंज्ञकम् ३६३ चत्रं भवतितन्यार्गचिक्रमेवसमीरित म् यच्छ न्यायद्विधानेनप्राक्निकशक्तिमान्भवेत् ३६४





श्र्यय स्वदात्त्रयासर्वकाल भ्रमकबहृवि-धयन्त्रविधानम्.

स्वश्तात्रयाभ्रमकोऽनेकयंत्रोत्थोऽतिकलाऽन्वितः ३६६ बहुप्रकारकोयंत्रीजायतेप्रतिलिप्तिकम् यातलिसोन्नि-तंनचमहच्छब्दप्रदंभवेत् ३६७ केचिद्रइयःएवि। यं- दैर्घ्यस्याः अरसाः साशांकत्तेव्य खबुविस्तृतिम् ३६८

विस्ताराष्ट्रादशांदर्शाचवेधंपत्रेसमाचरेत् पत्रस्लस्यवेधं ष्टेंबंदरावर्जितम् सलैवंश्रेष्ठलोहस्यंपत्रंशक्त्याह्नयंहु धैः २७१ तस्यैकाऽप्रंयुतंकलाचक्रनालेतुसंचलम् श्र-न्याद्रपंनिस्बलंयुक्त्वानिस्बलेकीलपूर्वके ३७२ बुद्धवावे-ष्ट्यततस्य ऋंस्वतो अमिततसदा तम्भुक्तं वुपुनस्रीवं वे ष्ट्रवेत्यंतुपुनस्त्या ३०३ ततःशक्त्याद्वयंचक्रंप्रथमंची-द्यमुच्यते दीधी नालेषुचकाएगंलघंशाः पेचकाःस्पृताः ३५४ चक्रांशान्पेचसंख्यान् ऊलाचका अमन्तिहि तीयान्तीयंतया ३७६ तृतीयाच्युयेचकम विकार धिगुएा भ्रमेत् बदरीकटकैस्तुल्या न्यंशास्त्रिय्यक्तिवामुसे ४४८ परमसिद्धानी.

३७७ दन्ताख्यस्यचचऋस्यदन्ताःकार्य्या विचस्रऐः त्तीत्येत्यंदर्शनेस्यूलं धातूत्यंस्फाटितोदरम् ३७८ वंशप-र्वसम्छतानालं यथिइयोऽन्वितम् एकत्रस्फाटितेको-डे ह्य-तुंगंतंप्रकल्पयेत् ३०५ स्फाटितेत्द्रेऽन्यत्रचिपिटं तंत्रकल्पयेत् श्रंयिभ्यांबाह्यतः कीलंस्वस्वग्रंथियुतंद्द-ढम् ३८० दन्तारन्याऽन्त्यस्यचकस्यदत्त्तलमंत्रकस्य येत् दन्तचकरदासंख्यातुल्यंतन्मुक्तिबंधनम् ३०१ दन्तचकाटनेक्पुलेयुतःस्यात्तत्प्रकल्पयेत् प्रथमो भाग येचक्रपंचार्डघटिकाभिधम् ३८२ तचात्नं भामयेच-ऋंयरमान्मन्दजवं भवेत् तचाः न्यं भामये चुक्रंष एवँ घटिकाद्वयम् ३८३ कतैवरवांगनाडीषुपंचाई घटिका द्वयः चतुर्विद्यतिवारानु भ्रमत्यूनाधिकोयदा ३८४ च क्रभागारधिकोनान्तानशैश्वकान्यकल्पयेत् श्रमुपाते-नतत्तरमाद्यत्रोऽनेकविधोभवेत् ३८५ वास्तम्भाधार गंचकंद्रढ सूत्रसमन्वितम् तत्सूत्राऽत्रंयुतंकलागुरुणा वस्तुनाबुधैः १८६ तच्चक्रोवेष्टितः प्राग्वत्स्वतो भ्रमतिस-

रूतत्रावकयत्रम् ४४५ वैदा प्रथस्यविस्तृतिभयासकेतोऽत्रोदितोमया २८० **त्र्यय दूर दर्शक्**यत्रम्

स्मितिकानियुत्तांश्वकानावर्राप्रस्तरो द्वान् किंचकाः चमयां श्वकानात्रयंत्रीवनक्षाणीः १८८ उपर्ध्वपरि तो युक्तवाद्द्रवर्शकपुच्यते तेनात्स्यप्रकटं हृष्ट्वाप्रकटं चार्गपेकतथा १८८ हृदुश्यतेचात्स्यानस्सुस्हम्मानङ्

परमसिद्धान्ते

तत्स्रऐन्चाऽन्यगेहसंस्थरतुमानेवः ३५५ त्र्यन्यवेशसु-खेकपीदलाऽन्यस्तच्छुणोतिहि स्तत्रावकयंत्रं तदाश्चर्यदमया ३९६ निर्मितंबालकानान्त्व अयसर्व शिलार्थदं चक्रयंत्र

चेवास्थाने तोयोपरिस्थले ३५८ चक्रं वेखए।वत्व

द्येश्वयंत्रं प्राम्श्रामयेत्तृतम् तोयाऽर्थस्थानताः-

नयेसाधीः ३९९ स्वर्णरौप्यक्रियाचैवताम्रहोहादिका किया काष्ट्रस्त्रादिकर्मीचतच्छत्त्रयाजायतेतया ४०० तच्छत्तयाऽधः स्थितंतीययुक्तयानोर्द्धेतुगच्छति सूग-राकारकैर्यत्रैरेकस्थूठाऽन्यस्सायोः ४०१ भागयोर्वेछ-.भाइज्जोस्तत्स्यूरुाऽपरस्यसमयोः भागयोर्वेष्टनाइज्जोरि-त्यंबुद्ध्यायुगादिभिः ४०२ यंत्रेस्तचक्रस्वंधादुर्द्धभ-च्छतिवाजलः श्रंबलाह्यडल्पपविषांशुणाडिधशुणा

भनेत् ४०३ श्राप्यंबुराक्तियंत्रम् कुम्भस्यवदनं

कत्वात्रिकानालवन्म हान् नवालंबधवक्रंचनत्कंभेतुज रुंधिया ४०४ त्र्राभिनापाचयेत्तरमात्तत्कुम्भः शक्तिमा-

भवेत् तच्छत्तयाऽसिलशिलानामुः भिप्रायं समान-येत् ४०५ तच्छत्तयाचभवे ह्योमयानंशक्तिरथंधि-

या संस्थंचकद्वयाधारेस्याह्रएडंमध्यद्रएडकम् ४०६ वेदाँनामेषचकारुगांमध्यदएडाडुभीमेती समध्यद्र वेदाँनांचकाराांभ्रमणाद्यया ४०० स्यात्तयास्वधि यावायोः प्राप्तिः शक्ति रये भवेत् ।

श्रयज्योतिः शक्ति प्रदयंत्रम् मंधवारुणिकाज्ञेयागंधप्रस्वेदकंचतत् ४०८ विज्ञेयं

गंधतैलंतुतच्छंखद्रावकः खलु युत्तयंऽगंलंजनाभं च भाषायां जस्त मुच्यते ४०९ शीशकात्कविनी जस्त-धातर्जगतिवर्त्तते काचपात्रश्रेयेतीयंगंधतेलसमन्दि

तम् ४१० संस्थाप्यदक्षिए।। द्वामंतिर्य्यक्तेनाः वनि-स्यक्षे सर्वपात्रोदरे व्वेवजस्तखणुङन्तु दक्षिणे ४०१वा-

मेतास्त्रतरगतुद्खात्त्रयथातया गधतैछज्ञछाभ्यात्म-

भमेवहितद्भवेत् ४१२ तन्तुरत्रायसम्बन्तुरुच्यतेकेवः रुः खदुः मध्यपात्रस्थितेजस्तखुडेलेकं मुखं हढम्

४१३ युक्तालंडन्यमुखतनोरताम्रखएडेतथाहढम्

देसपात्रस्थितेयुक्त्वामध्यपात्रस्थितेतया ४१४ त्र तन्त्वेकवक्रतु युक्ताताम्रतरंगके तत्तन्तीर् स्थवक्रन वामपात्रस्थितेतथा ४१५ चुक्तानस्ततरंगेनु तृतीयंसा ऽधिकस्यच तन्तोरेकं मुखंयुक्लावामपात्रस्थितं तथा । ४१६ ताम्रधातुतरंगेतु दसपात्रस्थितेतया युक्ता जरत्त तरं गेतुतन्तन्तोरः परंमुखम् ४१७ तन्त्तीयाभि धंतन्तुं अमरुत्परियोजयेत् तत्स्चीशंकुमूळांशेतत्स् चीशंकु मस्तके ४१८ तचु म्लको द्रव्मत्स्यंसुमन्ता-भ्द्रमकत्त्रथा योजयेचोजयेन्मत्स्यवन्नेतन्त्वरंग्रकहढ म् ४१८ इष्टस्रोल्तीयोख्यतंत्मुद्रिकयाद्दमं यु-क्लामत्स्यसुखेकस्मिंश्चिचिद्वेकस्मितेनुधेः ४२० द्बाह्यडन्याज्यकंतन्तोरज्यस्थानेतथा भवेत् एवंक-स्पितिचिद्वैरतुवात्तरिवस्थानकस्यच ४२१ झायतेऽन्य-

. स्थले यत्रविद्याचेन्नहिजायते तत्रति द्विना<u>शायू सद</u>् पायसमाचरेत् ४२२ मयासंकेत मात्रंतु छिखितं विस् तेर्भयात् अथस्याऽथव्यऽयंथंत्रंज्योतिः शक्तिप्रदंभवेत्

: ४२३ धान्तप्रंजगतीदानीमरस्त्यस्यारतिप्रचारकः श्रय पिष्रकारक यंत्र विधि: स्तम्भा धारस्थितं चऋमूई चऋ मुदी रितम् भूम्याधाः

रस्थितं चक्रं तिर्च्यन्यक मुदीरितम् एकत्रोद्धरिब्य्चक स्यद्रुंडे रुज्जुं इंढंन्यसेत् ४२५ तद्यावश्रंथिभिर्युक्तं रु-त्यातद्रज्जुवेष्टितम् तद्रज्जुनालसंयोगदेशमेवाऽदमप्र

र्विकैः ४२६ गुरुभिर्वस्तुभिर्युक्तारञ्जुपुच्छंविचस्तुरैः बन्धनन्यासमध्यस्थमिष्ठे तंपरिमोचयेत् ४२७ बुद्धवा-तंत्रपुनर्वेष्ट्यहीष्टेतंपरिमोचयेत् ऊर्द्ध्चकांशसंलयाः

सिर्यन्चकारत्यभागजान् ४२८ भागां अकारय्रगां स्तिय्यस्वकस्याउधोऽधिभागजान् त्र्यंशानउपरचक •स्यतिर्म्यक्संज्ञस्यचांऽशकैः ४२८ चन्नाऽघोऽल्पांन जैर्रियान्छला होतदायेछया त्र्यंत्वकार्यभागेत पिष्टर

परमासिद्धान्त त्प्रस्तरद्वेम् ४३० द्वायथोचितंतेनहीष्टेपिष्टंस्फटं भवेत् यन्मयाक थितंसर्वतिकंचित्त्रपदेशकम् ४३१

सदुद्र्यासुबुधैःकर्माकर्त्तव्यस्याद्यथाहितम् स्वल्यन यादिकैविद्भिःकत्वाचानुभवतया ४३२ स्वत्तमयंत्र पूर्वन्तुकर्त्तव्यंस्वीशयप्रदम् येनयत्रैवविद्यःस्यात्तत्र तच्छान्तिमाचरेत् ४३३ यंकम्मिन्तुधियाकार्य्येप्रोक्तं स्यान्तरनेकथा. केवलदारुकुएडस्य तथाकेव-लास्थिकंडस्य स्वसंधिस्थानेषु विभागकरणयुः

क्तिः दारु माएडोऽस्थिभाएड स्वकेवलः पूर्णमाषकैः ४३४ पृष्टसंपूर्णकंकत्वाबन्धयिलैवतन्मुखम् वस्त्रे-. ऐविहिकुएडादिस्थांबुमध्येचतंन्यसेत् ४३५ ततःसं-पूर्णमाषाणां वंडबुसंपीतकसरो स्वस्वसंधिस्यळेष्वेव भिन्नस्त-दाएडकोभवेत् ४३६ प्रस्तरादीनां विभागकरणयुक्तिः

मध्ये प्रस्तरपूर्वीणाञ्जलातस्यरूपकम् रुलाकोटर-वचारतिदीर्घतर्सुषिरंभवेत् ४३७ तद्दलास्तिषरेचाः

कएाचुर्एाकरएायुक्तिः तिपुष्टं धान्यतुषंबुधैः तस्योपरि्जुलंदत्वाययायो

र्मुहः ४३८ यावसिबतितत्तीयंतावत्तरसमयाऽन्तरे वेततः प्रस्तराचास्तुरवर्<u>द्धता</u>ंथानि निश्चयात् ४३*८* न्त्रगारज्ञानम् . विह्नदंभितुयकाष्ट्रनिः सारमृतद द्विकम् तदःत्रप्रोच्यतेंऽगारश्वाःथ श्रूराङ्गानस्. यन्मूत्रजोभवेत् ४४० यदाससार पंधातुकः वद्विसंगकराश्रुराप्रोच्यतेत्रादायाय द्रवत्बं छवएो। याति श्रूरान्वा इपिजळा इन्वितः संयोगात्पेषयेच्चमुहर्मुहः ४४४ स्यात्तावत्तं चपेषयेत् ततस्तं शोषियं लोकि भागि स्यचूएकिम् ४४५ रुलानंगालयिलैदकएाचूर्एतित न्देवेत तन्यसेंदु भितोदूरे धीमद्भिः खनु सर्वदा ४४६

परमासिद्धानी.

खण्डाचित्रप्रसार स्यखण्डकुरणयुक्तिः खएडयोग्याः इसमध्येतुकलातत्सु पिरेशुमम् दला तत्सुषिरस्यांः धीँभागंवार उमन्छोचितम् ४४७ स्त्री

रेकएाचूर्रातु पुष्टंतस्यैककोएाके दालाकामद्रयपूर्व एगम्द्रीकत्वाहिकेवेठा ४४८ क्लाच्लोपिर <u>घा</u>तु

सुदृढंतद्ययोचितम् उपधातुकरवएडंतुत्तनस्तायुर्धि तांब्रधे: ४४% स्त्रयंभू विशालाकान्तु चोत्पाटचैव हितत्स्य-

लात् द्वरान्तकए।चूर्गेनस्रह्मरेखांसमाचरेत् ४५० वि. हर्लाद्व तस्तिप्रमितादीर्धामाचरच<u>ैलवर्</u>तिकाम् कराचूर्गी-त्थरेखान्ते वर्त्तिकारप्रंतु विन्यसे त् ४५१ वर्त्तिका मूल-देशेत वहिंसंयोजयेन्ततः स्वयंतत्स्थानतस्थाऽतिदूर

मेवब्रजेत्खलु ४५२) ततस्तावर्त्तिकामग्रनि र्शक्तातांक ए। चूर्रीजाम् रेखांसंग्रह ए। छत्वातन्मात्रं सापिरे उन्हें: ४५३ गतातवु द्वोवायुभिनाव्यम्परस्तरस्ततः ख एडलंगातिचोड्यतेतत्त्वएडास्तत्स्रापे ऽथवा ४५४

तत्रशैयिल्यसंयोगा चोडचतेप्रस्तराद्रशकाः

ऋषकंपोत्पत्तिपूर्वक्रम्

स्हमरचाडाचितपुष्टभाएडधातुमयवुधै ४५५ रुता तस्योदरेगधमेकभागतुचूर्णितम् उद्यागारकचूर्णचळ्

पं भागोन्मितंतया ४५२ शूराचृएंचितुं र्भागद्वातेषां युतितया कलातत्रयुतिर्द्शीयाकए।चूर्णसमानुधैः ४५३

स्ति कि निद्दरंच गच्छिति वलयुग्युरु भाएडस्तु कं पृत्येवचीन-श्रयात् ४५५ त्र्रत्युष्णमागसंयोगाद्भुत् मुक् प्रकटोभ वेत् बहुगंधीष्णभावेनस्वतोऽभिर्भवतिस्प्रेटः ४६० भू-मीयत्र भुवेदरुत्यंगंधकं जलसंयुतम् तोयप्रवाह भूस्यानं

द्रराद्रध्रगस्त्रेंश्रद्लाऽभितंत्रनत्त्र्णे तद्राएडश्र्वेस्रधुः स्त्रोल्येचाऽत्युँ द्वैयाति तर्हितु ४५४ चेदुरुस्तत्र भाएड भवत्वेवशुक्रप्रभम् ४६१ तद्भूमीगंधगंधतुलभ्यतेचैवतः ज्जलम् गृंधगृंधान्वितं चोष्णां भवत्येवतु निश्चयान् ४६३ स्गर्भेगंधराशिसु भूपांत्लादशेषुगंधकः कुत्रचित्कृत्र चित्स्वल्यमाद्यमेवाऽस्तिसर्वदा ४६३ मधुरादयुद्भवो व-द्वियीतिसिंधुतलेसदा नतस्तद्वीतिहोत्रस्तुचोत्सिपसः

इस्तुं प्रक्षिपत्पेवत इक्षि तब्सरो तद्दायोः प्रतिबंधला द्रं धासन्मावस्

पभयमेवतुजा्यते धरशिजाऽभिबलेनच नात्यक्तकदाक्तिसम्यादन्तरे तद्रश्रमुखपान्यान्या पूर्वकैः४०३ तद्रन्धोदरदेशंचेनिः सन्धि

**उथवा**क्षिती, तिस्वपास्ततडागाः स्यूरः क र्षोनसांप्रतेनेवबर्षिताः ४८२ स्युःकीयस्तुज्ज त्यद्याकरोदकम् तद्रज्यीचततः शुद्धंपेयं कासारशंव रं ४८३

परमसिद्धान्ते.

४६०

दिश्दाहारुएग्व्योमोतात्तीः यदेशाह्यवेनपशादीजातिमत्तुमानैः यदिगद्सस्य त्रेरात्रोतिहित्यावतुत्र्वते ४८४ दस्यतेनतिषदेशा द्रथ-श्राव्याद्भवात्त्रस्यः नेष्ट्रदेशोपरिस्यानेधूमस्त द्यातिचात्त्वः रे ४८५ तत्त्रद्वेशार्कस्यानिध्येजायतेधूमसण्डलम् त

रे ४८५ तत्तुहूँ बार्के सांनिध्येजायते धूममण्डलम् तः किंचिदररणांचे भिई व्यतेचारुरुणोदयात् ४८६ प्रार्के प्रश्चात्समये भागोरेत्सकालो भयन्य पश्चिमारुरुणासाः निध्येचो सुमुन्नारपरारुरुणात् ४८७ विशेषात्वसपासम

काल्यस्यापुरुपानवेतः मठजाता प्रयुत्पत्तिः तथा स्वाहित्रस्यपुरुपानवेतः मठजाता प्रयुत्पत्तिः तथा सर्वोश्वरस्यपुरुपानवेतः स्वतः स्टट स्योतिस्सः स्तुतदात्रीवायुवेशकोन्च तत्स्यवासातिद्दान्तिक्वारि

स्तुतद्रात्रीवाधुवेगवद्रोनच तत्स्यद्याद्यातिद्द्रान्तं कदावि त्समयेत्विळम् थूट्टः कदावित्समयेभिन्नभिनमेवयुः नःपुनः हृदयेतमानवैश्वाद्यमञ्जाताहनञ्जेष्यते ४५० अधार्वः विद्युद्रमञ्जातिः तयासयोगकाञ्जेतुनीस्ते स्यो

श्रीतवः द्रवादनर्गः वायुवेगवरोनैवस्वस्थानात्सरस्त्रतया ४८५ व्यापनास्तरस्त्रोतेनास्त्रीवद्यद्रश्रयः

उल्कापातात्पत्तिः स्वर्गगोत्पत्तिः त्रासचाकारागैत्र्यात्रप्रविस्केत्रः वनस्थितैः ४८२ ताराएगापुनके भिन्नभिन्नदेशस्थितैश्व

तैः दश्यतेभूसरिद्भूपर्गाकाशेचैवसर्वदा ४५३ यंत्त नमन्दाः किनीप्रोक्तांस्वर्गेगापिहतोत्तमेः शुक्कालेतुचाद्यक्ता व्यक्ताच्छण्।स्रेशेचसाः ४९४ वहविस्तारकाऽतुत्येचापसः पाहिद्दवते. केतुतारोत्पत्तिः त्र्यतिदी<u>र्ध</u>िनकोसा ख्यक्षेत्रः सूच्यां कृति भवेत् ४९५ तत्स्च वीवदने लेकांताः रकायंदिसंस्थिता ऋसुचीकाशस्यार्युताराणां रून् केणुच ४५६ तत्स्वचीरूपकंचन्रभीवर्णहरूयतेतदा तत्र तस्रोच्यतेके तुस्तांस्त्चींपुच्छमुच्यते ४५७ पुच्छकारक ताराएगांवएंचिद्रएविद्ववेत् तद्रएसिट्शंतत्रपुच्छमेवहि जायते ४५८ एकपुच्छाऽनितः कि वासुग्मेपुच्छाऽनित स्तया बहु पुच्छा।नितश्राऽपिजायतेकेतु संझकः ४२५ एक द्वित्र्योदयश्राद्रपेजायंतेकेतवः खबु न्त्रत्युचीकाहासंस्यः स्तुकेतुरेवनदृश्यते ५०० स्वकक्षाउधस्थितः केतु यविन्ता-वसहस्थते उल्कापातोत्पत्तिः प्रज्वलद्व हिवर्णस्त

परमसिद्धान्ते.

यहाए।सूपुकः ५०१ धामश्चेदेकंदेशान्तुव्यो ऽन्यस्थानकं दुतम् यातितद्वादिनेरात्रावुल्कापातस्तद्व-च्यते ५०२ उल्का भारकरचोरतेनखुल्यमेवहि जायते त्रा

त्युचीकाशगातूलका भूसंस्थैनीहिद्दरयते ५०३ तारा-पातोत्यन्तिः शीष्रमेकस्थलावज्यस्थानकंयान्ति

चार्रम्बरे कस्मिञ्चित्समयेश्वेततारकाणिबह्ननिच५०४ -रात्रीतमऽन्दुतंत्रोंकाः परिपश्यन्तिचेन्तदा तारकापतनं मेघानामेकं खण<u>ुडस्य</u>चापँऋपाऽन्तिमांउदाकः उषेेगुगोः सम्मुखेर्यंथीतोयंभागयुतिक्षऐ ५०६ संखगत्येवयदे-शेतहेशेचापस्पकः स्वत्यमेघाऽशकादऽत्यमध्यमध्येष

जातंत्रद्रात्रीतंत्रतंबिदुः ५०५ इन्द्रचापीत्पन्तिः स्यमध्यादशकं व्योमे तस्यादग्रद्वये कंक्षिती तद्वनदेशस्यवायुवेगवशेनच यातितदेशतस्तरमा धा पारुतिर्दनः ५०८ स्यान्ततस्तद्धयंयातिरात्री पूर्णेन्दु सस् खे चापरूपाउम्बुदांदबांदरां यदेशात्संलगत्यदि ५%

· पोरयचारपुरसेटस्यसम्परवे ५११ चापाकार घना उदार त्यंकऽवुभागयुतिक्षऐ। संलगत्यऽपिमेघस्यवैषम्यान्नहि जायते ५१२ तच्छकायुधस्याऽदामात्रमेवकदाऽपिच त्र्यत्यनिर्द्वतयाऽतिस्रूस्मास्तोयकणांऽदाकाः ५१३ बहवोऽतिघना यत्रप्रपतंत्पऽवैनिस्यरे "तत्रतनोघरूपंस्या-न्मेघवत्तरुष्ठं भवेत ५१४ पश्चिष्टोत्पत्तिः चिकतो वायुनामेघस्स्येन्द्रिपरितो भवेत् स्वयद्देशोपरिष्टान्तुपरि वेषस्तद्वच्यते ५१५ तदायोर्भिन्नवेगला सत्ततो उपमेति च नकुँजाँद्याराबिम्बेषुपरिवेषन्तुजायते ५१६ स्युश्रे ऽप्रमाणांश्चविषमाश्चभयंकराः ५१७ । २५६८

श्रीलक्ष्मीवलुभात्मजप्रेमवलुभविर चिते परमसिद्धान्ते यंत्राधिकारः

षोडवाः १६ 🐃

**४६४** . परमसिद्धान्ते.

न्ययग्रहनिश्चयत्र

येरुचमध्यपाताचैिदिधिर्मित्रतिसर्वदा तेतुंगमध्यपाता स्तुविङ्गेया गएकोत्तमैः १ शीतांत्रुग्रहणा हुन्दुया क निकारोन् विकास सन्दर्भागीस्यमानान सीययोः स्त

स्तुनकाया गरीकातमः । सातातुत्रहर्शा कुर्युक् र्त्तब्बचेन्द्रिनिश्चयम् मन्दानामध्यमानाच त्रीव्रयोः श्री प्रतुगयोः २ येन्युक्त्वावियुक्तावाविधिर्मिलतिसर्वदाः

भारकरेरचोदयाइते ४ ब्रुधेस्वर्णेनतम्बिध्वर्वकंतुपडी इतं स्वादागवदनं स्वर्णपत्रियमाङ्गते क्रमात् ५ दला हीष्ठसणीद्भेते भारकरेरचरफुटेबुधैः तत्स्पर्यच्योदयाहि

हीष्टक्षणी द्वते भारकरेस्य स्कृटेबुधैः तत्सेर्यस्योदयाहि ष्टेतत्सेर्वेटस्यस्फ्रटं भवेतं ६ स्वर्यस्येवीद्यात्सर्वेज्ञायते प्रस्फुटाऽयनम् स्त्रयश्चिमः स्थिउत्सनिश्चयम् निनशीर्षेपुरिस्यानकेन्द्रात्वेपरितःकिरु७ साकादरा-

प्रभितं भूतेवयोगयानद्यदः स्वरम् दश्यतेतदः नुतानरि-क्याद्यस्वरुवस्य सद्यापुरः तह्कुराहुकं ज्ञेयतस्यादयाद्या क्रुजभनेत् भारकरस्योत्तरकान्निकळरात्रादिनस्तुर

म्यक्रोन्यंद्राकैः<u>समाः</u> ज्ञे<u>यात्र्यत्</u>रचनाराण<u>ां तेष</u>ांस्वस्वात्स कार्ठिकाः १३ दिग्भागारस्वोदयेष्टोत्यदिग्भागेरनुसमाः ख्ढुः स्युर्ववस्तुततस्से] म्ययांम्यदिग्गमनंन हि १४ व भूमिः स्थिरास्मृता मेषंभानवसराव •सोम्यूब्यक्त भवस्यच १५ ठांगूठोदक्षिणाः चिद्द्रस्थिताः कश्यपाद्याः सप्तर्षयः सदा १५ यान्त्येवं

परमसिंडा-४६६

त्तवत्रवेष भागादशादशादशादश

धिष्ण्याना तुत्र या इ गस्त्य पूर्वा एगा सात् याम्येऽथैकसं

थभागजनभवेत् तेनोनाऽधिकमागीशसंस्कतान्तारका-यंत्रांद्याःस्वदिगं-

राण्य (ब्ध्यः श्र्यंशस्यते २४यतः हक्यन म्येरात्रीख्वस्वदिनस्यच २७ मध्याऽऋस्यान

पूर्णवास्थादयनक्षणे तासिणस्वस्वयस्त्रादर्वर ब्यिकरांद्रा २४ के: २८ याम्येऽह्मारईस्यकेऽभेनुद्दयनो

स्पैदनिखचात् त्र्हाद्यंचारंगुरु ती ३२ त्यागच्छत्यदत्तइत्यंचस्यैर्यः

*ग्र*थप्रत्यक्षांगुलेभ्यो बिम्बब्यास तत्रयद्वस्त्रपूर्वेम्लस्यठाकरैः ३६ तुल्यंतच्चायते हारस-स्थानाऽन्यस्थलां इतरम् इस्तांद्यंपर विस्तार प्रत्यक्षांऽसु-

लताडितम् ३७ हाराप्तपरिक्तारहस्तादांतकलं भवेत्

परमसिद्धान्ते ୪୫୯.

सयोजनान्यंनम्

लोक व्यासार्ज्यचानन निर्वेधाऽस्तो दयस्थाने शीतें गोवरिं

द्यकालेतु बिम्बप्रांऽत्यांऽशकुरेयलम् वामेवादिसिएोह त्यूंवेंतुपरिस्मरेत् ३८ वनंवाप्रस्मरेन्तावत्पर्यातन्त्र निजस त् तदम्याऽगम्यमानस्युज्ञानरीत्याऽखिलत्रवम् ४० ग्रानयं-

कर्णजयद्वजभवेत् स्वस्थानाद्विम्बकेन्द्रानं भवेत् ४१ तत्पूर्णकर्णजाको टिर्दि छोस्या-षूर्णक्रों दिकंसर्वमानये द्योजनादिकम् ४२ १५भेद लिपाऽभिमहिताः चऋंशी श्वारभषद्भक्तां बाह्मंद्रद्भाः समुदीरिताः ४३ तेषांज्याः

र्द्धीऽस्कैनिघ्नंभूगंप्रज्यांशभाजितम् सन हिलास्यात्कोटिटुक्कुटः ४४ कताविह तन्मूञं योजनाद्य स्यादिष्टेलोकाद्वे विस्तृते ४५ एवंधियाकुनादीनांविस्तारहयमान्येत् स्त्राय निश्चयम् गोललमुदितं भूमेश्वद्यप्रहणदर्शनात् ४६

भूमे गोलि त्वंनिञ्चयम् न्दर मिथीवानीयताकाद्र्यसानिच्यासन्तदर्शनात् तल्कमादृश्यतेमूढ्

एवसुचनमेक्षिती ४७ हक्त्रतेनिश्चयं सूमेर्गीळलंबहुधाकतम् भौ-स्करा दुवराइसाभ्यांगीछलंचाक्षितेर्मतम् ४८ मङ्काचरराम् , शाके बसि युनीमूतेकुर्माः द्रीमाझिडाभिधे प्रामेब्रह्मस्थळेवत्स

भागवस्यकुळे युभे ४९ भवन्मेजननं शाकेवेदरवाषाऽत्तसंबि-ते मामेचस्वादर्जितेपुएयेशोभनेजयरुख्रेर ५० स्वल्पगर्गात्वसा

र्रमभदेशेमध्योद्यपदी वर्षेस्सपेन्द्रभिः प्र्रंत्रियमेतम्मवाहतं ५१ **स्ट**मीवस्रभविप्रस्य जातास्त्रिपमिताः सुताः ज्येष्टोबीबाधरा-च्यस्तु शिव्यार्युवेदिशास्त्रवित् ५२ प्रख्यातोऽधिद्वितीयोऽहं मच् धीःप्रेमनद्धभः पीतांवरातभिधःख्यातोधीसंधुस्तुतृतीयेकः५१% र्षोद्धवत्सरा-भुक्त्वास्वर्गधामगतःपरं पंचू<u>वेद</u>मितान्वर्णा-भुक्ता लीलाधराभिधः ५४ स्वर्ग<u>लोकंगतुस्त</u>रमात्ताताह्वोद्यारणायच

धीवराएगांत्रमोदायमयैतद्रचितंनवम् ५५ । ३०२४ . श्रीलक्ष्मीवद्धभात्मज्ञप्रेमवद्धभविरचित्रेपरमसिद्धान्तेनि-श्रवाधिकारः सप्तद्द्यो १० नितरसंपूर्णना मगाच्छुत्रमस्तु, देशज्ञानम्.

٥*و*/غ

ॐश्रीगणेशायनमः विष्रेशंसिद्धिदेदेवंवन्दितंसञ्ज-नाःचितम् प्रशिपत्यस्फुट्देशनान

याम्य हितान्त्रब्ध्यश्चिकेवला गोरसाश्वि-

समाः पूर्वदेश भेदपलास्मृताः ३ १ गेळीपुरस्य म्यलिमा रामरदोन्मिताः श्र्यशोनास्ययुगाःपूर्वोविकल

कियताबुधैः ४ ४ को छम्बोनगरस्थानेचाम्याः के भ्र-युगाः कळा नागरामपठाः पूर्वाकीर्त्तताश्वतथासदा५

रंग ५. ऋयकन्दीपुरस्थाने लिसा नागा

याम्याः इ.दे पूर्वाश्वविकलासांगृहुगांगयुगाः स्मृताः ६ ६देवकन्यास्यग्रेशिपात्रप्रकनागाब्धिसामिताः

दक्षिणाः कथिताः श्रून्यविकलाः पूर्वपश्चिमाः ७ ७ तः त्रिविन्दस्यतेनन्दाष्टान्धयोदासिएगकता सत्र्यशाभः थुगः पूर्वा विक्रुलाः स्वलुकीर्त्तिताः ८ र ऋप्रधुनात्र

माल्यालिसानांगाकसागराः याम्यात्रप्रगादायुक्तानवि-

देशज्ञानम् १७९ ब्ह्यः पूर्वकाः स्मृताः ५ ४ नेगा पाटा मकस्थाने गोर्ट्ये गायान्यः सितिकाः पूर्वीस्याविकलाश्रद्धसागराः किलकी चिताः २० १९ दक्षिएगस्त्रिचनापत्यां क्षिप्ताः षद् सागरर्नावः सा ईपिएडमिताः मोक्ता विकलाः एर्वसंज्ञकाः ११ "तंजावूरु पुरेषान्धिपरिमता दक्षिएगाः कलाः द्वात्रिशदिकलाः पूर्वाः कीर्त्तितागणकोत्तमैः १२ भकम्बाटीरपुरस्थानेद्रबंशतर्क मिताः कलाः दक्षिए॥ः कथिताः पूर्वात्र्यद्व चंद्र मिताः पढाः १३ १ याम्यात्र्योतकमैङ्कारुयेतकनगरसोन्मिताः विविका उदितास्सार्द्रगोतुस्या विकलाःखलु १५ इत्यमेवकला ज्ञेया दक्षिणाश्चनयोत्तराः पूर्वापराश्चविकलार्य ्रत्यधुनाख्यु १५ भतेनासरि मेपचनवाँगा चाम्यासाद्धी नगानळेखासः पूर्वात्र्यधगांडेचिर्स्स्त्रेचाम्याः स्विष् भू धरतुत्याः १६ पूर्वाःसार्द्धकराएवितुत्याने स्ररेनाक

सागर्शीलायाम्यात्रप्रदेशता नवतुत्यापूर्वी बुद्धिमते श्वरमीताः १७ % श्रीरंगपद्रने दिक्रिताः पूर्विश्वेनारकाटे तुष्ट्षद् श्रीलाश्च दक्षिणाः १८ ४७२ देश झानम्

त्र्यकगु<u>णाञ्चाथयाम्यावावलमन्द्</u>वे स्त्र्यंशवजिताः

् <sup>७८५</sup> पंचनागुनगा

न्दानियाम्या भूपाःपरास्मृताः

मीरजें गाश्रश्रन्याका याम्याः इन्द्राः पराः स्मृ

पुरस्थर्ठ चन्द्र भ्रुखान्धा दक्षिंए।।स्तथा भार्युत्रपुरार्द्धकम् २६ रत्नागिरिस्थलेखायि सून्या-क्षाः स्वत्रदक्षिणाः गोन्तकाः पश्चिमाश्र्यपुर्यान्याः सि-द्राभ्रभूमिनाः२७ त्र्यन्तीभूयापुरेत्र्यंत्रायुग्वेदाधी द्वःसाः देशज्ञानम् २७७३ गौजाञ्जाः हैदराबादयाम्याः पूर्वात्सुखार्ययः २० सैं-भाज्ञाञ्जाः हेदराबादयाम्याः पूर्वात्स्यय्येषिता श्चीयानाय्युआः श्चीत्स्वरिष्णाः २० गोळकुर्ह्यापुरस्या-प्रवृत्त्रिकानकाः स्यूताः योभ्यात्सत्स्वरपुरे गोङ्गीजाः श्चारपात्सीः २० योम्यात्स्वित्वयम्भिष्ट वर्द्साव्यास्याः

**न्द्रमिताः योक्ता** <sup>श्</sup>जगनायपुरीस्यानेध्ययेशां दक्षिणाःपराःत्र्यभाक्ष न्मिताःपरा कटकेषद्वियत्स्र्यादिसिएगाश्चतयापराः ३७

देश ज्ञानम् ब्रभास्करा श्चिमात्र्यब्धिनीमूलाः परिकीर्त्तिताः ३८ परतापगढे संसर्वद्मिताः श्चमराक्यां इयक्षां कापश्चिर याम्यास्तुर्पाश्चेमाः पिएडात्र्ययंखसप्ताका षवः ४१ ख्रुरायपुरेचा थबुरहानपुरस्य-

क्षेत्रां त्रगोस्र्याः दक्षिएगः परा कक्षाज्नागढे द्वजाः सब्हद्सिएगा ४४ त्र्यसीरगढदेशेतु पूर्व

न्दवः स्मृताः बडोदानगरे इचश्रविश्वायाम्यास्तु

याम्याःप

कुविश्वानिपूर्वास्साद्धियार्थिवाः संगीतास्तुचट्यामेथीन्ज-

४५ सिद्धास्तुर्गादेता

देश झानम्

.૪७५

द्य आन्युसाम्बाहरू आस्यास्य स्वास्य म्हरान्य म्हरान्यस्य हे स्वास्य स्वाहरू स

एका चताम्पुर्त्। पाश्चमा श्रीरक्षा द्वी स्वष्ठमा पश्चिस्त ५० रचे वाते गिविच श्रीने प्राप्त एएडि मिताः परा द्विची रेटितिएगाः स्वाध्यित्व प्रप्तास्तु पावकाः ५१ चनव्यध्यि विश्वतुत्या यान्यः प्रवृति करोरगाः तत्रोद्वयपुरस्येव हीष्ट-

माष्यस्थाठोच्यते ५२ राजकोटस्याठेकक्ष्वविद्यायास् माष्यस्थाठोच्यते ५२ राजकोटस्याठेकक्ष्वविद्यायास् परास्तया नागवेँद्रमितास्याययास्याः कक्षाधिभूमि

परास्तया नागर्वेद्दिमितास्त्रायग्यान्याः केशाधिभूमिताः ५३ काष्ट्रिकास्यपुरेह्मधीत्रुक्तकत्ताह्नयपूत्ते प्रवी स्रकाकिभिसुत्याह्राद्दीपत्तनस्युवे ५४ ज्ञीषुत्रिस्यमिताः याम्याः पूर्वाप्यने सुसामिताः धारानगरसहोतुप्यनिस

याम्याः युर्वाः पचे चुसमिताः यारानगरसंज्ञेतु पंचीहे विनिज्ञाकराः ५५ दक्षिणापश्चिमी युग्मकी जब्बेठ पुरस् के चुम्ब्हिस्यमिता याम्याः युर्वाः सायकसागराः ५६ सुर्पाले आन्ध्रारीमी चुतुल्याः याम्यास्युक्कें। युर्वास्तयं दक्षिए।।श्रुन्यंपूर्वापरंन्याययाम्याकंकाभि नेयसीहोरारव्येतुदक्षिएगाः६० द्रयंकविर्यमिताः वेदां झेसम्मितास्त्वयं दक्षिएग स्बें याम्यात्र्यंकांकविश्वानिपूर्वास्सामांक

निताः प्रोक्ता लोहरेबापुरस्थले ६३ त्रीलाशेंद्रमिता याम्याः शैलनागमिताःपराः ईशेन्द्राः दक्षिपालवासीः

पश्चिमापिष्डितोत्तमेः ६४ वासवाडापत्तनेयमुद्दिवादाद्

पत्ते याम्यात्र्यश्चेत्रवेदान्द्वाप्यतः सोविभूमिताः ६५ सह रूयारामदेशेतुनागश्चीन्द्रीर्श्चदक्षिणाः यूर्वीसस्प्रहात्र्याः शोधायिद्राकात्र्यसामरे ६६ दक्षिणाः प्रबुणाः प्रवीस

पश्चिमाञ्चधनाः प्रोक्तापरता पगढ स्थले ६८ यास्यात्र <sup>११</sup>१२ नेच्दाः दक्षिएगः पूर्वाः षड्डाएगः समुदीरिताः त्याः स्वरंगपूर्णापुरस्यके याम्यात्र्यक्षदारेन तसागरहण्य वेट्टायायुगषद्रशका परिकीर्त्तिताः मन्त्रीपुरस्थलेयाम्याः खांकवेद निशाकराः मरकोटेतुयाम्याः कंकेन्द्रसम्मिताः ७६ पश्चिमान्त्रश्चिषट्

देशज्ञानम् ४७८ टेकाय्योद्**क्षि**णात्र्यशके.दा रगाः७८ यत्स्यानेखखपंचान्ना याम्याःपं पंचाब्जा याम्याः पूर्वाः कता द्रयः ं घरनाह्ना दक्षिएा। भागलापुरेरविञ्च-पूर्वास्तुदक्षिएगा भूपयस्त्रां दानापुरस्यवे त्रक्षनवाऱ्यायदक्षिए॥ श्विरामाह्य याग ८४ यांन्यागाजीपुरेक्षाभिघरत्नाः पूर्वास्त्रिपेर्वेताः दक्षि-एगापंचरामोद्धाः पुर्वास्वाष्ट्रमितास्तया टुपं प्रोक्ता भोज र्षाके श्रन्याब्धिवासराः पूर्वात्र्याब्धीमताश्चाय

देश झानम् प्रोक्ताबानपुरस्थते ८६ दर्षेच्यस्य दक्षिणाः पूर्वीय्यस्य गान्छपरापुरे पाण्याः पंचाब्धिबाएगं ब्या पूर्वीय जनानेस स्मिताः ८७ दक्षिणा ज्यानमुगढेससाब्ध्य समिशाकुराः पूर्वास्त्रविका ज्यादिशाः बाल्यरे जार्श्वाव्यस्य नाः पूर्वास्त्रवनका ज्यादिशाः बाल्यरे जार्श्वाव्यस्य

प्रवाद्यक्तसमिताः दर योग्या कर्णपुरे कस्त प्रकार प्रवाद्यक्तसमिताः दर योग्या कर्णपुरे कस्त प्रकार प्रवाद्यक्तसमिताः दर योग्या व्यवद्यक्त मिताः स्व प्रवाद्यक्त स्व प्रकार प्रवाद्यक्त स्व प्रवाद्यक्त प्रवाद्यक्त

प्रीन्दुभिस्तुल्यात्र्य**कृ**ष्शग ढस्थरे ४७ त्र्यंकपं<u>च</u>ेन्ट श्रर्केसम्मिताः कामाहाव रूययाम्यागणनवेवासराः ५८ पूर्वात्र्यप्रि याम्यात्र्यश्चमपर्शिवा विद्वद्भि हुबुभ्रभूपंमितायास्या पराः जैसत्मेरपुरेऽथैव 9502 गरापन्तन स्थले याम्यात्र्यक विचन्ह षट्करसम्मिताः १०२ ऋधुनाका ऋषट्चद्रा . 183 <u>अ</u>भिस्तुत्यायाम्यात्र्प्रब्ध्याब्धेपार्थिवा र्थादठीगढे १०५ दक्षिएाः सप्तवेदांगच

869. याम्यासस्वारगः-मागोश्वमार्गएगाः

नाः पाणिपन्तेपूर्वास्तुपार्थिवाः उच्चेवदाश्विजीमूता युगांपराः ११६ याम्याःषड्द्रशृंबुदा वीजनीरेपूर्वा इभातक देश झानम्

ष्टर

लिसारुव्यांच्ये घना

श्रादितःपरिडेती

जफरगढस्थळे १२४ याम्यात्र्यव्यश्वमे राः मुल्तानेकष्टजीमूतायाः

טורופטטר

10%0 यदा १२६ दक्षिए।।प्रा

१२२ पश्चिमाकुयुगास्वाउथनय

वाःपराः १२५ ऋम्बालाप

प्वोन्प्राश

वेमाएकाश्वाभ

नासंदुदक्षिए॥ सस्वनागेन्दुभिः पूर्वास्तकेशीताशुसोम्मताः

देशज्ञानम्

४८३ १८०

म्याशकाए भूमिता १३१ रुदंत्रयाश्रतीर्थेतुयाम्याःपूर्व कितासयः पट्याखापः माष्टेन्दरोदसिए।।स्तथा १३२ पूर्वाग्रह्य मिता वीर्येनन्द्रप्रयागास्येयाम्यापूर्वात्र्यगामयः १३३ टिहिशनग रेयाम्यारुविश्वेनागविधून्मिता पूर्वात्र्यंककरेस्तुल्याः दक्तिणाः श्रिक कापरे १३४ भाष्टेन्द्रप्रमितापूर्वाः म्याखायिनागेन्दुस १३८ मानसंसरसंस्थ बाणाष्ट्रभूतुल्याः पश्चिमात्र्येकसम्मिताः १४०

858

बांपुरेस्वाश्वाष्टाव

848

स्थिमाः प्रोक्ता वेदसाँ युँकसागुराः श्रीविकासपुरेंकाश्वनागास्ता 9008

म्याः संसाष्टाष्ट्रेन्द्धुसम्मिताः १६५ पूर्वाः

गोर्लिझा दक्षिणास्याच्याः प्रवितन्माएडपत्त्त्त्ते चवेदाककेवलाः १४७ पश्चिमासप्त<del>श्च</del>न्याश्चितुल्याश्चाऽ

गींकों कर्कून्मिताः १४४ बगदादपुरेया

312 4-3 बहुयः श्रयरोवरुपिण्ड्यातु नागा ब्लेश्नक क्षिएा: पश्चिमात्र्यग्निपाए।यः परिकीर्त्तिताः

देशज्ञानम्

श्रवजायरस रर्द्ध पूर्वाः अकारां वास्यार्थेस्वास एडानियान्याः कन्धिरसाः पराः १६१ पारिसे श्राधिगोपदा ४८६ देशङ

विश्वास्था दिलिशेष्ठम् तान्याः वयाग्याः शेळाधि स्वाप्तयः भद्दर पश्चिमाः पवेदाश्याः पीरिटस्मीषपताने नेत्र नेदक्षिणाः स्वाकेस्वित्ततुत्वास्त्रपश्चिमाः भद्द भूमिषद्वस्वतास्य भवाग्यान्यान्यान्यस्त्रपृक्षिकेस्य

विक्षिणा १६ ४ इन्ते संबुद्धयः कामक्रेजेकासिनगाः परः वार्रे पत्तने व्यक्षिकं प्रयोवसिष्णाः पराः १६५ षड्डे देषु मिनाब्याः याम्याएके द्ववह्नयः व्यक्ष्यस्यात्माल्येतु पश्चिमासीलस्य

याम्यारुकेद्भवहुत्रः त्र्यामस्तरहामारुकेतुपश्चिमाद्वीठस्माद्रः यः १६६ हानोकस्यकेबीच्द्रेगुका याम्यारुतुपश्चिमा नागवा-एए-चेवायाम्या ब्रिकिनकस्यभुगुए।१९६७ पश्चिमात्र्यश्चित्रै

एत्निबोयान्यां बर्किनेकसभू गुणां १६७ पश्चिमा ऋबिबी ४५२ व्याप्ता स्वयानान्त्रिकृत्स्ये क्षेत्रा व्याप्ता स्वयानान्त्रिकृत्स्ये क्ष्युर्वे । इत्याप्ता स्वयानान्त्रिकृत्स्ये क्ष्युर्वे अपूर्वे । इत्याप्ता स्वयानान्त्रिकृतिकार्यक्षेत्रकार्यक्षास्य स्वयान्य स

निषयोज्ञ्यानाः प्रोक्ताः हामवर्गेतुद्विशिएगाः १६५ धत्यसाप्ति-मितास्तायदिकाः यएपार्थिएनिवः योरकेदक्षिएगात्र्यकं वद्विशया भयापुरः १७० पचर्वदाद्वयः पीतरसवर्गेतुव्शिएगा यद्वीसाप्तिः

प्रकृति । मितास्तोयिक्कात्त्रप्रीषुसीगराः १७१ याम्योत्त्राक्सकेससनेन पेंडुद्वपोपराः देवाँसैपमितास्त्राऽयराज्ञाक्मारनस्यके १७२

देशज्ञानम् २३४ भताःपराः १७३ षट्षेडेभिमित 90 230 १७५ उत्तराएकषट्खाद्धाःपूर्वा 43. 236 ाराः स्वाब्धियन्यान्तकाःपु-945 : वीत्रप्रवाणाश्वसाम आर्थोत्तरास्तया उत्तमार्थापुरेकागश्चन्यपक्षमिताःपरा१७८ सेतुपश्चिमाःकुघनाःस्मृताः १०५ ब्रीटहेळस्तनैसीन्यात्र्यक ३३५८

जनाः तत्फलयोजनाद्यस्याऽदसारीकक पकराः सर्वभूमिकुखुळयोजनैः भक्ताः प्रलेकलाद्यस्यात्त योजने १०३ वलामार्गवृबंद्योत्थळसमीवछुभसून् । छिस्नि न्याज्ञ्याप्रेमवछुभेनात्मकृत्यिते । १०६ परमाह्यसिक्याने स्वाधिकारे प्रित्मिति प्राकृत्या ह्याधिकारे प्रित्मिति प्राकृत्या ह्याधिकारे प्रित्मित्याने स्वाधिकारे । १०६ परमाह्यसिक्याने विद्याने स्वाधिकारे । १०५ अधिकारेसामार्गाना स्वाधिकारे । १५ व्याचिकारे । १५ व्याचिकार

## इति परनसिद्धांतःसमाप्तः

उत्तक निखनेका ठिकाणा-खेमराज श्रीकृष्णदास श्रीवेंकरेश्वर यंत्रालय- खेतवाडी - मुंबई.

